उद्यान किरण

वार्षिक स्मारिका

9 अप्रैल, 2022

(अंक 10)



मिथिला मैथिल मैथिलीक हित
आजीवन ब्रत राखब ।
धन, पद, यश वा मानक लोभे
फूसि ने कथमपि भाखब ॥

उचित कथा हम कहब सबहिकेँ
धनी रहू की रंक ।
आँच साँच मे लागि सकय नहि,
तैं छी हम निश्शंक ॥

–'किरण'

मधुकर स्मृति अंक

प्रधान सम्पादक
लखनजी 'स्थितप्रज्ञ'

किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान
धर्मपुर, उजान, लोहनारोड, दरभंगा

‘‘किरण शोध संस्थान कराओत बोध सुधीजन ।
मैथिलीक उद्यान-पुष्प विकसाओत अनुखन ॥
ज्ञान ज्योति केर दिव्य प्रसादक प्रभा किरण ई ।
सर्जनाक उपमान ने दोसर एहन विलक्षण ॥’’

–‘सुमनजी’



जन गण मानस मंथन केर मंजुल मराल छथि ।
मिथिला-मैथिल मैथिलीक ई तिलक भाल छथि ॥
प्राँजल प्रतिभापूर्ण लोकवाणी केर पंडित ।
मैथिलीक साहित्य शोधसँ महिमा मंडित ॥
जन जागृति केर शंख ध्वनि केर किरण चेतना ।
महिमा मंडित होएत मैथिली ‘मधुप’ कामना ॥

–‘मधुपजी’

हमर नाम कें दाबि सकत के ? कादो सँ रवि झाँपि सकत के ?

कविवर रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’जीक प्रति श्रद्धांजलि

राजित नञि अछि आइ शुभग सिंगार शुषमा धरती केर ।
मन व्यथित शोकाकुल बनल आर्त्त जन गण मन केर ॥

चलल गोलोक स्वर्ण गणतंत्र प्रभावें चैतन्य चन्द्रायणक गायक ।
न्यस्त कय सभ भार अपन मिथिला मैथिलीक सेवा नायक ॥

द्रवित हृदय तञि आइ विकल किरण संस्थानक सदस्यगण ।
मिलि सभ करथि संकल्प फहरायव तोर धवल कीर्तिक ध्वज ॥

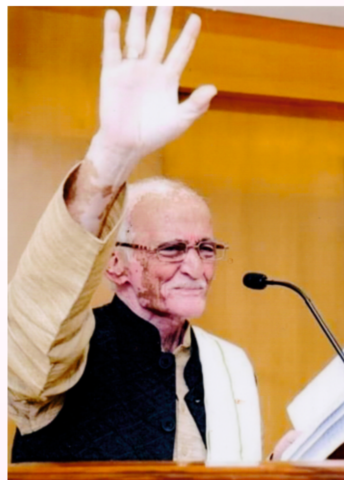
श्रवण होअय यशगान पसरि सतत् मधुकर स्वर गुंजन ।
मधुर सरस लय भाव भरल विविध कवित्त गाथा वर ॥

धुनि छल जीवन भरि बनल काव्यक नित्य प्रतिदिन सिरजन,
कय रचना अनेक अमर कृति भरल मैथिलीक आँचर वैभव ।

रमलहुँ किरण संग आन्दोलनो समर्पि स्वयं संस्थानक हित वय-शैशव ॥
हे मिथिला काव्य-कानन-कुसुमक मधुकर !

अणु विभु मिलि गेल तुअ पाओल शाश्वत-पद
नयन अश्रु उर द्रवित स्थितप्रज्ञ,
करथि श्रद्धा-तिलांजलि अर्पण ।

–लखन जी ‘स्थितप्रज्ञ’





महाकाव्यसँ बालगीत धरि,
रचलनि कविवर मधुकर ।
गामक गाथा लीखि जनौलनि,
गाम केहेन छनि उर्बर ॥

मैथिलीक हित सोचल सदिखन,
सहितो कष्ट असाध्य ।
सुमन, मधुप, किरणक गाथा,
गौलनि जे सबहक आराध्य ॥

छोड़ि आब ई धराधामकेँ,
चलला ईश्वर धाम ।
रहत मैथिली जहिया धरि,
रहतनि हिनकर नाम ॥

–हितनाथ झा

उद्यान–किरण

अंक–10

संपादक मंडल सह प्रकाशन समिति

डा० शिवशंकर 'श्रीनिवास'

डा० विद्यानन्द ठाकुर

डा० सतीरमण झा

डा० विनोदानन्द झा

प्रो० ईशनाथ झा

प्रधान सम्पादक

लखन जी 'स्थितप्रज्ञ'

मो०– 9162594806

संपादकीय कार्यालय

ललिता निकुंज

धर्मपुर उजान लोहनारोड, दरभंगा–847407

सम्पर्क–9162672855, 7546030074

E-mail : kedarnathjhaujan1944@gmail.com

संपादन कार्य सहित सभ प्रकारक सहयोग पूर्णत: अवैतनिक

रचनामे व्यक्त विचार रचनाकारक व्यक्तिगत मानल जायत । कानूनी क्षेत्राधिकार दरभंगा । दायित्व–पदेन

प्रकाशक– किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान

मुद्रक– प्रिंटवेल, दरभंगा

अनुरोध– संस्थानक प्रकाशन कीनी, पढ़ी आ संस्थानकेँ ऐच्छिक सहयोग करी ।

सहयोग– **125 टाका**

आत्म–उक्ति

किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान दौड़मे भलेहि सक्षम नहि भेल मुदा 'डेगा–डेगी' आगू बढ़ैत अपने सबहक समक्ष आइ उद्यान किरणक दसम अंक लय के उपस्थिति भय रहल छी । ई कहबामे हर्ज नहि जहियासँ ई संस्थान सक्रिय भेल मैथिलीमे आ मिथिलामे एकटा नव जागरण आयल अछि । भय सकैत अछि ई किरण नामकक प्रभाव हो कारण किरणजी 1930–31सँ आन्दोलनक संग मैथिलीमे पदार्पण कयने छलाह । पछिला शताब्दीक अन्तिम दशक आ वर्तमान शताब्दिक पहिल दशकमे मिथिलाक मैथिलीक हेतु आन्दोलन निचर्च भऽ गेल छल । आइ प्रकाशन आंदोलन दुनू क्षेत्रमे आमूल परिवर्तन आबि गेल अछि । भय सकैत अछि ई नामक प्रभाव हो । अनशन, धरना, प्रदर्शन संगठन सबक हेतु ई दशक अनुकरणीय रहत ।

किरणजी लिखने छैथ । मिथिलाक समान पछुआयल प्रान्त तखनहि ऊपर उठि सकत यदि एकर भाषा काव्यक विकास द्रुत गतिये होइ । काव्य सतकाव्य रहै ।

द्वितीय अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन (1962) के नाटक विभागक अध्यक्ष के रूप में किरण जी लिखने छथि मैथिली भाषाक स्थिति जेहन अछि तेहन संसारमे अनतय कतहु नहि भेटत । देश स्वतन्त्र । जनतांत्रिक सरकार । समाज अनपढ़ अबोध । प्रजातीय भाषा माथ पर लादल छैक जाहिसँ शिक्षाक द्वारि सकल साधारणक लेल बन्द अछि । मैथिली प्रकाशन कयनिहार कियो व्यवसाय बढ़ेबामे सन्नद्ध..... । समाज मे रूढ़ि अंध विश्वास दिन–दिन बढ़िते जा रहल अछि । मैथिली नाटककारक समक्ष विकट समस्या अछि । प्रतियोगिता करय पड़त । विदेसिया मनचुभ्भीक संग आ उद्देश्य राखय पड़त । ओकर विरोधी समाजकेँ उठायब । (किरण समग्र खण्ड–7, पृ.- 130)

आय स्थित से नहि अछि । साहित्यक प्रकाशन द्रुत गतियेँ भय रहल अछि । मुदा समाजक अभिरुचि मैथिलीक अनुकूल नहि मानल जा सकैत अछि । गोबरछत्ता जकाँ तथाकथित पब्लिक स्कूल हिन्दीक एतेक प्रचार कयलक अछि जे आइ मैथिलीकेँ हिन्दीक उपभाषा कहबाक साहस भय रहलैक अछि । 'केट मे मैथिली'क स्थान नहि । मोबाइल पर भोजपुरिया गानाक तान । डीजे आ ब्रेक–डान्स टोल टोल मे आ एकटा ऐहेन भ्रान्ति जे मैथिली पढ़ि के की हेतैक ? से घर–घरमे । ऐहेन विकट परिस्थितिमे मैथिलीक लेल जे आन्दोलनकारी छैथ से सब अभिनन्दनीय छथि । संस्थान हुनका संग देबा लेल तत्पर अछि । गाम घरमे बैनर, परचा, आमंत्रण पत्र, साइन बोर्ड, सब हिन्दीमे । बढ़ संघर्षक प्रयोजन अछि । जेना कि किरणजीक कहब अछि । जे संघर्ष करैत मैथिली आगू बढ़ैत रहल मुदा ''परिणम निर्भर करैत अछि छात्र समाजक मैथिलीक प्रति अभिरुचि पर हुनक सबहक कर्मठता पर, आ आन समाज आ साहित्य संस्कृतिक निमित्त त्यागक भावनाक मात्रा पर ।''

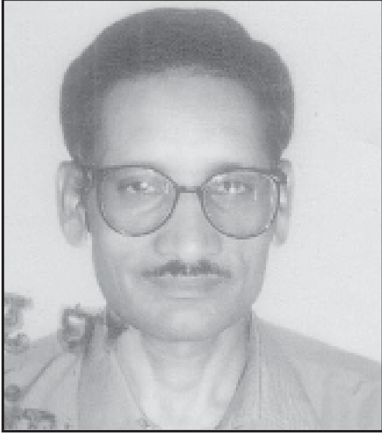
संस्थान एहि मूल उद्देश्यक संग आगू बढबाक चेष्टा कय रहल अछि जे किछु भय सकल अछि से समाजक सब वर्गक सहयोगेसँ आइ स्मारिका अपनेक हाथ जा रहल अछि तेकर श्रेय सम्पादक ओ प्राकशन समिति के छैके प्रधान सम्पादक लखन जी स्थितप्रज्ञक परिश्रम पर । वस्तुत: ई किरणजी के आत्मा सँ अनुकरणीय मानैत छथि । तैं ने अवकाश ग्रहणक ग्यारह वर्षक बाद बिना कोनो आर्थिक लाभक कल्पना कयने एकहतर वर्षक वयस्क मे Ph.D. क उपाधि ल' किरणजीकेँ रिकार्ड के तोड़ि देलनि । हिनक अध्ययन शीलताक प्रति हम नतमस्तक छी ।

ओना ई गाम आइसँ 60 वर्ष पूर्व मंचक कलाकार श्रीमती जयन्ती देवी के प्रस्तुत कयने छल मुदा संस्थानक सहयोग आ प्रेरणासँ लेखन आ गायन क्षेत्रमे श्रीमती कल्याणी देवीकेँ यशस्वी बनबाक प्रेरित कयलक ।

अन्तमे दैवक डॉग से मारल ई संस्थान (मधुकर जीक निधन) थकुचल प्रिंटवेल परिवार स्मारिका के प्रस्तुत करयमे जे सहयोग कयलैन हुनका प्रति जेतैक आभार व्यक्त कएल जाय से थोड़ थिक ।

अन्तमे हम युवा पीढ़ीसँ आहवान करैत छी जे एहि बूढ़क कान्ह पर सँ भार लय संस्थान के आगू बढ़ाबी ।

केदार नाथ झा
सचिव



सम्पादकीय

कोरोना ग्रहण सँ उग्रास भेटल । ओकर दुष्प्रभाव आब अत्यन्त क्षीण भ' गेल अछि । तैँ अप्रैल 1 सँ पूर्वक सभ निर्देश पाबन्दी सँ मुक्त व शिथिल करबाक घोषणा सरकार दिस सँ भेल अछि । आब पुन: सम्हरिकेँ संस्थान अपन गतिविधि केँ पूर्ववत सक्रिय करबा दिस अग्रसर भेल अछि । एहि क्रम मे वार्षिक स्मारिका-2022 अंक-10 अपने सभक समक्ष प्रस्तुत कएल जा रहल अछि ।

मुदा एहि मध्य एकटा पैघ आघात संस्थाने टा पर नहि पूरा मैथिली साहित्य समाज पर पड़ल-कविवर डा. रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर' एहि वर्षक स्वर्णिम गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) दिन एहि धराधाम केँ छोड़ि गोलोक गमन क' गेलाह । 'मधुकर जी' अपन साहित्यिक गुरु किरणजीक साहित्य-यात्राक हरेक डेगक अनुगामी बनि हुनके उपस्थितिमे गठित 'किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान'क एक प्रमुख संस्थापक छलाह । अपन जीवन पर्यन्त 'मधुकरजी' एहि संस्थानक सम्पोषण, सम्बर्द्धन एवम् मार्ग दर्शन हेतु प्रधान स्तम्भ बनल रहलाह । विगत वर्ष 2018 सँ तँ संस्थानक अध्यक्षपदकेँ सेहो सुशोभित कएल । मधुकरजी अपन काव्य रचना वैभव सँ माँ मैथिलीक आँचरकेँ भरपुर भरने छथि । जन्मजात कवित्व शक्तिक संस्कार प्रतिभासँ युक्त हिनक शताधिक कृति अछि । मधुकर सदृश ई काव्य-मधुक सृजन अपन जीवन अवसान पर्यन्त करैत रहलाह मुदा ओकर प्रकाशन दिस ध्यान नञि देल, अपन नाम आ प्रतिष्ठा अर्जन दिस उदासीन बनल रहलाह, तैँ मैथिली साहित्य संसार ओहि विभूति केँ ओ उत्कृष्ट सम्मान नहि दऽ सकल जकर ओ सर्वथा योग्य छलाह । कविक मरण नहि होइ छैक ओ अपन कृतिमे जीवित रहैत अमर बनल रहैत अछि। अधिकांश साहित्यिक विभूति केँ रचनाक आकलन एवम् प्रशंसा आ सम्मान जीवन अवसानक पश्चाते भेटलैक अछि । अस्तु !

2022 ई.क ई दशम वार्षिक स्मारिकाकेँ कविवर मधुकर जीकेँ विशेष रूपेँ समर्पित करबाक उद्देश्येँ 'मधुकर स्मृति अंक' रूपमे अलंकृत कएल गेल अछि । समय थोड़ छल । तैँ संस्थान द्वारा प्रकाशित हुनक ग्रन्थ सभमे उल्लिखित सम्पादकीय टिप्पणी केँ संकलित कए एहि स्मारिकाक मधुकर अंककेँ विशेष

रूपेँ सजाओल गेल अछि । एकर अतिरिक्त परम्पराक निर्वाह करैत पूर्ववत आन स्तम्भ सभ यथा संस्मरण, धरोहर, साहित्यिक समीक्षा, शोधपरक निबन्ध, कथा आ कविता आदि एहि स्मारिकामे समाविष्ट भेल अछि ।

खुशीक गप्प अछि जे भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित 'नव शिक्षा नीति' 2020 केँ वर्तमान मे केन्द्रिय कैबिनेट द्वारा स्वीकृति प्रदान कएल गेल अछि जकर अन्तर्गत पाँचम कक्षा तकक छात्रकेँ मातृभाषाक माध्यमसँ अनिवार्य रूपेँ शिक्षादेल जायत आ से वर्तमान 2022 शैक्षिक वर्ष सँ प्रारम्भ कएल जायत । ई एकटा पैघ उपलब्धि थिक । परञ्च निर्भर करैत अछि जे हम सभ एकर अनुप्रयोग दिस कतेक कटिबद्ध छी । यावत् धरि अपन मातृभाषा मैथिली आ साहित्यकेँ अपन संस्कृति आ राष्ट्रीयताक उदात्त भावनासँ स्वयंकेँ नहि जोड़ब तावत धरि पछुआएले रहब । एकर प्रमाण अछि– जे भाषा समाज मातृभाषा माध्यमे अपन बच्चा सभकेँ शिक्षा देबाक पूरजोर यत्न कएलक ओ सब समाज संस्कृति, विद्वता, मेधा, शोध, आविष्कार, बहुमुखी प्रतिभा, सम्मान आ उपलब्धि आदि क्षेत्रमे अग्रगण्य बनल अछि । एतावता, अपेक्षित अछि जे एकर सफल अनुपालन हेतु हम सभ दृढ़ संकल्पित एवम् सक्रिय होइ ।

अन्तमे एहि वार्षिक स्मारिकाक वर्त्तमान स्वरूप देबामे सहभागी बनल, लेखक, कवि, समीक्षक, सम्पादकमण्डल, आ 'प्रिंटवेल'क प्रति अपन धन्यवाद आ कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी । त्रुटि मार्जनक प्रति मार्गदर्शन आ अवबोधन शिरोधार्य ।

जय मिथिला जय मैथिली !

–लखन जी 'स्थितप्रज्ञ'
सम्पर्क– 9162594806

अनुक्रमणिका

संस्मरण

महींस अपने थिक, कुड़हरिये नाथब तँ मना के करत ?

–जगदीश मिश्र

हमर पिताक मातृक उजान ओ ममिऔत पं. महाशय–झा रहथिन । हमर पिता मास दू मास पर मातृक निश्चिते जाइत रहथि । 1951 ई.क गर्मीक छुट्टी रहै । हम लक्ष्मीश्वर एकेडमी सरिसबमे पाँचम वर्गमे पढ़ैत रही । उपनयन भेले रहए तेँ कानमे पिपरपत्ता झुलिते रहए । उपनयनमे जे जूता भेटल रहए से पहिरि चलबामे बड़ मोन लागए । कारण एहिसँ पहिने जूता पहिरनहिँ नहि रही । हमर पिता सवेर सकाल मातृक बिदा भेला तँ हमहूँ संग लागि गेल रहिअनि । ओ मना नहि कएने रहथि ओ ततेक तेज चलथिन जे बीच–बीचमे हमरा दौड़ए पड़ए । सुखाएल समय रहै तेँ बाधबला बाट पकड़ि शीघ्रे गन्तव्य धरि पहुँचि गेल रही । रौद खसलापर हमरा लोकनि आपस गाम बिदा भेल रही । लोहना रोड रेल स्टेशनक पछबरिआ गुमती टपितहिँ एक व्यक्तिकेँ गुमटी दिस अबैत देखलिअनि तँ बाबू (हमर पिता) कहलनि जे ई अहाँ लोकनिक शिक्षक किरणजी थिकाह । लग अएला पर हम चरण–स्पर्श कएलिअनि आ ओ आशीष देने रहथि । ओ दुनू गोटे बाटक कातमे ठाढ़े–ठाढ़े गप्प करए लगलाह । गप्पहिक क्रममे बाबू कहलथिन जे हिनका अहींक स्कूलमे नाम लिखाए देने छिअनि । हिनका खेलमे अधिक मोन लगैत छनि, पढ़बामे कम । मास्टर साहेब कहने रहथिन जे ठीक छै पढ़बो करत आ खेलेबो करत । अन्तत: बाबू हुनकासँ हमरा पर ध्यान रखबाक अनुरोध कएने रहथिन ।

गर्मीक छुट्टी बितलै । स्कूल जाए लगलहुँ । हमरा लोकनिक वर्ग तहिआ अयाची–डीह पर संचालित होइत छल । पाँचे सात दिनक बाद अकस्मात् एक दिन श्रद्धेय किरणजी हमर अन्वेषण करैत अयाची डीहपर आबि कहलनि जे अमुक तिथिकेँ यदुनाथ सार्वजनिक पुस्तकालय पैटघाटक प्राङ्गणमे विद्यापति–गोष्ठी आयोजित हेतै । अहाँकेँ विद्यापतिपर भाषण देअए पड़त । तत्काल तँ हम 'जी' कहि पिण्ड छोड़ौलहुँ मुदा उद्विग्न भए उठल रही । कारण विद्यापतिक प्रसङ्ग हमरा किछु जनतब रहए नहि । एही गुनधुनमे गाम पर अएलहुँ तँ देखलिअनि जे हमर पितिऔत गोपाल भाइ बाबूक संग गप्प कए रहल छथि । ओ जखन बिदा भेला तँ हम हुनका सङ्गहिँ बिदा भेल रही तथा अपन समस्या हुनका बाटहिमे सुनबैत गेलिअनि । श्रद्धेय गोपाल भाइ (मित्रम्) हमरा दू पन्नामे विद्यापतिक प्रसङ्ग बहुतो जनतब लिखाए देलनि । तीन–चारि दिन धरि ओहि आलेखकेँ स्मरण रखबाक हम प्रयत्न करैत रहलहुँ । निर्धारित तिथिकेँ हम जखन यदुनाथ सार्वजनिक पुस्तकालय, पैटघाटक प्राङ्गणमे उपस्थित भेलहुँ तँ बहुतो परिचित अपरिचित गण्यमान्य व्यक्तिकेँ बैसल देखने रहिअनि । सभा प्रारम्भ भेलै । पहिने छोट–छोट छात्रक भाषण चललै । हमर नाम जखन कहल गेलै तँ भाषण देबाक लेल ठाढ़ तँ भेलहुँ किन्तु पएर थरथराइत रहए । जेना–तेना हम चारि–पाँच मिनट धरि भाषण कए सकल रही । कोनहुँ सभामे भाषण देबाक हमर ई पहिले अनुभव रहए । सभाक समाप्तिसँ पूर्व श्रद्धेय किरणजी म.म. बालकृष्ण मिश्र द्वारा सम्पादित 'विद्यापति–पदावली' नामक पुस्तक पुरस्कारस्वरूप प्रदान कएने रहथि जकर मूल्य छलै चारि आना । हमरा लेल ओ अमूल्य भए गेल । आइ ने डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण' छथि ओ ने गोपाल चन्द्र मिश्र 'मित्रम्' । तेँ दुनू अक्षर–पुरुषकेँ शत्–शत् नमन ।

तकर बादसँ हम विद्यापति गोष्ठीमे यदाकदा जाए लागल रही जँ गोष्ठी लगपासमे आयोजित होइ । समय ससरैत रहलै । हम विद्यालय नहि, स्थानीय महाविद्यालयक छात्र रही । आश्विन शुक्ल त्रयोदशीकेँ राजेमे हितेन्द्र स्मारक पुस्तकालय प्राङ्गणमे विद्यापति–गोष्ठी आयोजित रहै । सुनबामे आएल रहए जे बाहरसँ साहित्यकारलोकनि आबि रहल छथि। तेँ सकाले सभा–स्थल पर पहुँचि गेल रही । स्थानीय कवि साहित्यकार लोकनिक अतिरिक्त बहेड़ासँ मधुपजी ओ मणिपद्म जी तथा दरभंगा सँ अमर जी आएल रहथि । किरणजी तँ आयोजके रहथि । 'जय–जय भैरवि'क गानसँ सभा प्रारम्भ भेलै । तत्पश्चात् भाषणक कार्यक्रम रहै । बहुतो वक्ता अपना अपना ढंगेँ मैथिलीक उन्नति–अभ्युत्थानक प्रसङ्ग प्रस्ताव सभ उपस्थापित कएलनि । अन्तमे प्रारम्भ भेल रहै कवि–सम्मेलन । भङेरजीक कविता पर खूब थोपड़ी पड़ल रहै । किछु काँच ओ पाकल कविताक

रसास्वादन श्रोता लोकनि लैत रहलाह । अमरजीक कविता पर जे ठहाका पड़ल रहै से एखनहुँ स्मरण अछि । अध्यक्षीय भाषणक बाद सभा-समाप्तिक घोषणा भेलै तँ जितेन्द्र नारायण झाजी एक बेरि पुनः चाय पीबाक आग्रह कएने रहथिन ।

शमियानामे छोट-छोट टुकड़ीमे बँटि कवि-साहित्यकार लोकनि वार्त्तालाप करए लगलाह । मंचक समीप पाँच सात व्यक्ति जे बैसल रहथि ताहिमेसँ एक व्यक्ति कहलथिन जे महाकवि गोविन्ददास वैष्णव नहि शाक्त छलाह । श्रद्धेय किरणजी प्रश्न कएलथिन जे कोन आधारपर अहाँ ई कथा कहैत छिऐ ? उत्तर भेटलनि जे गोविन्ददास लिखने छथि 'तुअ परसाद वाद सब' आदि । 'परसाद' शब्दक प्रयोग शाक्त छोड़ि आन कइए नहि सकैत छथि । किरणजी कहने रहथिन, ओना तँ मैथिल लोकनि भीतरसँ शाक्त, बाहरसँ शैव ओ सभामे वैष्णव भए जाइत छथि मुदा महाकवि गोविन्ददास सामान्य मैथिल नहि छला । ओ चैतन्य प्रवर्त्तित नव वैष्णववादक दीक्षा ग्रहण कएने रहथि । मुदा गोविन्द दासकेँ शाक्त माननिहार विद्वान गेङ जोतने रहथि । जोर-जोरसँ विवाद होमए लगलै । ताधरि सभक चाय समाप्त भए चुकल छलनि । अन्ततः आचार्य किरण सक्रोध कहने रहथिन, 'महींस अपने थिक, कुड़हरिये नाथब तँ मना के करत' ?

ताः 5.8.2021

नबटोल
मो. 9430595583

धरोहर

सुनीति कुमार चटर्जी कहने छथि जे- ''बंगालक विद्यार्थीगण मिथिलामे अपन अध्ययन समाप्तकेँ केवल संस्कृतहिक ज्ञान सँ सम्पन्न भेल नहि घुरै छलाह अपितु विद्यापतिक, सम्भवतः हुनक पुर्ववर्ती कविगणक मैथिली पदावलियो सिखने अबैत छलाह । एहि प्रकारेँ मैथिलीक पदावली 15हम शताब्दीमे आसाम तथा उड़ीसा प्रांतहु मध्य अनुकृत भेल । ....मे एलफेवेटम ब्राह्मनेनिकम नामक फ्रांसिसी भाषाक ग्रंथमे मैथिलीक चर्चा अछि । 1801 ई. मे कोलब्रूक साहेब अपना ग्रंथक 7म भागमे मैथिली के स्वतंत्र भाषा कहने छथि । 1....40मे मार्टिन साहेब अपना पत्र संग्रहमे मैथिलीक चर्चा कैने छथि । .....फैलन साहब सेहो मैथिली वार्त्तालापक प्रसंग लिखने छथि । डा. ग्रियर्सन जनिका सँ बढ़ि भारतीय भाषा विज्ञानक केओ पण्डित नहि छथि अपना ग्रंथक 5 भाग मैथिली विशद आ स्वतंत्र विवेचन कैने छथि । डा. हानले पूर्वी हिन्दीक व्याकरण नामक अपना ग्रंथमे प्रमाणित कैने छथि जे मैथिली हिन्दीक बोली नहि थीक । डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची कहै छथि जे नेपालक उच्चश्रेणीक लोकक एवं साहित्यिक भाषा 18म शताब्दी पष्यन्त मैथिलिये छल 1638 ई. पर्यन्त नेपालमे मैथिलीक ग्रंथ रचना भेल ओ 17म तथा 16म शताब्दी मे तँ अनेकाने मैथिलीक ग्रंथ नेपाल में लिखल गेल ।

गान, पदावली, नाटक कार्यकाण्ड संगीत छन्दः शास्त्र ऐतिहासिक युद्ध वर्णन आदि अनेकानेक मैथिली ग्रंथ उपलब्ध होइछ । मर्सिया गीत सेहो मैथिली में अछि जाहि सँ 4 गोट ग्रियर्सनक स्रंग्रहमे प्रकाशित अछि । उपन्यास, छोट छोट कथानक वेदांत तथा व्याकरणक छोट-छोट संस्करण एवं रामायण ओ महाभारत सक्षिप्त गद्य ओ पद्य ग्रंथ सामाजिक नाटक, गणित जीवन चरित आदि मैथिली साहित्यक भिन्न दू अंग सुपल्लवित ओ प्रकाशित अछि ।

तखन एहि प्रकारक बहु संख्यक जनताक भाषाकेँ जकरामे एतेक प्राचीन प्रचुर साहित्य छैक, बिहारक शिक्षा पद्धतिक पुनर्निर्माण योजनामे कोनो स्थान किये नहि देल जाइछ । सर जॉन ग्रियसेन मैथिली छन्दशास्त्र ओ व्याकरणक नियमक उल्लेख करैत लिखै छथि जे ई हिन्दीक छन्द शास्त्र वा व्याकरण से भिन्न अछि ।

हमरा बहुत दुख अछि जे बिहारक एक बहुमत समुदायक एहन प्राँजल संस्कृति के नष्ट क' हिन्दुस्तानी के अपन मातृभाषा नहि मानि सकैछ और एहि योजनाक स्वीकार केनिहार अंतिम अधिकारी वर्ग सँ हमर अनुरोध अछि जे ओ अपन मैथिली शिशुगण अपना मातृभाषा द्वारा शिक्षा पैबाक अकाट्य अधिकार केँ अवश्य स्वीकार करताह ।

(मिथिला मोद जनवरी 1941 सँ सभार)

उग्रनारायण मिश्र ‘कनक’क पावन स्मृतिमे

–डा. भीमनाथ झा

(1)

नाम ‘उग्र’ चिर शान्त, कहौलहुँ ‘नारायण’ रहलहुँ नरनाह
‘मिश्र’ कहबितहुँ फेँटफाँट नहि, मिथिला-मैथिलीक ध्वजवाह
रहितहुँ ‘कनक’ न दुर्लभ कनिको, सुलभ दीन जन लग सदिकाल
बसलहुँ ‘मकरन्दा’- सेवा-श्रमधामक गन्धहुँ उन्नत भाल

(2)

हे स्वतंत्रता-सेनानी, भूदानी, अभियानी खादीक
सर्वोपरि तेहन जे चिन्ता रंच न कयलहुँ बरबादीक
पत्रकारितामे रत, पीड़ित-दलितक स्वरकेँ देल पसारि
संगहि सभतरि मिथिला-मैथिलीक चिनगी अहँ देल पजारि

(3)

छौ दशकहुसँ अधिक अवधिसँ सारस्वत साधना-निमग्न
रही अनवरत निरत विविध साहित्य सर्जनामे संलग्न
‘प्रेम’ प्रथम कृति, तदुपरि ‘बाबू गोपाल’क जीवनी ललाम
गल्प लिखल ‘हम किछु बजैत छी’, ‘चनरी’ तथा ‘जुबैदा’ नाम

(4)

कविता कृति ‘हम नीलकंठ’- ई सभ थिक मैथिलीक शृंगार
‘चन्द्रनाथ’ लघु उपन्यास आ एक पत्र-हिन्दीक संचार
मातृभारती-राष्ट्रभारती केर आरती संगहि संग
करिते रहलहुँ, गबिते रहलहुँ गौरव-गीत माँक सोमंग

(5)

रहलहुँ जा, सम्मानक लागल रहल पथार, आदरक थार
भरल सचार कते भेटल, व्यक्तित्वे तेहन उज्जवलाकार
छी न आब अहँ, पावन स्मृतिमे भऽ श्रद्धांजलि सविनम्र आइ
श्रद्धांजलि अर्पित अछि ‘भीम’क, आशिष दी हे बड़का भाइ !



'लोक रचनाक सुरभि सुषमा'क प्रसंग किछु चर्चा

–नीरजा रेणु

डा० विश्वेश्वर मिश्रक जन्म सरिसब गामक प्रसिद्ध श्रोत्रिय कुल (सोदरपुरी–सरिसव) मे भेल छलनि । हिनक पितामह पं० प्रवर मार्कण्डेय मिश्र ओ पिता लोकेश्वर मिश्र छलखिन। नवटोल गामक कमलानाथ झा प्रसिद्ध उधो जीक ई दौहित्र छलाह । माताक नाम महेश्वरी देवी छलनि ।

अपन कुल परम्पराक अनुसारे माँ सरस्वतीक कृपापात्र ई रहथि । विद्याध्ययन एवं विद्या–व्यवसाय हिनकर जीवनक अंग रहलनि ।

डा० विश्वेश्वर मिश्र एकटा गवेषकक रूपमे मैथिली साहित्यक विशिष्ट विद्वानक पंक्ति मे परिगणित होइत छथि।

सम्प्रति हम 'लोक रचनाक सुरभि सुषमा' जे 2014 ई० मे प्रकाशित भेल, तकर किछु चर्चा क' रहल छी । हुनकर कहब छनि– 'पाठ्यावस्थहिमे हमरा लोक साहित्यक प्रसंग रचना–रुचि जाग्रत भए गेल रहए । फलत: सातम दशकक अन्त होइत–होइत हम मैथिली लोक साहित्यक विभिन्न विधाक विविध सामग्री संकलितो कए नेने रही । तकर पश्चातो थोड़ बहुत लोक रचना (मैथिली) हमरा बरोबरि उपलब्ध होइत रहल...।'

सन्दर्भ– लोक रचनाक प्रसंग लोक–रचनाक सुरभि सुषमा सँ ।

ई पोथी नओ अध्यायमे विभक्त अछि– लोक रचनाक प्रसंग, लोक रचना, लोक गीत, लोक कथा, लोक कथा काव्य, लोक महाकाव्य, लोकगीत–नाट्य, लोक मन्त्र एवं लोक रचनाक वैशिष्ठ्य ।

प्रसंग डा० मिश्रक कहब छनि– 'समाजक प्रतिभावान ओ अनुभूतिक अभिव्यंजक जन–समुदाय युग–युग सँ अपन अभिव्यक्तिकें तथ्य परक ओ प्रभावोत्पादक बनएबाक लेल शब्द विशेष ओ शब्द, समूह विशेषक प्रयोग करैत रहल अछि।'

–लोक रचनाक सुरभि...पृ. 77 सँ ।

एहि अन्तर्गत वचन, बाल–काव्य, बुझौवलि, कहबी आदि अछि ।

वचनक अन्तर्गत डाक–वचन सर्वाधिक प्रचलित ओ लोकोपयोगी भेल अछि ।

डाक अद्भुत प्रतिभाक स्वामी रहथि । ओ जे बुझलनि तकरा लोकहितक भावनासँ पद्य बद्ध कए समाज मे प्रचलित कएलनि । ऋतुक प्रसंग, यात्रा–सगुन विचार, आहार–व्यवहार, कृषि आदि जीवनक अनेक बिन्दुक प्रति हितकर वचन ओ प्रचारित कएलनि । एकर भाषा ठेठ अवहट्ठ थिक । एकरा मैथिली भाषाक पूर्व रूप मानव उचित होएत ।

डा० मिश्र लिखैत छथि– 'डाक बचनक अनुवर्त्तमान भाषाक प्रसंग आचार्य रमानाथ झा लिखल अछि जे 'डाकक वचन सम्प्रति जाहि रूपमे प्रचलित अछि ताहि सँ ओकर भाषाक एतेक प्राचीनता लक्षित नहि होइत अछि । परन्तु एहि प्रसंग ई स्मरण रखबाक थिक जे पुश्ति–पुश्ति सँ मौखिक रूपें अबैत–अबैत विकृत होइत गेल अछि । ओ यदि लेखो अछि तँ ओहि लेखक स्वरूप लेखन कालमे जाहि रूपमे जानल गेल छल, तकर रूप थिक, ओ रूप नहि जाहि रूप मे डाक ओकरा रचने छलाह ।

(–प्रबन्ध संग्रह, पृ. 56)

आचार्य रमानाथ झाक प्रति पूर्ण सम्मान सहित हमरा ई कहबाक अछि जे डाक स्वयं लिखलनि नहि । हुनकर वचन लोककंठ द्वारा जानल गेल । तैं जेना–जेना समय बितैत गेल तेना–तेना भाषाक रूप बदलैत गेल । तै डाक–वचनक ओ प्राचीन रूप सतत लक्षित नहि होइत अछि जे हुनकर मूल वचनमे रहल हेतनि । लोकोपयोगी कथ्य हेवाक कारणें हुनकर वचन सभदिन प्रासंगिक रहल । एखनहु अछि तैं ओ अमर छथि, लोककंठ मे व्याप्त छथि । यदि अपना समय मे डाक अपन वचनकें लिपिबद्ध क' लेने रहितथि, वा केओ अन्य व्यक्ति लिखि देने रहितथिन तँ डाकक समयक भाषा सेहो संरक्षित रहितैक ।

ओना, हुनकर वचन आइयो उपयोगी अछि तैं केओ हुनकर कथ्य मे परिवर्तन नहि क' सकैत अछि, ने ओकर खंडन करबाक साहस क' सकल अछि ।

डा० विश्वेश्वर मिश्रक अनुसारें, पं० कपिलेश्वर मिश्र 'डाक् वचनामृत' नामें सर्वप्रथम हुनकर रचनाक संग्रह कएलनि जे तीन भाग मे रमेश्वर प्रेस, दरभंगासँ 1924 ई० मे प्रकाशित भेल । पुन: पं० जीवानन्द ठाकुर 'मैथिल डाक'क नामसँ 1950 ई० मे मैथिली साहित्य परिषदसँ प्रकाशित करौलनि । डाक के सम्बन्ध मे कुछ और बातें' शीर्षक निबन्ध भारतीय प्राच्य–विद्या महासम्मेलनक नागपुर अधिवेशनक हिन्दी विभागसँ प्रामाणिक निबन्ध प्रस्तुत कएलनि । ई डाक वचन मुख्य रूपें गृहस्थी, यात्रा, ऋतु, पशुपक्षीक विभिन्न कार्यकलाप

सँ शुभ-अशुभ संकेत, वृक्षारोपणक शुभमुहुर्त आदि जीवनोपयोगी तथ्यकें उद्घाटित करैत अछि। एहि स्वरूप 'डाक वचन' 'लोक रचनाक सुरभि-सुषमा' मे पृ. 80 सँ 83 धरि वृहत रूपे संकलित अछि, जकर किछु बानगीक उद्धरण देबाक लोभ भ' रहल अछि । जेना–

शनि रवि फड़की मंगल खाट ।
ई तीनू ताकए स्वर्गक बाट ।।
कपटी मित्र कोसलिया माय,
बुड़बक बेटा टेटा जमाय ।।
साओन पछबा भादव पुरबा
आसिन बहए ईशान ।
कातिक कन्ता सिकिओ ने डोलए,
कहाँके रखबह धान ।। आदि ।

एहि पोथीक तेसर अध्याय थिक लोकगीत ।

लोक गीतक प्रसंग डा० मिश्र गुरूवर रमानाथ झाक उक्तिक उल्लेख करैत छथि– "विश्व मे जतए देखब, भावाभिव्यक्ति सभसँ पूर्व गीत द्वारा भेल अछि, सर्वप्रथम संगीत मूलके काव्य सृष्टि भेल अछि ।"

(-प्रबन्ध संग्रह; रमानाथ झा पृ. 24)

ई मौखिक परम्परा भेल । डा० विश्वेश्वर मिश्रक कहब छनि– "मुदा लोकगीतक उद्भव कथा वस्तुत: अन्धकारमे विलीन अछि । ई सब व्यक्ति-विशेषक रचना होइतहुँ मौखिक परम्परा सँ जीबित रहबाक कारणें आइ सामूहिक सम्पत्ति बूझल जाइत अछि ।"

जे हुअए, एतबा कहब उचित होएत जे जएह विचार कालजयी होइत अछि खाहे ओ लिखित हो अथवा मौखिक, सएह लोक मानसकें युग-युग धरि झंकृत करैत रहैत अछि। वेदक रचयिता के थिकाह, के ओ ने कहि सकैत अछि । सुनल सुनाओल सूक्ति ततेक ज्ञानवर्द्धक, लोकहितकर भेलैक जे भारतक मनीषी लोकनिक कंठहार बनि गेलैक । प्राच्य विद्याक अमूल्य धरोहर भ' गेलैक ।

तहिना लोकगीत सेहो ततेक मनोरंजक, लोकहितकर भेलैक जे प्रत्येक घरक स्थायी धरोहर बनि गेलैक । 'एकर रचयिता के छथि' से बुझब आवश्यक नहि मानल गेलैक ।

वस्तुत: सृजन शील व्यक्तिक हेतु दुइए टा वस्तुक महत्व होइत छनि– मनोरंजन तथा कल्याणकर तथ्य । जखन गीतसँ लोक सभकें आह्लाद होइत छैक, ओ परिवार तथा समाजक हितमे निहित रहैत छैक तँ ओकरा समाज स्वत: ग्रहण क' लैत छैक ।

जेना मंगलगीत । कोनो शुभकार्यक आरंभ देवी देवताक प्रार्थनासँ होइत छैक । तकर पश्चात नामकरण, मूण्डन, उपनयन, विवाह, पाबनि आदि शुभ कार्यक गीत, ऋतु गीत, लगनी आदिक उल्लेख करैत डा० मिश्र जन्मकालक सोहरसँ लए डेग-डेगपर संस्कार गीतक वृहत चर्चा करैत छथि ।

मुदा, जेना पहिने कहल अछि, जे रचयिताक नामोल्लेख वा परिचय-पातक परम्परा वैदिक कालसँ लए लोकगीतक रचना धरि आवश्यक नहि मानल जाइत छलैक ।

परिचय पातक आवश्यकता जहिया सँ बुझि पड़ल हेतैक तहियासँ भणिताक रूपमे वा आनो तरहें रचनाकारक नामोल्लेख भेटैत छैक ।

गाथा सप्तशती सन सात सए मुक्तकक संकलन महाकवि हाल सातवाहन कएलनि जाहि मे जारा होयबाक कारण सँ मात्र हाल सात वाहनक उल्लेख अछि । हमरा जनैत ई रचना कालिदासक पूर्वक गाथा रहल हेतैक जकर विस्तृत चर्चा करब एतए अनपेक्षित अछि ।

भारत शस्य श्यामला, विविध ऋतु समन्वित सुन्दर देश थिक, जतए प्रति व्यक्तिक मानस मे सतत सृजनक धाराक प्रस्फुटन होइत रहलैक अछि । दोसर जे 'बहुजन हितायक भावनासँ प्रेरित जन अपन शीलताकेँ नहि रोकि सकैत छथि । तैं ई लोक रचना अपन बहुआयामी रूपमे चतुर्दिक मुखरित होइत रहलैक अछि । आदिकाल सँ । एकर सुषमा सँ प्रेरित विश्वेश्वर मिश्र मैथिलीक गवेषक केँ विलक्षण मार्ग प्रशस्त करैत छथि । सतत करैत रहताह ।

एहि पोथीक अन्तमे ओ स्वयं कहैत छथि–'मुदा आब समय आबि गेल अछि जे हमरा लोकनि स्वीकार कए ली जे मैथिली लोक रचना आब जन समाजक मनोरंजनक वस्तु नहि रहत; इतिहासक वस्तु भए जाएत । शिक्षाक प्रचार-प्रसार, आकाशवाणी ओ दूर दर्शन सदृश वैज्ञानिक विकासक फल स्वरूप लोक साहित्य लोक कंठ सँ आब विस्मृत भए रहल अछि । अत: मैथिली लोक साहित्यक अनुरागी साधक ओ मर्मज्ञ विद्वान सँ हमर अनुरोध अछि जे लोक साहित्यसँ सम्बद्ध अपन ज्ञानक सीमाक अनुसार लोक रचनाकें अक्षरबद्ध कए देथि । एहि सँ आओर किछु नहि; कमसँ कम एतबा तँ अवश्य होएत जे मिथिलाक विशाल लोक साहित्यक वैशिष्ठ्य, विलक्षणता ओ काव्य सौन्दर्य मिथिलाक वाङ्मयक इतिहासमे, युग-युग धरि चर्चित अर्चित रहत ।

बिट्ठो

बाबू कृष्णनन्दन सिंह जन्म शतवार्षिक अवसर पर श्रद्धासुमन

–डा. रमानन्द झा 'रमण'

मैथिली साहित्यमे राघवाचार्य अत्यल्प चर्चित साहित्यकार छथि एवं बाबू कृष्णनन्दन सिंह सर्वथा अचर्चित। बाबू कृष्णनन्दन सिंहक चर्चा मैथिली भाषा–साहित्यक उन्नायक एवं सम्पोषक रूपमे मुक्तकण्ठेँ होइत रहल अछि, मुदा हुनक साहित्यक संग से बात नहि छैक। प्रायः तीस–पैंतीस वर्ष पूर्व हम 'मैथिली काव्यमे भूकम्प' शीर्षक एक लेख लिखने रही, जाहिमे कविवर सीताराम झा एवं बाबू कृष्णनन्दन सिंहक 'कम्पकारिका'क तुलनात्मक विवेचन अछि। हम अपनाकेँ सौभाग्यशाली मानैत छी जे मैथिलीक एहि दुनू अक्षर–पुरुषक स्नेहभाजन होएबाक अवसर हमरा प्राप्त भेल अछि। राघवाचार्य जीक अनेक बेर दर्शन बाबू कृष्णनन्दन सिंहक ड्यौढ़ीमे भेल छल। अनेक बेर हुनक कविता साक्षात आ कविता पाठक टेप रेकार्ड सुनने छी। अन्तिम भेंट 1979–80 मे पटनामे भेल छल।

घटना सम्भवतः 1961–62 ई.क थिक। घटनास्थल अछि राघोपुर ड्यौढ़ी। समय अछि जेठक दुपहरियाक प्रचण्ड रौद। कविचूड़ामणि मधुप हमर कोठलीमे विश्राम करैत छलाह। ओही समय राघवाचार्य जी एकबजिया ट्रेनसँ सकरीमे उतरि पैरे ओतय पहुँचलाह। कुर्ता आ तौनी कान्हपर राखल। घाम टपटप चुबैत। हुनक श्याम वर्ण आर झमा गेल छलनि। देखितहिँ मधुपजी कहलथिन, 'आउ भाइ, आउ।'

'की कहू गाड़ीमे बड़ रस छलैक।' –घाम पोछैत राघवाचार्य कहलथिन।

'कवि तँ रसे ने तकैत अछि ?' –मधुपजीक संक्षिप्त उत्तर छल।

राघवाचार्य गाड़ीक भीड़ लेल अङरेजी शब्द 'रश'क प्रयोग कएने छलाह आ मधुप जी काव्यरसक सन्दर्भमे उत्तर देलथिन। आ फेर वातावरण काव्यमय भए गेल छल। इएह काव्यमय वातवरण हृदयक टूटल तारकेँ जोड़ि झंकृत कए दैत छैक। (आइ जखन हमरा मैथिलीक एहि दूनू बिसरल साहित्यकारक प्रसंग किछु लिखबाक सुअवसर भेटल अछि, हमरहु अनेक टूटल तार जुटि झंकृत भए गेल अछि)।

राघवाचार्य

राघवाचार्यक पारिवारिक परिचय : राघवाचार्यक प्रसंग विस्तारसँ प्रायः सर्वप्रथम डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' अपन 'मैथिली कवि–दर्शन' (1968 ई.) मे लिखलनि। किछु वर्ष पूर्व राघवाचार्य केन्द्रित दू टा लेख लिखबाए (नारायण झा आ डा. सत्येन्द्र कुमार झा) 'घर–बाहर'मे छपने छलहुँ। एहि स्रोत सभक आधारपर राघवाचार्यक किछु पारिवारिक परिचय भेटैत अछि। राघवाचार्यक मूलनाम राघव झा छल। हिनक जन्म सन् 1325 साल, माघ शुक्ल सप्तमी वृहस्पति तद्नुसार 1918 ई. मे वर्तमान मधुबनी जिलाक भीठ–भगवानपुर गाममे भेल छलनि। भीठ–भगवानपुर मिथिलाक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्वक गाममे परिगणित अछि। ओ पं. श्री सुवंशाचार्यक पुत्र छलाह। राघवाचार्य काशी, गुरुकुल कांकड़ी एवं हरद्वारमे पढ़ि वेदाचार्य भेलाह। अलंकारक परीक्षा पास कएल। ओ की करैत छलाह, आजीविकाक आधार की छलनि, तकर कोनो उल्लेख कतहु नहि भेटैछ। मुदा, एतेक धरि तँ ज्ञात अछि जे हुनक आर्थिक स्थिति ठीक नहि छलनि। राघवाचार्य बराबरि यात्रा करैत रहैत छलाह। यात्राहिक क्रममे हुनक देहान्त पूर्णियाक धमदाहा गाममे भए गेलनि। अपरिचित स्थानपर आ अपरिचित लोकक बीच जाहि प्रकारेँ अन्तिम संस्कार होइत छैक, से भेलनि। तकर कतेको मासक बाद राघवाचार्यक देहावसानक समाचार हुनक गाम आएल। राघवाचार्यपर केन्द्रित डा. शिवाकान्त ठाकुरक निबन्ध 30 अगस्त, 1981 क 'मिथिला–मिहिर'मे छपल। एहि निबन्धमे राघवाचार्यक मृत्युक परिस्थिति, तिथि, स्थान आ कारणक उल्लेख नहि छल आ जाहि तिथिकेँ समाचार गाम आएल छल, ओही तिथिकेँ राघवाचार्यक देहावसानक तिथि मानि प्रचारित कएल। 'मिथिला–मिहिर'क 23 नवम्बर, 1981क अंकमे प्रकाशित भीठ–भगवानपुरक पशुपति प्रसाद सिंह, अधिवक्ताक पाठकीय पत्रसँ स्पष्ट भेलैक जे विक्षिप्त राघवाचार्यक देहावसान पूर्णियाक धमदाहामे 05 मइ 1981 ई. केँ भए गेल छलनि। अपरिचित लाशक संस्कार पुलिस द्वारा भेल।

राघवाचार्यक कृतित्व एवं कृति-विवेचन : राघवाचार्यमे कवित्व प्रतिभा बाल्यकालहिमे प्रकट भए गेल छल । तकर उत्तरोत्तर विकास होइत रहल । हिनक प्रकाशित कृतिमे अछि- 'वनकुसुम', 'ज्वालामुखी', 'मधुकण' एवं 'क्रान्तिगीत' । अनेक अप्रकाशित रचनाक उल्लेख अछि । ओ 'ज्वालामुखी'मे अपन कविताक उद्देश्यकेँ स्पष्ट करैत लिखने छथि-

"हमर प्रयास नपुंसक लेल नहि,
कामुक लोकनिक हास-विलास
नै थिक स्वार्थ निरत मानव लेल,
जे कय लइ अछि सर्व गरास ।
किन्तु क्रान्तिकारी देशक हित,
साधकजन युग-जीवन साँस ।
तनिक लेल ई प्रगट भेल अछि,
शीतल ज्वालामुखी प्रकाश ।'

साहित्यक प्रयोजनममे यश आ अर्थक बादहि 'शिवेतर क्षति'क स्थान छैक । ई दूनू कविक लेल अछि । समाजकेँ एहिसँ किछु नहि भेटैत छैक । यदि व्यापक अर्थमे 'शिवेतर क्षति'क व्याख्या करी तँ देश आ समाजक हित एहिमे सन्निहित छैक । स्पष्ट अछि राघवाचार्य काव्य-सर्जनाकेँ 'कामुकलोकनिक हास-विलास' नहि मानैत छथि, जे देशहित काज करैछ तकर जीवन साँस' मानैत छथि । 'ज्वालामुखी'क परिचयमे कुमार गंगानन्द सिंहक मन्तव्यसँ एहि तथ्यक पुष्टि होइत छैक जे राघवाचार्यक काव्यमे परिस्थितिक प्रति विद्रोह, आत्मनिर्भताक हेतु उद्‌बोधन और कठोर कर्त्तव्यक आह्वान प्रतिभासित अछि ।

राघवाचार्यक काव्यक प्रसंग सामान्यत: ई मत व्याप्त छैक जे ओ वीररसक कवि छथि । कुमार गंगानन्द सिंह हुनक कविताकेँ 'रौद्ररस प्रधान मानल अछि । मुदा, हमरा जनैत राघवाचार्यक कविताकेँ वीररस वा रौद्ररसक अन्तर्गत राखब हुनक काव्य-साहित्यक उचित मूल्यांकन नहि होएत । उचित अछि जे यदुनाथ झा 'यदुवर' सम्पादित 'मिथिला गीताञ्जलि' एवं श्यामानन्द झा सम्पादित 'मैथिली-सन्देश'सँ मैथिलीमे संघनित भेल राष्ट्रीय चेतनावादी काव्यधाराक विकासक रूपमे राघवाचार्यक समग्र साहित्यके राखि विवेचित-विश्लेषित कएल जाए । से एहि हेतु जे वीररसक कवितासँ शत्रुपर विजयक हेतु साहस एवं उत्साहक संचार कएल जा सकैछ, सूतल लोककेँ जगाओल जा सकैछ, मुदा राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्तिक उपरान्त सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रमे वा आर्थिक क्षेत्रमे विकास एवं स्थायित्वक लेल वीर वा ओकर सहयोगी रौद्ररसक कविताक अपेक्षा, अन्य रसक कविताक प्रयोजन बेसी होइत छैक । एही दृष्टिसँ राघवाचार्यक साहित्यक चर्चा प्रयास अछि ।

राष्ट्रीय चेतनावादी कविताकेँ दू कोटिमे राखि सकैत छी- राजनीतिक राष्ट्रीय चेतना आ सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना । जखन राघवाचार्य 'प्रतिज्ञा' करैत लिखैत छथि- 'हम नव स्वतन्त्र युग सृजन करब' तँ ई राजनीतिक राष्ट्रीय चेतनामूलक कविता भेल । एहिमे पराधीनतासँ मुक्तिक प्रेरणा छैक, ललकारा छैक । राष्ट्रीय चेतनाक अन्तर्गत उपराष्ट्रीय चेतनाक अस्तित्व सेहो रहैत अछि ।

उपराष्ट्रीय चेतनामे क्षेत्रीय अस्मिताक संरक्षणक प्रश्न प्रबल रहत छैक । उदाहरणक लेल एतए मानि सकैत छी मैथिल उपराष्ट्रीय चेतना । एकर अन्तर्गत मिथिलाक संस्कृति, भाषा-साहित्य एवं भू-भागक महत्त्वक वर्णन आदि अछि । ई चेतना राघवाचार्यमे प्रखर रूपमे व्यक्त भेल अछि । उपराष्ट्रीय चेतनामूलक कविताक उदाहरण अछि-

'जय जय मिथिलादेश !
नमन मानस रंजिनि जय हे, मानिनि भव्य प्रदेश ।
धेमुरा-अन्तर तरल तरंगिनि त्रियुगा ससरथि वेस ।
आङन रवि राकेश सजाबथि सेवा करथि धनेश'

मैथिल उपराष्ट्रीय चेतनाक दोसर उदाहरण अछि 'मैथिली गगन घन गर्जनपर । शत-शत सौदामिनि तर्जनपर ।'

अथवा

'जय जय जन्मभूमि मिथिला उपकारी ।
उपजय फल फूल पान, विविध तरु लता धान ।
पक्षीगण करय गान, हर्षित नर-नारी ।'

ई ध्यान राखब आवश्यक छैक जे उपराष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय चेतनाक प्रतिलोमी नहि अछि, अपितु राष्ट्रीय चेतनाकेँ उपराष्ट्रीय चेतना सबल आ सम्पुष्ट करैत अछि । जेना छेदी झा 'द्विजवर' पक्षीक कलरवमे(मिथिला गीतांजलि) भारत भूमिक कलित गान सुनि अभिनव सन्देश पबैत छथि-

'चढ़ि लता तरु कुज्ज पल्लव मुदित खगकुल करथि कलरब,
गाबि भारत कलित अभिनव देथि सुख सन्देश ।'

सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना : सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतनाक आधार थिक भूमि । ओहि भूमिक लोक, माटि-पानि, गाछ-बृक्ष, पशु-पक्षी, इनार-पोखरि, चर-चाँचर, जंगल-पहाड़, भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक प्रति प्रेम उमड़ैत छैक । मातृभूमिक कण-कणसँ भावात्मक तादात्य स्थापित भेलापर 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'क स्थिति अबैत अछि । आ लोक राष्ट्रीय स्वायत्तताक रक्षाक हेतु अपन प्राणोत्सर्ग धरि कए दैत अछि । किन्तु देशक राजनीतिक स्वतन्त्रता पर्याप्त नहि छैक । आवश्यक छैक स्वातन्त्र्य-चेतनाकेँ सदा जागृत अवस्थामे राखब । राघवाचार्य कहब- 'स्वतन्त्र भेल छें स्वतन्त्र देशकेँ जगा' आ 'बीझ लागि गेल छौ, कृपाणकेँ पिजा' ओही चेतनाक अभिव्यक्ति थिक ।

राघवाचार्य मिथिलाराज्यक निर्माणक हेतु सक्रिय दलमे छलाह । एहि हेतु ई भ्रान्ति पसरि गेल अछि जे राघवाचार्यक क्रान्ति-भावनाक पाछू मिथिलामे राजनीतिक सत्ता प्राप्त करब भावना मात्र अछि । डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' राघवाचार्यक साहित्यक प्रसंग पसरल एहि भ्रान्तिक खण्डन करैत कहल अछि जे ओ जुग-जीवनक सत्यसँ प्रभावित भए क्रान्तिक आह्वान कएल अछि । समयपर ओ मिथिलाक अधोगतिकेँ दूर करबाक हेतु सोचल अछि । अन्यथा ओ आजुक नेतापर व्यंग्य नहि करितथि-

'सत्यक सब स्वांग रचौने अछि, नेता सब पूँजीपतिक दास ।
खन-खन तरुआरि बजौने अछि शिर छोपइत न्यायक कय खखास ।'

राघवाचार्यक समस्त भारतवासीकेँ एक मानैत छथि, ई चेतना हुनक काव्यक विशेषता थिक । ओ लिखने छथि-

ने कियो अछोप ने कियो विप्र सब भारतवासी भाइ भाइ
ने छोट कियो ने पैघ कियो सबहक थिकी भारत भूमि माइ ।

भक्ति-भावना- हमरा किछु गीत भेटल अछि । हुनका मुहेँ सुनने रही । ओहि गीतक अनुसार राघवाचार्य शिवक भक्त छलाह । ओ शिवकेँ गोहरबैत छथि-

हे हर सब विधि हम अपराधी ।
कैल न कहियो भाव-भक्तिसँ पूजा तोहर समाधी ।
देल न दान मान गुरुजनकें ने हम इन्द्री साधी ।
पर निन्दा पर धन पर नारी चिन्तन कयल लगा धी ।
अछि नहि पतित हमरा सन लम्पट अति अविचारगी ।
मिथ्याभाषी लोलुप जनके नृपति थिकहुँ हम भारी ।

राघवाचार्यक कल्पनाशीलता- राधवाचार्यक काव्य-प्रतिभा प्रखर छल, ओ एक कल्पनाशील कवि छलाह । तकर उदाहरण थिक हुनक 'गगनक आङन' शीर्षक कविता । ओ लिखैत छथि-

गगनक आङन भरि-भरि आँजुर, माया छिटलि मखान रे ।
की चहुँ चारू चन्द्रिका चकमक, चानन कयलनि चान रे ।
की विराट मुख दर्शन देखाओल, की लोचन द्युतिमान रे ।
की नभ अम्बर जड़ित शुभ्र मणि, ओढ़ने छथि भगवान रे ।
की अगणित प्रतिबिम्ब चान केर, लहरि उदधि के माझ रे ।

आवश्यकता छैक जे राघवाचार्यक साहित्यक अनुसन्धान, संकलन आ प्रकाशन हो, अन्यथा जेना हुनक शरीर अपरिचित स्थान आ लोकक बीच पंचभूतमे विलीन भए गेल ओहिना मैथिलीक अमूल्य सांस्कृतिक निधि समाप्त भए जाएत ।

बाबू कृष्णनन्दन सिंह

मैथिली भाषा-साहित्यक क्षेत्रमे बाबू कृष्णनन्दन सिंहक अवदानक चर्चाक सन्दर्भमे अपन बात रखबाक पूर्व हम कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क उक्तिक, जे 'राधा-विरह'मे अछि, तकर उल्लेख करब । कविचूड़ामणि मधुप लिखैत छथि-

'राघोपुर पुबारि-ड्योढ़ी स्थित-
वारिज-पात-गात साक्षात,
सत्साहित्य-सुधा-रुचि शुचि-रचि-
रुचिर-सुधाकर-यश-अवदात- ।
खण्डवलाकुल-कुञ्ज-मुकुल-कुल-
रवि मैथिलीक प्राणाधार,
श्रील कृष्णनन्दन जी सिंहक
पबइत अवलम्बन सत्कार ।।'

एहिमे हमर प्रतिपाद्य बाबू कृष्णनन्दन सिंहक कुल-गौरव, व्यक्तित्वक विराटता आ मैथिली साहित्यकारक प्रति सदाशयताक भाव गुञ्जित अछि । एहिना अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक सरिसब अधिवेशनक अपन संस्मरणमे डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', जकर सभापति बाबू कृष्णनन्दन सिंह छलाह, लिखल अछि- "गम्भीर अध्ययन मण्डित मुख-मण्डल । बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह इंगलैंडक ड्यूक जकाँ श्रीमन्त होइतो कला, साहित्य ओ

संस्कृतिक अनन्य साधक छथि ।' आरसी प्रसाद सिंहक 'माटिक दीप'मे लिखने छथि जे "राघवपुर ड्यौढ़ी पुरस्कार दए प्रोत्साहित कैने छथि, तैं हुनका प्रति हमर कृतज्ञताक भाव बूझल जाय (1958 ई.) । मैथिलीक वरेण्य साहित्यकार सभक नजरिमे बाबू कृष्णनन्दन सिंह की छलाह, तकर ई किछु उदाहरण थिक ।

पारिवारिक परिचय- मिथिलाक खण्डवला कुलक राघवपुर शाखामे बाबू कृष्णनन्दन सिंहक जन्म 20 जुलाइ, 1918 ई. मे भलनि । पिता बाबू हरिनन्दन सिंहक देहावसान हिनक शैशव कालहिमे भए गेल छलनि । पितामह बाबू यदुनन्दन सिंहक अभिभावकत्वमे बाल्यकाल व्यतीत कएल । हिनक माइ छलथिन कवियित्री मोदवती । हिनक सासुरक नाम हरिलता अछि । मिथिलाक खण्डवला कुल अपन पाण्डित्यक लेल ख्यात अछि । एहि कुलमे कला, साहित्य एवं संस्कृतिक प्रति अनुराग एवं संरक्षणक चिन्ता सदासँ रहलैक अछि । तें ई गुणसभ बाबू कृष्णनन्दन सिंहमे स्वत: छलनि । तकरा ओ आजीवन निखारैत-चमकाबैत रहलाह ।

बाबू कृष्णनन्दन सिंहक मातृकुलमे सेहो वैदुष्प आ साहित्य-साधनाक परम्परा छल । जेना कहलहुँ अछि हिनक माता स्वयं एक विदुषी छलथिन, से कोनो स्कूल-कालेज जाए नहि, अपितु सर्वथा प्रतिकूल परिस्थितिमे, स्वाध्यायसँ अर्जित हुनक पाण्डित्य छलनि । पुत्रक बालिग होएबा धरि ओ जमीनदारीक सुचारू प्रबन्ध करैत रहलीह । हिनक एक माम छलथिन मैथिलीक ख्यातलब्ध साहित्यकार श्यामानन्द झा आ मातृमातामह छलाह मैथिलीक आद्य कथाकार एवं संस्कृतमे अनेक ग्रन्थक प्रणेता पं श्रीकृष्ण ठाकुर ('मायक मायक मै ठकुराइन') । एहि प्रकारें पितृकुल एवं मातृकुलमे प्रवाहित पाण्डित्य, भाषा-साहित्य एवं कला-संस्कृतिक प्रति अनुरागक धार बाबू कृष्णनन्दन सिंहमे एक भए आर अधिक वेगवती भए प्रवाहित होइत रहल । बाबू कृष्णनन्दन सिंह 15 जनबरी, 2001 केँ शिवत्वमे लीन भए गेलाह ।

बाबू कृष्णनन्दन सिंहक अवदान : बावू कृष्णनन्दन सिंहक अवदान दू क्षेत्रमे अछि- समाज-सेवा एवं साहित्य-सेवा । समाज सेवाक क्षेत्रमे प्रमुख अछि राघोपुरमे अपन ड्यौढ़ीक निकट पर्याप्त जमीन आदि दान दए मिडिल स्कूलक स्थापना करब । पुन: ओतए पोस्ट आफिस खोलबाएब । राजा शिवसिंहक गढ़ आ हुनक पोखरि जे 'घोड़दौड़'क नामसँ ख्यात अछि, हिनकहि जमीन्दारीमे छलनि । राजा शिवसिंहक गढ़पर नियमित रूपसँ आयोजन होइत छल । 'घोड़दौड़' पोखरिसँ भेल आयक सदुपयोग मैथिलीक पोथीक प्रकाशनमे करैत रहलाह । एहि लेल 'हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि'क स्थापना कएल । एहि निधिसँ मैथिलीक कतेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सभक प्रकाशन भेल अछि, जे सर्वज्ञाते अछि । 'यदुनन्दन सिंह व्याख्यानमाला' स्थापित कए मिथिलाक वैदुष्य परम्परापर व्याख्यानमालाक आयोजन होइत छल । एहि व्याख्यानमालाक अन्तर्गत डा. अमरनाथ झा, डा. आदित्यनाथ झा एवं पं गिरीन्द्रमोहन मिश्रक व्याख्यान भेल, जे सभ प्रकाशित अछि । मैथिलीमे लिखित-प्रकाशित पोथीपर 'कृष्णनन्दन सिंह पुरस्कार' दए मैथिलीक लेखककेँ प्रोत्साहित करैत छलाह ।

बाबू कृष्णनन्दन सिंहकेँ बाल्यकालहिसँ अखिल भारतीय मैथिल महासभा एवं अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक कार्य-कलापमे रुचि छलनि । एक समयमे मैथिल साहित्य परिषदमे राजनेता लोकनिक प्रति आकर्षण बढ़ि गेल छल । ओकर दुष्प्रभाव मैथिली आ मैथिली साहित्यपर पड़ि रहल छलैक । परिषदक दोसर गोल राजनेताक बढ़ैत प्रभावकेँ मैथिली भाषा-साहित्यक लेल अलाभकर मानि चिन्तित छल । राजनीतिक दुष्प्रभावसँ परिषदकेँ सुरक्षित रखबाक लेल परिषदक मधुबनी अधिवेशन (1959 ई.)मे बाबू कृष्णनन्दन सिंह सभापति निर्वाचित कएल गेलाह । हिनक आर्थिक सहयोगसँ 'परिषद-पत्रिका'क प्रकाशन आरम्भ भेल । अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदकेँ अपन भवन नहि छलैक । ई एक चिन्ताक कारण छल । बाबू कृष्णनन्दन सिंह परिषदकेँ भवनक हेतु दरभंगामे दू कट्ठा जमीन कीनि दान देलनि । एहि तथ्यक पुष्टि परिषदक तात्कालीन मन्त्री डा. श्रीकृष्ण मिश्र द्वारा सरिसब अधिवेशन(1967 ई.)मे प्रस्तुत रिपोर्ट आ पं श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क 'मैथिली साहित्य परिषदक संक्षिप्त इतिहास'सँ होइत अछि । हिनकहि सभापतित्व कालमे तात्कालीन बिहार विश्वविद्यालयक सिनेटमे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक प्रतिनिधित्व आरम्भ भेलैक । बाबू साहेब उक्त सिनेटमे अनेक वर्ष धरि मैथिलीक प्रतिनिधित्व कएल । ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयक सिनेटमे मैथिली साहित्य परिषदक प्रतिनिधित्वक आधार ओएह प्रयास थिक । एहिना अखिल भारतीय मैथिल महासभाक अजमेर अधिवेशनमे बन्द भेल 'मिथिला-मिहिर'क पुनर्प्रकाशनक हेतु महाराज कामेश्वर सिंहकेँ राजी केनिहारमे ओ प्रमुख छलाह ।

मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रचारक हेतु पं जीवनाथ झासँ संयुक्ताक्षर महित पूर्ण वर्णमालाक लाखहु प्रति छपाए वितरित कएल । ई सभ किछु उदाहरण थिक जे मैथिली भाषा-साहित्य एवं मिथिलाक संस्कृतिक संरक्षणक क्षेत्रमे बाबू कृष्णनन्दन सिंहक अवदानकेँ स्मरणीय बनबैत अछि ।

साहित्य-सर्जना : मैथिली भाषा-साहित्यक सम्पोषक बाबू कृष्णनन्दन सिंहक ड्यौढ़ीमे नियमित रूपसँ विभिन्न शास्त्रक विद्वान, साहित्यकार एवं कलाकारक समागम होइन रहैत छल । ओ ओहि समागमक आदरपूर्णक रसास्वादन करैत रहैत छलाह । एहि समागमक प्रभावसँ बाबू साहबक सुप्त काव्य-प्रतिभा जागि गेलनि । मुदा, आजुक लोक जेना अक्षर धरिति काव्य-भूमिमे कूदि पड़ैत अछि, ओ से नहि कएल । ओ विभिन्न साहित्य आ शास्त्रक अध्ययनकेँ प्राथमिकता देल । इतिहास-मूगोलक ज्ञान अर्जित कएल । विश्वसाहित्यक इतिहाससँ उदाहरण दैत बरोबरि बजैत छलाह जे लगभग पचास वर्षक आयु भेलापर विचारमे परिपक्वता अबैत छैक । जीवन-जगतक अनुभव पुष्ट होइत छैक । ओहिसँ पहिने लिखित साहित्यमे भावात्मक आवेग बेसी रहैत अछि, वैचारिक स्थिरताक अभाव रहैत छैक । बाबू कृष्णनन्दन सिंह अपन एहि विचारकेँ साकार कएने छथि । लिखने छथि-

'वाद पचासक जे छल भावी, लिखबहुमे हम मोन लगाबी,
मन के आब हमहु नहि दाबी, नित्य अकवितहिं कलम चलावी ।'

एकर उदाहरण अछि 'कम्पकारिका' । भूकम्प भेल 1934 ई. मे । ओहि समय ओ मात्र 16 वर्षक छलाह । विवाहक एक सालहु नहि पूरल छलनि । मुदा 'कम्पकारिका' लिखल 1972 ई मे । ओहि प्रलयंकारी आतंकक अनुभवकेँ ओ 36 वर्ष धरि जोगौने रहलाह । लिखने छथि-

'घरमे एकसर हमही लाल, भेल विवाहो पुरल न साल ।
जीवन यौवन परसल थाल, बाँचल निश्चय कालक गाल ।'

मुदा, आइ-काल्हि हमरालोकनि देखैत छी 'कोरोना भाइरस आएल कि नहि आएल, कतेको व्यक्ति उठि बैसल छथि । भूमण्डलीकरणसँ उपजल व्यावसायिक मनोवृत्तिक प्रभावसँ नव-नव दिवस मनाओल जा रहल अछि, ओहि अवसरपर तँ कविक पथार लागि जाइत अछि । घरमे पत्नीकेँ प्रताड़ित करएबला 'महिला दिवस'पर कविता लिखैत छथि । एहन प्रचारात्मक भूखसँ बाबू कृष्णनन्दन सिंह मुक्त छलाह । ओ लिखने छथि, 'नाटकीय ढंग हम मैथिली नाटकेमे चाहैत छी ।'

बाबू कृष्णनन्दन सिंहक कृति दू प्रकारक अछि- मौलिक एवं अनुवादित । मौलिक कृतिमे अछि- 1. कम्पकारिका (1972), 2. स्वधा स्वाहा वष्टकार (1987), एवं 3. सीतारामायण (1989) । सीतारामयणक चारि खण्ड प्रकाशित अछि- 1. सीतारामयण मिथिलाकाण्ड, 2. सीतारामयण तपवनकाण्ड, भाग-1, 3. सीतारामायण तपवनकाण्ड, भाग-2 तथा 4. सीतारामायण युद्धकाण्ड ।

अनुदित कृतिमे अछि भर्तृहरिक तीनू शतकक भावानुवाद (1978)- 1. भावभर्तृहरि-शृंगारशतक, 2. भावभतृहरि-नीतिशतक एवं 3. भावभर्तृहरि-बैराग्यशतक । एकर अतिरिक्त अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक विभिन्न अधिवेशनक अवसरपर देल गेल हुनक अभिभाषणमे व्यक्त विचार सेहो विचारणीय अछि ।

कम्पकारिका- 'कम्पकारिका' 1934 ई. मे आएल विध्वंसकारी भूकम्पक वर्ण थिक । एहिमे चारि खण्ड अछि- भूमिका, भूकम्प वर्णन, भूकम्प पूर्व मिथिला, तथा भूकम्पोत्तर स्थिति इत्यादि । कविवर सीताराम झाक भूकम्प वर्णन भूकम्पक किछु वर्षक अभ्यन्तरहि प्रकाशित भए गेल छल । जेना पूर्वमे कहल अछि बाबू साहेब 36 वर्ष धरि भूकम्पक त्रासकेँ भोगैत रहलाह । लिखने छथि- 'खंड प्रलय सन छल भूकम्प, बिसरे नहि हमरा हड़कम्प ।'

बड़का भूकम्पक अवसरपर महात्मा गाँधीक आगमन भेल छल । ओहिसँ सहायता कार्यमे गति आएल । मुदा किछु व्यक्ति आएल सहायताकेँ सूड़कि मलोमाल भए गेल छलाह । तकरहु उल्लेख 'कम्कारिका'मे अछि-

'डेरा देल महतमो गाँधी, मदतिक जोर बहौलनि आँधी,
जै सँ कते सुखित भ' गेल, दाबि चोरा जे कैंचा लेल ।'

भूकम्प पीड़ित लोकक सहायताक लेल आएल कैंचाकेँ दवबाक प्रवृत्तिकेँ रोकबाक हेतु डा. राजेन्द्र प्रसादक प्रयासक उल्लेख करैत लिखैत छथि जे ओहिसँ इचना-पोठी जालमे फँसल, भाकुर-बोआर जाल फाड़ि भागि गेल । -

नाव खेब राजेन्द्रे बाबू, भाकुर बोआर डोर बेकाबू,
इचना पोठी जाले जकड़थि, वार बिलाड़ स्यार नहि सकड़थि ।'

समाजमे भ्रष्टाचार बढ़ि गेल छल । बिना घूसक कोनो काज नहि होइत छलैक, जे चलता-पुरजा छल, ओकरे काज सुतरैत छलैक, लोक-लाज सेहो समाप्त भए गेल छल-

'भ्रष्टाचार न ककरो लाज, बिना पैरवी हो नहि काज ।
निश-दिन सफले लोफर काज, तै सँ नहि क्यो आबे बाज ।'

गाम-गाममे स्थापित कुटिर उद्योग स्थानीय किछु लोकक चालि आ स्वार्थवश समाप्त भए गेल-

'राघोपुरमे छल एक फैक्ट्री, गामक लोकक नाकक नहि प्री,
रार काज नहि जैं कर, बढ़े न जनिका ऐ सँ श्री ।'

समाजमे कोन प्रकारक शोषण व्याप्त छल, तकर परिचय एहिसँ भेटेत अछि । 'कम्पकारिका'मे इहो वर्णित अछि जे समाजमे व्याप्त पर्दा-प्रथाक कारणें भूकम्पमे मृतकक संख्या बेसी छल । एहि प्रकारें 'कम्पकारिका'मे मात्र 1934 ई.क भूकम्पक आतंक आ ध्वंसक वर्णन नहि अछि, एहिमे 1962 ई. अष्ठग्रह-योग आ चीनी आक्रमणक चर्चा आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक वर्णन सेहो अछि । एहि अर्थमे कविवर सीताराम झाक भूकम्प वर्णनसँ 'कम्पकारिका' व्यापक एवं विशिष्ट अछि ।

स्वधा स्वाधा वषट्कार- ई संकटग्रस्त मिथिलामे विधि-व्यवस्थाक संस्थापक मिथिला राज्योपार्जक म.म. महेश ठाकुरपर केन्द्रित अछि । एहिमे चारि खण्ड छैक । महामहोपाध्याय महाराज महेश ठाकुरक संक्षिप्त जीवनी, महेश-अकबर संवाद, काशीक यात्रा एवं शुभंकर ठाकुरक प्रति उपदेश इत्यादि । म.म. ठाकुर एवं म.म. शुभंकर ठाकुरक वार्तालाप तँ आर अधिक गुम्फित अछि । आरम्भहिमे कवि लिखने छथि 'तथ्ये कथ्य महत्त्वक, शेष लेख जड़ तत्त्वक ।' पुन: लिखैत छथि-

'एहिमे साहित्यिक चमत्कार नहि,
मम उद्देश्य केवल अभ्युदय, परिवार,
समाज सराष्ट्र नवोदय ।'

म.म. महेश ठाकुरक प्रसंग लिखैत ठथि जे ओ धनुर्वेदक सिद्धान्तक आधारपर वैचारिक रणमे विजयी होइत रहलाह । काशीसँ बजाओल गेलापर म.म. शुभंकर ठाकुर भौरामे किलाक निर्माण कएल-

'आबि सुशोभित मिथिला, बनवाओल भौरा किला ।
मिथिला किला कमलमय रम्य सरोवर अक्षय ।'

विचार एवं दार्शनिकतासँ भरल 'स्वधा स्वाहा वषट्कारक शैली आ प्रयुक्त शब्दावली संश्लिष्ट एवं क्लिष्ट अछि । सर्वबोधगम्य नहि अछि ।

सीतारामायण : मैथिलीमे रामकाव्यक परम्परा कवीश्वर चन्दा झासँ आरम्भ भेल अछि । महाकवि लालदास ओहिमे सीता तत्त्वक प्रधानता दए विस्तार कएल । तकर बाद रामक अपेक्षा सीतापर केन्द्रित बेसी साहित्यक सर्जना भेल । राघोपुर ड्यौढ़ीमे राम-दरवारक मूर्तिक निर्माण कराए पूर्ण भक्ति-भावसँ रामनवमीमे पूजा-अर्चना आ उत्सव प्रतिवर्ष होइत छल । ओहि अवसरपर गायक, नर्तकक संग विद्वानलोकनिक आगमनसँ वातावरण सीता-राममय रहैत छलैक । एहि सभक प्रभाव निश्चित रूपसँ बाबू साहबपर पड़ल होएतनि । ओ विशेषत: माइक प्रेरणासँ 'सीतारामायण'क रचना कएल । एतहु मातृशक्तिएक प्रधानता अछि । आन रामायणमे पहिल अछि बालकाण्ड । एहिमे पहिल अछि मिथिलाकाण्ड । ई नामकरण मिथिलाक प्रति अतिशय प्रेम-भावहिक द्योतक थिक । एहि काण्डक वर्णित प्रमुख विषय अछि- विश्वामित्र-अगस्त्य संवाद, विश्वामित्र-वशिष्ठ संवाद, विश्वामित्रक महाराज दशरथसँ याचना, विश्वामित्र-राम संवाद, तारका वध, आदि । अन्त होइत अछि श्रीसीतारामक विवाहक संग । एहिना प्रकाशित अन्यहु काण्डसभ विभिन्न उपशीर्षकमे विभाजित अछि । सीतारामायणक प्रकाशित काण्ड सभसँ कविक जे दृष्टिकोण स्पष्ट होइछ से थिक, सीताराममे भक्ति, रामक अपेक्षा सीताक महत्ता, मिथिलाक गौरवगाथा, भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रादिक महत्ता तथा देशक हितमे आयुर्वेदे नहि धनुर्वेद अर्थात स्वास्थ्य एवं शक्ति आवश्यक अछि । ओ लिखैत छथि-

'वैह विद्या जे राख स्वतन्त्र, परतन्त्र कुभय नहि कथमपि तन्त्र ।
सुराज विकाशक सर्व, केवल नाशे दुष्ट कुगर्व ।
ने व्यर्थ विवाद घमर्थन, स्वच्छ बुद्धि सुख वर्द्धन ।
स्वाधीन स्वास्थ्य तन मन, देश सुरक्षा ज्ञानो जन ।
वेदांगे आयुर्वेद, सब जाने किछु धनुर्वेद ।।'

जेना 'कम्पकारिका'मे अथवा 'स्वधा, स्वाहा वषट्कार'मे शास्त्र-पुराण, ज्ञान-विज्ञान इतिहास-भूगोल आ ओहि प्रसंग कविक विचार अछि, ओहिना 'सीतारामायण' मात्र भक्तिक अभिव्यक्ति नहि थिक, सीता-रामक कथाक माध्यम देश, काल आ पात्रक सर्न्भमे कविक प्रतिक्रियाक अभिव्यक्ति थिक । मुदा, ई अभिव्यक्ति सहज-सरल आ सुबोध नहि अछि ।

अनुवाद : संस्कृत साहित्यमे 'भर्तृहरिशतकम् महत्त्व अछि । एहिमे तीन शतक छैक- नीतिशतकम्, शृंगारशतकम्

आ वैराग्यशतकम् । ओकरहि भावानुवाद थिक 'भावभर्तृहरि । भावानुवादित तीनू शतक पृथक-पृथक प्रकाशित अछि । नीतिशतकक आरम्भमे अनुवादकक एकपत्र अछि । ई ओकर भूमिका थिक । वैराग्य शतकसँ एक अनुवाद उदारणार्थ प्रस्तुत अछि–

'क्यो बढ़थि वैराज्ञ पथपर, नीतिएमे क्यो घुमथि वा,
शृंगारमे वा रमथि क्यो जन, जनिक चित्तक भूमि जेहन ।'

भर्तृहरिक नीति शतकक मैथिली अनुवाद मैथिलीक अनुवाद साहित्यक श्रीवृद्धि भेल अछि ।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक सरिसव अधिवेशनक अभिभाषणमे मैथिली भाषा, मैथिली साहित्य, मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसार एवं सरकारक मैथिलीक उपेक्षाक प्रसंग व्यक्त विचार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय अछि । ओहिमेसँ किछु बिन्दु एहि प्रकारें अछि–

1. भाषा-विभाषाक प्रश्न मैथिलीक सभसँ पैघ समस्या अछि । किन्तु से हम तखनहि टा मानि सकैत छी जँ भाषा वा साहित्यक प्रेम हमरा किंचितो नहि हो । नहि तँ ई समस्या कोनो समस्ये नहि थिक । वा जँ थिके तँ एकर समाधान राजनीतिक कूटनीतिक अथवा शास्त्रार्थनीतिसँ नहि भए सकैछ । एहि लेल केवल स्वभाषाक प्रेम चाही । मैथिलीक माधुर्य-बोध चाही । प्रेमपूर्वक अपनो भाषा पढ़ी-पढ़ावी, सएह टा एकर निराकरण भए सकैछ । स्वभाषाक आदर्श स्वरूपक प्रति श्रद्धा रहने कालान्तरमे एकर समाधान भए जाएत । अन्यथा बखेड़ाक रूप धारण कए लेत ।
2. मैथिलीक साहित्यकारमे गुटबाजी ततेक बढ़ि गेल अछि जे अपन गुट्टसँ बाहर समानधर्माक खोजो आब निरर्थक भए गेल अछि ।'
3. जन गणकेँ केवल बोटे टा धन रहि गेल छनि । ओ ततबहिसँ सुखी छथि ।
4. ओ उद्धत आन्दोलनक घोर विरोधी छथि । मुदा, जखन हिन्दीक पुरोधालोकनि जनताक भाषा मैथिलीकेँ संवैधानिक रूपसँ भारतक अन्य भाषाक समकक्ष नहि देखए चाहत छथि तँ तखन विद्रोह क्रान्तिक ज्वालाक आवाहनक इच्छा भए जाइत छनि ।
5. बाबू कृष्णनन्दन सिंह अङरेजीक दृष्टिसँ मैथिली साहित्यक समालोचनाकेँ सामाजिक क्षेत्रक कुरीति जकाँ साहित्यिक क्षेत्रक एक कुरीति मानल अछि । एकरा ओ परम घातक मानैत छथि ।

राघवाचार्य आ बाबू कृष्णनन्दन सिंहमे अनेक समानता अछि । राघवाचार्य लिखैत छथि 'क्रान्तिक द्वारा शान्ति सम्मान पबै अछि ।' आ बाबू कृष्णनन्दन सिंह लिखल अछि–

'बुद्धि बाहु के बाद, शस्त्रे प्रगति निर्विवाद
बाहु बाद अस्त्रेक विचार तैं धनुर्वेद ऋषि उचार ।'

अर्थात् शक्ति सम्पन्न होएब आवश्यक अन्यथा अर्जित सम्पदाक संरक्षण सम्भव नहि होएत । एहिसँ ई स्पष्ट अछि जे कोनो राष्ट्र अपन राजनीतिक स्वतन्त्रताक रक्षा आ सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षण, बिना शौर्य-शक्तिक नहि कए सकैत अछि ।

अन्तमे ।

जाधरि लोक विद्वानकेँ सुनने नहि रहैत अछि, जा धरि विद्वानक सम्पर्कमे आएल नहि रहैत अछि, ताधरि होइत रहैत छैक जे हमरासँ बेसी केओ जनिते नहि अछि, सबसँ बड़का ज्ञाता हमहि छी । ओ अपन किंचितो प्रशंसापर फूलि कुप्प भए जाइत अछि मुदा जखन गुणी-विद्यावन्तसँ भेंट होइत छैक, हुनका सभकेँ सुनैत अछि, कतेक पानिमे छी, तकर बोध भए जाइत छैक । इएह हाल एहि संगोष्ठीक अन्तमे हमर होएत । आइसँ दू दिनधरि एकसँ बढ़ि एक विद्वान आ शोधकर्ता राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णनन्दन सिंहक साहित्यपर बिटिआ-बिटियाकेँ चर्चा करताह, से सब सुनि हमर आँखि खूजि जाएत, तखन हमरा बुझबामे आओत जे राघवाचार्य आ बाबू कृष्णनन्दन सिंहक उपलब्ध साहित्यकेँ हम कतेक बूझि सकलहुँ अछि । एहन स्थितिक प्रसंग भर्तृहरि अपन नीतिशतकमे लिखने छथि । ओकर अनूदित पंक्तिक संग हम अपन वक्तव्य समाप्त करैत छी–

'जैह कनेको हम किछु बूझल, हाथी सम भ' मत्त ।
मानल सर्वज्ञे हम भेलहुँ, मनकेँ कहल अगत्त ।
बुद्धिबलासँ भेने संगति, जखन बुझल किछु असली वात ।
लगले मूर्ख प्रमाणित अपनहि, गौरव, गरमी सबटा कात ।।'

–भावभर्तृहरि– नीतिशतक

फ्लैट नं. 24, झेलम अपार्टमेंट,
पाटलिपुत्रपथ, राजेन्द्रनगर, पटना-800016
email : rnharaman@gmail.com

किछु देखल, किछु सुनल

–कीर्तिनाथ झा

किरणजीक मृत्युक 32 वर्ष सँ बेसी भ' गेल छनि। हुनकर समकालीन लोकनि तँ आब दिवंगत भ' गेल छथि मुदा हुनकर सहकर्मी मे सँ किछु आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक आन्दोलन मे फाड़ बान्हि संग चलनिहार एखनहुँ वर्तमान छथि। हमरा लोकनिक पीढ़ीक किछु व्यक्ति अवश्य किरणजीक मैथिली अभियानक प्यादा वा Foot Soldier रहल हेताह। मुदा हमरा सेहो गौरव प्राप्त नहि अछि। मुदा एक अर्थ मे हम किरण जीक समानधर्मा अवश्य छी मुदा से पछाति। एखन उद्देश्य अछि किरण जीक सन्निटक रहि जे किछु देखल वा हुनका मुँहे जे सुनल तकर अभिव्यक्ति।

हम जहिया ककहरा पढ़व शुरू कएने हएब तहिया किरण जी 'किरण' जीक रूपेँ प्रसिद्ध भए चुकल छलाह। तेँ हुनकर छवि केँ हमरा समक्ष एकटा प्रेरणा-पुंज वा आदर्शक रूप मे प्रतिस्थापित कएल गेल छल हमर दिवंगता माता द्वारा। तकर कारणो छलैक। हुनका दृष्टिसँ किरण जी एकटा एहन योद्धा छलाह जे सहजहिं स्थापित मान्यताक छहरदेवाली केँ अपन गतिक हेतु अवरोध मानवा ले तैयार नहि होइत छलाह। एहि तथ्यक पक्ष मे अनेक प्रमाण सुनने छलहुँ। पहिल, सुनल जाइछ जे किरण जी अपन पित्तीक भविष्यवाणी रहनि जे हिनका जँ विद्या होइन तँ तरहथ्थी मे केश चरितार्थ हैत। मुदा किरण जी अपन परिश्रमक बले उच्चशिक्षा कोन श्रेणी धरिक बटिखारा के भजारलनि से सर्वविदिते अछि। एहि सदर्भ मे किरण जीक मुँह सँ सुनल दूटा गप्प आओर पहिल, किरण जीक जन्म जाहि युग मे भेल छलनि ताहि युग मे अंग्रेजी शिक्षा ने सुलभ छलैक आ ने सर्वग्राह्य। मुदा ई अपने दूटा जेठ भाइ लोकनि जकां रजौर (वाङ्लादेश) जा कए राजा टंक नाथ चौधरीक संरक्षण मे मैट्रिक पास केलनि। कहथिन 16म वर्ष मे ABCD सीखने रही।... पहिने संस्कृत पढ़बाक-घोखबाक हिस्सक छल। रजौर गेला पर अहल भोरे उठि जोर-जोर सँ पाठ घोखए लगै छलहुँ। राजा टंकनाथ चौधरीक आवास लगे मे रहनि। मुदा हमरा लोकनि केँ कोनो वर्जना नहि। एकदिन राजाक कोनो निकट संबंधी कहलनि "एतेक भोरे एतेक जोर-जोर सँ पढ़ैत छी। राजा केँ निन्न मे बाधा हेतनि तँ विदा कए देताह। बस, हमर जोर-जोर सँ पढ़ब बन्न भ' गेल। दिन दूइएक पछाति राजाक नजरि हमरा पर पड़लनि। पुछलनि-नत्थू, (किरण जीक दोसर नाम) आइ-काल्हि पढ़ैत नहि छह ? हमरा हुनकर सम्बन्धी जहिना हिदायत देने रहथि, सुना देलिअनि। राजा हँसए लगलाह। कहलनि "जाह तो आओर जोर-जोर सँ पाठ पढ़ह।"

दोसर गप्प : बहुत दिन पछातिक। केओ हितैषी वा मित्र पुछलखिन किरण जी अहाँ केँ MA, Ph.D आदि परीक्षा देबाक की प्रयोजन ?' अर्थात् अहांक योग्यता सर्वविदित अछि ताहि पर किरणजीक उक्ति छलनि 'से तँ जे बूझैए तकराले ने। जे नहि बूझैए तकरा ले भजारि देलिऐ ए।"

किरण जीक योद्धा प्रवृत्तिक वा प्रकृति सँ योद्धा हएबाक आओर उदाहरण छनि, सुनल अछि जे युवावस्था मे किरणजी कालाजार सँ बहुत दिन धरि मृयमाण भेल पड़ल रहथि। मुदा, परिवार जन भले आस त्यागि देने होथुन अदम्य जिजीविषा आ अजेय आन्तरिक ऊर्जाक बले किरणजी ओहि युग मे मृत्यु पर विजय पओने छलाह जहिया मलेरिया, कालाजार आ यक्ष्मा सँ लोक अतत्तह मरै छल।

आर्थिक मोर्चा पर सेहो प्रारंभिक जीवनमे, सुनल अछि, किरण जीक परिवार झमारल छलनि मुदा अपन बाहुवले आ मितव्ययी स्वभावें किरणजी एकटा शिक्षकक वेतन पर अपन आर्थिक परिस्थिति केँ सुदृढ़ करबा मे सक्षम भेल छलाह। एहि अर्थ मे लगैछ किरण जीक दू टा निम्नोक्त पांती सब हुनक अपने जीवन कथा कहैछ–

की थिक भाग्य विधाता के अछि ?
सब सँ पौरुष, हमर प्रबल अछि।
(कतेक दिनक बाद पृ.2)

दाढ़ी मोछ न पुरुखक लच्छन।
ढेपा, चेपा, काकर, पाथर, कांट कूस ओ जंगल झांखुड़
चूरि-चारि ओ थूरि थारि पथ, पुरुख बनाबय चिक्कन
(बिजेता विद्यापति, पृ. 37)

किरण जी व्यवसायेँ आरंभ मे वैद्य छलाह। मुदा हमरा लोकनि अपन ज्ञान-प्राण मे हुनका एहि व्यवसाय मे

देखने नहि छिअनि । मुदा जखनि हम दरभंगा मे पढ़ैत रही तँ प्रतिदिने भेंट होइत छल । ओहि समय मे भान भेल छल जे किरण जीक चिकित्सा शास्त्रक ज्ञान आ अनुभव दुनू गंभरि छलनि । प्राय: चिकित्सा व्यवसाय छूटि गेलनि तकर कचोट सेहो रहनि । तेँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे आ कलकत्ता विश्वविद्यालयक अपन जीवनक कदाचित् चर्चा करथिन ।

एकटा 'गप्प' काशी मे मैथिली केँ विश्वविद्यालय मे प्रतिष्ठित करबाक संदर्भ में कहथिन:

–पाठ्यक्रम मे मैथिलीक स्वीकृति ले महामना पं मदन मोहन मालवीय जी, (तत्कालीन उपकुलपति) लग गेल रही । कहलनि–

–मैथिली और हिन्दी मे क्या अंतर है ?

–पंडित जी अंतर है ।

–तो सुनाओ ।

हम तुरत सुनबए लगलिअनि:

ई नेना अछि परम उकाठी
भागि पड़ाएल हमर फराठी ।

–यह 'उकाठी' फराठी क्या है ? मालवीय जी पुछलनि,

–पंडित जी यही तो अंतर है ।

भ' सकैत अछि ई गप्प किरणजीक आनो मनीषी व्यक्ति केँ सुनल कहथिन:

'वैदागरी पढ़ि कए गाम आएल रही ।

दरवज्जा पर...भेटलाह । कहलनि वैदागरी पढ़लहुँ–ए ।

आ से कहैत अपन गट्टा आगू बढ़बैत कहलनि:

हमर नाड़ी देखि कए कहू तँ हमरा कोन रोग अछि ?

–'हम पशुचिकित्सा नहि पढ़ने छी' हम कहलिअनि ।

पुछनिहार अपरतिब भ' गेलाह ।'

मुदा एतबा अवश्य जे किरणजी केँ चिकित्सा व्यवसायक प्रति लगाब छलनि । 1973 मे जखन हमर नाम दरभंगा मेडिकल कालेज मे एम.बी.बी.एस. मे लीखल गेल तँ कहने रहथि :'हमर अपन चुनाव भेल छल दरभंगा मेडिकल स्कूल मे नाम लिखेबाक लेल । मुदा पचास रुपैया नहि छल तेँ नाम लिखबितहुँ से नहि भ' सकल । आइ अहांक नाम लिखल गेल तँ ओ मनोरथ पूर्ण भ' गेल ।'

मुदा हमरा हरदमे ई प्रश्न खिहारैत छल जे एहन तीक्ष्ण बुद्धि आ चिकित्सा शास्त्रक विलक्षण ज्ञानक धनी चिकित्सक एहन व्यवसाय सँ किएक बिमुख भ' गेलाह । एकबेर पुछलिअनि ।

–अहाँ चिकित्साक व्यवसाय किएक छोड़ि देलिऐक ?

–की करितैएक । एहि इलाका मे तहिआ अत्यन्त गरीबी रहैक ।

जतए चिकित्सा करए जाइत छलहुँ औषधिक मूल्य आ वैद्यक फीस देबाक लेल लोक के रोगी–नेनाक काड़ा–माठा वा खुट्टा पर माले गाए बेचब वृत्ति होइत छलैक । घर मे औषधि किनबाक मूल्य नहि, पथ्य ले अन्न नहि ।

चिकित्सा की करितिऐक ?

फलस्वरूप चिकित्सा व्यवसाय छोड़ि शिक्षणक व्यवसाय मे लागि गेलाह ।

किरण जी शिक्षक रूप मे केहन छलाह से तँ ओएह सब कहताह जे हुनका सँ पढ़ने छथि । हमरा से सौभाग्य नहि । मुदा हुनक दृष्टि एतेक स्पष्ट रहनि आ कोनो विषय पर उपलक्षण एहन दितथि जे उक्ति अएना जकां झलकि उठैत ।

ओ अपन दरभंगा प्रबासक अवधि मे प्राय: प्रतिदिने हमरा लोकनिक डेरा धरि सांझ मे अबैत छलाह । एक दिन सब गोटे हुनका बीचमे कए गप्प करैत छलाह । एकटा नेना सेहो थोड़ेक दूर पर पढ़ैत छलाह । नेना केँ जखनि दू–तीन बेर कहल गेलनि 'अहां पढ़ू । तँ किरण जी कहलथिन: पोथी–किताब घास नहि थिकैक जे मालक आगू फेकि दिऔक । खा लेतैक । तेँ पढ़ाएब आवश्यक छैक ।"

एहने एक बैसाड़क पछाति किरण जी रहमगंज स्थिति अपन डेरा दिस विदा भेल रहथि । सांझ सँ रातिक 10 करीब भ' गेल छलैक । मेडिकल कालेजक गेट लग रिक्शा लेबाक बिचार भेलनि । एकटा रिक्शावालाकेँ पुछलखिन : चलबह ?

–नै

हमरा लोकनि कालेजक छात्र रही । कहलिऐक- 'किएक नहि ? आ

छरपि कए रिक्शा पर बैसि गेलहुँ । कहलिऐक- 'चलह !'

मुदा ओ (किरणजी) कहलथिन । 'छोड़ि दिऔ ।'

-'किएक नहि जेतैक ?' हमरा लोकनि प्रतिवाद केलिअनि', एकरा सभके एहने हिस्सक छैक ।

नहि । नहि जेतैक तँ नहि जाऊक । ओकरो अपन स्वतंत्रताक एतबा अनुभूति तँ होब दिऔक ।' कहि किरणजी आगू बढ़ि गेलाह ।

आइओ कहैत छी मानवीय स्वतंत्रताक प्रति हुनकर एहन प्रतिबद्धता हमरा लोकनि केँ चमत्कृत अवश्य कएलक ।

तहिना छलनि किरण जी अपन माटि-पानि-देश-भूमि-पर्वत-नदी सबसँ प्रेम जे धर्म-पुण्यक अवधारणा सँ दूर आत्मवत् अनुभूति सँ अनुप्राणित छलनि । एकबेर मोन अछि हमर माता स्व० विदेश्वरी देवी (किरणजीक छोटि बहिन) गंगा स्नान ले विदा भेलि छलीह । लोहना रोड स्टेशन पर (किरणजीक बास सँ किछुए दूर) हमरा लोकनि बैसल रही । ओ हमर माता सँ भेंट करए एलखिन । गप्प कए जेबा काल कहलखिन: 'अच्छा, गंगा मे हमरो ले एक डूब द' देबनि ।'

तहिआ ई गप्प आश्चर्यक लागल छल । मुदा जखनि पछाति किरणजी'क 'पराशर' प्रकाशित भेलनि आ पढ़लहुँ:

'जय जय धरती मानव जीवन केर आधार प्राण
जय जय अनिल, सलिलि, जय सूर्य-चान जय आसमान ।
जय-जय पर्वतराज हिमालय, तोहरे देहक
कण-कण सँ अछि बनल हमर सभक ई-देश ।
कोशी, कनकइ, कमला, गंडक, गंगा
द्वारा सनेस जकां पठा माटि
एकरा छह पुष्ट करैत
अपन शरीरक घाम सदृश हिमजल सँ छह पटबैत
पुनि कहिओ-कहिओ तमसैल
जकां भूकम्प मचा ध्वंसो छह क दैत
तेँ तीरभुक्ति मिथिलाक थिकह तोँ
ब्रह्मा-विष्णु महेश ।''
तँ भ्रान्ति दूर भ' गेल ।

(किरणजीक सान्निध्यमे मैथिली अकादमी पत्रिका वर्ष-29 अंक-1 अप्रैल-दिसम्बर 2006)

धरोहर

श्री मैथिली साहित्य समिति काशीहिन्दू विश्वविद्यालय

सञ्चालक मण्डल

पं. श्री आनन्द झा न्यायाचार्य्य	पं. श्रीवामदेवमिश्र व्या० शास्त्री
पं. श्रीदेवचन्द्र झा व्या० शास्त्री	पं. श्रीवैद्यनाथ मिश्र सा० शास्त्री
पं. श्रीश्यामानन्द झा व्याकरणाचार्य्य	पं. श्रीप्रोधनारायण चौधरी
पं. श्री जगन्नाथ झा व्या० शास्त्री	पं. श्रीचन्द्रकान्त मिश्र वेद शास्त्री
डा. श्री काञ्चीनाथ झा आयुर्वेदाचार्य्य ।	

मैथिली साहित्य समितिक उद्देश्य महान आदर्श आदरणीय अछि । समितिक सञ्चालक लोकनिक श्रमदेखि पूर्णविश्वास होइछ जे ई लोकनि सदा सावधानता पूर्वक, सोत्साह नि:स्वार्थभावै कार्य्य करैत जयताह ।

अतएव प्रत्येक मैथिल महानुभावसँ एहि समितिकाँ यथाशक्ति सहयोग प्रदान करबाक सानुरोध प्रार्थना । जाहिसँ जीर्ण प्राय मैथिली साहित्यक शरीरमे पुन: आओत नवजीवन ।

इतिशिवम् ।

जयपुर राजपण्डित-महामहोपदेशक
श्री मधुसूदन झा- विद्यावाचस्पति:

सरिसब-पाही

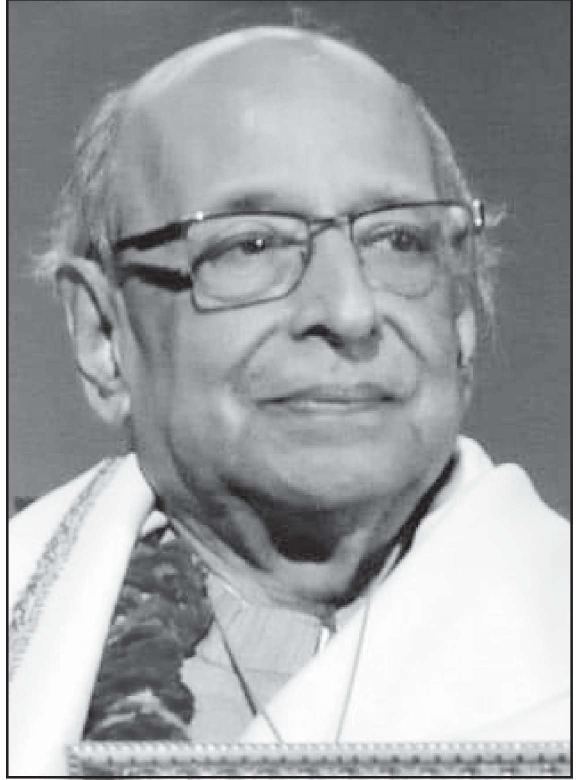
प्रोफेसर डा. हेतुकर झा

(01 फरवरी 1944-19 अगस्त 2017)

श्रद्धाञ्जलि

-डॉ. सतीरमण झा

अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिक प्रसिद्ध समाजशास्त्री एवं मैथिलीक वरेण्य साहित्यकार, श्रेष्ठ शोध प्रज्ञ, लेखक, सम्पादक, शोध मार्गदर्शक, पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, महाराज कामेश्वरसिंह कल्याणी फाउण्डेशन, दरभंगाक प्रबन्ध न्यासी, डेढ़ दू सोढ़हि शोध ग्रन्थ ओ साहित्यिक ग्रन्थक रचयिता, सबा सौ सँ अधिक शोधालेख'क ओ दर्जनो शोध छात्र'क मार्गदर्शक, बिहारक सामाजिक ओ सांस्कृतिक गहन अध्येता, मिथिलाक पञ्जीशास्त्रक गहन अन्वेषक, प्रखर प्रवक्ता प्रोफेसर डा. हेतुकर झा एक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न मैथिल पुत्र, एक सहज-सौम्य-सुशील-मृदुभाषी-''मुखं प्रसन्नं विमला च दृष्टिः कथानुरागो मधुरा च वाणी......'' के चरितार्थ करैत महान् मूर्धन्य विद्वान् रहथि । जे विविध कीर्ति सँ बौद्धिक जगतमे चिरस्मरणीय रहताह- ''कीर्तिर्यस्य स जीवति'' ।



सरिसबक कुजिलवार भखरौलीमूलक प. मनमोहन झाक पौत्र ओ बलदेव झा प्रसिद्ध क्षेमकर झाक एकमात्र सुपुत्र प्रोफेसर डा. हेतुकर झाक जन्म प्रमाणपत्रानुसार 01 फरवरी 1944 ई.मे सरिसबमे भेल रहनि आ वास्तविक जन्मदिन 05 मार्च के सोल्लास मनाओल जाइत छनि ।

डा. झाक माय मंगरौनीक फनदहवार खनाममूलक हंसमणि झाक कन्या मोहिनी झा अत्यन्त धर्मपारायणा ओ पिता बलदेव झा सन्त स्वभावक अत्यन्त उदार दयालु रहथि । माय बापक धर्मसँ डा. झा सहोदर पाँच भाइ-बहिन भेलाह । सहोदर चारि ज्येष्ठ बहिनमे सबसे ज्येष्ठ कामाख्या मिश्र (पति- खरतर मिश्र प्रसिद्ध धर्मनाथ मिश्र-पाहीटोल), उमा झा (ई. यदुनाथ झा- उजान), मंचूर झा प्रसिद्ध सावित्री देवी (ई. रमेश झा- हाटी) ओ सुशीला झा (डा. मधीरनाथ झा, उजान) तथा सबसँ छोट भाइमे असगरे डा. हेतुकर झा प्रसिद्ध बौआ रहथि ।

डा. झा पटना विश्वविद्यालयसँ समाजशास्त्र विषयसँ बी.ए. प्रतिष्ठा प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान संग 1965मे उत्तीर्ण भेलाह आ राष्ट्रीय मेधा पुरस्कार सँ सम्मानित भेलाह । पुनः पटना विश्वविद्यालयसँ समाजशास्त्र विषयसँ एम.ए. प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान संग उत्तीर्ण 1967 मे भेलाह आ पटने विश्वविद्यालय सँ 1980 मे पी-एच.डी सँ अलंकृत भेलाह ।

1968मे पटना विश्वविद्यालयमे समाजशास्त्र विभागमे व्याख्याता पद पर योगदान देल आ प्रोफेसर पदसँ समाजशास्त्र विभागक अध्यक्ष भए जनवरी 2004 मे सेवा निवृत्त भेल रहथि ।

पुनः 2005मे विजिटिंग प्रोफेसर भ' समाजशास्त्र विभाग एम.डी. यूनिवर्सिटी रोहतक मे ओ, 2009 सँ विजिटिंग प्रोफेसर भ' समाजशास्त्र विभाग बी.एच.यू. वाराणसीमे रहलाह ।

डाक्टर झा कें यू.एस. फाउण्डेशन इन इण्डिया दिससँ "Fulbright Scholarship" 1972 मे भेटल रहनि ।

यू.जी.सी. टीमक सदस्य रहथि । ICSSR क 5th and 6th कमिटीक सदस्य रहथि । अनेक प्रतिष्ठित संस्था/संस्थान सँ सम्मानित भेल रहथि ।

अध्ययन-अध्यापन, शोध, लेखन संग गम्भीर चिन्तन संग हिनक लेखनी अनवरत चलैत रहल । मिथिला ओ मातृभाषा मैथिलीक प्रति स्नेह हिनक विशेष रहल ।

मैथिली भाषामे प्रकाशित हिनक 1. चेतिका- मैथिली कविता संग्रह, पटनासँ 1967मे प्रकाशित भेल । 2. परिस्थिति- दीर्घ कविता संग्रह पटनासँ 1982मे प्रकाशित, 3. उपनिवेश कालीन मिथिलाक गाम ओ गामक निम्न वर्ग-1988मे प्रकाशित, 4. पराती-उपन्यास 1912 ओ 5. ककरा लेल अरजब हे- मैथिली उपन्यास 1916मे प्रकाशित ओ प्रशंसनीय अछि ।

शोध परक, मौलिक ओ सम्पादित 17 ग्रन्थ अंग्रेजी भाषामे अछि-

1. Man in Indian Tradition -2002
2. Perspectives on Indian Society and History -2002
3. Mithila in the Nineteenth century : Aina - i-Tirhut of Biharilal 'Fitrat' edited 2001
4. Amarnath Jha : makers of Indian Literature Series 1997
5. A Glimpse of Tirhut in the second half of the Nineteenth century : Riaz -i- Tirhut of Ayodhya Prasad ' Bahar ' edited 1997
6. Ganganath Jha : makers of Indian Literature Series. 1992
7. Social Structures of Indian villages 1991
8. Colonial context of Higher education in India -1985
9. Social Structures and Alignments : A study of Rural Bihar 1985
10. Autobiographical Notes of Mahamahopadhyaya Dr. Sir Ganganath Jha edited 1976
11. Tirhut in Early Twentieth Century : Mithila Darpan of Rasbihari Lal Das edited 2005
12. Courage and Benevolence - Maharaja Kameshwar Singh edited 2007
13. India : Some Crucial Questions edited 2008
14. People of India edited
15. Maithili Chrestomathy and vocabulary by George A. Grierson edited 2009
16. A Liberal Hindu Aristocrat : Maharajadhiraja Rameshwar Singh of Darbhanga edited
17. Historical Sociology in India

आदि हिनक सम्पादित एवं मौलिक पुस्तक प्रकाशित अछि ।

डा. झाक करीब सबा सौ सँ ऊपर विभिन्न रिसर्च जर्नलमे प्रकाशित शोध निबन्धादि अछि ।

हिनक मार्गदर्शनमे एग्यारह शोध छात्रकें Ph.D. उपाधि सँ पटना विश्वविद्यालय सँ विभूषित कएल गेल ।

हिनक मिथिलाक पञ्जीक विशेष अध्ययन, बिहारक लोक कला एवं संस्कृतिक शोधात्मक अध्ययन आदि अनेक बहुमूल्य काज चलि रहल छल, जकर अन्वेषण आवश्यक अछि ।

डा. हेतुकर झाक विवाह मधुबनी रॉटी ड्योढ़ीक बाबू चन्द्रधारी सिंहक ज्येष्ठ पुत्र स्व. शशिधारी सिंहक ज्येष्ठ कन्या श्रीमती इन्दिरा झा संग भेल । श्रीमती इन्दिरा झा कौलिक मर्यादाक संग सतत डा. झाक बौद्धिक ओ सामाजिक अवदानमे समर्पण भावसँ सहयोग हेतु तत्पर रहलीह । जाहिमे तीन सुयोग्य सुपुत्र मे ज्येष्ठ श्री तेजकर झा प्रसिद्ध श्यामजी (पत्नी श्रीमती अजिता झा लालगंजक), दोसर श्री श्रुतिकर झा प्रसिद्ध रंजीत (पत्नी श्रीमती प्रियारानी-उजानक) ओ तेसर श्री मधुकर प्रसिद्ध विवेक (पत्नी-श्रीमती पापिया सिकदार) तीनूसँ क्रमशः पौत्री सुश्री युविका झा, पौत्र श्री सुद्योतकर झा, पौत्र श्री श्रेयष्कर झा आदि सन्तान सँ परिवार वर्तमान वर्धमानमे छनि ।

मैथिलक सुदृढ़ स्तम्भ कालक चपेटमे आबि दिनांक 19-08-2017 के नश्वर शरीर त्यागि शिव सायुज्य प्राप्त कएलनि । ओहि महान् यशस्वी मूर्धन्य समाजशास्त्री विद्वान् ओ साहित्यकारकें सतीरमणक सादर नमन आ विनम्र श्रद्धाञ्जलि भावकुसुमाञ्जलि

गंगौली, उजान

आचार्य-प्रवर डा० रामदेव

–डा. सुनीता झा

पिण्डश्याम वर्ण सीटल काया, स्पष्टवक्ता, वाणीमे मधुरता, हँसमुख डा० रामदेव मिथिलाञ्चलमे अपन वाक्‌पटुतासँ प्रसिद्ध रहताह । ई मुँहे̐ पर ठाहि-पठाहि स्पष्ट बात बाजथि, प्रिय लागय तँ नीक, नहि लागय तँ धनि सन ।

भाय, केदार सँ जखनि रामदेव बाबू पर आलेख लिखबा लेल, आदेश भेटल । हम डा० रामदेव पर आलेख लिखबाक कलम उठएबा काल, ई अनुभव कए रहल छी जे सूर्यके̐ दीप देखाए रहल छी ।

दरभंगा जिला मुख्यालय लहेरियासरायसँ पूव रेलवे लाइनक ओहिपार कविलपुर गाम, जे आब शहरी क्षेत्रमे छैक, ओहि गाममे गृहस्थ परिवारक कपिलेश्वर झाक पहिल संतान रूपमे रामदेवक जन्म, अपन मातृक सहोड़ा (हायाघाट प्रखण्ड)मे भेल छल । हिनक जन्म तिथि श्रावणी पूर्णिमा 1343 साल (ई. 1936क अगस्त मास) । रामभक्त मातामह पं. जीतकाल मिश्र, हिनका नाम रखलन्हि 'रामदेव' । रामदेवक वाल्यकाल अपन मातृक सहोड़ेमे बीतल । रामदेवक मातृकमे सब दुद्धा वैष्णव, बाल गोपालक सेवक । एहि वैष्णव धर्मक प्रभाव बालक रामदेव पर सेहो पड़य लगलन्हि । सामान्यतया बच्चा मातृकक दुलारसँ दूरि भए जाइत छैक, यद्यपि रामदेवक मतामह पं. जीतलाल मिश्र बड़ सचेष्ट रहथि । ओ अपन दौहित्रके̐ शिक्षित-संस्कृति करबाक लेल अति साकांक्ष्य रहथि । उपनयनक बाद अपन दौहित्र रामदेवके̐ अपना लग बैसाय नित्य सन्ध्यावन्दन, गायत्री जप एवं पूजा-पाठ करबथि । नाना प्रकारक श्लोक, रामदेवके̐ कण्ठस्थ कराओल गेलन्हि, एकरे प्रभाव भेल जे दिन-प्रतिदिन संस्कारमे वृद्धि होइत गेलन्हि ।

रामदेवके̐ मातृकमे खड़ी भेलन्हि । पाँच वर्षक अवस्थामे हिनक नामांकन सहोड़ा लोअर प्राइमरी स्कूलमे करबाओल गेल ।

रामदेवक पिता कपिलेश्वर बाबू के मनमे ई शंका होमय लगलन्हि, जे हमर जेठ बालक रामदेव, मातृकमे रहि ललववुआ भए जाताए । ओ अपन बालक के̐ कविलपुर लए अनलथिन्ह । डेरासँ नजदीक खाजासराय विद्यालयमे नामांकन करबाए देलथिन्ह ।

खाजासराय विद्यालयमे बालक रामदेवके̐ नव वातावरण भेटलन्हि । ओतय सर्व धर्म, सब संपदाय, सब जातिक मैथिल समाजक छात्रक संग पढ़बाक सुअवसर भेटलन्हि । मिथिलाक एहि सर्वजन समाज एवं सम्प्रदायक सानिध्यक लाभ रामदेवक साहित्यिक, मानसिक विचारधारामे परिवर्त्तन अनलक ।

1948 ई.मे मिडिल वोर्डक परीक्षा पास कएलाक बाद 1949 ई.मे सरस्वती हाइस्कूलमे रामदेवक नाम लिखवाओल गेलन्हि । उत्साहक संग रामदेव उच्च विद्यालय जाएब प्रारंभे कएने रहथि, हठात् एकटा नव आफत आबि गेलन्हि । फरीक दिसिसँ देल गेल मानसिक प्रताड़नो̐ सहैत-सहैत, हिनक पिता कपिलेश्वर बाबू रुग्ण भए गेलथिन्ह । हृदयक बिमारीसँ पिता विछान धए लेलथिन्ह । घर-गृहस्थी सब चौपट्ट होमए लगलन्हि । लाचार, अप्रतिम बनल रामदेवके̐ अपन जमीन-जालक ताक-क्षेम, पिताक सेवा ओ सामाजिकता निर्वहन करबाक लेल स्कूल छोड़य पड़लन्हि । छमाही परीक्षामे नीक अंक प्राप्त भेलो पर, असहाय रामदेव स्कूल छोड़ि, घरक जंजालमे ओझराय गेलाह । आब समस्या छल जे पिताक चिकित्सा एवं घरखर्ची केना चलत ? रोजगारक लेल भटकय लगलाह । प्रतिभावान एवं एहि परिवेशमे पालन-पोसन भेल, तँ कोनो मजदूरी झट दऽ नहि कए सकैत छलाह, चिन्तित रामदेवक नजरि पड़लन्हि, अपन घरक किछुए दूर पर, कन्हैया मिश्र टैंकक महाड़ पर अवस्थित 'प्रकाश प्रेस' पर । प्रेसक मालिकके̐ अपन आर्थिक संकटक प्रसंग एवं अध्ययन वाधित होएबाक समस्यासँ अवगत करबओलथिन्ह । प्रेसक मालिक हिनक समस्या सूनि द्रवित भए गेल । रामदेवके̐ कम्पोजिंग करबाक तरीकाक ज्ञान दए, हिनका प्रेसमे कम्पोजरक कार्य देलथिन्ह । ई कार्य मनोनुकूल छलन्हि, एवं तत्काल आर्थिक समस्याक किछु अंशत: सहायक सेहो भेलन्हि । रामदेवक लगन एवं प्रतिभासँ प्रेस मालिक ततेक प्रभावित

छल, जे हिनका पुनः अध्ययन करबाक लेल प्रेरित कएलकन्हि । 'प्रेस'क कम्पोजिंगक क्रममे अध्ययन करथि, जाहिसँ मैथिली साहित्यक प्रति अभिरुचि लगलन्हि ।

प्रेसक मालिक दिनमे हिनका विद्यालय जाए अध्ययन करबाक लेल कहन्हि, आ अवसर पाबि आर्थिक सहायताक लेल कम्पोजिंग कार्य करय कहलकन्हि ।

रामदेव नव संकल्प एवं आत्म विश्वासक संग 1951 ई.मे पुनः आठम वर्गमे एम.एल. एकेडमीमे नामांकन करबओलन्हि । रामदेवकेँ आगू बढ़बाक बहुत अभिलाषा रहन्हि, तेँ वायोलोजी सेक्सनमे नामांकन करबओलन्हि । हिनका मैथिली साहित्यक प्रति अभिरुचि देखि, तत्कालीन एम.एल. एकेडमीक शिक्षक, मैथिली जगतक प्रसिद्ध कवि चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मैथिली विषय (अहिन्दी छात्र) राखय कहलथिन्ह । ई अतिशयोक्ति नहि जे मैथिलीक आदि गुरु चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' भेलथिन्ह ।

एम.एल. एकेडमी (सरस्वती स्कूल)मे आठमसँ एगारहम वर्ग धरि प्रथम स्थान पबैत 1955 ई.मे माध्यमिक परीक्षा बोर्डमे रामदेव प्रथमश्रेणीसँ उत्तीर्ण भेलाह । रामदेवक प्रतिभासँ प्रभावित भए तत्कालीन शिक्षा मंत्री पं. हरिनाथ मिश्र, अपना करकमलसँ पारितोषित देलथिन्ह ।

एम.एल. एकेडमीसँ मैट्रिकुलेशन केलाक बाद आर्थिक विपन्नताक कारणे डाक्टर बनबाक सपना दिवास्वप्न बुझयलन्हि, तेँ चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे आर्टस विषयक संग इन्टरमिडिएट आर्ट्समे नामाङ्कन करबओलन्हि ।

इन्टरमिडिएटमे मैथिली सेहो विषय छलन्हि । कविलपुरसँ चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, छः किलोमीटर, प्रतिदिन पैदल कॉलेज जाथि आबथि ।

दुर्योग एहेन भेल जे 1956 ई.क अन्तमे रामदेवक पिता कपिलेश्वर झा, अपन रुग्न जीवनसँ संघर्ष करैत परलोक चलि गेलाह । ई आघात रामदेवकेँ आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक रूपेँ झकझोड़ि देलकन्हि । शोकाकुल परिवारक स्थिति देखि, रामदेव अपनाकेँ सम्हारलन्हि । विकट परिस्थितिसँ लड़ैत, इन्टरमिडिएट परीक्षा देलन्हि । आइ.ए. परीक्षामे सफल भेलाह ।

मातृभाषाक प्रति अतिआसक्त रहबाक कारणे बी.ए. मे मैथिली ऑनर्सक संग अर्थशास्त्र विषय रखलन्हि । नाना प्रकारक पारिवारिक समस्यासँ संघर्ष करैत, बिहार विश्वविद्यालयसँ मैथिली प्रतिष्ठामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थानक संग 1959 ई.मे बी.ए. आनर्स कएलन्हि ।

रामदेव जखनि आइ.ए.मे पढ़ैत रहथि, ताहि समयमे मैथिलीक प्रख्यात कवि-साहित्यकार जे कन्यादान सिनेमाक लालकाका सेहो रहथि, ई छलाह रामदेवक मैथिलीक आदि गुरु चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' । 'अमर'जी रामदेवक प्रसंग हुनक पिताक समक्ष अपन कन्याक कथा उपस्थित कएने रहथिन्ह । दुर्योगवस रामदेवक पिताक निधन भए गेलन्हि तेँ रामदेवक बी.ए. परीक्षा धरि, एकर चर्चा छोड़ि देलन्हि । परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक बाद, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कन्या 'योगमाया'क संग रामदेवक विवाह भेलन्हि ।

रामदेव विवाहक बन्धनमे पड़ि गेल रहथि । आगू पढ़बाक लालसा रहन्हि, तहिया मैथिलीमे पोस्ट-गेजुएटक पढ़ाइ विहारमे पटना विश्वविद्यालयटामे । दरभंगामे तँ भूजो फाँकि बी.ए. आनर्स पास कए लेने रहथि । पटनामे टाकाक प्रयोजन । दोसर नव नव विवाह केने रहथि, पत्नीकेँ असगर दरभंगामे छोड़ि जएबामे वेदना स्वाभाविके । रामदेवक मन तन-मन करन्हि । कखनो मन होन्हि, पढ़ाइ छोड़ि जीविकाक प्रयास करी, तँ कखनो मन होन्हि जे पारिवारिक मायाजाल तत्काल त्यागि अपन भविष्य निर्माण करी । अन्तमे अपन श्वसुर एवं साहित्यिक अन्य हितेच्छुकक प्रेरणासँ पोस्ट ग्रेजुएटमे नामांकन करबावए पटना विदा भेलाह । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागक प्राध्यापक लोकनि रामदेव सनक छात्रकेँ तकिते छलाह, सब एक स्वरमे कहलथिन्ह- नामांकन करबावह, हमरा लोकनि सब सुविधाक जोगार करबाए देबह । ई. 1955क जुलाइमे रामदेव, पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली पोस्ट ग्रेजुएटमे नामांकन करबओलन्हि ।

पटना प्रवासमे रामदेवक मेधाविता, विनीत ओ सांस्कृतिक रुचिक कारणे, मैथिली साहित्य जगतक प्रतिष्ठित साहित्यकारक प्रिय पात्र बनि गेलाह । जगतक प्रतिष्ठित साहित्यकारक प्रिय पात्र बनि गेलाह । पटना विश्वविद्यालयमे तत्कालीन मैथिलीक विभागाध्यक्ष डा० सुधाकर झा शास्त्री, प्रो. आनन्द मिश्र, प्रो. अमरेश पाठक, दर्शन शास्त्रक विभागाध्यक्ष

मैथिली जगतक सम्राट प्रो० हरिमोहन झा आदि प्राध्यापक गणक प्रिय शिष्य बनि गेलाह ।

तहिया राजदरभंगाक इन्डियन नेशन प्रेस, मैथिलक लेल आश्रयक केन्द्र छल । साहित्य जगतमे आर्यावर्त्तक सम्पादक श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार, पं. हीरानन्द झा शास्त्री, कुलानन्द दास नन्दन, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, आचार्य परमानन्द झा शास्त्री, राजेश्वर झा, बाचाल बाँकीपुरी, सुधांशु शेखर चौधरी आदि हिनक साहित्यिक अभिरुचिसँ बहुत प्रभावित रहथिन्ह तेँ हुनको लोकनिक प्रिय पात्र रामदेव भए गेलाह । साहित्यकार लोकनिक प्रेरणासँ मिथिला मिहिर एवं अन्य पत्रिकामे कथा-धारावाहिक आदि लिखय लगलाह, जाहिसँ आर्थिक सहयोग प्राप्ति होमय लगलन्हि । पटना प्रवास, रामदेवकेँ सफल साहित्यकार बनबामे बहुत सहायक सिद्ध भेलन्हि । अगस्त 1961 मे रामदेव स्नातकोत्तर (मैथिली) एम.ए.मे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थानक संग उत्तीर्ण भेलाह ।

स्नातकोत्तर कएलाक बाद रामदेव अपन आजीविकाक प्रयास करए लगलाह । रामदेवक लेल आजीविकाक तीन विकल्प छलन्हि- 1. पत्रकारिता, 2. आकाशवाणी, 3. अध्यापन ।

सर्वप्रथम आकाशवाणीमे उद्घोषक रूपमे ई किछु दिन सेवारत रहलाह । रामदेवकेँ साहित्य, अध्ययन-अध्यापनसँ विशेष अभिरुचि रहन्हि । छात्र-जीवनमे विभिन्न मैथिली पत्रिकामे दर्जनोसँ अधिक रचना प्रकाशित भेल रहन्हि । जाहिसँ साहित्यकारक बीच एक साहित्यकार रूपमे जानल जाय लागल रहथि । रामदेवक निवास, कबिलपुरमे साहित्यकार लोकनि जुटान होइत रहल । अधिक काल चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', रमानाथ मिश्र मिहिर एवं अन्य साहित्यकार गणकेँ साहित्यिक चर्चा करैत देखल जाइत रहल ।

मैथिली आनर्स (प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान), एम.ए. मैथिली (प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान), तेँ मैथिली विभागमे व्याख्याताक रामदेव प्रबल दावेदार रहथि । पटना विश्वविद्यालय एवं बिहार विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागमे व्याख्याताक पद रिक्त रहैक । रामदेव दुनूठाम आवेदन देलन्हि । मिथिलाञ्चल एवं मैथिली जगतमे अदौसँ लचरल केँ अवहेलना, गुटबाजी, पैरवी चलैत आबि रहल छैक । पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याताक ई प्रबल दावेदार रहथि, इन्टरभ्यु सेहो नीक भेल रहन्हि । इन्टरभ्यु बोर्डमे हिनकर विरोधी गुटक सदस्य रहथिन जे जिनका छाँटि देलथिन्ह । इन्टरभ्यु बोर्डक आन सदस्यकेँ रामदेव सनक प्रतिभावान केँ छटनाइ, बहुत बेसी खटकलन्हि । बिहार विश्वविद्यालयमे हिनकर प्रिय गुरुजन चयन समितिमे रहथिन्ह, ओ लोकनि सोचलन्हि जे हिनकर पदस्थापन मिथिलाक गढ़ दरभंगा कएल जाय । मैथिली मिथिलाक विकासक लेल रामदेव सनक प्रतिभावानकेँ मिथिलाञ्चलक गढ़ दरभंगामे रहब आवश्यक । एहिसँ पूर्व किछु दिन दुमका कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह ।

रामदेवक चयन व्याख्याता रूपमे विहार विश्वविद्यालयमे भेल । पदस्थापन, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे । रामदेव गद-गद छलाह ।

रामदेव मात्र एक वेतनभोगी प्राध्यापक रूपमे अपनाकेँ सुप्रतिष्ठित नहि कएलन्हि । हिनक मतानुसार प्राध्यापकक दायित्व-पढ़ब-पढ़ाएब, लिखब-लिखाएब, शोध करब-शोध कराएब ।

ई. 1970मे रामदेव, 'मैथिलीमे शैव-साहित्य पर पी-एच.डी. डिग्री प्राप्त कए डा० रामदेव रूपमे जानल जाए लगलाह । डा० रामदेव, छात्र जीवनहिसँ अनुसन्धानी स्वभावक रहलाह । प्रारंभमे अपन परिवार एवं अन्य महिला लोकनिक स्वरसँ सुनल गीत, कथा, वचन, लोकोक्ति आदिक संकलन कए संग्रहित करथि । एहि संग्रहित सामग्रीक उपयोग स्वयं एवं अन्य शोधार्थी कएलन्हि ।

शैव साहित्यक अनुसंधानक क्रममे नेपाल गेलाह । 'डेनियल राइट' नामक एकटा यूरोपियन विद्वान लिखित ''हिस्ट्री ऑफ नेपाल''मे एकठाम संदर्भित छल जे राजा जगज्ज्योर्त्तिमल्लक मैथिलीमे रचित हरगौड़ी विवाह नाटकक पाण्डुलपि इंगलैंडक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयक लाइब्रेरीमे संरक्षित छैक । डा. रामेदव कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयसँ पत्राचार कएलन्हि तँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयसँ संतोषजनक जबाव भेटलन्हि । तत्कालीन च०मि० महाविद्यालयक प्राचार्य डा० लक्ष्मीकान्त मिश्रक सहयोगसँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयसँ हरगौड़ी विवाह नाटकक पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्म मंगवाओल गेल ।

डा० रामदेव, अत्यन्त श्रम एवं कौशलपूर्वक गज-पट पाण्डुलिपिकें क्रमवद्ध कए 'विदेह' पत्रिकाक माध्यमसँ उपस्थित कएलन्हि । हरगौड़ी विवाहक अन्वेषणसँ हिनक जिज्ञासु प्रवृत्ति बेसी देखार भेल ।

डा० रामदेवकें निरन्तर अनुसंधान करबाक प्रवृत्ति रहन्हि । मैथिलीक प्रथम उपन्यास जीवनाथ मिश्र प्रसिद्ध पुलकित मिश्र रचित 'मोहिनी मोहन', मैथिलीक आद्यकथा जलधर झाक विलक्षण दाम्पत्य, जनार्दन झा जनसीदनक कथा 'नासक वैधव्य', कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल', चन्दा झाक 'वातावाहन', म.म. पमरेश्वर झाक 'दुर्गाचरित नाटक', जीवन झाक रचना 'समग्र' आदिकें इतिहासक गर्त्तसँ निकालि कऽ जँ हिनका द्वारा प्रस्तुत नहि कएल जाइत तँ मैथिली अध्येतागण एहि दुर्लभ कृतिसँ अनभिज्ञे रहितथि ।

डा० रामदेवकें साहित्यिक अभिरुचि शैशबकालेसँ मातृके सँ प्राप्ति भेलन्हि । एम.एल. एकेडमीमे जहिया छात्र रहथि, तहिया हिनक गुरु चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', जे बादमे हिनक कन्यादाता भेलथिन्ह, हुनक सानिध्य प्राप्ति भेलन्हि । चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' प्रख्यात कविक रूपमे जानल जाथि, यद्यपि डा० रामदेव हुनकासँ साहित्यिक मात्र ज्ञान प्राप्ति कएलन्हि । आठम वर्गक छात्र रहथि, तहिया हिनक कथा 'चन्द्रहार' संक्रान्ति नामक पत्रिकामे प्रकाशित भेल रहन्हि । ई साहित्यकार रूपमे जानल जाय लगलाह, अपन कथा 'आब की ? जे ई. 1953 क मिथिला मिहिर पत्रिकामे प्रकाशित भेल रहय । पुन: हिनक कथा 'दू ठोप नोर' 1953 ई. दोसर अंकमे प्रकाशित भेल ई तँ भेल विद्यालय छात्रक रूपमे साहित्यक रचना ।

हिनक 'भितरिया धधरा' कथा मार्क्सवादी विचारधाराक 'मनुक सन्तान' कथा समाजवादी विचारधाराक, 'एक खीरा : तीन फाँक' कथा फ्रायडवादी, 'धरती माता' कथा संघवादी । डा० रामदेव, कोना वादीक घोर विरोधी छलाह । ई जँ कोनो वादी रहथि तँ साहित्यवादी । डा० रामदेव कथाकार, अनुवादक, नाटककार तँ छलाहे सगहि रंगमंचक उच्चकोटिक कलाकार एवं निर्देशक छलाह ।

डा० रामदेवक छद्मनामसँ मिथिला मिहिरमे 'अंग्रेजी फूलक चिट्ठी' धारावाहिक बहुतो दिन तक प्रकाशित होइत रहल ।

कवि रामदेव- डा० रामदेव, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'सँ अत्यधिक संवद्ध रहितो कविता-गीत रचना करबाक कम अभिरुचि राखथि । कवि गोष्ठीमे मंचस्थ रहथि तँ श्रोतादीर्घाक आग्रहपर कविता पाठ करए परन्हि । ई सामान्यतया मुक्तक छन्दक कविता पाठ करथि । साहित्य एकेडमी, मैथिली एकेडमी एवं अन्य संस्थासँ प्रकाशित पुस्तकक सम्पादन सेहो करथि, सम्पादक रूपमे सेहो ई अनेको कविता-कथा संग्रहक सम्पादक रहथि ।

हिनक सूक्ष्म ज्ञान ओ रंगमंचक दीर्घ अनुभव, एक नाटककार रूपमे डा० रामदेव कें ख्याति देलक । पिपासा, नव बाट-नव बटोही, चाननक वसात प्रभृति एकांकीक मंचन अनेको बेर भेल, जे दर्शकदीर्घाके आकृष्टि कएलक । डा० रामदेवक पसिझैत पाथर एकांकीक मंचन 1976 ई.मे चेतना समिति पटना द्वारा भेल छल । पुन: ओही वर्ष ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा युवा महोत्सवमे 'पसिझैत पाथर' एकांकी डा० रामदेवक निर्देशनमे स्नातकोत्तर मैथिली विभागक छात्र-छात्रा लोकनिक द्वारा प्रस्तुत कएल गेल । दर्शक दीर्घाक बीच हिनक रचित एवं निर्देशित एकांकी आकर्षणक केन्द्र रहल ।

मैथिली जगतमे सफल प्राध्यापक, साहित्यिकार, नाटककार रूपमे डा० रामदेव तँ जानल जाइते छलाह, हिन्दी जगतमे सेहो डा० रामदेवक कविता-गीत बहुत ख्याति प्राप्ति केलक । कविताक किछु पद्यांश 'हौसला' शीर्षक कवितांश-

'प्रखर वेग सा आगे बढ़ता रूका न कूल कँगारो से
नही जानते पाँव हिचकता, डरे नही अंगारो से
बड़े फफोले पड़े पाँवमे, फिर भी आगे बढ़ता हूँ,
पथ्थर की चट्टानो से भी नया आदमी गढ़ता हूँ ।

पर्यावरण संरक्षण पर 'बादल बोला' शीर्षक कवितांश'-

''बादल बोला धरती से जी ! कितना पानी दूँ मैं ?
कितने जल से प्यास बुझेगी
कितना सागर बाँट सकूगाँ
उस सागर से कितना पैंचा बोलो रानी लूँ मैं ?

मैथिली आन्दोलन :- 1977 ई.मे बिहार मे जनता पार्टीक सरकार बनल । जनता पार्टीक सरकार, मैट्रिक लेखनक, मातृभाषा विषयक पत्र, मैथिली केँ हटा देलक । मिथिलाञ्चलमे सरकारक अविवेकपूर्ण निर्णयक विरोधमे आन्दोलननक ज्वाला धधकय लागल । आन्दोलक ज्वाला धधकय लागल । आन्दोलनी लोकनि देवालपर लेखनक लेल, नारा तैयार करबाक भार डा० रामदेवकेँ देलन्हि । नाराक पंक्ति छल-

‘मैथिल मुँहक बोल छिनै छेँ, रे सरकार कसाइ रे :
मायक चीर हरण होइत छौ, सूतल नहि रह भाइऐ
‘मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़ाइ हो’’
ताहि हेतु पटनासँ दिल्ली चढ़ाइ हो
‘मैथिलीक ई नारा : बाजल युद्ध नँगाड़ा’
‘जन्मसिद्ध अधिकार हमर छी : मातृभाषा मैथिली’
‘तीन कोटि मिथिला केर वासी जागू-जागू-जागू
‘तीन कोटि जनता केर भाषा : मैथिली थिक मातृभाषा

1982 ई.मे बिहारमे कांग्रेसी सरकार, बिहारक द्वितीय राजभाषा, मैथिली नहि कए, उर्दू कए देलक । डा० जगन्नाथ मिश्रक पतनक इएह मूल कारण भेल । ताहि समयमे डा० रामदेव, मैथिली आन्दोलनीक नेतृत्व कएलन्हि ।

पटना रानीघाट डेरापर, बाबू (प्रो० आनन्द मिश्र)क विद्यार्थी रूपमे, रामदेव भाएकेँ बच्चेसँ अबैत देखैत छलिऐन्हि । हम दुनू बहिन, भायकेँ प्रणाम करय जाइत छलियन्हि । तहिया भाय हमरा सब लेल सनेस अनने रहथि जे दुलार कए देथि । हमरा दुनू बहिन केँ एतबे ज्ञान रहय जे भाय हमरा सबके टॉफी-बिस्कुट दैत छथि ।

प्रौढ़ावस्थामे पढ़नाइ प्रारम्भ कएलहुँ । एम.ए. (मैथिली)मे गुरु भाए लोकनिक शिष्य बनि प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान पाबि सफल भेलहुँ । गुरुजनक मार्गदर्शनमे पी-एच.डी. करबाक सिहन्ता भेल । सिनोपसिस तैयार करबामे भाय स्व० शिवशंकर झा ‘कान्त’क हम ऋणी रहबन्हि । यद्यपि तत्कालीन विभागाध्यक्ष हमर ननदोसि स्व. अमरनाथ झा रहथि, ओ हमरा कहलन्हि जे सब कहत जे हिनकर सरहोजि छथिन्ह तेँ पी-एच.डी. भेटल । तेँ हुनकासँ कहियो शैक्षणिक सहयोग नहि लेल । सिनोपसिस एप्रुभल लेल, विश्वविद्यालयक मैथिली विभाग गेलहुँ ।

हमरा दिसि ताकि रामदेव बाबू बजलाह- ई विद्यार्थी तँ हमर चिरपरिचित बुझा रहल अछि ! हम कहलियऐन्हि- श्रीमान् हम सुनीता । रामदेव बाबू क्रोधित भए कहलन्हि- तो हमरा भाय नहि कहि, किएक श्रीमान् कहले ? हम कहलिऐन्हि- भाय ! हम बीस सालसँ लहेरियासरायमे रहैत छी, कहियो बहिनकेँ खोजो केलिऐ ? रामदेव बाबू कहलन्हि- ई हमरासँ बड़ पैघ गलती भेल । पुछलन्हि गुरुदेव कतऽ छथि ? हम कहलिऐन्हि- माँ-बाबू हमरे डेरा पर छथि परात भेने अमर जी, सुरेश्वर बाबू, रामदेव बाबू एवं विद्वद्गण हमर डेरापर अएलाह । साहित्यिक समागम चलय लागल, किनको उठबाक मने नहि होन्हि । हमहूँ तकर बादसँ अनेको बेर भायक कबिलपुर डेरापर जाइत रहलहुँ । हुनक रचित पुस्तक सब हमरा प्राप्ति होइत रहल ।

अन्तिम दर्शन भायसँ उपाचार्य रमानाथ झा जयन्ती समारोहमे भेल छल । शारीरिक रूपेँ वृद्धजन पूर्ण स्वस्थ्य तँ नहि रहथि, मुदा मंचपर मानसिक रूपेँ पूर्ण स्वस्थ बुझयलाह । हम हुनक अभिनन्दन ग्रन्थक विषयमे खाज कएल । हमरा ‘सव्यसाची’ (अभिनन्दन ग्रन्थ) उपलब्ध भेल, जाहिसँ हुनक व्यक्तित्व एवं कृतित्वसँ पूर्ण परिचित भेलहुँ ।

विधिक विधान के रोकि सकत ? सूर्यकेँ जखनि उदय अस्त होइत छन्हि, तँ नश्वर शरीरक कोन बात ? डा० रामदेव, अपन भरल-पुरल परिवारकेँ छोड़ि पचासी वर्षक अवस्थामे 18 मार्च 2021 केँ पञ्चतत्वमे विलीन भए गेलाह । हुनक नश्वर शरीर तँ चल गेल, मुदा हुनक संघर्षक गाथा, आदर्श एवं कीर्त्ति जीवैत अछि । ‘‘कीर्त्तियस्य स जीवति’’ ।

सहायक प्रध्यापक (मैथिली)
मिल्लत कॉलेज, दरभंगा

सत्य

सत्य ओ नहि थिक
जे मोनक अहंता मे
ज्ञात होइत अछि ।
सत्य थिक,
अहंता खसि पड़ला पर
निर्विकार मनस मे
जे बोध अबैत अछि ।

हमर अन्तिम प्रणाम नहि

–अजित आजाद

तहिया फेसबुक आ व्हाट्सएपक जमाना नहि रहैक । एक लेखक सँ दोसर लेखकक परिचय पत्र-पत्रिका अथवा कोनो आयोजन-प्रयोजनसँ होइत रहैक । चिट्ठी-पतरी सेहो एकटा आधार छल । टेलीफोनक उपलब्धता त' रहैक मुदा सामान्य स्थितिमे लेखक सभक उपयोगितामे नहि छल । एहने सन समयमे हमरा हुनकासँ परिचय भेल वर्ष 1992 मे ।

दरभंगा स्थित पुअर होममे मैथिलीक एकटा कार्यक्रम रहैक । एक दिन पूर्व एकर सूचना अखबारक माध्यम सँ भेटल छल । अपन गामसँ ओहि कार्यक्रममे भाग लेबा लेल विदा भेल रही ट्रेन सँ । उत्कंठा एतेक जे समयसँ बहुत पहिनहि पहुँचि गेल रही । ओतय प्रदीप जी छोड़ि ताबत कियो नहि उपस्थित छला । बादमे बुझना गेल जे आयोजके वैह छथि । हम हुनक नाम सँ त' परिचित रही मुदा देखने नहि रहियनि पहिने । एक कातमे हमरा बैसल देखि ओ लग अयलाह आ नाम-गाम पुछलनि । संकोचवश हुनकासँ हुनक नाम नहि पूछल भेल । कार्यक्रमक समय जेना-जेना लगीच होइत गेले, अन्य लेखक सभ अबैत गेलाह। भीमबाबू, चन्द्रेश जी, परबा जी आदिकेँ ओतहि पहिल बेर देखल आ परिचय-पात भेल ।

एकर किछुए दिनक बाद दरभंगामे कथा गोष्ठीक आयोजन भेल । प्राय: तेसर आयोजन । संयोजकमे प्रदीप जी आ भीमबाबू । चन्द्रेश जी सेहो रहथि आयोजन समितिमे । भरि रातिक एहि आयोजनमे अनेक लेखक सँ पहिल बेर परिचय भेल । प्रभाष कुमार चौधरी जी, रमानन्द झा 'रमण' जी, डॉ. धीरेन्द्र, विजय विक्रम आदि सँ ओतहि पहिल बेर गप भेल छल । प्रदीप जी गोष्ठीसँ बेसी बहरिया इंतजाम-बातमे लगल रहथि । हम अवसर पाबि हुनका सँ खूब गप-सप कयने रही । पुअर होमबला परिचय गाढ़ होइत गेल । पोस्टकार्डक चलनिसारि रहैक। जीवकांत जीक पोस्टकार्ड दनादनि आबय । पहिने, एकबेरमे दस टा पोस्टकार्ड कीनी । बाद में, एक हजार कीनय लगलहुँ । प्रदीप जीसँ पत्राचार बढ़य लागल । बीच-बीचमे हुनका अपन कविता सेहो पठाबी 'अवलोकनार्थ' लिखिक' । ओ अपेक्षित सुधार क' पठा देल करथि । ओहि समयमे हम गीत बेसी लिखी, गजल सेहो । कवितो जे लिखी त' छंदबद्धे । ताहि समयमे भक्ति गीत त' ओ लिखथि मुदा वेष-भूषा सामान्ये रहनि, उज्जर धोती-कुर्ता । कहियो काल कुर्ताक रंग बदलि लेल करथि, बस एतबे ।

हुनका संग अपनैती भाव बढ़ैत गेल दिनानुदिन । सीएम साइंस कॉलेज, दरभंगामे नाम लिखेलाक बाद त ' बुझू हम हुनक संग पूरय लगलियनि । यात्री जी, रामदेव बाबू, नीता झा जी आ प्रदीप जी, एहि चारू गोटेक बेसी समीप रही । आइ हिनका ओहिठाम त' काल्हि हुनका ओहिठाम । ई क्रम दरभंगा प्रवासमे प्राय: कहियो नहि टूटल । जेना कि हम कहलहुँ, हमर आरम्भिक लेखनमे गीत आ गजल मुख्य छल आयोजन सभ मे गीत प्रस्तुत करी । प्रदीप जी लय पर ध्यान देथि । ओ हमरे गीत हमरा सुनाक' बुझाबथि । शब्दसँ कटैत तालकेँ दोसर उपयुक्त शब्द जोड़ि ठीक करथि । उत्थर रोमांटिसिज्मक विरोध करैत हमर किछ गीतमे ओहार लगेबा लेल कहलनि । निकटता एतेक जे 'कठविवाद' धरि पर उतरि जाइ हम । मुदा हुनक मुस्की.. .ओह ! की जनमारा मुस्की रहैत छलनि हुनक ठोर पर, आ हम हुनका चिढ़बैक अवसर नहि चुकी । पुत्रवत होइतहु सदैव मित्रवत व्यवहार रखलनि ।

मोन पड़ैत अछि अपन मामा गामक कीर्तन । कहियो काल कीर्तनमे हमहूँ बैसी, गाबी । 'जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर' गीत हैबे टा करैक । 'अछि पुत्र प्रदीप बनल टूअर' सँ ई त' बुझबामे आबि गेल छल जे एकर रचयिता प्रदीप नामक व्यक्ति छथि मुदा कोन प्रदीप, से बहुत बाद मे जाक' बुझल । ई बात 1982 इसवीक थिक । आठमामे पढ़ैत रही तहिया । मधुश्रावणीमे गाओल जाइत गीत 'चलू-चलू बहिना हकार पुरै लए, टुन्नी दाइ के वर एलनि टेमी दगै लए' केँ सेहो हम विधि-व्यवहारक पारंपरिके गीत बुझैत

रही । बादमे बुझलहूँ जे इहो प्रदीपे जीक रचना थिक ।

वर्ष 2004, 19 मई केँ हमर गाम हटनीमे कथागोष्ठीक आयोजन छल । गरमी चरम पर । हम आयोजन स्थल पर रही तैयारीमे कि एक गोटे कहय अयलाह, 'अहाँक दलान पर एकटा बाबाजी आयल छथि आ अहाँक खोज करैत छथि ।' हम दौड़लहुँ । प्रदीप जी घामे-पसीने नहायल । पैर छुबितहि करेजमे साटि लेलनि ओ । हमरा विश्वासे नहि हुए जे ओ हटनी अओताह ! कथागोष्ठी सभमे जायब बन्न क' देने रहथिन । प्रायः काठमांडू कथागोष्ठी (2000 ई.)क बादसँ । ओ कहलनि, अहाँक पोस्टकार्ड आयल आ हम नहि अबितहुँ, से होइत ! हमर माय हुनका लेल शर्बत तैयार करैत छल अँगनामे । प्रदीप जी आ हुनक गीतक मादे कहल । माय हमर बेसी काल 'जगदम्ब अहीं...' गाओल करय । ओ जिद्द करय लागल जे हिनका मुँहसँ ओ गीत सुनबा दे'। हमरा साहस नहि हुए । मुदा हम गर ताकि अपन बात हुनका कहल । ओ कहलनि, 'मायक आज्ञा भगवतीक आज्ञा थिक' आ सुनाबय लगलाह । तकर बाद किछु आरो गीत सभ, 'तू ने बिसरिहेँ गे माय', टुन्नी दाइ के बर एलै, आदि-आदि । 2001 मे पहिल संतानक रूपमे बेटी भेल छल हमरा । आशीर्वाद देबाक लेल बेटी के कोरामे आनि हुनका सोझाँ आनल । ओ कोरामे बेटी केँ ल' आँखि मूनि भगवतीक स्मरण कयलनि प्रायः । आशीर्वाद दैत कहलनि, 'हिनक नाम राखू महिमा' ।

साँझमे गोष्ठी शुरू भेल । ताधरि सोमदेव जी, राजमोहन झा जी, जीवकांत जी, रमण जी, नारायणजी, चंडेश्वर खां, सारस्वत सहित अनेक लेखक-कथाकार आदि आबि गेल रहथि । सोमदेव जीक पहिल कथागोष्ठी छल । अध्यक्षता लेल हुनकहि नाम प्रस्तावित भेल । ई खबरि ग्रामीण लोकनि केँ भ' गेल रहनि जे एहि लेखक सभ मे ओहो छथि उपस्थित जे 'जगदम्ब अहीं' गीत लिखने छथि । ओ गीत गयबाक प्रस्ताव आबय लागल । हम भारी मुस्किलमे रही । कथागोष्ठीमे गीत कोना होयत ? दवाब मुदा बढ़ैत गेल । हम प्रदीप जीक कानमे सविस्तर कहल । ओ मुस्कियाइत कहलनि, 'ठीक, हम सम्हारि लेब । ओहुना हमरा लग कथा नहि अछि, अहींक कारण सँ आयल छी ।' जखन हुनक नाम पुकार भेलनि, ओ कथा नहि अनबाक बात कहि गीत सुनेबाक लेल अध्यक्षसँ अनुमति मंगलनि । ग्रामीण सभक करतल ध्वनिक बीच के कहितनि, नहि ! ओ विभोर होड़त गीत प्रस्तुत कयलनि । सगर वातावरण आद्र भ' गेल छल । भोरमे विदा होइत काल विह्वल होइत कहलनि, 'बिसरब नहि हमरा, भेट दैत रही ।' ई बात कियै कहलनि ओ, तकर अर्थ हमरा लागि गेल छल । बहुत दिनसँ भेट नहि कयने रही हुनका से आ चिट्ठी-पतरी सेहो नहि भेल छल । ग्लानि भेल हमरा । तकर बाद सँ हुनका शिकायतिक अवसर नहि देल । त्रिशूलिनी पत्रिका निकालबाक क्रममे अपेक्षित सहयोग त' नहि क' सकलियनि मुदा पटना मे रहितो गप-सप होइत रहल । सीता पर केंद्रित महाकाव्य दैत कहलनि, 'एकरा पढ़ब' । ई महाकाव्य मैथिलीक सर्वकालिक श्रेष्ठ महाकाव्य थिक । चाहैत रही जे एहि पुस्तक लेल हिनका सम्मानित कयल जाइ, से नहि भ' सकलैक । एकर कचोट रहत आजीवन ।

दू वर्ष पहिने मिथिला राज्य निर्माण सेनाक संग छल जनसभाक उद्घाटन करबा लेल आयल रहथि ओ । हमरा देखितहि बजा लेलनि लग आ हालचाल पुछैत, लगेमे बैसबा लेल कहलनि । कुर्सी पर बैसल रहथि ओ । हम हुनक पैर लग शुरू सँ अंत धरि बैसले रहि गेल रही । आइ जखन कि ओ देहक त्याग क' देलनि अछि, लगैत अछि हम हुनक पैरे लग बैसल छी ।

हुनका सँ बहुत किछु सीखल । मैथिलीक आंदोलनमे निर्वैयक्तिक कोना रहल जाइ, श्रेय लेबासँ कोना दूर रहल जाइ, तामसक अभिव्यक्ति कोन-कोन तरहेँ हो, गीत-माधुर्य आ सार्थकताक मिलान-बिंदु कोना सृजित होड़, साहित्य आ मनुष्यताक सम्मिश्रण संग वर्तमान समयमे कोना निर्वाह कयल जाइ...! आदि-आदि । वयसक सीमाक पार हमरा प्रति हुनक मित्रता-भाव हमर जीवनक सार्थक उपलब्धि थिक । पुत्र-भाव केँ सन्निहित करैत आइ हम अपन एहि विरल मित्रकेँ प्रणाम करैत विदा करैत छी । मुदा ई अन्तिम प्रणाम नहि थिक मित्र, किछु आर 'जिद' सभ जोगनहि छी अहाँ लेल, किछु रग्गड़, किछु बतकुच्चनि संग किछु गीत सेहो रखने छी । आयब त' सुनायब !

मधुबनी

निबन्ध

बिहारमे मैथिली भाषाक स्थिति

(मिथिला केसरी बाबू जानकी नन्द सिंहक अंग्रेजी आलेखक मैथिली मे अनुवाद)

अनुवादक- **प्रो. भैरवेश्वर झा**

1. मातृभाषाक रूपमे मैथिली

''सभ हिन्दू एवं मुसलमानक जे एहि पुण्यभूमिमे निवास करैत छथि, जाहि भूमिक उत्तर एवं दक्षिणमे क्रमश: हिमालय पर्वत तथा गंगाक धारा प्रवहमान अछि, जकर पूब एवं पश्चिममे क्रमश: कोशी एवं गण्डक नदी अछि'' भाषा थिक । (सर जार्ज ग्रियर्सन : मैथिली ग्रामर, पृ.- 2)

उपर्युक्त भूभागकेँ भारतक राजनीतिक नक्शापर दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, सन्तालपरगना एवं पटना (बस्ती) तथा नेपाल देशमे रौतहट, सरलाही, सप्तरी, मोहतरी एवं मोरंग जिला सभक रूपमे दर्शाओल गेल अछि । भारतमे एकर क्षेत्रफल 20,000 (बीस हजार) वर्ग किलोमीटर तथा नेपालमे 9000 (नौ हजार वर्ग कि.मी.) अछि ।

2. सन् 1911 ई.क लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडियामे एहि भाषाकेँ बजनिहार लोकक संख्या निम्नांकित रूपेँ दर्शाओल गेल अछि :

बिहारमे मैथिली भाषीक संख्या-	9,389,376
नेपालमे मैथिली भाषीक संख्या-	610,624
आसाममे मैथिली भाषीक संख्या-	66,575
बंगालमे मैथिली भाषीक संख्या-	96,782
	10,263,357

3. बिहारमे मैथिली एवं हिन्दी बजनिहार (लिग्विंस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, 1911क आधारपर)

मैथिली-	9,389,376
(जँ एकरा संग मगही जे एकर बोली थिक केँ जोड़ि दी-	6,504,817
	15,994,193
हिन्दी-	6,691,766
(भोजपुरी रूपमे बाजल जाइत)	

4. वर्त्तमानमे मैथिली बजनिहारक कुल संख्या (1949) लगभग अढ़ाई करोड़ अछि :

बिहारमे मैथिली बजनिहार-	12.48 मिलियन
नेपालमे मैथिली बजनिहार-	09.00 मिलियन
अन्यत्र मैथिली बजनिहार-	05.00 मिलियन
जँ मगही छोड़ि दी	08.00 मिलियन
	21.88 मिलियन (1931)
एहि तरहेँ कुल	25.00 मिलियन (1949)

5. मैथिली भाषाकेँ पछिला दू दशकमे बदनाम एवं अयथार्थ रूपेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि विभिन्न प्रतिपक्षी लोकनिक द्वारा कखनहुँकेँ एकर पड़ोसी प्रतिवेशी भाषाक- हिन्दी एवं बंगला- बोलीक रूपमे वर्गीकृत कएल जाइत अछि आ' कखनहुँ तँऽ बोलिओक रूपमे एकर स्वतन्त्र अस्तित्वकेँ अस्वीकार कएल जाइत अछि । किन्तु, यथार्थमे, जेना कि प्रख्यात विद्वान एवं भाषाविज्ञानी सर जॉर्ज ग्रियर्सन कहलन्हि :

''मैथिली एक भाषा थिक, बोली नहि । ई लगभग साढ़े बहत्तरि लाख लोकक स्थानीय भाषा थिक (ई आंकड़ा 1880 ई.क जनगणना पर आधारित अछि; एखन एहि भाषाकेँ बजनिहारक संख्या ओहिसँ कतोक गुणा अधिक अछि ।) जाहिमे सँ पचास लाख तँ हिन्दी आ उर्दू जनितहुँ नहि अछि, जँ बुझितहुँ अछि तँ बड़ कठिनाईसँ । ई शब्दकोश एवं व्याकरणमे हिन्दी एवं बंगाली दूनूसँ भिन्न अछि । ई मराठी एवं ओड़िए जकाँ कए पृथक् भाषा थिक । एहि क्षेत्रक अपन एक भिन्न परम्परा, कविसमूह, अपन निज गौरव सभ क्षेत्रमे छैक । (मैथिली व्याकरण, भूमिका, पृ.-2)

6. एहि भाषाक समृद्धि एवं विविधताकेँ द्योतित करबाक हेतु अनेक जोड़ देबाक कार्य नहि छैक । एकर प्राचीनता आठम शताब्दीक (ईस्वीसनक) सिद्ध लोकनिक रचना तक अछि तथा ओहूसँ अतिरिक्त चिकाचीकी बोलीक जे मैथिली एक बोली थिक, बौद्ध रहस्यात्मक गीत सभ मे अछि । प्राकृत एवं अपभ्रंशक पतनक पश्चात् मैथिली आधुनिक लोकभाषाक रूपमे सम्पूर्ण पूर्वी भारतमे विकसित भेल । कमसँ कम चौदहम, पन्द्रहम, सोलहम एवं सतरहम शताब्दी जे मैथिली एक प्रख्यापित साहित्यिक भाषा छल मिथिला,

नेपाल, आसाम, बंगाल एवं किछु दूरतक ओड़िअहुमे । यद्यपि कि एहि उल्लिखित क्षेत्र सभमे ओतुका लोकभाषा सभमे साहित्यिक क्रियाकलाप होइत छल, किन्तु मैथिली भाषा केँ प्राथमिकता छल । एहि लेल प्रमुख श्रेय कोमल पदावलीकार कवि विद्यापति केँ छन्हि, जे मिथिलाक कविकोकिल छलाह । गद्यक क्षेत्रमे मैथिली एहि क्षेत्रक प्रथम भाषा थिक जाहिमे व्यापक एवं सौष्ठवयुक्त रचना गेल; उदाहरणक लेल ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णन-रत्नाकर' एवं अंकिया नाटक सभक नाट्य गद्य रचना सभ । नाटकक क्षेत्रमे मैथिली अन्य सभ उत्तर भारतीय भाषा सभमे श्रेष्ठतम अछि । संस्कृत नाटकक पतनक पश्चात्, मैथिलिए प्रथम भाषा थिक जाहिमे नूतन रंगमंचक विकास भेल । मिथिलाक किर्त्तनिञा नाटक एवं नेपालक मैथिली नाटक सभ भारतीय साहित्यक गौरव थिक । किंतु एहिसँ ई नहि बुझबाक थिका जे जाहि मैथिलीक एहन गौरवपूर्ण भूतकाल छैक तकर वर्त्तमानमे उन्नतिशील पथ नहि छैक ।

ई सत्य अछि जे एहि क्षेत्रक प्रशासनिक एवं शैक्षणिक व्यवस्थामे विमाताक व्यवहार भेटलैक; मैथिलीकेँ एकर प्राप्तव्य भेटबामे घोर तिरस्कार एवं उपेक्षापूर्ण व्यवहार प्राप्त भेलैक; राजकीय संरक्षणक अभाव एकरा अकल्पनीय हानि देलकैक । मैथिली भाषी लोकनि एकरा प्रति उदासीन जकाँ छथि । जतए तक सरकारक नीतिक प्रश्न अछि, एकरा कारणेँ प्रभूत हताशा, निराशा एवं ह्रास उत्पन्न भेल अछि । सरकारक नीतिक कारण लोक सभ प्रोत्साहित नहि होइत छथि मैथिली भाषा पर व्यर्थक मिथ्यापवाद, दुरारोप एवं पराभूत करबामे, खाहे ओ सदनक भीतर हो वा बाहर मे । एहनो प्रयास होइत अछि ई सिद्धि करबाक लेल जे ई भाषा एक जाति विशेषक थिक, एक समुदाय विशेषक थिक तथा एहि तरहेँ लोक केँ अपन मातृभाषाकेँ बलात् दबएबाक लेल, उपेक्षा करबाक लेल तथा एकर पक्षकेँ दबएबाक लेल प्रोत्साहित कएल जाइत अछि । ई उल्लेख करब आवश्यक अछि जे मैथिली भाषा एवं साहित्यकेँ ओकर अस्तित्वक विनाश सँ बचएबाक लेल भगीरथ प्रयासक आवश्यकता अछि । मैथिली भाषी अपन मातृभाषामे लिखबा एवं बजबाक लेल कटिबद्ध छथि । वर्त्तमान एहू दु:कालमे मैथिली जीवित अछि आ सक्रिय अछि । ई कोनो बोली वा उपभाषाक साहित्य नहि थिक से एहिसँ प्रमाणित अछि जे इलाहाबाद विश्वविद्यालय 'मैथिली साहित्यक इतिहास' विषयक प्रबंधकेँ डाक्टरेटक उपाधिक लेल स्वीकृत कएलक अछि हालहिमे । एकर प्रकाशन डा० जयकान्त मिश्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय, कएलन्हि अछि । ई प्रमाणित अछि जे पछिला 700 वर्षसँ ई ज्ञानविज्ञान एवं भावनाक सम्प्रेषणक भाषा रहल अछि ।

आधुनिक कालमे पश्चिमक प्रभावक कारणेँ सभ भाषामे सभ विषयमे, यथा, दर्शन, नीतिशास्त्र, इतिहास, एवं भूगोल, यात्रा वृत्तान्त, उपन्यास, गणित, व्याकरण, छन्द शास्त्रमे, प्रभूत प्रभाव पड़ल अछि । एहि प्रभावसँ मैथिली पत्रकारिताक जन्म भेल । बीसम शताबदीक किछु लेखक यथा चन्दा झा, जीवन झा, परमेश्वर झा, मुरलीधर झा, रघुनंदन दास, मुकुन्द झा बकसी, दीनबंधु झा, बदरीनाथ झा, हरिमोहन झा, कुमार गंगानन्द सिंह, भुवनेश्वर सिंह एवं अन्य बहुतो लेखक छथि । प्रतिकूल एवं उत्साही परिप्रेक्ष्योमे आधुनिक कालक लेखक साहित्य गतिविधिकेँ वर्द्धमान राखल अछि । महिला एवं नेनाक उपयुक्त साहित्यहुक विस्तार भेल अछि ।

मैथिली शिक्षाक सभ विभागमे पाठयसामग्रिक निर्माण करबामे सक्षम अछि । आवश्यकता मात्र एतबेक छैक जे अन्य भारतीय भाषाक समाने एकरहु सरकार द्वारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्यक निर्माणमे अनुदान भेटैक ।

7. जखन आधुनिक भारतीय भाषा सभकेँ स्वीकृति भेटलैक पूर्वी भारतक छात्रक द्वारा अध्ययनक लेल, तखन 1917 मे मैथिली केँ सेहो कलकत्ता विश्वविद्यालयमे स्वीकृति प्राप्त भेलैक । दुर्भाग्यवशात्, एहि स्वीकृतिक संगहि पटना विश्वविद्यालयक स्थापना (1917) भेलैक तथा मैथिलीभाषी क्षेत्रक छात्र/छात्राकेँ विद्यालय एवं महाविद्यालयमे मैथिली विषय पढबासँ वंचित कए देल गेलैक । तहिआसँ पटना विश्वविद्यालयमे एकर स्वीकृतिक प्रयास आरम्भ भेल । किंतु पटना स्थित हिन्दी भाषाभाषी लोकनि एहि प्रयासकेँ निरस्त करबाक लेल कटिबद्ध रहलाह । 1917 सँ 1937 ई. पर्यन्त कतेको प्रतिनिधिमण्डल आ अभ्यावेदन, सरकार तक गेल, पटना विश्वविद्यालयो पहुँचल । सन् 1938 ई.मे सरकार मैथिली के प्रवेशिका स्तरक एक अतिरिक्त विषयक रूपमे स्थान देलक, मुख्य विषयक रूपमे नहि । किंतु एकरो हतोत्साहित कएल गेल तथा महाराजा दरभंगा द्वारा स्थापित एवं अनुदानित मैथिली चेयरक उपयोग हिन्दी पढ़एबाक लेल होमए लागल ।

8. ई कहल जाइत अछि (यद्यपि कि एकर औपचारिक सत्यापन हमरा अद्यावधि नहि प्राप्त अछि) जे अधिकारी

वर्गपर प्रभूत दबावक कारणेँ आब (1949) मैट्रिक्युलेसनक स्तरोपर मैथिलीकेँ प्रधान विषयक रूपमे स्वीकार कएल जाएत । किंतु दुरभसंधिक संग मैथिलीकेँ हिन्दीक एक पत्रक रूपमे लेबाक लेल आयोजन अछि से नहि मात्र गंभीर परिणामोत्पादक होएत प्रत्युत् ई बहुत अपमानजनक थिक । मैथिलीकेँ अन्य भाषादिक यथा, हिन्दी, बंगाली, नेपाली आ' उड़ियाक संग स्थान भेटबाक चाही ।

9. जतए तक संस्कृत शिक्षाक प्रश्न अछि, जेना कि मिथिलामे कहल जाइछ 'पाठशाला' वा 'टोल'मे एकर माध्यम मातृभाषा मैथिलीए अछि । बहुतो प्रयासक पश्चातो सरकार एहि तथ्य केँ स्वीकार नहि कएलक अछि आ ने एकरा पढ़ाईक माध्यमे बनौलक अछि । एकर दुःप्रभाव अधुना लगभग 12000 छात्र पर पड़ैत अछि ।

10. जतए तक प्रारम्भिक शिक्षाक प्रश्न अछि मैथिलीक लेल ई नहि मात्र बहुत आवश्यक अछि, प्रत्युत एहि लेल कठोर एवं अनिवार्य उपाय करए पड़त । बिहार सरकार 1938 ई.मे प्रारम्भिक शिक्षा व्यवस्थाक लेल एक आयोग बनौलक । 7 मार्च 1939 ई.क बैसारमे ई निर्णय लेल गेल जे बंगाली एवं मैथिल लोकनि बेसिक शिक्षामे मातृभाषाक उपयोग कए सकैत छथि । जखन निर्धारित बैसारक तिथि फरवरी 1940 केँ अन्तिम क्षणमे घुसकाकेँ मार्च 1940 ई. मे कए देल गेल एहि समितिक एकमात्र मैथिली सदस्य डा० अमरनाथ झा, उपकुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय, एहिमे भाग नहि लए सकलाह, परिणामतः हुनक अनुपस्थितिमे समितिक (आयोगक) पूर्वक निर्णयकेँ निरस्त कए देल गेल। ई निर्णय बिहार सरकार एवं एहि आयोगक अध्यक्ष बाबू राजेन्द्र प्रसादक लेल ग्लानिक अवसर छल । डा० अमरनाथ झा एहि अवसर पर लिखैत छथि,

''एकमात्र सम्पूर्ण प्रश्न ई अछि जे कि ई समिति अपन एहि घोषित उद्धेश्यक प्रति गंभीर अछि जे प्रत्येक नेनाकेँ मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा होएबाक चाही । जँ समिति एहि उद्देश्यकेँ मानैत अछि– हमरा जनैत तँ सम्पूर्ण योजनाक यैह आधार थिक– तखन मैथिली भाषीकेँ स्पष्टतः ई अधिकार छैक जे ओकर शिक्षा–दीक्षा मैथिली भाषामे होएबाक चाही । हिन्दी मैथिलक मातृभाषा नहि थिक, अपितु मैथिली हिन्दीक अपेक्षा बंगालीक संग अधिक आत्मीयता रखैत छथि । तेँ विरोध वा प्रतिस्पर्धाक कोनो प्रश्ने नहि अछि । एकमात्र बिन्दु अछि ई देखबाक जे कोन भाषा मैथिल अपना घरदुआरिमे बजैत छथि आ ताहि भाषाक कोनो साहित्य छैक वा नहि । एहि दूनू बिन्दुपर मैथिलीक स्थिति निर्विवाद सत्य अछि ।

''शिक्षाकेँ ध्यानमे राखि ई निर्विवाद सत्य अछि जे नेना अपन शिक्षा मातृभाषाहिमे प्राप्त करए । आधुनिक भारतीय शिक्षा पद्धति पर ई एक गंभीर आरोप अछि जे एक विदेशी भाषाकेँ शिक्षाक माध्यम बनाओल गेल अछि ।

''डा० सच्चिदानन्द सिंहा केँ आशंका छन्हि जे जँ मैथिल लोकनिकेँ मैथिलीमे शिक्षा प्राप्त करबाक अवसर प्रदान कएल जाएत तँऽ भोजपुरी एवं मगधी भाषी लोकनि सेहो अपनहि मातृभाषामे शिक्षा प्राप्त करबाक लेल आन्दोलन करताह नहि कि हिन्दुस्तानी (हिन्दी)मे । एहि स्थल पर कोनो व्यक्ति खेर कमीशनक प्रतिवेदन देखि सकैत छथि जे 'वर्नाकुलर'क अभिप्राय साहित्यिक भाषासँ होइत अछि आ भोजपुरी एवं मगही साहित्यिक भाषा नहि थिक आ तैँ विचार कोटिमे नहि अछि ।

मैथिली एक साहित्यिक भाषा थिक । डा० राजेन्द्र प्रसाद ई कहैत छथि जे हिन्दी प्रायशः भारतीय महाद्वीपक उतरी भूभागक व्यवहारतः लिखबाक भाषा थिक, तखनहुँ ओ ई स्वीकार करबाक लेल बाध्य छथि जे मैथिलीक निर्विवाद रूपेँ अपन साहित्य छैक जकर अध्ययन संभावना छैक आ से प्रवहमान अछि । ई एक एहन तथ्य थिक जकरा पर जोर देल जा सकैछ जे मैथिली लीपि देवनागरी नहि थिक; ई नागरीसँ अधिक बंगालीक समीप अछि...

''गीत, गीतकाव्य, नाटक कर्मकाण्ड साहित्य, संगीत एवं छन्दशास्त्र पर ग्रन्थ, युद्धक ऐतिहासिक विवरण...ई सभ मैथिली साहित्यक हिस्सा थिक । मैथिलीमे मर्सिया सेहो अछि, उपन्यास, लघुकथा, हिन्दू दर्शन पर पुस्तिका, व्याकरण, रामायण एवं महाभारतक सारसंक्षेप, सामाजिक विषय पर नाटकादि, जीवनवृत्ति, आदि मैथिलीमे रचल गेल आ' प्रकाशित भेल ।

''तखन एना किएक अछि जे जे भाषा एतेक विस्तृत क्षेत्रमे बाजल जाइछ, जकरा एक निरन्तर एवं पूर्ण साहित्य छैक, तकरा शिक्षा पुनर्संगठित योजना मे अपन उचित अधिकार नहि भेटैत छैक ?''

मैथिलीक समस्यादिक संग ई एक पैघ विसंगति रहल अछि जे जतए किछु निहितस्वार्थी व्यक्तिसभ, मैथिली भाषी लोकनिक एहि प्रयासकेँ जे मैथिली भाषी शिक्षा एवं

परीक्षाक माध्यम हो, केँ बाधित कए रहलाह अछि, ओतहि कलकत्ता एवं बनारस विश्वविद्यालय एकर सांस्कृतिक एवं दार्शनिक महत्ताकेँ ध्यानमे राखि मैट्रिक सँ लए स्नातकोत्तर स्तर तक एकर अध्यापन एवं परीक्षाक व्यवस्था कएलक अछि ।

डा० सच्चिदानन्द सिंहाक आशंकाक उचित उत्तर डा० अमरनाथ झा उपरोक्त उद्धरणमे देल अछि । डा० सुनीति कुमार चटर्जी कहैत छथि जे भोजपुरी भूभाग सदासँ पश्चिम प्रभावमे रहल अछि; बजबाक पाश्चात्य शैली, यथा- ब्रजभाषा, अवधी तथा साहित्यिक हिन्दुस्तानी भाषा पश्चात् कालक उद्भव थिक, कविलोकनि एवं अन्यक प्रेरणासँ भेल । एहि सहवर्त्ती भूभागसँ प्रसिद्ध बुन्देलखण्डी नायक आल्हा एवं उदल अपन उद्भव, समवर्ती सम्पर्क एवं परम्पराकेँ पश्चिम लए गेल, नहि कि पूर्व दिस । भोजपुरी वास्तवमे हिन्दीक एक बोली थिक तथा सम्प्रति बिहारक अपेक्षा संयुक्त प्रान्तमे (उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश) अधिसंख्यक रूपमे बाजल जाइत अछि :

भारतमे भोजपुरी बजनिहारक कुल संख्या- 20,412,608
बिहारमे भोजपुरी बजनिहारक कुल संख्या- 6,691,766
उत्तरप्रदेशमे भोजपुरी बजनिहारक कुल संख्या- 10,083,521

बिहारक कुल जनसंख्याक मात्र 25.5 मिलियन (1911क जनसंख्या) हिन्दीक भोजपुरी स्वरूप 6,691,766 लोक बजैत अछि तथा मैथिली बजनिहारक संख्या 10.25 मिलियनि अछि (जँ मगहीकेँ जोड़ि दी तँ 6,504.897 = 10.9 मिलियन) । डा० सिंहा द्वारा मगहीक उद्धरण सेहो भ्रामक अछि । मगही मैथिलीक एक बोली प्रभेद थिक (द्र. लिग्विंस्टिक सर्वे ऑव इंडिया, Vol.V, pt. ii, पृ.- 4) । डा० ग्रियर्सनक अनुसार मगही एवं मैथिलीक मध्य प्रधान अन्तर अछि जे मैथिली पढ़ल-लिखल लोकक प्रभाव सँ प्रभावित अछि तथा मगही वैदिक काल सँ असभ्य सामान्य जनक बोली थिक ।

प्रान्तीय भाषाक सम्भावना पर बजैत डा० अमरनाथ झा, एम.ए. डी.लिट्, एफ.आर.एस.एल, अध्यक्ष, यू.पी. पब्लिक सर्विस कमिशन अपन निबंध 'द' नेशनल लैंग्वेज' (लीटर प्रेससँ प्रकाशित, दि. 7 अगस्त 1949) कहैत छथि :

''ई आशंका किछु भाग में व्यक्त कएल जा रहल अछि जे एक अखिल भारतीय भाषाक स्वीकृति एवं परिग्रहणक कारणे प्रान्तीय भाषा सभ दुर्बल भए विलीन भए जाएत । एहन प्रान्तीय भाषा सभमे किछु केर दीर्घ इतिहास एवं भव्य साहित्य अछि । ओहि सभमे विचारक प्रकर्ष एवं आकांक्षाक जीवन्तता अछि। तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़ आदि भाषा द्रविड़ भाषा परिवारमे, गुजराती, मराठी बंगाली एवं मैथिली आर्यभाषा समूहक अछि जाहिमे युगो प्राचीन समृद्ध साहित्य अछि तथा एखनहुँ प्रबहमान एवं वर्धमान अछि । एहि भाषा सभकेँ अस्तित्वमे रहबाक एवं वृद्धि प्राप्त करबाक अधिकार छैक अपन आभ्यन्तरिक गुणक कारणें, एकर साहित्यक विविधता एवं विस्तारक कारणेँ तथा एक पैघ जनसंख्या द्वारा व्यवहार करबाक कारणें । एहन किछु नहि होएबाक चाही जाहिसँ एकरा सभकेँ कोनो हानि हो, एकर सभक वर्धिष्णुता पर आघात होइक । अपना-अपना क्षेत्रमे शिक्षण संस्था सभमे ई सभ अध्ययन-अध्यापनक माध्यम होएब अत्यावश्यक तथा कार्यालयीय संचार भाषाक रूपमे रहबाक ।''

13. पछिला वर्ष जनवरी 1949 मे भारतक शिक्षा विभागक प्रस्तावना पर बिहार सरकार विद्यालय सभमे मैथिली पठाओल जएबाक संभावनाक स्वीकृति देलक ।

किन्तु ई विषय एक दीर्घ कालावधिसँ लम्बित अछि । ई विषय मैथिली भाषी लोकनिकेँ हतोत्साहित कएलक जे कोनो विद्यालय द्वारा एहन मांगपर एकर स्वीकृति ओतए देल जाएत । एहन निर्णय कोनो हितक नहि ।

वास्तविकता अछि जे मैथिलीक के पाठ्यक्रम, कोनो पाठ्यपुस्तकक निर्धारण नहि भेल अछि आ ने कोनो विशेषज्ञक विचार मांगल भेल अछि । एखन तक जे स्कूल जे मैथिलीक अध्यापन करबए चाहैत अछि, ओकरा एकर सूचना नहि छैक । ओकरा सभकेँ एकर लाभक विषयमे नहि कहल गेल अछि, अपितु हमरा कहल गेल अछि जे स्कूल सभकेँ धमकाओल जाइत छैक जे जँ ओ सभ एहन कोनो कार्य करताह तँ से 'सत्ताधीश' द्वारा कोपक भाजन होएताह ।

मैथिली माध्यममे अध्यापनक लेल एक व्यवस्थित रूपरेखा होएबाक चाही । एहन उचित आ पर्याप्त व्यवस्था होएबाक चाही जाहिमे 'अधिकारी लोकनिक मैथिली भाषाकेँ लागू करबामे कोपक भय निवृत्त भए सकए ।

14. एहि सभ विचार विन्दुक अनुकूल हम सभ चाहैत छी जे निम्नांकित रूपेँ व्यवस्था होएबाक चाही :

(i) सरकारी कार्यालय, राजकीय परिपत्र एवं नियुक्तिमे मैथिली जननिहार लोकक अर्हता केँ मानल जाए ।

(ii) मैथिली भाषी क्षेत्रमे कोर्टक भाषाक रूपमे

मैथिलीक व्यवहार हो ।

(iii) ऑल इन्डिया रेडियोक पटना स्टेशन मैथिलीक कार्यक्रम नहि दए रहल अछि । हिनका सभकेँ निश्चित रूपेँ मातृभाषाक माध्यमसँ जनसमुदाय केँ शिक्षित करबाक चाहिएन्हि ।

अपन सीमाक्षेत्रमे जगजीवनमे, स्कूल, न्यायालय, कार्यालयमे मैथिली भाषाकेँ सम्पर्क भाषा होएबाक चाही । तथा सरकार केँ सुधारक परिवर्त्तन करबाक चाहिऐक जाहिसँ पूर्वक तिरस्कारक मार्जन हो एवं सक्रिय रूपेँ मातृभाषाक महत्वपर जोर देल जाए । पूर्वमे ई सरकार एकर तिरस्कार आ अवहेलना कएलक, अपितु घोर विरोधी रहल जे आब ओकरा एकरा दूर करबाक सभ संभव प्रयास करबाक चाहिऐक । जँ ओ प्रान्तकेँ विकासक पथ पर उन्मुख करए चाहैत छथि तँ एहि जवाबदेहीसँ ओ भागि नहि सकैत छथि। सरकारकेँ एहि बात केँ मैथिलीभाषी लोकनिक स्वैच्छिक क्रियाकलापहि तक नहि छोड़बाक चाही । ई सरकार उत्तरदायित्व थिक जे ओ मैथिली विशेषज्ञक एक कमिटीक निर्माण करए, एकर सम्बन्धमे योजना बनाबए तथा कार्य सम्पादन करए ।

एहि दिशामे पहिल प्रयास होएत मैथिली भाषी क्षेत्रमे प्राइमरी शिक्षाक माध्यम मैथिली हो ।

संस्कृत 'टोल' एवं 'पाठशाला'मे शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीक स्वीकृति हो तथा सभ स्तर पर संस्कृत परीक्षामे मैथिली स्वीकृत हो जेना कि संस्कृत सभा एवं बिहार संस्कृत शिक्षा पुनर्गठन समिति द्वारा अनुशंसित अछि ।

जँ एकरा तत्परतापूर्वक एवं परिश्रमसँ एहि उपक्रम केँ विशेष शिक्षा पदधिकारी वा अन्य कोनो पदाधिकारी द्वारा संचालित कएल जाए तँ ओहि महत् हानि एवं प्रतिकूल क्रियाकलाप सँ राज्यकेँ शीघ्र एवं पर्याप्त शिक्षा विस्तारकेँ बचओल जा सकैत अछि ।

16. बिहार प्रान्तक द्विभाषिक चरित्र (मैथिली एवं हिन्दी केँ एकहि संग एक प्रान्तमे रखबाक) भाषागत प्रहारसँ बचा सकैत अछि । अन्य कोनहुँ बातक अतिरिक्त मैथिलीक प्रश्न लोककेँ एक पृथक् प्रान्तक लेल ठाढ़ कएलक अछि । एहन भव्य साहित्यकेँ प्रोत्साहन एवं संवर्धन देबाक स्थानपर बिहार सरकार एकरा आघात करबापर उद्यत अछि । ओ एकर अस्तित्व सँ घृणा करैत अछि तथा ओ एहिसँ प्रसन्न होएत जँ ई भाषा-साहित्य सुदूर भूतकालक बिसरल एक उपभाषा वा प्राचीन भाषाक रूपमे मृत मानल जाइत ।

जँ एखनहुँ मैथिलीक विकास नहि हो, जँ शीघ्रता सँ एकरा पर ध्यान देल जाए तँ एहि लेल तत्परता एवं योजनाक आवश्यकता अछि । जँ से नहि तँ एक पृथक् राज्यक मांग तीव्रतर होइत जाएत । आशंका एहि बातक अछि जे ई भाषा अभाव, पद्स्खलन, मृत्युतुल्य तिरस्कारक शिकार भए जाएत मैथिलीक प्रति रुचिक संवर्धन हो, नहि तँ ई अपन 'प्रजातान्त्रिक' एवं 'जनप्रिय' स्वरूप केँ छोड़ैत जाएत ।

17. अखिल भारतीय एकरूपता एवं एकताकेँ दृष्टिमे राखि मैथिली भाषी लोकनि देवनागरीकेँ अपनाओल अछि । किंतु जँ वर्त्तमान तिरस्कार होइत रहत तँ मैथिली लीपि मिथिलाक संस्कृति एवं भाषा प्रतीक बनत तथा से हम शुरू से करबाक लेल बाध्य होएब । एखनुक समयमे हम सभ देवनागरी लीपिकेँ स्वीकार करबाक लेल उद्यत छी ।

18. अन्ये भारतीय भाषा जकाँ मैथिलीकेँ माध्यमिक शिक्षा स्तरतक लागू करबाक पक्ष में छी किंतु राष्ट्रभाषा (हिन्दी) केँ सेहो प्रत्येक व्यक्तिक लेल अनिवार्य बनाओल जाए ।

19. विश्वविद्यालयीय स्तर पर कमसँ कम अगिला पाँच वर्षक लेल अन्ये भाषा जकाँ अंग्रेजी केँ बहाल करबाक पक्षमे छी । एकर पश्चात् एहि प्रश्नक पुनर्योजन एवं पुनर्विचार हो ।

टिप्पणी-

विचार बिन्दु 13मे उल्लेख अछि जे पछिला वर्ष जनवरी 1949क' अर्थात् ई आलेख 1950 क थिक । ओतहि अगिला पैरामे 'I have been told' अर्थात् कोनो व्यक्ति विशेषक पेटिशन थिक वा भाषण । विचार बिन्दु 15क दोसर पैरामे सरकारकेँ चेतावनी देल गेल अछि । निश्चित रूपेँ कोनो प्रभावशाली नेताक छल होयत । एहन व्यक्ति मात्र स्व० बाबू जानकीनन्दन सिंह छलाह । पुनः एकर लेखकक कतहु उल्लेख नहि अछि किन्तु जतबा ज्ञात अछि से प्रमाणित करैत अछि जे विधानसभामे स्व० जानकीनन्दन सिंहक प्रस्तुत आलेख भाषण थिक ।

अवकाश प्राप्त उपाचार्य
हर्षपति सिंह महाविद्यालय, मधेपुर
आवास- लालगंज (मधुबनी)

किरणजीक व्यक्तित्व आ कृतित्वक अनेक पक्ष एखनहु अपरिचिते अछि

–कीर्तिनाथ झा

एहि वर्ष 9 अप्रिलक किरणजीक निधन के 32 वर्ष पूरि जेतनि । हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्व में विद्वान लोकनिक रूचि एखनहु छनि आ रहतनि । तथापि, हमरा जनैत, किरणजीक नाम पर बेर-बेर बुझले बातक आवृत्ति होइत रहल अछि सत्यत:, बुझले तथ्यकें रटब अनुसंधान नहि थिक । अनुसंधान थिक, अपरिचित विषयकें ताकि-हेरि बहार करब, वा सुपरिचित विषयपर नव दृष्टिक प्रतिपादन । आवश्यकता अछि, खोजी प्रवृत्तिक अध्येता लोकनिक जे किरणजीक जीवन, व्यक्तित्व, कृति आ एहि सबहक मैथिली भाषा आ लेखनपर प्रभावकें नव दृष्टिए देखथि । अनुसंधानमें अनेक समस्या छैक; साधन आ समय मूल समस्या थिक । मुदा, ताहू सँ बेसी पैघ समस्या थिक नव तथ्यके प्रकाशमे अनबाक आग्रहक अभाव ।

किरणजीक रचनाकाल दीर्घ छलनि । बहुतो रचना हुनक जीवन कालमे छपलनि । बहुतो रचना हुनक निधनक पछाति संकलित रूपमे प्रकाशमे आयल । तथापि, हुनक अनेको रचना एखनो अप्रकाशित छनि । एहि मे सँ जे हुनक अपन घरमे छनि, आइ ने काल्हि प्रकाशमे एबे करत । किन्तु, एहन रचना जे ओहि परिधि सँ बाहर होइनि तकरा तकबाक आ समेटबाक आवश्यकता छैक । छिड़ियायल कृति सब कें समेटब किरणक साहित्यिक अवदानकेँ पूर्णता प्रदान करतनि ।

एहि संक्षिप्त लेख में हम किछु एहन विन्दु पर विचार करब जे किरण पर अध्ययनक हेतु नव विषय भऽ सकैछ ।

1. किरणजी आ काशीनाथ झा सर्वविदित अछि । किरण जी चारि भाई रहथि : तीन सोदर आ एक वैमात्रेय । एहि सब मे सँ जेठ, काशीनाथ झा प्रसिद्ध बलदेव जी, सुनैत छी, बहुमुखी प्रतिभाक धनी छलाह । योग्यता सँ काशीनाथ झा वैद्य नहि छलाह, तथापि, साहित्य-सृजन आ वैदागरीक व्यसन दुनू भाइकेँ रहनि । चारि दशक सँ थोड़ जीवन कालमे काशीनाथ झा धुरझार लिखलनि; हमर माता (किरणजीक छोटि बहिन) कहने रहथि, काशीनाथ रामायण सेहो लिखने रहथि । काशीनाथ झाक प्राय: थोड़ कृति प्रकाशित भेल रहनि; पुस्तकाकार तँ कोनो नहि । हमरा स्व. काशीनाथ झाक केवल दू टा कथा पढ़ल अछि; सतमाय (मैथिली कथा शताब्दी संचयन, साहित्य अकादेमी, दिल्ली) आ नरक नन्दन रेलवे कंपनी (भारती, 1957) । 'मिथिला मोद' आ आन अनेक पत्रिकामे प्रकाशित काशीनाथ झाक कृतिक चर्चा स्व. कैलासनाथ झाक पी-एच.डी. थीसिस में छनि, से किरणजीक मुँहे सुनल अछि । अस्तु, किरणजी एवं काशीनाथ झाक रचनामे समानता व भिन्नता अनुसंधान एकटा बिन्दु थिक । किरण जी स्वतन्त्र प्रवृत्तिक लोक रहथि, तथापि, किरणजीक रचनापर काशीनाथ झाक किछुओ प्रभाव छनि वा नहिं से अनुसंधानक विन्दु थिक ।

2. किरण जीक व्यवसाय- किरणजी शिक्षासँ वैद्य, वृत्तिसँ शिक्षक आ खेतिहर, प्रवृतिसँ आन्दोलनकारी आ साहित्यकार छलाह. ओहि युगमे मैथिल लोकनिक बीच डाक्टरी व्यवसाय हेय बूझल जाइत छल । मैथिल डाक्टरक संख्या सेहो नगण्य छल । तथापि, किरणजी 'दरभंगा मेडिकल स्कूल में नामांकन ले गेल छलाह आ नामांकन ले चुनलो गेल छलाह । किन्तु, 'पचास टाकाक उपाय नहि छलनि तें नाम नहि लिखा सकलाह' से कहने रहथि । अस्तु, काशी विश्वविद्यालय मे आयुर्वेदक कोर्स मे नाम लिखओलनि । आ पछाति, कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ डिग्री प्राप्त केलनि । किन्तु, किरण जीक वैदागरी पढ़बाक पाछू कोन प्रेरणा रहनि से हमरा नहि बूझल अछि । तथापि एतेक कष्ट आ श्रम सँ उपार्जित डिग्री सँ हासिल वैदागरी व्यवसायकेँ किरणजी किएक छोडि देलनि ?

सत्तरिक दशकमे गप्प-सप्पक क्रम मे हमरा ओ एकबेर कहने रहथे :

ओहि युगमे मिथिलामे जहिना अत्यंत गरीबी रहैक तहिना रोगक बाढ़ि । जँ कतहु रोगिक चिकित्साले जाउ तं लोक लग डाक्टरकेँ देबा ले किछ रहैक नहि । जँ कोनो नेनाक हाथ-पयरमे काडा-माठा होइक, दलान पर गाय-बड़द होइक तँ ओहि सबकेँ बेचि चिकित्साक खर्च सधयबाक अतिरिक्त आओर कोनो उपाय नहि । ई हमरा ले दुखद छल ।' संभव छैक एहना स्थिति मे डाक्टर-वैद्यक गुजर-बसर सेहो कठिन छल होइक ।

तथापि, समाजक दुखद परिस्थितिमे स्वेच्छा सँ चुनल व्यवसायकेँ छोड़बाक पाछू किरण जी कोन व्यथा छलनि ? एतबे नहि, वैद्यक रूपमे समाजमे किरणजीक छवि केहन छलनि, से प्राय: आइ धरि प्रकाशमे नहि आयल अछि । जेना कहल, किरणजी वृत्ति सँ शिक्षक रहथि । किन्तु, शिक्षकक रूप मे किरणजीक अवदानक पक्ष एखन धरि अछूते अछि । किरणजीक व्यक्तित्वक इहो पक्ष अनुसंधेय थिक ।

3. किरणजीक मानसिकता– सर्वविदित अछि, किरणजीक जीवन–पद्धति अत्यन्त सादा रहनि । धीतीक स्थान पर 'आम–छाप' कपड़ाक टुकड़ा । आ कुर्ताक स्थानपर ओही 'आम–छाप' कपड़ाक गोल–गला गंजी किरणजीक 'वर्किंग यूनिफार्म' रहनि । से पहिलुका युगक अनेको लोककेँ देखल छनि । ओ व्यवहारमे सहृदय रहथि; नवतुरिआ लोकनिकेँ प्रेरित आ प्रोत्साहित करथिन । किन्तु, सबल, प्रतिष्ठित मठाधीश सबसँ सोझे ढाही लड़बामे कोनो भय नहि होइनि । परम्परा भजन, निर्भीकता, आ सत्यक संधानक अतिरिक्त किरणजीक एहि व्यवहारक पाछू कोन मानसिकता रहनि । से विश्लेषण विषय थिक ।

ततबे नहि । किरणजी कहने रहथि । एकबेर केओ किरणजीसँ पुछने रहथिन, 'अहांक योग्यता सुपरिचित अछि, तखन (एम.ए., पी–एच.डी. आदि) परीक्षा पास करबाक कोन काज !'

किरणजी कहलथिन, 'से तँ जे बूझैत अछि, से ने । जकरा नहि बूझल छैक, तकरा हेतु तौलि–भजारि देलियइए ।' किरणजीक एहि उक्तिसँ हम दू गोट निष्कर्ष निकालैत छी; एक, परम्पराक भजक किरणजी व्यावहारिक रहथि । विश्वविद्यालय सेवाक पात्रताक हेतु एम.ए., पी–एच.डी.क डिग्री आवश्यक रहनि । किरणजी, घर–परिवार, व्यवसाय, खेती–बारीक झंझटिक पर्यन्त लक्ष्यबेध केलनि । एहि पात्रताक कारण हिनका विश्वविद्यालय सेवाक अवसर भेटलनि । तथापि एकटा गप्प आओर; मैथिली–साहित्य–समाजमे जनिका लोकनिसँ हिनका सैद्धान्तिक मतान्तर रहनि ओलोकनि बहुत दिन सँ उच्चपदासीन रहथि । किरणजी अपन अनेक समकालीन सँ अपनाकेँ कम बुझबाक तँ गप्प छोड़ू, हुनका लोकनिके अपन समकक्षो मानबा ले तैयार नहि रहथि । अस्तु वार्धक्यमे डिग्री प्राप्तकय अपन योग्यताकेँ अनकर समकक्ष प्रमाणित करबाक आग्रह सेहो किरणजी लक्ष्यमे प्रेरक छल हेतनि । ई तँ सर्व विदित अछि । अपन अकाट्य तर्कसँ किरणजी अपन पक्ष रखबामे बेजोड़ रहथि । जीवनक छठम दशकमे डिग्रीले पढ़ब–लिखब प्राय: किरणजीक अपन पक्ष रखबाक एकटा विरल आ अनुकरणीय शैली छल भीमनाथ झा कहितो छथि । 'किरण जी शास्त्रार्थी पंडित लोकनिक विगत परंपराक प्रतिनिधि रहथि' ।

4. किरणजीक रचना संसार सुपरिचित अछि । साहित्यक प्राय: कोनो विधा हिनकासँ छूटल नहि रहनि । ई जाहि विधामे लिखलनि । परिमाण मे भले थीड–बेस हो । गुणवत्तामे सबटा विलक्षण मानल जाइछ । जँ हिनक काव्य–कृति के देखी तँ किरणजीक काव्य–संकलन छपैत–छपैत जीवनक सांझ भऽ गेल रहनि । एहि सब संग्रहमे किरणजीक नव कम, पुरान कविता बेसी रहनि । किन्तु, हिनक काव्यकृति 'पराशर' अबैत–अबैत किरणजी प्राय: बिछाओन ध' नेने रहथि । 'पराशर'पर मरणोपरान्त किरणजी केँ साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो भेटलनि । पुस्तकमे सुमनजीक भूमिकाक अतिरिक्त, हमरा जनैत, 'पराशर'पर कोनो गंभीर चर्चा नहि भेल अछि । आ ने एकर दोसर संस्करण छपल अछि । हमरा जनैत 'पराशर' किरण जीक अंतिम आ सर्वोत्कृष्ट (swan song आ magnum opus) कृति थिक । आवश्यकता अछि, किरणजी अवसानक पछाति जनमल पीढ़ी एहि कृतिकेँ स्वयं पढ़य आ एकर स्वरुपसँ स्वयं परिचित होअय ।

5. किरणजीक जीवनी : समग्रतामे किरणजीक जीवनी स्वयं एकटा अनुसंधानक विन्दु थिक । साहित्य–अकादमी किरणजीपर एकटा मोनोग्राफ छपने अछि । किन्तु, बोनि द कय जनसँ काज करयबासँ जेहन काज होइत छैक, ई मोनोग्राफ तेहनो नहि अछि । सत्यत:, साहित्य अकादेमीक पारिश्रमिकके वस्तुत: पारिश्रमिको बूझब कठिन; ई रिसर्च ग्रांट तँ नहिए टा थिक । किन्तु, से विषयान्तर भेल । अस्तु आवश्यकता अछि, खोजी प्रवृत्ति, उहिगर व्यक्तिकेँ समुचित साधन उपलब्ध होइनि जाहि सँ किरणजीक जीवनीपर सम्यक दृष्टिक एकटा एहन कृति आबय जे किरण–विषयक शोधार्थीले एकटा प्रमाणिक सन्दर्भ–ग्रन्थ उपलब्ध होइक, साधन–संपन्न शोध–संस्थानसँ जँ एहि हेतु अर्थक व्यवस्था हो तँ ई शोध नव साहित्यिक अवदान होयत । संगहिँ ई शोध सम्बंधित शोध–संस्थानक सार्थकता सेहो प्रमाणित करत ।

6. अंत में हम प्रोफेसर शंकरकुमार झाक नामे– अस्सीक दशकमे किरणजीक लिखल एकटा कविता–बद्ध अप्रकाशित पत्र उद्‌धत करैत छी :

बिनु कहने बुझि जाइत छथि, मनक बात विद्वान्
तें बाजब पुनरुक्ति बूझि चुप्पे रहथि सुजान
अनुजक तनुज थिकाह ई धरा–भूमि सँ हीन
रहितहु नाम रवीन्द्र छथि अन्धकारमें लीन

---------------पूर करथु
से शंकर मतिमान ।

(बीचक किछु पांति एखन बिसरि रहल अछि; पत्र हमरा फाइल में अछि) विश्वास अछि, एहि प्रकारक अनेक छोट–छीन चिट्ठी–पत्री, पुर्जा, पाण्डुलिपि, लेख, प्रकाशित/अप्रकाशित कृति, आ संस्मरण बहुतो लोकक लग आ जीवित व्यक्तिक स्मरणमे छिडियायल हो । सब किछुकेँ समेटब किरणक समग्र पुनर्मूल्यांकन हेतु अमूल्य साबित भ सकैत अछि ।

आवाम, मधुबनी

मैथिल साहित्यमे राष्ट्रीय चेतना

बीज-भाषण

–रमानन्द झा 'रमण'

हमर प्रतिपाद्य अछि मैथिल साहित्यमे राष्ट्रीय चेतना। एहि सन्दर्भमे 'राष्ट्र' राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय-चेतनाक व्युत्पति, अर्थ आ अर्थ-विकासक प्रसंग एहि विद्या-मन्दिरमे उपस्थित विद्वत्जनक समक्ष किछु कहब अपनेक बहुमूल्य समयक दुरुपयोग करब होएत, अतएव हम भारत सन सामाजिक सांस्कृतिक देशक मैथिली साहित्यमे राष्ट्रीय चेतना कोना आएल, कोना विकसित भेल आ मैथिली साहित्यक विभिन्न विधामे तकर अभिव्यक्तिक स्थिति की छैक, ताहि दिश संकेत मात्र करब।

प्राचीन भारतीय साहित्यमे वर्तमान राष्ट्रीय चेतना मूलत: भौगोलिक अखण्डताक प्रति आस्था तथा प्रेमभाव धरि सीमित नहि अछि। वैदिक काव्यमे देश प्रेमक आधार पृथ्वी माता छथि। पृथ्वीक दैवीकरण संस्कृत साहित्यक अपन विशेषता थिकैक। ग्राम देवता, क्षेत्र देवता, कुल देवता आदि सभ शब्द स्थानक प्रति प्रेमक परिचायक थिक। ऋग्वेदक नदी सूक्तिमे नदीक उपकारक हेतु अर्चना भेल अछि। ई वैदिक ऋषिक कवि कल्पना वा अतिशयोक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति नहि थिक, जीवनक यथार्थ थिक। एहिमे लोक-आस्था प्रतिबिम्बित भेल अछि। देवगण द्वारा भारतभूमिक महत्त्व प्रतिपादित भेल अछि- 'धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे'। भौगोलिक अखण्डता आ प्राकृतिक सुषमाक अतिरिक्त 'चेतमहिस्वराज्ये (आउ, हम सब स्वराज्यक हेतु यत्न करी)सन उदात्त विचार सेहो अछि। राष्ट्रक अखण्डताक रक्षाक संग राष्ट्रक आर्थिक अथवा भौतिक समृद्धिए धरि ई भावना सीमित नहि रहि, राष्ट्रीयता धर्मभावनाक रूप ग्रहण कए भारतवासीक जीवनक एक महत्त्वपूर्ण अंग भए गेल अछि।

हमरालोकनि जनैत छी जे भारतक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पराधीनताक विरुद्ध पहिल स्वाधीनता आन्दोलन 1857 मे भेल छल। ओ भलहिं सफल नहि भेल हो, मुदा उपनिवेशवादी शासकक विरोधमे संघर्षशील मानसिकताक निर्माणमे अवश्य गति आएल। ओकर रक्तरंजित चाङ्ुरसँ अपन मातृभूमिके मुक्त कराए अपन शासन-व्यवस्था स्थापित करबा लेल तरेतर आगि सुनगैत रहल। मैथिली साहित्यमे एकर पहिल आ मुखर अभिव्यक्ति कवीश्वर चन्दा झाक रचनामे अछि। ओ लिखैत छथि-

भारत आरत भेल धरम बिनु।
गैया जगतक मैया हे भोला, कटय कसैयाक हाथ।
हाकिम भेल निदैया हे भोला, कतय लगायब माथ।

कवीश्वर चन्दा झा शासक आ शासित-शोषित समाजक अन्तरकेँ चिह्नि गेल छलाह। ओ 'हाकिम भेल निरदइया हे भोला' कहथि वा 'न्यायक भवन कचहरी नाम, सब अन्याय भरल तहि ठाम' लिखि शासकवर्गक प्रति घृणा जगाय आत्मगौरव तथा अधिकारक प्रति सचेष्ट होएबा लेल प्रेरित कएलनि।

ई विदित अछि जे 1857 ई.क उपरान्त बढ़ैत विरोधक शमनक हेतु बृटिश सरकार पहिने एक दमनकारी कानून (The Sedition Act, 1870) पारित कए कठोरतापूर्वक लागू कएने छल। पुन: The Prevention of Seditious Meeting Act, 1907 सेहो आएल। देशमे व्याप्त एहन दमनकारी राजनीतिक-प्रशासनिक स्थितिमे संवेदनशील रचनाकारक समक्ष शासन-सत्ताक विरोधमे अपन स्वर मुखरित करैत रहबा लेल प्रतीकात्मक अभिव्यक्तिक अतिरिक्त अन्य कोनो विकल्प सम्भवत: नहि छल। एही बीच कांग्रेसक स्थापना भेलैक आ मिथिलामे तकर गतिविधिक एक प्रमुख केन्द्र इएह मधेपुरा छल। बाबू रास बिहारी मंडलजीक नेतृत्व पाबि व्याप्ति अएलैक।

जेना-जेना देशक राजनीतिक चेतना स्वातन्त्र्योन्मुखी होइत गेल, ओहि प्रभावक अभिव्यक्ति साहित्यमे प्रखर होइत गेल। मैथिली साहित्य तकर अपवाद नहि रहल। मात्राक जे अन्तर हो, गुणात्मक अन्तर नहि अछि। यदुनाथ झा 'यदुवर'क आविर्भाव एही अवधिमे भेल। ज्ञातव्य जे यदुनाथ झा 'यदुवर' एहीठामक, मुरहोक छलाह। ओ राष्ट्रीय चेतनामूलक मैथिली कविताक पहिल संग्रह 'मिथिला गीतांजलि (1923/25)क सम्पादन प्रकाशन कएल।

यदुवर जी 'मिथिला गीतांजलि'क भूमिकामे लिखैत छथि- 'अन्यान्य विषयक काव्यरसमे भारतवर्ष हमर पूर्ण अवगाहित भए चुकल अछि। शृंगार, ज्ञान, भक्ति इत्यादि

सम्बन्धित कविताक रसास्वादन ई देश नीक जकाँ कए चुकल । किन्तु आब ओ समय नहि रहल, विलासादिक समय गेल । आब बिकट मार्मिक समय उपस्थित भेल अछि ।' बिकट मार्मिक समय उपस्थित भेला पर यदुवर सभकेँ राष्ट्रीय धुनमे मस्त पबैत छथि– 'सभक सभ राष्ट्रीय धुनमे मस्त छथि । देशकेँ, जातिकेँ अथवा समाजकेँ ऊपर उठेबाक प्रयत्न सभ कए रहल छथि ।' मैथिली साहित्यमे राष्ट्रीय चेतनाक एहन प्रखर स्वर सर्वप्रथम एही मधेपुराक धरतीसँ फूटल ।

राष्ट्रीय चेतनाक प्रकार :

राष्ट्रीय चेतना दू प्रकारक अछि–

1. सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना एवं
2. राजनीतिक राष्ट्रीय चेतना

सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतनामे राष्ट्रक सांस्कृतिक उन्नयनक आकांक्षा रहैत अछि । एहिमे जन्मभूमिक प्रति प्रेम, सामाजिक पुनरुत्थानक प्रेरणा तथा राष्ट्रक विभिन्न भाषा, संस्कृति, जाति, धर्मक प्रति आदरक भाव रहैछ । अपन क्षेत्रीय भाषा आ संस्कृतिक प्रति विशेष अनुरक्ति रहैछ । प्राकृतिक सुषमा सदिखन मोहैत रहैछ ।

राजनीतिक राष्ट्रीय चेतना सम्पूर्ण राष्ट्रकेँ एक एकाइ मानैत अछि । कोनो एक एकाइक प्रति विशेष आग्रह नहि रहैत अछि । राष्ट्रक समस्त भूमि आ जनकेँ समग्र रूपमे देखैत विकासक योजना बनबैत अछि आ कार्यान्वयनक लेल साकांक्ष रहैत अछि । दृष्टिक एहि समग्रताक कारणेँ राष्ट्रीय चेतनाक आधार वर्ग, जाति, धर्म, भाषा आ क्षेत्र नहि, समान अधिकार एवं कर्त्तव्योन्मुख व्यक्तित्वक संयोग होइछ । राष्ट्रीय चेतनामे जखन सांस्कृतिक चेतना एवं राजनीतिक चेतना दूनू समानुपातिक रूपमे वर्तमान रहैछ तँ एक उदात्त स्थितिक निर्माण होइत अछि । ओहि उदात्त स्थितिसँ जनतान्त्रिक प्रणाली सुदृढ़ होइत छैक तथा राष्ट्रक समस्त सांस्कृतिक विविधता भावात्मक रूपे एकठाम भए राष्ट्रीय गरिमा आ अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठाक बृद्धिमे सहायक होइत अछि ।

सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना

जन्मभूमिक बन्दना राष्ट्रीय चेतनासँ अभिभूत होएबाक आधार थिक भूमि । एहि वन्दनामे देशक माटि–पानि, गाछ–वृक्ष, पशु–पक्षी, इनार–पोखरि, चर–चाँचर, जंगल–पहाड़ आदिक प्रति प्रेम उमड़ैत छैक । मातृभूमिक कण–कणसँ भावात्मक एकता स्थापित भेला पर 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'क स्थिति अबैत अछि । एही अवस्थामे कोनो राष्ट्रक निवासी बन्दे मातरम्‌क तुमुलनाद करैत राष्ट्रीय स्वायत्तताक रक्षाक हेतु अपन प्राणोत्सर्ग धरि कए दैत अछि । यदुनाथ झा 'यदुवर' मातृभूमिक महत्त्वक प्रसंग लिखैत छथि–

'जय जय जन्म भूमि शुचि धाम
जय स्वर्गहुँ से परम रम्य छथि अति प्रिय सुखद ललाम
मन मोहिनि मन मोद प्रदायिनि मंगलमयि अभिराम ।'

पुलकित लाल दास 'मधुर' मातृभूमिकेँ स्वर्ग समान मानि, गुण–गान करैत छथि–

'जयति जयति मातृभूमि जयति जय सुभूमि,
जयजयजय स्वर्ग भूमि सम शुचि मम जन्म भूमि ।'

छेदी झा 'मधुप' पक्षीक कलरवमे भारत–भूमिक कलित गान सुनैत गाबि उठैत छथि– सिनेही मन बसि गेल धेमुराक तीर ।'

'भारत हमर जगत बीच जननी सभसँ रम्य महान' कहैत यदुवर भारतक विभिन्न अंचलक वर्णन भारतक अखण्डता केँ ध्यानमे राखि कएल अछि । एही भारत भूमिक मिथिला एक अनुपम कानन थिक जकरा कवीश्वर चन्दा झा 'यज्ञभूमि', 'पुण्यभूमि' एवं 'तिरहुत सन नहि दोसर देश' कहल अछि । मिथिलाकेँ भारतक एक अविभाज्य किन्तु महत्त्वपूर्ण देश मानैत यदुवर लिखल अछि–

'स्वर्ग समान सुखद सुषमाकर, जयजय मिथिला मातृधरा,
भरत खण्ड बीच सभसँ सुन्दर, अतिशय पावन पूज्यवरा ।'

हीरालाल झा 'हेम' भारतक अंकवासिनि मिथिलाक सतत सेवक रहबाक आकांक्ष व्यक्त कएल अछि–

'सकल सुर मन मोक्ष कारिणी विज्ञ जन मानस विहारिणि
सकल जीवन हेम तव सेवक जननि मिथिले ।'

जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' मिथिलाक वन्दना भव्यभाव प्रसारिणि जन व्यथा हारिणि रूपमे करैत छथि । मिधिलाक प्राकृतिक सुषमाक वर्णन करैत कविवर आरसी प्रसाद सिंह लिखने छथि–

'बाड़ी बाड़ी लतरल पान पोखरि पोखरि फुटल मखान
बाट घाटमे गुंजित होइछ, विद्यापतिक मनोरम गान ।
रह गाम गाममे धर्म धुरन्धर किछु ने बुझथि मीन कि मेष
धन्य धन्य ई मिथिला देश ।'

भाषा-प्रेम

सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतनाक दोसर महत्त्वपूर्ण घटक थिक भाषा-प्रेम । एकर कारणो छैक । शिशु अपन तोतराइत बोलीसँ माइक भाषा सिखैत अछि । अनुसरण करैत अछि । ओहि भाषाक प्रति असीम ममत्त्व जगैत छैक ओकर बहुविध विकास आ प्रचार-प्रसारक लेल जीवन भरि प्रयत्नशील रहैत अछि । मैथिल कवि एकर अपवाद नहि छथि । गणेश्वर झा 'गणेश' जन्म-जन्मान्तर धरि अपन मातृभाषा मैथिलिए बजबाक कामना करैत छथि- 'जौं जनमी पुनि मिथिलहि, बाजी मिथिला भाषा ।' हीरालाल झा 'हेम' मिथिला बाटिकामे मैथिल कविक शुभ लेखनीसँ निज मातृभाषा मैथिलीक पुष्प पुस्तक फुलेबाक कामना करैत छथि-

मैथिल कविक शुभ लेखनी निज मातृभाषा नहि भुले,
सर्वज्ञ मिथिला बाटिकामे पुष्प पुस्तक नित फूले ।'

तथापि, समाजमे एहन लोक अभाव नहि अछि जे मंचपर मातृभाषाक पक्षमे भाषणसँ अघाइत नहि छथि किन्तु दैनिक जीवनमे मातृभाषाक अवहेलना पग-पग पर करैत देखल-सुनल जाइत छथि । मुंशी रघुनन्दन दासक नजरिमे एहन मातृभाषा प्रेमी व्यंग्यक पात्र छथि-

'कहावी समा सभ्यमे अग्रगण्ये, तहाँ मातृभाषाक नामे डरे छी ।
सिखी आदिमे माए सौं मन्त्र रूपें, भला ताहि त्यागे ने लाज मरे छी ।'

मिथिला आ मैथिली जकाँ मैथिल सेहो देश देशान्तरमे अपन विद्या, ज्ञान, बुद्धि, तर्क, विवेक एवं कला-कौशल लेल विख्यात छथि । मिथिलाक एहि उच्च सांस्कृतिक परम्पराक रक्षक मैथिलक पण्डित त्रिलोचन झा अर्चना करैत छथि- 'जय जय जयति मैथिल जाति !' भारत मध्य ख्यात मैथिल जाति अपन भू-खण्डक अणु-अणुसँ प्रेम करैत अछि ।

राजनीतिक राष्ट्रीय चेतना :

राजनीतिक चेतनाक मूल लक्ष्य थिक स्वशासन । एहन शासन जे अपन लोक द्वारा परिचालित हो । से बिना राष्ट्रक भूखण्डपर आधिपत्यक बिना सम्भव नहि अछि । भारतवर्षक लेल ई अवधारणा नव नहि छैक । वैदिक मन्त्र अछि- आउ हम सब मिलि स्वराज्यक हेतु यत्न करी । ई यत्न बिना राजनीतिक राष्ट्रीय चेतनाक सम्भव नहि अछि । एकर अभावमे लोक हितकारी शासन-व्यवस्था सम्भव नहि अछि । सांस्कृतिक धरोहरिक रक्षा, लोकक धन-जनक रक्षा, नहि भए सकैछ । व्यापारक लाथे आएल अङरेज जखन भारतवर्ष पर पूर्णतः शासन करए लागल तँ राजनीतिक शोषणक अतिरिक्त आर्थिक शोषणक गति सेहो बढ़ि गेल । तरेतर तकर विरोधे बढ़ए लागल । लोकक ध्यान टुटलैक । अपन स्वर्णिम अतीत दिश ध्यान गेलेक । उद्‌बोधनक प्रयोजन छल । अच्युतानन्द दत्त लिखल- 'रहत न माइक दूधक लज्जा बिनु निज रक्त बहौने' आ मुंशी रघुनन्दन दास चेतौलनि- 'परदेशी सहजहि धन लूटय, छूटल धन जन ठेस ।'

समाजमे एहनो कतोक लोक छल जे व्यक्तिगत सुख-सुविधाक लेल बेहाल छल । किन्तु देशक हितक समय सुटकि रहैत छल । एहन स्वार्थी लोकपर श्यामानन्द झा व्यंग्य कएल अछि-

'घसमोड़ि की पड़ल छी माताक दुख दिनमे
घरमे घसकि रही से पैधे कहाय की हो ।
देश सेवा बेरिमे तँ सोम होथि छदाम लै,
बन्हकी गहना राखें छथि पान जरदा चाय पर ।'

सरस कवि ईशनाथ झा भारतवासीक तुलना सिंह शावकसँ कए उदबोधित कएल अछि-

'की केहरि शिशु केहनो निर्बल, नहि कूदि पड़य गजवर सिरपर ।
निज जन्म सिद्ध अधिकार हेतु, यदि मरब, मरब नहि बनब अमर ।'

दोसर दिश राघवाचार्यक माध्यमेँ युवकक प्रतिज्ञा स्वर पओलक-

'हम नव स्वतन्त्र युग सृजन करब, हम नव स्वतन्त्र युग सृजन करब ।
उँच नीच भूमि पथ अति शंकुल, गिरि गहवर वन गलि बड़ बंकुल ।
वन वधिक व्याघ्र सूकर शंकुक, दन्तार नाग मठिधर युगचुक ।
पथ चलब निशंक नहि हिचकि रहब, हम नव स्वतन्त्र युग सृजन करब ।'

राष्ट्रपिता बापूक भारतीय राजनीतिमे प्रवेशसँ गुणात्मक परिवर्तन आबि गेल छल । हुनक तर्क आ आचरणमे प्रभावक क्षमता छलनि । स्वदेशी आन्दोलन चलल । विदेशी वस्तु बहिष्कारक भेल । किन्तु केवल बहिष्कार पर्याप्त नहि छल । रिक्त स्थानक पूर्तिक हेतु कुटीर उद्योगपर ध्यान देल । खादीक प्रचलन शुरू कएल । मैथिल कवि अपन एहि राष्ट्रीय दायित्त्वक प्रति सतर्क छलाह । मिथिलामे प्रचलित भासपर छेदी झा मधुप 'द्विजवर' 'चर्खा चौमासा' लिखल-

पेखि जेठ प्रचण्ड ज्वाला परम क्लेशक आगरी,
त्यागि गेला तीर्थ ठेला घरहि बैसु नागरी ।
बैसि न व्यर्थ बिताबिय, चरखा चारू चलाबिय,
देखि देशक दरिद्रता न घुमरि घन मालिका
सूत सुभग तनु काटिय विरचि वसन तन धारिय ।'

अपन वैयक्तिक सुख-सुविधाक पूर्तिक लेल अथवा सांसारिक माया-जालसँ मुक्तिक हेतु ईश्वरक प्रार्थना लोक करैत आएल अछि । किन्तु मैथिलीक राष्ट्रचेता कविसभ राष्ट्रीय स्वाधीनता आ देशक भौगोलिक सीमाक सुरक्षा लेल ईश्वरसँ प्रार्थना करैत छथि । यदुवर गीता गायकसँ पुनः गान करबा लेल निवेदन करैत छथि- करू उद्धार शीघ्र करुणामय, पुनि कए गीता गान' तँ पुलकित लाल दास 'मधुर' निवेदन करैत छथि- 'पुलकित मन भए पूर्व सदृश करू भारतके अब त्राण' आ जीवनाथ झा घनश्यामसँ भारतवर्षक उद्धारक हेतु अवतार लेबाक प्रार्थना करैत छथि- 'भारत प्रिय हे घनश्याम शीघ्र, अवतार करू अवतार करू ।

मैथिली कथामे राष्ट्रीय चेतना- मैथिली कथामे राष्ट्रीय चेतनाक सन्दर्भभे उदाहरण स्वरूप वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु'क कथा 'भूमिक दूत बेङ'क उल्लेख करब । एहि कथामे इन्द्र छथि राजा अर्थात् भारतवर्षक शासक अङरेज, पृथ्वी थिकथि भारतमाता जे इन्द्रक प्रकोप सहबा लेल अभिशप्त छथि । बेङ थिक भारतक पद-दलित सामान्यजन जे प्राण-रक्षाक हेतु माइक पेटमे सटल रहैत अछि । राजाक प्रकोपसँ आतंकित बेङ माताक समक्ष उपस्थित भए कलजोड़ि विनय करैत अछि, -'है माता ! हमरा प्राणधरिक काज अहाँ के हो, तँ हम दए सकैत छी । हजारो बेङ तँ नित्य सापहिक मुहमे आहुति पड़ैत अछि ताहिसँ हमर शरीर अहींक काजमे आबि जाए से नीक ।' बेङ पृथ्वीक दूत बनि इन्द्रक समक्ष उपस्थित भए कटाक्ष करैछ- 'सरकार ! हम पृथ्वीक दूत बेङ, पृथ्वी महारानी हमरा पठौलन्हि अछि, कहि अबिऔन्ह जे एखनधरि हमर एको कोन नहि भरल अछि; तकर की कारण ?' ई सुनि इन्द्र लज्जित भए कहैत छथिन- 'पृथ्वी बहुत पैघ छथि, हम हुनकासँ हारि गेलहुँ । हमर अपराध क्षमा करथि । हम वर्षा बन्द करैत छी ।' विद्यासिन्धु भारतक सामान्य जनमानसमे प्रवाहित राष्ट्रप्रेम, दासतासँ मुक्तिक प्रबल आकांक्षा, साहस, धैर्यक धुकधुकीकेँ अकानि लेने छलाह । प्रायः इहो अनुमान कए लेने छलाह जे एहन शक्ति-सम्पन्न शासककेँ शस्त्र बलेँ नहि, शास्त्र बलहिसँ पराजित कएल जा सकैत अछि । भारतक स्वतन्त्रता प्राप्तिक इतिहास एहिसँ भिन्न नहि अछि । एहन-एहन अनेक कथा अछि, जे राष्ट्रीय चेतनाक भाव-भूमिपर अछि ।

उपन्यासमे राष्ट्रीय चेतना- मैथिली उपन्यासमे अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतनाक सन्दर्भमे पुण्यानन्द झाक 'मिथिला-दर्पण'क उल्लेख करब । उपन्यासक नायक योगानन्द अनुभव करैत अछि- देखू तँ मिथिलाक दूरवस्था । एक तँ मिथिलाकेँ के पूछय ? समस्त भारतवर्ष कोनो देशक गणनामे नहि अछि । भारतवासीके लोक भेड़ी-बकरीसँ उपमा दै छैक । भारतवासी केँ लोक गुलामक पदवी दै राखलक अछि ।' एहिना काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'चन्द्रग्रहण'मे अङरेज सरकारक 'डिवाईड एंड रूल' सिद्धान्तक मिथिलाक समाजपर पड़ैत प्रभाव आ धार्मिक स्थानसँ हिन्दू महिलाक अपहरणक चिन्ता अछि ।

मैथिली नाटकमे राष्ट्रीय चेतना- मैथिली नाटकमे सांस्कृतिक चेतनाक उदाहरण अछि मुंशी रघुनन्दन दासक 'मिथिला नाटक' । शारदानन्द झाक 'फेरार' नाटक 1942 ई क्रान्तिक आधारपर अछि । कपिल प्रभाकरक खट्टर काका चीनमे' 1962क चीनी आक्रमणपर केन्द्रित अछि । आदि ।

राष्ट्रीय चेतना जड़ पदार्थ नहि थिक । राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलनक समयक समस्त राष्ट्रीय चेतना राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्तिक हेतु घनीभूत भए गेल छल । स्वाधीनता प्राप्तिक बाद भारतवासीक ओ राष्ट्रीय चेतना समाप्त नहि भए गेल । राष्ट्रीय चेतनामे स्थितिक अनुकूल परिवर्तन होइत जाइत छैक । ई राष्ट्रीयताक स्थायी भाव थिक । किन्तु गुणात्मक परिवर्तन सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतनाक पक्षमे विशेष छैक । ते ओ क्रिया-कलाप वा सक्रियता राष्ट्रीय थिक जकरासँ अधिकाधिक लोकक हितक रक्षा हो, दलित-शोषित एवं पीड़ितक दुःस्थितिकेँ सुधारबाक हेतु अनुकूल परिवेश रहैक । सामाजिक असमानताक खाधिकेँ भरबाक प्रयास कएल जाइछ । मुदा, एकर अर्थ ई नहि जे राष्ट्रक अखण्डता अथवा राष्ट्रीय विपत्तिक क्षणमे ओ चेतना सुप्त रहि जाइत अछि । भारतीय संस्कृतिक अक्षयनिधि मानसरोवरक आक्रान्त भेला पर राष्ट्रीय चेतना पुनः ओही रूपमे जागि गेल छल । दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 'चाणक्य' महाकाव्य लिखि गेलाह । कविवर यात्री महावली लोकनायक सलहेसक घोड़ाके हिनहिनाइत देखल । कविवर सीताराम झा भारतीय नारी के मातृभूमिक रक्षामे जकर स्वर्णिम इतिहास छैक, ओहि राष्ट्रीय संकटक समय पुरुषक समाने कर्त्तव्य पथपर बनल रहबा लेल प्रेरित कएल- 'स्वदेशकेँ स्वतन्त्र राख बात मान मोर गय ।' आ गोपाल जी झा 'गोपेश'क सोनदाइ राइफल ट्रेनिंग सेन्टरसँ हरियर-हरियर कागज पर पत्र लिखैत छथि । कारगिल युद्ध, गलवान घाटी अथवा आतंकवादक माध्यमसँ राष्ट्रीय अखण्डतापर आएल वा अबैत संकटक समय सेहो मैथिलीक साहित्यकारक राजनीतिक राष्ट्रीय चेतनाक स्वर मुखरित भए उठैत अछि ।

स्वाधीनताक बाद आर्थिक समृद्धि आ सामाजिक असमानताकेँ समाप्त करबा लेल अनेक उपाय भेल । नियम कानून बनल। किन्तु तकर लाभ ओहि वर्गके नहि भेटल जकरा सबसँ वेशी प्रयोजन छलैक । लाभ पहुँचल त्रिमूर्तिक ओहिठाम । एहि प्रकारक राजनीतिक स्थितिपर कविवर यात्री(चित्रा) स्वाधीनता प्राप्तिक तत्काल बादहि व्यंग्य कएल–

बनिआ लीडर अफसर तीन त्रिमूर्ति,
कए रहला अछि अपन मनोरथ पूर्ति,
अपना लए सभ अनका हेतु बङौर,
तइ पर फाटनि रहि रहि कते बुकौर ।

नेताक अर्थ भए गेल चरित्रहीन, नैतिकता विहीन, फूसियाह, घोर अनाचारी, जातिवादी एवं सम्बन्धवादक प्रतीक । ओ जनतन्त्रक नहि लाभ भोगी तन्त्रक प्रतिनिधि जकाँ प्रतिपल आचरण करैत अछि । जे बेशी देलक जे बेशी दाम लगौलक तकरे पाटीमे कूदि गेल । जीवकान्त एकरा 'घरबा दुअरबा'क खेल कहैत व्यंग्य कएल अछि–

नेता लोकनि खेलाइत रहताह
घरबा दुअरबाक खेल
आइ ई घर खसौताह
काल्हि ओ घर खसौताह ।'

अपन मतदाताक लेल दुर्लभ भेल नेताक प्रसंग सोमदेव लीखल :–

'हर रहल हरवाह लग बड़दे दिल्ली गेल
चर्खा, साइकिल आ घड़ी परचा पर रहि गेल ।' आदि.....

संक्षेपमे कहि सकैत छी जे स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली साहित्यमे जाहि प्रकारक राष्ट्रीय चेतना विकसित भेल अछि, ओकर मूल स्वर स्वाधीनतापूर्वक चेतना जकाँ उदबोधनात्मक नहि, एकर स्वर व्यंग्यात्मक अछि । सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना आ राजनीतिक राष्ट्रीय चेतना परिस्थितिक अनुकूल प्राथमिकता स्वत:ग्रहण करैत उदात्त रूपमे व्यक्त होइत रहैत अछि । एहिमे एक दिस भारतक अखण्डता, समस्त भाषा, संस्कृति, जाति, धर्म आ सभ क्षेत्रक भौगोलिक सुषमाक प्रति समान आदर भाव अछि तँ दोसर दिस विसंगतिपूर्ण राजनीतिक चक्रचालित उत्पन्न स्थितिक विरोधमे मुखरित प्रखर स्वर । वस्तुत: राष्ट्रीय चेतनाक इएह काज थिकैक जे ओ एक–दोसरके सन्तुलित राखि देशक विकास आ सुरक्षाक प्रति लोक केँ सचेत करैत रहय । मैथिली–साहित्यक अध्ययन–विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे मैथिलीक साहित्यकार अपन राष्ट्रीय दायित्वक प्रति पूर्ण संवेदनशील आ परिपालनमे पूर्ण साकांक्ष छथि ।

धन्यवाद ।

फ्लैट नं. 24, झेलम अपार्टमेंट,
पाटलिपुत्रपथ, राजेन्द्रनगर, पटना–800016
email : rnharaman@gmail.com

किरणजी नास्तिक नहि छलाह !

–डा. विनोदानन्द झा

किरणजी जहियासँ लिख' लगलाह तहिया समाजमे अन्धविश्वास आ जड़ता पसरल छल । समाजमे जातीय–विभेद आ आर्थिक विसंगति छल । सामंत, जमींदार, बड़का खेतिहर घसलो अठन्नी बोइनमे दैत छल । खेसारीक बोइन अनूप छल । श्रमिक वर्ग ततबा गरीब छल जे मारि–पिट खाइयो कए 'मालिक'क खिलाफ नहि जा सकैत छल । देश परतंत्र छल आ समाजमे बड़का के आसरा पर गरीब जन–बोनिहार आश्रित छल । बड़काक आदर कएनहि ओकर पेट भरि सकैत छल । एहि सभक जड़ि मे छल जाति, पद आ धनक महत्त्व । एहि तरहेँ गरीब श्रमिक, जन–बोनिहार अपमानित होयतहुँ मालिक वर्गक सम्मान करैत छल ।

किरणजी प्रगतिवादी लोक छलाह । समाजवादी विचारधाराक छलाह । किरणजी सामाजिक परिवर्त्तनक अग्रगामी रचनाकार छलाह, संग्रामी छलाह । समाजकेँ नव–स्वप्न बाँटनिहार किरणजी एहि लेल किछु त्याग करबा लेल तैयार रहैत छलाह । समाजमे व्याप्त जातिक आधारपर, धनक आधारपर पदक आधार विभेदकेँ समाप्त करबाक आह्वान कर'वला आंदोलनी साहित्यकार किरणजी अपन विरोधक स्वर तेहन तीक्ष्ण रूपेँ अपना रचना सभमे व्यक्त कयलनि अछि जे हुनक व्यक्तित्वक संग–संग कृतित्वकेँ सेहो अद्भुत, अप्रतिम बना दैत अछि । हुनक एहि विरोधेक स्वरक आधारपर हुनक वास्तविक आकलन कएल जयबाक चाही । किरणजी सन मात्र किरणजी छलाह । ओ चाहैत छलाह एहेन जनयुग जाहिमे, सभकेँ भेटत विकासक अवसर । हेतै असली गुणक समादर । क्यो नहि बनतै भूदेव न डोम । केवल मानव । अप्पन भाग्य विधाता मानव । किरणजीक यैह संघर्ष-वाणी हुनक अस्त्र-शस्त्र रूपेँ समाजमे बन्दूकक गोली सदृश्य हुनका द्वारा साधल लक्ष्यकेँ बेधैत छल आ मचि जाइत छल हाहाकार, चित्कार । लोक तँ बलिदानी भगत सिंहकेँ सेहो साम्यवादी विचारधाराक कहैत छथि, मुदा सरदार सावरकर केर प्रशंसक सेहो छलाह । किरणजी समाजवादी तँ छलाह मुदा हुनक हृदय तखन एहन प्रतिबद्धताकेँ त्यागि देल जखन भाषाक आधारपर मिथिला प्रांतक गठन पर समाजवादी नेता हिनक संग नहि देलनि । किरणजी ओतहि रहलाह जत' रहबाक ओ ठानि नेने रहथि, मैथिली आ मिथिलाक संग । मैथिली एहन जेकर साहित्य समाजक विषमता केँ दूर करय, एहन साहित्य जे दबलाहा लोककेँ ऊपर उठबाक सम्बल दैक, ओकरा अपन भाषा, अपन मातृभूमिसँ सिनेह करयबाक लेल उत्प्रेरित करय । जेँ से नहि तँ किरणजी एहि सँ भिन्न साहित्य, एहिसँ फराक साहित्यकारक विरोधी, से विद्यापतिये ने किएक होथि । निर्भीक विरोधी । बिना लाग लपेटकेँ, ठाँय पठाँय ।

एही परिप्रेक्ष्यमे हुनका प्रति एहि धारणा पर विचार करब उचित होयत जे 'किरण जी नास्तिक छलाह ।'

डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण' प्रसंग अपन एक आलेख (किरण : प्रत्युत्तरक पुरोधा आलोचक, कीर्त्तिकिरण, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसव–पाही)मे किणजीक कट्टर नास्तिक होयबाक अपन धारणा व्यक्त करैत डा० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' कहलनि अछि– 'कट्टर नास्तिक किरण मैथिली साहित्यक महाप्राण विद्यापति पर वासनाक आरोपसँ जेना मर्माहत भए गेल होथि आ ओहि आरोपकेँ विखंडित करबाक लेल आत्मधारित समाजवाद ओ नास्तिकता केँ तिलांजलि दए दैत छथि आ लगले सनातन सत्य ओ आस्तिकताक प्रबल पक्षधर बनिकय ओकालति करैत छथि ।

रमणजीक आकलन किरणजीक व्यक्तित्वक मात्र अति सरलीकरण थिक । नास्तिक जे रहत से तरदय आस्तिक आ चट्ट दय नास्तिक भइये नहि सकैत अछि जे महादेवकेँ नास्तिकताक कारणेँ हुनका बोकिआयब पर हँसत ओहन व्यक्तिसँ आस्तिकताक प्रबल पक्षधर होयबाक आशा कथमपि नहि कएल जा सकैत अछि । किरणजीकेँ चिन्हबाक लेल 'मैथिलीक आँखि' चाही । दृष्टिकोणक विविधता किरणजीक विशेषता छल । विद्यापति प्रसंग ई कहब जे हुनक रचना सँ बुझाइत अछि जे जेना ओहि समयमे सभ महिला गोरि–नारि हृष्ट–पुष्ट मात्र छलीह, समाजमे गरीब–गुरबा जेना छले नहि, कारण जे दलित, वंचित जन–बोनिहार गरीब–गुरबाक कोनो चर्चा विद्यापतिक रचनामे अछिये नहि तँ की ई निष्कर्ष निकालब जे किरणजी विद्यापतिक विरोधी छलाह ? एहिना आचार्य रमानाथ झा 'नवीन गीत संग्रह' मे लिखलनि अछि जे किरणजी नास्तिक छलाह । रमानाथ बाबू सेहो अपन

किरणजीक संग ई कहि न्याय नहि कयल । आलोचक विद्वान लोकनि किरणजीक नास्तिकताक प्रमाणस्वरूप हुनक कविता माटिक महादेवक उल्लेख प्रबल रूपें करैत छथि । रमानाथ बाबू कहैत छथि (प्रतिमान, 2006 जन्मशती समारोह विशेष) :

''किरणजीकें अन्य सामाजिक मर्यादाक समान धर्महुक प्रति आस्था नहि छनि । हिनक विचारें धर्मादिक स्थापन 'बलवान मानव' अपन स्वार्थ सिद्धिक हेतु कएल अछि । एहि प्रकारक विद्रोहपूर्ण भावाभिव्यक्तिक हेतु किरणजी व्यंग्यक आश्रय लैत छथि । 'माटिक महादेव' तकरे उदाहरण थिक ।'' (नवीन-गीत) । मुदा से सर्वथा अन्यायपूर्ण आकलन थिक । किरणजीक समग्र रचना संसारकें यदि सम्यक दृष्टिसँ देखल जाय तँ तत्क्षण स्पष्ट भ' जाइछ जे किरणजी लक्षणा-व्यंजनासँ समाजक पदधारी, सामंत, जमींदारक अतेक तक जे साहित्यिक गोलैसी कयनिहार आ नेता वर्गक अहं पर चोट कयलनि अछि । सामाजिक जीवनमे अपन पदक लाभ लेनिहारक जे पाद-प्रक्षालन, जी हुजूरी देखल जाइछ ताहि पर चोट कएल गेल अछि-

पूज्य पदक किछु चेन्ह
जाधरि लगतह लागल
लतखुर्दनि सँ रहि सकैत छह बाँचल
किन्तु निष्पक्ष परीक्षक
कालक प्रवाहसँ पाबि न सकबह त्राण
झड़ि धोखरि जतेह सब चेन्ह ।
तखन की हेबह ? से करह कने अनुमान
पदें प्रतिष्ठित केर होइत अछि
की अन्तिम परिणाम से जनैत छह
केवल पद सत्कार

कविताक एहि अंशमे 'माँटि'क महादेव कें प्रतीक बनाय देवाधिदेव महादेवकें नहि मठोमाठ पदधारी लोकनिके सम्बोधित कयल गेल अछि । अकाट्य नहि बुझाइत अछि ई धारणा ? ई व्यंग्य महादेव पर तँ कथमपि नहि । पदक, ओहदाक क्षणभंगुरता पर ध्यान दिअयबैत किरण जी पुनः कहैत छथि-

तञ हे माटिक महादेव ! नहि करह कनेको अहंकार
जखनहि हेतह विसर्जन
लगतह सभ बोकिआबय

माटिक बनल महादेव प्रतीक थिक एहि भौतिक जगत केर उत्कर्षक सेहो । उत्कर्ष तँ ओ ने ठीक जे माटिक ढेर सदृश्य ढहि ने जाय । ओहि श्रेष्ठत्व कें जे मनुक्ख कें नहि बुझय अथवा समाजमे जन सामान्यक अपन पदक कारणें महत्त्व कम कय आँकय तँ किरणजी एकर विरोधी रहथि- से पद धारी राजा रहथु अथवा जाति धनक आधार पर अपनहि टा मनुक्ख माननिहार क्यो आन । पामोजी किरणजी कयलनि नहि आ जे करय तेकरो ओ स्वार्थी, लोभी मानैत छलाह । माटिक महादेवमे कहैत छथि-

लोक अछि आन्हर पर बुद्धी
जानैत अछि स्थानक टा सम्मान
नहि तँ, जकर बलें रुचिगर
बनैत छै, भोज्य पदार्थ
तै लोढ़ी सिलौटकें ओंघड़ाय
मन्दिरमे पड़ल निरर्थक
पाषाण पिंडकें क्यो की करत प्रणाम
तञ हे माटिक महादेव ! नहि करह कनेको अहंकार

सदिखन ई मानय पड़त जे जाहि कोनो पद वा शब्द नास्तिक विचारधाराक कारणें लिखल मानल गेल अछि से तथ्याधारित नहि । किरणजीक 'माटिक' महादेव थिकाह समाजक ओ वर्ग जेकरा प्रति किरणजी अपन दोसर कविता- सतयुग मे कहैत छथि-

अधम विलासी, छली प्रपंची
इर्ष्या-द्वेष-लोभमे पागल
अपने स्वार्थ-सिद्धिमे लागल
सुरा-अप्सरा-परवनिता-रत
नाना अनाचार-पारंगत
देखि बाटमे एक कामिनी
सद्यस्ताना मुक्त केशिनी
पशुवत भेल अधीर ।

पुनः कहैत छथि-

सहि न सकै छल आनक जे उत्कर्ष
मनुज-तपस्या नाशि मनबै छल जे हर्ष
अपन देशमे अपनो योग
अन्नोटा उपजा न सकै छल
घी-पान-मधु-मखान हेतुएँ
जी-मन जकर सिहाइत रहै छल
कामी-अकरी-पर शोषणरत

से कहबै छल देव
विश्वक भाग्य विधाता !
सभक कर्म्म-फल-दाता
आ वेदक ज्ञाता
तथाकथित सर्वज्ञ
त्रिकालक द्रष्टा
निस्वार्थ तपस्वी

एहने मठोमाठ महंथादि पर किरणजीक व्यंग्य थिक माटिक महादेव । जाहि वर्गक पूजन लोक-वेद करबा लेल परिस्थितिवश बाध्य छल । जँ 'सतयुग' कविताक अवलोकन किरणजीक दृष्टियें कएल जाय तँ ओ समाजक जन सामान्यक अपन भाग्यक आश्रय लय एहन समर्पण, से यदि भगवानो लग रहैक तँ तेकर विरोधी छलाह किरणजी, तँ की ओ नास्तिक भ' गेलाह ? टिप्पणिमे विद्या नहि रहनि लिखल तँ किरणजी फूलतोड़ा रहि गेला जिनगी भरि । किरणजी कर्मकांड, अंधविश्वास, भाग्यवादिताक विरोधी छलाह तँ की ओ नास्तिक भ' गेलाह ? माटिक महादेवक संग 'जय महादेव' वएह लिखलनि ने ? एक्के कालखंडमे, जाहिमे ओही महादेवकें कहैत छथि-

छी अहाँ सदाशिव, विश्वम्भर
भय क्रुद्ध बनै छी प्रलयंकर
सुन्दर नवयुग निर्माण हेतु
करइत छी जगकें क्षार-खार
कल्पनातीत अछि अहाँक सामर्थ्य
लक्ष्मीकांतक विष प्रयोग भय गेलनि व्यर्थ ।
छी अहाँ निर्भीक, करै अछि सत्य सतत निवास
अहाँकेर कंठमे
सत्यसँ भयभीत दुष्ट कहै अछि नीलकंठ

डा० रमानन्द झा 'रमण' (आलोचक किरणजी, कीर्त्तिकरण, साहित्यिकी) ठीके कहैत छथि जे, 'तेसर कोटिक रचनाकार समाजमे व्याप्त विषमता, भूख, अभाव, रोग, शोक, धार्मिक आडम्बर आ अन्धविश्वास आदि देखैत अछि । ओहिमे फँसि छटपटाइत एवं क्रमशः निष्प्राण होइत लोकक प्रति सहानुभूति रखैत अछि । ओ अनुभव करैत अछि जे समस्त वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, बाइबिल, कुरान मानव मानवक बीच विभेद उत्पन्न करैत अछि । ओ वर्चस्व स्थापनाक माध्यम थिक । सत्ताक नहि, मूल्यक समर्थक रहैछ । सामाजिक विषमता आ धार्मिक अन्धविश्वासक अनुकूल व्यवस्थाक मुखर विरोध करैत एक सचेत विपक्षीक भूमिकामे अपनाकें बनौने रहैत अछि । सत्ताक आँखिपर चढ़ि जाइत अछि । डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण' एही कोटिक मैथिलीक वरेण्य साहित्यकार छलाह ।' किरणजी भवितव्य, कर्मफल, लिखलाहा, लोक-परलोक, अवतारवादक विरोधी छलाह कर्मकांडक पेशकार पुरोहितक, दक्षिणाकामीक विरोधी छथि परन्तु नास्तिक नहि छथि । जाति-पाँजि, गोत्र आदिक आधार पर मनुक्खक श्रेष्ठता ओ नहि मानैत छथि ।

धर्मशास्त्र हमही छी रचैत,

सब जातिक कन्याक संग विवाह करबाक ब्राह्मणकें अधिकार छैक,

रतिक समयमे नहि लगैत छैक छूति-तूति ।

पुनः

बाभन बिआहत सब बरन,

अपन गरमी टा झाड़ि लेत, गाङोकै छुतहर जकाँ ओंघराय देत । (पराशर)

तँ की किरणजी समाजमे ई सब देखिकय चुप रह'वला रचनाकार बनितथि । कोना उठबितथि अपन विरोधक स्वर ? तैं विभिन्न प्रतीक बनाय एहन बज्र प्रहारकें अपन अस्त्र बनाओल जे एकर व्यापक प्रभाव पड़ैक जाहि लोक अपन अधोस्थितिक जालसँ बाहर अयबा लेल उद्यत भ' जाए । अपन आलोचनाक भय हुनका नहि छलनि । से खाँहे समाजक जाहि कोनो समस्यापर अपन विचार रखबाक होन्हि । आत्मपूजा, आत्म प्रतिष्ठा हुनका पसिन्न नहि छलनि । परम्परागत भारतीय समाजक विकृति सभक घोर विरोधी किरणजी वर्ण व्यवस्था, कर्मकाण्ड आदि पर सतत चोट करैत रहलाह । किरणजी सामाजिक वैषम्य, शोषण, उत्पीड़नक विरुद्ध तँ अपन रचनाक माध्यमे जनचेतनाकें उद्‌बुद्ध करितहिँ रहलाह आ 'वर्गहीन समाजक निर्माणक दिशाबोध सेहो करैत रहलाह । हिनक कवितामे शोषणक प्रति विद्रोह आ शोषकक प्रति आक्रोश अभिव्यक्त होइत रहल । किरणजी महादेवकें अहंकारी मानैत रहितथि तँ की ओ कहितथि अपन कविता 'जय महादेव'मे-

दैत छी जगकें अहीं निज माथ सँ
शशिकला सम रुचिर स्निग्धा प्रकाश
मन्दाकिनी केर विमल शीतल

सलिल धारा सदृश जीवनदान
हे नकुल ! कुल मूलक अहंकारकें तोड़िनिहार
छी अहाँ जन-एकता सकार ।

स्व० कवि मधुकर जी (श्रद्धाञ्जलि) अपन पुस्तक कालजयी कवियत्रीमे लिखने छथि जे ''ई (किरणजी) सामंतशाही आ शोषणक कट्टर विरोधी आ कटु आलोचक छलाह । ई प्रतीकात्मक कविता द्वारा ओकर जरि मूल उखन्न कएल अछि । हिनक 'माँटिक महादेव'मे एकर स्पष्ट चित्र अछि । अंध सनातन धर्मी तथा कट्टरपंथीक ई कटु आलोचना कएल अछि तदर्थ लोक हिनका नास्तिक धरि कहल अछि ।''

किरणजीक संग गाम-गाम जाय विद्यापति पर्व आयोजनमे सहयोग देनिहार लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान डा० किशोरनाथ झा सेहो अपन एक निबंध 'लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार किरणजीक पुण्यतिथिक अवसरपर'मे कहैत छथि- 'सामाजिक जीवनमे सुधार करबाक दुर्दान्त आग्रहक बानगी भेटैत अछि- 'माटिक महादेव' कवितामे । अप्रस्तुत प्रशंसाक माध्यमे एतए ओ कहल अछि जे पद पर रहलहु पर अर्थात् समाजक उपकार करबाक स्वरूप योग्यता रहलहु पर ककरहु कोनो उपकार नहि करबाक प्रवृत्ति निन्दनीय थिक । एहन लोक ओतबे काल धरि पूजित होइत छथि जा धरि पदासीन रहैत छथि, पछाति ओ स्वत: समाजसँ उपेक्षित भए जाइत छथि ।'

अंतमे प्रफुल्ल कोलख्यान सँ सहमत होइत छी-
''किरणजीक सामाजिक समयक सीमाकें ध्यानमे नहि रखनाइ अन्याय होएत ।''

उपाचार्य (सेवा निवृत्त)
ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा
अधिषद सदस्य,
का.सिं.द.सं. विश्वविद्यालय, दरभंगा
उजान, लोहनारोड, दरभंगा ।

विशेष रूपे सूचनीय

(क) संस्थानक पूर्व निर्धारित कार्यक्रम तिथि, समय ओ स्थान

1. गणतंत्र दिवस- 11 बजे पूर्वाह्न मे, स्वतंत्रता दिवस पूर्वाह्न 10 बजे सँ
2. किरण जयन्ती 1 दिसम्बर 1:30 अपराह्न सँ
3. स्व. रमानाथ झा जयन्ती-21 सितम्बर
4. 9 अप्रील किरण स्मृति दिवस +2 उच्च विद्यालय उजानक परिसर अपराह्न 4:00 सँ
5. जानकी नवमी (एहिवर्ष 13 मई के) अपराह्न 3:30 सँ जानकी मन्दिर नरुआर (मधुबनी) आन सव नियम पूर्ववत अछि ।

(घ) किरण मेमोरियल एडुकेशनल एण्ड वेलफेयर सोसाइटी हजारीवाग झाड़खण्ड द्वारा प्रायोजित "किरण साहित्य सम्मानक घोषणा किरण जयन्ती 1 दिसम्बरक मंच सँ कैल जाइछ तथा 9 अप्रील के किरण स्मृति दिवसक अवसर पर प्रदान करवाक परंपरा अछि । वर्ष 2018क सम्मान डा० जगदीश मिश्र के देल जा रहल अछि ।"

सचिव
किरण मैथिली सा०शो० संस्थान
धर्मपुर (उजान) लोहना रोड, दरभंगा

निवेदन:

1. सदस्य लोकनि सँ निवेदन जे सब आयोजन मे आवि आयोजन के सफल वनावथि । सब सूचना तें दऽ देल जा रहल अछि ।
2. संस्थानक सदस्य, संरक्षक ओ व्यवसायी हेतु विशेष छूटक प्रावधान पुस्तकक क्रम मे कैल गेल अछि ।
3. बाल बच्चा कें मैथिली सिखाउ घर मे अपनो मैथिली मे गप्प करी ।

किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थानक
प्रकाशन कीनू बाँटू आ पढ़ू ।

नव दृष्टिएँ किरण जी

–राजीव कुमार झा 'एकांत'

चिंतक, सुधारक, आंदोलनी, प्रचारक, साहित्यकार आदि विविध स्वरूपक लेल सामान्यसँ विशिष्टजनक बीच स्नेह आ सम्मानक भागी, किरण जीकेँ साहित्य सृजन, सामाजिक चिंतन एवं अनवरत आंदोलन समकालीन लेखकबृंदसँ पृथक अतिविशिष्ट विभूतिक श्रेणीमे ठाढ़ करैत अछि । आ' से व्यक्तित्वक एहि सब पक्ष पर हस्ताक्षर कलमक लेखनीसँ निकसल शताधिक उदगारसँ स्वत: सिद्ध अछि । 'आरम्भ कोना करी ?' एहि दुबिधामे समय ससरल गेल । किरणजीक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक कोनहु पक्ष रखबा काल केवल अज्ञात रोमांचे टा नहि, ज्ञानक लघुताक बोध सेहो अछि आ तद्जन्य अभिव्यक्त अवरोधो । आलेखमे सीमित संभावना रहैछ, एहनामे केंद्रमे किरण जीकेँ राखि नव दृष्टिकोण सँ देखबाक प्रयास कऽ रहल छी ।

किरणजीक जन्मजात राष्ट्रीयता : कोनो वस्तु, व्यक्ति वा घटनाक मूल्यांकन आ तद्जन्य अवधारणा समय सापेक्ष अथच कालखंडक ध्यान राखि कैल जायब वैज्ञानिक अन्यथा, चिन्हक प्रयास मूलहिंमे भ्रमित होयबाक संभावना ।

छोट-पैघ रजवाड़ाक समूह भारत अदौकालसँ सांस्कृतिक संघ छल, प्रशासनिक राष्ट्र नहि । गुप्त कालकेँ छोड़ि दी तँ गुप्तेतर कालमे तेहने स्थिति रहै ।[1] अतिप्राचीन एवं वैदिक कालक विभिन्न धर्मग्रन्थोमे एकरे प्रमाण भेटैछ ।[2] मोगल कालोमे समग्र भारतमे एक सल्तनतक अधिकार नहि छलै । समान सांस्कृतिक धार्मिक विरासतक चलिते एकसूत्र रहय । भाषा, लिपि, राष्ट्रीयता, नागरिकता पृथक रहैक । विभिन्न भारतीय भाषाक प्राचीन साहित्य आ आलेखोमे भिन्न-भिन्न प्रसंगमे 'नागरिक' शब्दक समानार्थ प्रयोग अही मतकेँ संपुष्ट करैत अछि ।

सांस्कृतिक संघ भारतक स्थान पर प्रशासनिक इंडियाक गठनक श्रेय अंग्रेजकेँ अछि । वर्तमानक भारत, विभाजनक उपरान्तो 572 टा स्वतंत्र रजवाड़ा वा आजुक मोताबिक देशक समूह थिक । सरदार पटेलकेँ एकरे एकीकरणक लेल राष्ट्र निर्माता आ लौह पुरुष कहल गेलन्हि ।[3] ब्रिटिश नियंत्रणक आधार पर दू तरहक इंडिया छल-

1. 'इंडियंस इंडिया' या 'प्रिंसली स्टेट' नामे जानल जाइ बला ब्रिटिश कालक अखंड भारतक लगभग 40% भूभाग । जयपुर, जोधपुर, कश्मीर, हैदराबाद, जूनागढ़ आदि अनेको स्वतंत्र छोट देश जाहि ठामक राजा, ब्रिटिशक आधिपत्य स्वीकारि संधिक आधार पर टैक्स दैत रहथि । राजाक ओहदा आ सेना रखबाक अनुमति सहित स्वतंत्र प्रशासनिक अधिकार रहै एवं 2. ब्रिटिश इंडिया वा प्रांत कहल जाइत शेष भू-भागक ओ राजा-रजवाड़ा जेकरा या त' अंग्रेज सीधा जीत लेने छल यथा- बंगाल वा 1857 उपरांत मुगल सल्तनत आदि । हिनका लोकनिकेँ ने राजाक ओहदा रहैन आ ने सेना रखबाक अधिकार । प्रशासनिक अधिकार राजस्व उगाही धरि सीमित, मिथिलाक जमींदार सब अही श्रेणीमे रहथि ।[4]

किरण जीक जन्म पौष शुक्ल पड़िव शाके 1314 तदनुसार 1 दिसम्बर 1906 मे मातृकमे भेलन्हि । 1857 क विफल सैनिक विद्रोहक उपरांत मुगल साम्राज्य बचलैक नहि । मिथिलामे जमींदार तऽ दरभंगा, राजनगर, बेतिया, गढ़बनैली, सोनवर्षा, सुगौना आदि अनेको रहैक, मुदा राजा क्यो नहि । मगध एवं बंगालक बीचक क्षेत्र 'मिथिला' ब्रिटिशक प्रत्यक्ष नियंत्रणमे रहय, जतय किरण जीक जन्म भेलन्हि । तैं हुनक जन्मजात राष्ट्रीयता ब्रिटिश इंडियाक हिस्सा मिथिलाक रहन्हि । यैह सिद्धांत 1947 सँ पहिनेक जन्म लेनिहार समस्त मैथिलक लेल समीचीन अछि ।

किरण हृदयमे भाषा आन्दोलनीक उद्भव- स्वराज आंदोलनमे बढ़ैत संलिप्ततakेँ देखि 1930 मे पिता विवाह स्थिर कय देलखिन्ह । विवाहोपरन्त नव परिवेश आ अर्थाधार पाबि किरणजी बनारसमे आयुर्वेद महविद्यालयसँ शिक्षा लेबय लगलाह । ओतय शिक्षा संग स्वराज आन्दोलनक जुलूस आ हड़तालो करथि । प्राचीन कालेसँ भारत वर्षक सांस्कृतिक-धार्मिक केंद्र काशी, कांग्रेसक प्रथम कार्यालय एतहि भेने आ हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनाक बाद, आंदोलनक हृदयस्थलीक संगहि शिक्षाक केंद्र सेहो बनि गेल रहय । आस आ आस्था समेटि, समुच्चा भारतक प्रतिनिधित्व करैत छल । नित्य आन्दोलनक टटका खबरि आगिक लुत्ती जेकाँ पसरै । क्रन्तिकारीक बीच स्वराज संग आरो विषयक बेस चर्चक विषय होइक यथा- ब्रिटिश शिक्षा पद्धतिक दुष्परिणाम, मातृभाषा आधार पर प्रांत लेल उड़ीसा-आंध्रक

निरंतरप्रयास आदि-इत्यादि ।

बंगाली समाजक राष्ट्रीयताक अर्थ मातृभाषा प्रेम छैक से 1971 मे बांग्लादेश बनने सब जनलक । अपन भाषा-संस्कृतिक प्रेमी अंग्रेजो अछि । अही भावसँ प्रभावित किरणो जी जतय गेला मिथिला राष्ट्रीयताक पर्याय भाषा 'मैथिली' लेनहि गेला । सन 1930 ई० प्रवासक प्रथमे वर्षमे 'मैथिल छात्र समिति' गठित कै हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक शिक्षण हेतु आन्दोलन ठाढ़ केलन्हि । सन 1933 मे सफलतो भेलन्हि ।[5] असंगठित प्रवासी समाज सहित समुच्चा मैथिल समाजक लेल युवा जनशक्तिक बलें कार्यसिद्धि नव गप्प रहैक । स्वतंत्रता आंदोलनी किरण जीक हृदयक मातृभाषा-भूमिक प्रति संवेदनशील आ रूपांतरणक अति विशिष्ट एवं ऐतिहासिक घटना थिक । भारतक भूगोलमे भाषाधार प्रांत 'मिथिला' लेल सतत यत्नशील किरण जीक जनएकताक सूत्र भाषा अर्थात 'मैथिली' रहलन्हि । 14 टा पूर्ण राज्य आ 6 टा भाषाधार केंद्रप्रशासित राज्यक देश भारतमे एखनो कतेकोकेँ भाषाधार राज्यक मर्म आ मिथिला-मैथिलीक अद्वैतवाद फरिछ नहि छन्हि तैं, ओ लोकनि किरणजीकेँ भाषा आंदोलनी मानैत छथिन्ह ।

किरण साहित्यक ध्येय : 'हम कवि कोना बनलहुँ'[6] शीर्षक साक्षात्कार आलेखमे किरण जी तात्कालिक जिम्मेदार पारिस्थितिक आ बंगालक लोकक जाति-धर्मसँ उपर भाषा प्रेम आ भाषाइ राष्ट्रीयताक स्पष्ट उल्लेख कैने छथि । कोनो भाषाप्रेमी ओहने कल्पना मैथिलीक संदर्भोमे करत, ओहो केनहि हेताह । 'स्वान्त: सुखाय' केर स्थान पर 'बहुजन हिताय' भावक निर्द्वन्द रचनाकार किरण जीक दृष्टिमे कविक अर्थ 'कवि हओ ! जूनि कवि नाम हंसबाह' सँ फरीच्छसँ बोध होइछ । एहन नहि जे किरण जी काशीसँ मैथिली आन्दोलनमे सक्रियता सँ पूर्व नहि लिखने रहथि । सन 1930 सँ पूर्वक रजौड़सँ घुरलाउपरान्त सन 1928 सँ 1930 धरिक भक्ति आ श्रृंगारिक रचना ''किरण कवितावली'' आ 'रसमंजरी' नामे प्रकाशित अछि जे प्रचिलित भास पर लिखने रहथि । नव मैथिली गीतक अभाव रहने हिंदी गेनिहार टोलबैया मित्रक हेतु । इहो मातृभाषा प्रेमेक परिचय दैछ । आन्दोलनक प्रभावेँ विकसित अंतर्दृष्टिक कारणसँ कालांतरमे किरण साहित्यमे भक्ति आ रजनी-सजनी दृष्टव्य नहि होइछ ।

1925 लगैत मिथिला मिहिरक हिन्दीकरण आ मिथिला मोदक बंद भेने मैथिली पत्र-पत्रिकामे शून्यताक स्थिति रहैक । आंदोलनक बीच पंडित कुलानंद मिश्रक संपादनमे हस्तलिखित पत्रिका मैथिली सुधाकरक प्रकाशन आ 1936 सँ मिथिला मोदक पुनर्प्रकाशन किरणजीक प्रतिबद्धतेक परिचायक अछि । नियमित लेखकक अभावकेँ भरबाक लेल रामशंकर, उमाशंकर, वैद्यसर्जन, राजहंस, साइक्लोन, विक्षिप्त, भीमनाथ आदि छद्म नामसँ लिखल अनेको लेखमे किरण जीक समाज सचेतक, भाषा प्रचारक, उचितवक्ता आ अभिभावकीय पक्ष दृष्टगत होइछ । किरण साहित्यक एहि कालक विश्लेषण उद्वेलित करैत अछि । हुनक समतामूलक जातिहीन समाजक परिकल्पनासँ प्रेरित रचनाक प्रभावें अनेको कवि-साहित्यकार शोषित वर्गकेँ केन्द्रिय पात्र राखि सृजन करय लगलाह । मैथिली साहित्यक नवयुगोदय काल मानल जा सकैछ । पोथी भले जेकर जहिया प्रकाशित भेल हो किन्तु 1930 क दशकसँ पूर्व किरण जीसँ पहिने के एहन लिखलाह ई सघन शोधक विषय अवश्य थीक । किरणक साहित्यक दृष्टि, विषय, प्रभाव आ उद्देश्य पर अनेको आलेख अछि तथापि एखनो क्रमबद्ध शोधक खगता बुझना जाइछ ।

की गाउ ? मे वंचित वर्गक प्रति हुनक विलक्षण अभिव्यक्ति अछि :-

नैनामे लहुक लेश ने छै उपमान हेतैक सरोज कोना ?
जागल छै छातीक हाड़-हाड़ चकबा बनतैक उरोज कोना ?
पेट पीठ सटि एक भेल सोपान मनोजक हैत कोना ?
बच्चा बिलखै छै दूध बिना बनतै कहु सोमक घैल कोना ?

मुदा ताहू दुर्भाग्यक आ वेदनाक अंत कविकेँ मिथिलेसँ भेटैत छन्हि :

गैब तखन हम मेघराग धधरा सँ झहरत सलिल धार
कोइला बनि जायत शस्य श्याम संतप्त धरा सुन्दर विहार
समयक प्रतिनिधि समयानुकूल मधुभाषी कोकिल तखन बनब
मंजुल मातृ मही मिथिला मे घर घर तिरहुत गान करब[7]

किरणजीक दृष्टिएँ मनुक्ख कर्म आ विचारक आधार सम्मानक अधिकारी अछि जाति वर्ग जे रहौक । साहित्योमे मानवता आ जातिहीन साम्यवादी भाव निर्द्वन्द्व रुपमे अछि । जैह सिद्धांत मनुक्ख पर सैह सुदर्शनधारियो पर । कतय नुकायल छी हे श्याम शीर्षक रचनामे लिखैत छथि :-

''कोना चलत छलमय संसार, योगिराजके योग्य थीक की ?
मायामय व्यवहार ? कर्तव्य-बुद्धि केर भीषण शत्रु !

मोहमयी लक्ष्मी केँ ठेलि, हृदय सँ हटा अनर्थक मूल
आत्मा केर कठिन जंजीर, पापमय कौस्तुभ मणि अनमोल
विश्व भरिक वायु केँ फूकि, शंख सँ करू भयंकर घोष
घुमा कै गदा चलाउ ठीक, चूर भ' खसै नखत रविचन्द्र
शेषक फणा, काछुकेर पीठ, चूर हो मचय विकट भूकम्प
धरामह धसय आल्प्स कैलाश, उगय उदधिसँ चौरस भूमि
सलिल सँ प्लावित हो मरुदेश, शस्यसँ श्याम होय भूगोल
स्वस्थ भय तखन करू नव सृष्टि, जतय नहि रहय विषमता क्रूर
सभ हो सुखी स्वस्थ निर्भीक, सब हो कुली सबहि नरपाल
सभकेँ भेटै वस्त्र भरि देह, सभ केर भरै अन्नसँ गाल''

हमरा दृष्टिएँ ब्रिटिशिक दमन आ अत्याचार सँ मर्माहत किरण जी काशीक भूमिसँ विश्वनाथकेँ 'यदा यदा ही धर्मस्य'केँ मिथ्या आश्वासन कहि उपराग दैत लिखैत छथि :-

''वेदवादी लोकसब कहैत छथि दीनबन्धु,
अंतर्यामी, विश्वनाथ, किन्तु से समुचित नहि ।
कारण जे तेहन यथार्थ मे रहितहुँ तँ,
दीन केर पालन सँ होइतहुँ संकुचित नहि ।
मानव पिशाच केर नित्य नग्न अत्याचार,
हाय दिव्य लोचन सँ देखि की सकितहुँ नहि ?
पुण्य भूमि भारत केर मर्मवेधी आर्तनाद,
सुनि, सौख्य स्वर्ग केर छोड़ि दौड़ि अबितहुँ नहि ?''[8]

सामंत विरोधी नास्तिक किरण जी : निर्लोभ प्रकृति, नि:शंक प्रवृति, निधोक वचन आ मैथिल आँखिक कर्मठ आ संघर्षशील किरण जीक व्यक्तित्वकेँ नकारात्मक अर्थसँ युक्त छवि समाजक सोझां रखबाक लेल सामंत विरोधी आ नास्तिक एहि दुनू अर्थे खूब चर्चा भेल अछि । किन्तु कियैक ?

वस्तुत: किरण जीकेँ सामंत विरोधी घोषित केनिहार दू तरहक लोक छल । एक जे किरण जीक खंडवला कुलक विरोधक कारण नहि जनैत छल दोसर जे सब कारण जनितो कतिपय कारणे सत्यके अंठाब आ लोक समाजमे तथ्य बाजय नहि चाहैत छल । संयोगसँ दुनू वर्गक लोक किरण जीक निकट रहलाह आ हुनक नकारात्मक छवि ठाढ़ कय विरोधक वातावरण बनबैत रहला । एहि बौद्धिक प्रपंचकेँ हुनक शिष्यो लोकनि तमगे बुझि प्रचारित करैत रहला ।

जन्म आ बाल्यकाल मातृक महाराजपुर ड्योढ़ीमे चंद्रमणि ठाकुरक ओतय । आरम्भिक शिक्षा रजौड़क सामंत राजा टंकनाथ चौधरीक कृपेँ हुनके कहने रानीक देख रेखमे । अपनो ससुर माधव झाक 1100 एकड़क जगीरदारी रहन्हि । लोकतंत्रक समर्थक हेबाक कारणे जे सैद्धांतिक विरोध रहल हो मुदा ब्रिटिश राज 1858 के बादक खंडवला कुल वंशजक आ हुनक चारण केनिहारक अतिरिक्त कोनो अन्य जमींदारक विरोधक साक्ष्य नहि भेटैछ, तखन ?

मिथिला वेद-भूमि रहल अछि आ सनातनी वैदिक संस्कृतिमे ने जन्मसँ जाति वा श्रेष्ठताक विचार अछि आ ने कर्मकांडेक । जन्मजात जाति आ कर्मकांड बादमे आयल । वैदिक ग्रन्थेक सूत्र 'ॐ असदो मा सद्‌गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय'[9] के आधार बना कर्मकाण्डक विरोध केनिहार बुद्धकेँ जखन नास्तिक कहि बारि देलक तँ आनक कोन कथा । षड्‌दर्शनमे चारि दर्शनक भूमि मिथिलाक समाजमे नास्तिक होयब अपयशक कारण रहैक । कर्मकांड आ रुढ़िविरोधीकिरण जीक वैदिक विचारधाराकेँ नास्तिक कहि प्रचारित कयल गेलन्हि । साक्ष्य अछि कविता संग्रहमे किरण साहित्य नहि सम्मिलित करबाक पक्षमे पंडित रमानाथ झाक टिप्पणी ।[10] किरण जीक धार्मिक विचारक प्रमाण अछि देशक आजादीक संदर्भमे लिखल हुनक आलेख ।[11]

किरण साहित्यक संदर्भमे स्व. रमानाथ झाक टिपण्णी पर एतबहि कहब पर्याप्त जे कोनो एक विषयक विद्वान आन विषयमे मूढ़ सम होयब असंगत वा अपराध नहि । आदरणीय रमानाथ बाबूकेँ भाषाक विद्वानक रुपमे ककरहु अनुमोदनक प्रयोजन नहि मुदा इहो रच्छ आ संतोषक गप्प अछि जे हुनका एखन धरि केओ मनोविज्ञानक विद्वान घोषित नहि केलकन्हि अछि । साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि रहैत हुनक अदूरदर्शी निर्णयक समीक्षा आजुक विद्वत समाज द्वारा भाषाक स्तर पर लघु दृष्टिये आ कालिदास सन कृत्यक रुपमे होइत अछि ।

मैथिली भाषाक स्वरुपकेँ लै कै सेहो किरण जीक आ खंडवला वंशसँ उपकृत एकटा वर्ग विशेषमे सौजनक स्थिति नहि रहन्हि । किरण जी 'मैथिल आँखिक' चर्चा करैत रहथि अर्थात भाषाक हितमे दूरदर्शी व्यापक दृष्टि । हुनका लेल मातृभाषा समाजकेँ संगठित करबाक सूत्र छल आ से तखने संभव रहैक जँ आम जनक कंठमे रहल मैथिलीक लोकभाषास्वरुप बांचल रहितैक । बुझैत रहथि संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक भाषा मैथिली लोक समाजक चित्त आ कंठसँ ओहिना उतरि जैत जेना संस्कृत उतरि गेल । शुद्धपञ्चकोशीसँ

प्रेरित भाषाइ श्रेष्ठताक लौलमे विद्वत पंडित वर्ग द्वारा मूल शब्दक उपेक्षा आ आयातित शब्दक प्रयोगक आधिक्यक मुखर विरोधी रहथि । इहो एकटा मुख्य कारक रहय किरण जीक प्रति एक तरहक वर्ग विद्वेषक । संयोगे कहि सकैत छी जे यैह विशिष्ट वर्ग खंडवला कुलक निकट सलाहकारो रहथि आ एक्कहि परिवेशक होबक कारणे निकटो ।

किरण जीक खंडवला कुल विरोध, कारण की ?- खंडवला कुल आ कुलक चारण वर्गसँ किरण जीक विरोधकेँ बुझबाक लेल ब्रिटिश राजमे 1858 सँ लक्ष्मीश्वर सिंहक बालिग हेबाक आ जमींदारी सम्हरबाक बर्ख सन 1880 सँ कामेश्वर सिंह कालखण्डमे 1947 मे देश आजाद हेबा धरि, एहि वंश द्वारा मिथिला आ मैथिलीक प्रति लेल निर्णयक विश्लेषणसँ बुझल जा सकैत अछि । महत्वपूर्ण एहि पक्ष पर विविध कारणे विस्तारसँ एखन धरि विश्लेषण प्रकाशित नहि भेल अछि । मैथिलीक व्यथा-कथा, भाषाधार मिथिला राज्य पर ग्रहणक कारक तत्व, लिपिक दुर्भाग्य, सामाजिक एकताक विघटन संगहि किरण जीक सामंत विरोध, कट्टर भाषाइ राष्ट्रीयताक समर्थक व्यक्तित्वक परिपक्व होयब, सबहक कारक एतहि छपित अछि ।

विद्वानक मतें बौद्ध संक्रमणोक कालमे मिथिलाक भाषा-संस्कृति बाँचल रहल रहै । कर्णाट कुल आ तदुपरांत ओइनिवार वंश धरि भाषा संस्कृतिक विघटनक साक्ष्य नहि भेटैछ । महाकवि विद्यापतिक 'देसिल बयना सभजन मिट्ठा' मिथिलामे प्रथम सामाजिक क्रांति रहय जाहि कारण मैथिली भाषा आ सर्वहारा समाजकेँ संबल भेटलैक । खंडवला वंशक कालमे मोगलोक अधीन महेश्वर सिंह धरि भाषाक स्तर पर फारसी शब्दक प्रवेश जे भेल होउ मुदा मैथिलीकरण भेलाक बादे आ तैं भाषा-संस्कृति लोक समाजक स्तर पर अप्रभावित रहल छल ।

1857 के सैनिक विद्रोहक बाद अंग्रेज जखन दिल्ली पर प्रत्यक्ष नियंत्रण करबाक निर्णय केलक दिल्लीक अधीनक खंडवला कुल सहित गढ़बनैली, श्रीनगर, बेतिया, सोनवर्षा आदि मिथिलोक सब जमींदारी स्वत: नियंत्रणमे आबि गेलै । 1860 मे पिताक महेश्वर सिंहक मृत्युक समय लक्ष्मीश्वर सिंह 2 वर्षक रहथि । वालिग हेबा धरि शिक्षाक व्यवस्था ब्रिटिशक देख रेखमे 'कोर्ट्स ऑफ वार्डस' के अधीन । जाँचि परखि कोनहुँ नीति बनेनिहार अंग्रेजक लेल मैकानलेक विखंडनकारी शिक्षा नीतिक प्रयोगक नीक अवसर रहै आ से भेले हेतन्हि ।[11]

सन 1880 मे लक्ष्मीश्वर सिंहक हाथमे जमींदारी अइलाक बाद बहुतो एहन निर्णय देखना जाइछ जकर भाषा-संस्कृतिक उपर दूरगामी आ विध्वंसात्मक प्रभाव पड़लैक । समाज खंडित भेलै आ वैमनश्य ओ असंतोष उपजलै । पैघ सूचीमे किछु प्रमुख भाषा संबंधी निर्णय छल :-

1. लक्ष्मीश्वर सिंह द्वारा 1888 ई. आबि प्रशासनिक कार्यमे आरंभिक उर्दू आ हिंदीक मिश्रण हिंदुस्तानी भाषाक प्रयोगक आदेश । 2. प्राचीन आ समृद्ध लिपि मिथिलाक्षर / तिरहुता लिपिक प्रयोग पर रोक । 3. रामेश्वर सिंह कालमे मैथिल महासभाक गठनमे मात्र ब्राम्हण आ कायस्थ सम्मिलित करब । जाहि परिणामे मंदार अधिवेशनमे यादव समाज विरोधमे मैथिलीसँ काटि जेबाक निर्णय केलक आ 'मैथिल' शब्द लोक समाजक दृष्टिमे क्षेत्रीय सँ जातीय पहिचान बनि गेल । सब जाति-धर्मक बीच भाषा क्षेत्रीय एकताक कारक तत्व छैक, से नष्ट भेलै । 4. बनैली, बेतिया, सोनवर्षा, श्रीनगर आदि आदि जमींदारकेँ निच्चाँ देखेबाक लौलमे खंडवला वंश पोषित पंडित लोकनि द्वारा 'शुद्धपंचकोशी सिद्धांत' के प्रतिपादन आ लोकभाषा मैथिलीक स्वरुप बदलि संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक भाषाक विकासक कुचक्र । आजुक मैथिली आ बोली अंगिका बज्जिका आदि समस्याक जड़ि यैह थिक । 5. सन 1924मे कराँची सेशनमे कांग्रेसक हिंदुस्तानी अपनेबाक आग्रह[12] पर संपर्क भाषाक रुपमे हिंदीक प्रसार । मिथिलेश द्वारा वित्त प्रदत्त मिथिला मिहिरक हिन्दीकरण भ' गेल छल । 16 पृष्ठमे 13 पृष्ठ हिंदीमे रहैत रहै । चाटुकार तैँ हिंदी लिखै लगला, विशुद्ध मैथिली लेखकक अनादर आ आमद बन्न भेने हतोत्साहित हिंदी लेखन शुरु कैलन्हि जकर सबसँ नीक एकटा उदहारण यात्री जी छथिये । मिथिला मोदक भाषा नै बदललै तै छपब बन्ने भै गेल, कारण जे रहल हौ । 6. दरभंगाक जमींदार रहथि पटु उद्यमी । ढेर कल कारखाना लगौने रहथि । मजदूरक सरल उपलब्धता लेल मिथिला क्षेत्रमे सर्व साधारणक शिक्षाक विरोध सेहो जनहितमे नहिये रहन्हि ।

देखल जाइ, तै मराठी आ मैथिली दूइये भाषा क्षेत्रक जमींदार सहमत भेल, शेष देश भरि मे ततबा विरोध भेलै । जे 1938 ई. मे वर्धा सम्मलेनमे कांग्रेस मातृभाषामे शिक्षाक पक्षमे आबि गेल ।[13] तथापि तत्कालीन जमींदार कामेश्वर सिंहक मैथिली विरोधी आँखि बदलैत समय संग

नहि बदललैन । केओ शोध करथि तँ नीक दस्तावेज बनि सकैत अछि । आजुक मैथिली आ बोली अंगिका बज्जिका आदि समस्याक जड़ि शुद्ध पंचकोशी आ सहित्यिक भाषाक लौले थिक, से आब बहुमत सँ स्वीकृत अछि । दूरदर्शी किरण जी ताहिये कालसँ बुझैत रहथि ।

आजादीक अर्थ आ खंडवलाक पाप : आजादीक लड़ाईमे भारत एक रहय । 1857 मे दिल्लीक सुल्तानक गति देखि छद्म युद्ध दै सोचबा लेल बाध्य रजवाड़ा आ जमींदार आ आम जनताक लेल आजादी शब्द एक्के रहै मुदा अर्थ आ फलाफलक आस भिन्न । स्वाधीनता संग्रामकेँ भेटल देशव्यापी समर्थनक कसरक तत्वो यैह रहै । सैकड़ों प्रिंसली स्टेट छलै, हजारो जमींदारी । मोट टैक्सो लगै आ भाँति-भाँतिक मानमर्दन अलगे । ओकरा लेल आजादीक अर्थ रहै ब्रिटिश नियंत्रण सँ मुक्त राजतंत्र । तैँ ब्रिटिशके टैक्सो दै आ मुक्त हाथे आंदोलनकेँ समर्थनो । आम जनता सदियोसँ राजतंत्र भोगने छल । ब्रिटिश सत्ताक दासता भले अस्वीकार हौक किन्तु स्वीकार पुरानो व्यवस्थो नहि रहै । एहि वर्गक लेल आजादीक अर्थ रहैक पूर्ण साम्यवाद, स्वराज । धनीक आ गरीबक खाधिसँ मुक्त एकटा नव व्यवस्था स सोवियत संघमे जारशाहीक अंत, कम्युनिस्टक उदय आ प्रथम विश्वयुद्धमे जर्मन पर विजय स्वाभाविके आकर्षक आ प्रेरक छलैक ।

दू विश्वयुद्धक कारणे बदलल वैश्विक परिदृश्य सँ बाध्य ब्रिटिश चल गेल, मुदा एतेक शीघ्र चल जैत के सोचने छल ? सब अपन विस्तार चाहैत अछि । धनाढ्य आ देशक सबसँ पैघ जमींदार घोषित भेलाक बाद राजाक पदवीये शेष रहि गेल रहन्हि खंडवला कुल हेतु । सेहो ब्रिटिश अनुकम्पा आ विश्वस्त होबक चलते कठिन नहि रहैक । विद्वान लोकनि अकबर सँ परनामी भेटबाक चर्चा करैत छथि मुदा 'मिथिला'सँ 'राज-ए-तिरहुत' केर परिकल्पना कहिया आ कियैक अस्तित्वमे आयल से नहि कहताह । सन 1930 मे पूर्ण स्वराज केर मांग सँ पहिने मिथिलाक गप्प कहिया भेल, नहि कहता ।

1930 मे पूर्ण स्वराजक मांग संग भारतीय आंदोलनक दिशा स्पष्ट भै गेल रहै । कांग्रेस ब्रिटिशक बिचौलियाक बनि भारतमे काज करबाक स्थान पर इंग्लैंडक ब्रिटिश सत्ताक प्रतिनिधि रुप मे कार्य करय चाहैत छल । ब्रिटेनक सांसदमे India Independence Act, 1947[14] पास भऽ कऽ भारतक नेतृत्व स्थानिक कांग्रेस केँ भेटलैक आ तैं आइ धरि भारतक स्वतंत्रता पर प्रश्नचिन्ह विपक्ष द्वारा लगौल जाइत रहलैक ।

खंडवला कुल ब्रिटिश संसद धरि पहुँच रखैत छल । ज्ञात रहैक सब संभावना आ तैं सब तरहेँ प्रयासमे लागल छल । ब्रिटिश द्वारा राजाक पदवी लेल आवश्यक योग्यतामे किला निर्माण आ सेना आवश्यक रहैक । सेना बनब धनबल सँ संभव रहै मुदा किला बनब समय साध्य कार्य रहै, से 1934 केर भूकम्पक बाद बनिये रहल रहैक । राष्ट्रीय आंदोलन आ स्वराजक वातावरणमे किलाक निर्माण मात्र वैभवक प्रदर्शन नहि मानल जा सकैछ । ई साक्ष्य रहैक खण्डावला कुलक प्रिंसली स्टेट श्राज-ए-तिरहुत' बनाबक, समय हिसाबें अनैतिक महत्वाकांक्षाक ।

अधिसंख्य रजवाड़ा हेतु आजादीक अर्थ कहिए चुकल छी । जूनागढ़, कश्मीर, हैदराबाद प्रत्यक्ष उदहारण अछिये । खण्डावला सेहो एहने कल्पना केने होइथ त अनर्गल नहि । ब्रिटेनक संसदमे पारित भारतीय स्वतंत्रता एक्ट स्पष्ट कहैछ जे रजवाड़ा सबकेँ भारत, पाकिस्तानमे मिलवाक वा स्वतंत्र रहबाक निर्णय लेबाक अधिकार रहैक । बांकी सब पहिनहि सँ राजा छल । मिथिलेश राजा होबाक प्रयासमे भारत विरोधी देखार भै गेल रहथि । आजादी संघर्षक काल ई पापे तँ छल !

भारत पर जा ब्रिटिश नियंत्रण रहलै खंडवला प्रभावी रहथि । तैं 18 जुलाई 1947 केँ भेल संविधान सभाक प्रथम बैसारमे देशक संभावित नव स्वरुप पर चर्चामे 'राज-ए-तिरहुत' स्थान पर 'मिथिला' चर्चा भेलैक मुदा स्वतंत्रता भेटिते अपन भाषा नहि होबक लाथ लगा मिथिला राज्य नहि बनाओल गेल । ताहिक जड़िमे छल संपन्न, ब्रिटिशक निकट मिथिलेशक नेतृत्वमे अलगाववादक संभावना जे ताहि जुगमे नवराष्ट्र भारतक लेल सम्हारब कठिन होइतैक । मातृभाषा मैथिली विरोधी आ भारत विरोधी महत्वाकांक्षाक बलिबेदी पर भाषाधार मिथिला राज्य चढ़ि गेल छल ।

भाषाधार मिथिला राज्यक स्वप्नद्रष्टा किरण जी कदाचित अही सब कारणे काशी रहितहुँ मैथिलीक लेल संघर्षशील "धर्मरत्नाकर" 'प्रलाप' आदि कथाक माध्यमे जमीन्दारक चाटुकार वर्ग पर प्रसंग प्रहार करैत रहला । वर्ष 1939 मे काशी प्रवासहि सँ ''युवक सँ'' शीर्षक कवितामे खण्डावला कुलक स्पष्ट उल्लेख करैत लिखने छथि :-

"हाय हम मैथिल अभागल,
जानि नहि एहि बुद्धि मे छै कोन रूपक घून लागल
क्रांतिकेर कल्लोलसँ अछि क्षुब्ध ई भूलोक सागर
देव दुर्लभ वस्तु नव नव, नित्य सृजय चतुर नागर
जतहि देखू विश्व भरि मे, कर्मवीरक भाग जागल
एहू युग मे मरै छी हम हाय दैवक पाँक लागल
विश्व के थर्रा रहल अछि, एक जर्मन केर सिपाही
हस्तगत अछि एक व्यक्तिक, आई रोमक बादशाही
कर्मबल सँ एक कुल्ली, ब्रिटिशकेर साम्राज्य साजल
ताहि ब्रिटिशक दास नृपतिक हम रहै छी पाछु लागल
धिग धिगति ओहि बुद्धि केँ, जे लोकके कायर बनाबै
त्यागि उद्यम, पेट हेतुक, भीख, खुश-आमद सिखाबै

पुनः युवाक शक्ति सामर्थ्य बोध करबैत लिखने छथि :-

"उठू मैथिल युवक, युग मे कर्मयोगक शंख बाजल
विश्वविजयी संगठन बल पाबि जनता सैन्य साजल
रहि सकल नहि जार शाही मूल सह सुल्तान गेला
जनमतक प्रतिकूल चलि, इंग्लैंडपति पेरिस पड़ेला
नव-युगोदय भेल अछि, नरनाथ छथि नर-नाथ लागल
एहू जनता-तंत्र युग मे, 'किरण' की रहबे अभागल ?"

क्रांतिक दूत किरण जी : काशीक माटि सँ कानपुर, लखनऊ, अलीगढ़ आदि ठामक प्रवासी मैथिल समाजकेँ जोड़ि संघर्षक स्वर देनिहार किरण जी 1944 सँ 1947 केर बीच मिथिला आ काशी रहैत स्वतंत्रता सँ पूर्वे मिथिला चल आयल रहथि। मिथिलेशक उपेक्षा आ आघात सँ त्रस्त मैथिली पर छद्मराष्ट्रवादक अभिप्राय बनल हिन्दीक प्रहार बहुत बढ़ि गेल रहै। खंडवला कुलक प्रश्रयमे मैथिलीकेँ हिंदीक बोली लगभग स्वीकारि लेल गेल रहै। हड़प नीति पर चलि हिंदी विद्यापतिकेँ आ हुनका संगहि मैथिलीक भाषाई उपभाषा आदिक इतिहासकेँ चोरेबाक निर्विरोध कुचक्रमे लागल छल। से लोभ एखनहुँ नहि छोड़ि सकल अछि। किरण जी भाषाइ एकताकेँ पुनः ठाढ़ करबाक मादे मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा सँ सक्रिय भेलाह मुदा कारण जे रहल होउ भाषाइ संघर्षक मादे विद्यापति गोष्ठीक गठन सरिसब पाहीमे आबि केलन्हि आ गामे-गाम साइकिल आ पैदल प्रचार आरम्भ केलन्हि।

1928 मे जमींदारक सहयोगसँ प्रथम विद्यापति पर्वक श्रेय अबस्से बाबू भोला लाल दासकेँ छन्हि मुदा विद्यापति गोष्ठीकेँ मैथिली भाषाक पुनर्जागरणक पर्याय बनब किरण जीक अनवरत प्रयासे सँ संभव भेल जे जग विदित अछि। लिखनहुँ छथि : 'जेठक दुपहरिया, भादवक राति, माघक भोरुकवा अभागल बहराथि !

किरण जीक साम्यवादी समतामूलक जातिहीन समाजक मुखर समर्थन प्रायः समय सँ बहुत पूर्वहि सोशल इंजीनियरिंगक प्रयासक विलक्षण उदहारण अछि। किरण जी जनशक्तिक आधार पर भाषाइ क्रांतिक बीये बाउग कैलन्हि। सब धर्म समाजक लोक जोड़लन्हि जाहिक प्रमाण किरण सेनाक सिपाही नाजिम रिजवी सहैब आ जीतेन्द्र नारायण झाक देहांत हाले मे भेलन्हि अछि। लिखैत छथि :-

जे थिक नैका लोरिक देश, छथि पूज्य जाते राजा सल्हेस
गाबि मर्सिया दाहामे हिन्दुओ धरय जंगीक बेस
अछि कतय एहन छवि आनठाम, जय जन्मभूमि मिथिले प्रणाम[15]

किरण जीक विद्यापति गोष्ठीक उद्देश्य स्पष्ट करैत हुनक पाँती अछि :-

छै भेल अखन्नर पेट एहन रग-रग मे सबहिक लोभ भरल
होयताह एतय कहू आइ कोना वाचस्पति मंडन वा उदयन
लै अगणित कविगण भैरव उन्मत्त शंकरक रुप धरब
प्रलयंकर हुंकार भरल भूकंप राग केर गान करब

मिथिलाक स्वप्नद्रष्टा :- मिथिलाक स्वप्नद्रष्टा लोकनिक समुचित विश्लेषण लेल एकरा दू खंडमे देखब अधिक तार्किक। 1947 सँ पहिनेक

खण्डावला कुल : कहबाक खगता नहि जे स्वराज आंदोलन काल आजादीक अर्थ सर्वहारा समाज आ सामंत समाजक दृष्टिकोण भिन्न रहैक। ताहू मे मिथिलाक स्थिति भिन्न छलै। मिथिला पहिनहि सँ दू भाग भेल छल। ब्रिटिशक गेने ओकर कैल संधियो जेबाक आ एक होबक आस दुनू पार रहै। मिथिलाक जमींदार देशक सबसँ पैघ जमींदार घोषित रहथि। भारतक के कहय इंग्लैंडक संसद धरि पहुँच रहन्हि। दरभंगाक राजधानी बनेबाक लेल किला निर्माण प्रगति पर छल। चौदहम सदीक कर्नाट कुलक बाद प्रथम संप्रभु राजशाही राज-ए-तिरहुत बनेबाक तैयारी चलि रहल छलैक। एकटा बड़ पैघ वर्ग संभावित राजतंत्रमे अपन उज्जवल भविष्य सुरक्षित करबाक हेतु जीहुजूरीमे लिप्त रहथि। क्षेत्रक जनता केँ एहि प्रपंचसँ विशेष सरोकार नहि

रहै । कांग्रेसक शीर्ष नेतृत्व राजनीतिये करैत आयल छल, मिथिलेशक अलगाववादी कपट जानि गेल छल । जाधरि ब्रिटिशक नियंत्रण आ हस्तक्षेप रहलै पोल्हेने रहल । संविधानसभाक प्रथम बैसारमे अलग राज-ए-तिरहुतक स्थान पर मिथिला शब्दक उल्लेखो भेल । से स्वप्न 15 अगस्त 1947 धरि बनल रहलन्हि जाबत अपन भाषा नहि होबक लाथ लगा पृथक मिथिला राज्यक मांग अस्वीकारि नहि देल गेलै । कामेश्वर सिंह जनैत रहथि मैथिलीक अधोगतिक लेल उत्तरदायी एक मात्र हुनक परिवारकेँ टा रहन्हि । अनका दोश देब संभव नहि, जनतो खंडवला वंशजेकेँ मानलक । कांग्रेस एक्कहि चोट सँ मुँह थुरि देने छल । आक्रोशमे पृथक चुनाव लड़ियो कै स्व. कामेश्वर सिंह भारत आ भाषा-संस्कृति विरोधी छविक कारण समस्त जमींदारी आ रैय्यतक अछैत, पराजित भेलाह ।

बाबू जानकी नंदन सिंह : मिथिला राज्यक स्वर उठौनिहारमे हिनक नाम प्रमुखताक संग अबैत अछि । कांग्रेससँ निर्वाचित बाबू जानकी नंदन सिंह द्वारा कोलकातामे मिथिला राज्यक लेल स्वर उठेबाक एकल आ असफल प्रयासक साक्ष्य भेटैत अछि । मुदा तदुत्तर कोनो अन्य प्रयास लोक समाज केँ संगठित करबाक दिशामे नहि देखैत अछि आ ने ताहि सँ पहिने भाषा वा राज्यक हेतु सक्रियताक प्रमाण भेटैछ । खंडवला वंश सँ प्रत्यक्ष जुड़ल रहथि आ राज्यक स्वर उठेबाक बाद देखल जाए तै कामेश्वर सिंह जेकां हुनको राजनीतिक जीवनक अवसान ओतहि भ जाइत छैन जे प्राय: एकटा संयोगे कहि सकैत छी ।

स्व. डॉ लक्ष्मण झा : आजाद भारत मे मिथिला के परिकल्पना करैत किछु आर व्यक्तित्व देखना जाइत छथि । जाहि मे महान मिथिला सपूत स्व. डॉ लक्ष्मण झा एकटा श्रेष्ठ नाम अछि । हुनक अंग्रेजी मे लिखल पोथी Union Republic of Mithila : मिथिला एहि क्षेत्रक प्रासंगिकता, संभावना, अवसर आदि पर एकटा विलक्षण विमर्श थीक । यदि देखल जाय तै ब्रिटिशक गेला बाद ओकर कैल 'सुगौली संधि' के स्वत: निरस्त मानि सकैत छी । मिथिलाक लेल असली आजादीक अर्थ नेपाल स्थित मिथिलाक विलय के नहि चाहैत ? बेटी - रोटीक संबंध रहैक । अही प्रयासमे अंतर्राष्ट्रीय सीमाक पीलर हटेबाक प्रयास धरि सक्रियताक प्रमाण भेटैछ । मैथिली साहित्यक तै नहि कहब मुदा भाषाक उन्नयन लेल कोनहुँ जमीनी प्रयासके साक्ष्य सेहो नहि भेटैत अछि । ओ मिथिलाक जनसंख्या निर्धारित करबामे मैथिली भाषाक जनगणनाक हिसाब अपना पोथीमे केने छथि । हमरा एखन धरि हुनक मिथिला निर्माणक प्रयासमे सर्वहारा समाज के संग लेबाक प्रयासक प्रमाण नहि भेटल अछि । जेना किरण जीक विषयमे लोक गाथा सब अछि सेहो नहि भेटैछ । कतहु खण्डावला कुलक राज-ए-तिरहुत वा मैथिलीक उपेक्षाक विरोधोक साक्ष्य नहि भेटैछ । ताहि युग मे ड्यौढ़ीयेसँ जनताक कर्तव्य निर्धारित होइ आ ओहो ड्यौढ़ी सब घुमिते भेटलाह । डॉ. साहैब समाजक प्रभावी वर्गक संग लै संघर्ष के आगाँ बढ़ेबाक पक्षधर मध्य मार्गी मनीषी बुझना जाइत छथि ।

आम जनता : आजादीक आंदोलनमे देशक आने प्रांत जेकाँ मिथिलोक लगभग सब गाम सँ स्वतंत्रता सेनानीक नाम अभरैत अछि आ सब जिला सँ किछु शहीदक । मुदा भारतीय राष्ट्रवादक बिहाड़िमे मातृभाषाक प्रति साकांक्ष सेनानी आ शहीदक कोनो नाओं 75 वर्ष बितलाक बादो चिन्हित नहि अछि । तैं किछु निश्चित कहब ते संभव नहि किंतु लोकतांत्रिक साम्यवादी भारतक कल्पना केनिहार प्रजातांत्रिक मिथिलाक स्वप्न देखनहि हेताह । अहीमे एकटा प्रमुख नाम अछि स्व.डॉ काञ्चीनाथ झा 'किरण' । काशी रहैत छपल विचार 'रुसी साम्यवादेक अनुसार भारतीय संघमे मिथिला राष्ट्रीयता (भाषाइ राष्ट्रीयता) परिस्थिति निर्माणक' एकर स्पष्ट उदाहण अछि ।[16]

काशी प्रवास क्रममे बंग-कलिंग-आंध्र केर भाषाधार राज्य आन्दोलनक साक्षी किरण जी भाषाओ लेल राज्यक अभिलाषे सँ लड़ैत रहलाह । पृथक प्रान्त लेल ताबत भाषा एक मात्र आधार रहैक तैं मैथिलीक संघर्ष मिथिलाक संघर्ष सँ भिन्न नहि रहै । पाठक-संपादक सँ आग्रह जे सन 1930 सँ 1947 के बीच भाषाधार मिथिला राज्यक लेल मुखर दोसर जे जे नाम अभरैत होइन्ह, कहथि ।

किरण जीक भाषाइ राष्ट्रीयताक एहि दूरदर्शी सोच, छटपटी आ आह्वानकेँ दुर्भाग्ये कहि सकैत छी जे समय रहैत नहि चीन्हल गेल । तत्कालीन मिथिलाक पैघ भूभाग पर खंडवला कुलक नियंत्रण छल आ अपवाद छोड़ि समाजमे प्रभावी लोककेँ 'भारतीय प्रजातंत्रमे मैथिली आधारित मिथिला राज्य'सँ नहि अपितु 'खंडवला वंशक राजतंत्र मिथिला वा राज-ए-तिरहुत'सँ सरोकार रहन्हि । जाहि वर्गकेँ मैथिलीक प्रति ममत्व नहि रहैक ओ किरण जीक दृष्टिकोण या त नहि बुझलक वा जँ बुझबो केलक ते मात्र भाषा आंदोलनी कहि

चर्चा। से जँ नहि करितय त मातृभाषाक प्रति अपन उदासीन भावक उत्तर की दितय ?

एखनो सैह भ रहल अछि। एकताक आधार भाषा होइछ, तैं बाहरी सत्ता भाषा कें खंड खंड तोड़ि रहल आ जनिका मातृभाषाक प्रति ममत्व नहि से राज्य आ भाषा आंदोलनक अद्वैतवाद कें बुझता केना ? राज्य आ भाषा आंदोलन फूट कैल अछि। एक नहि हुअय द रहलाह। एहि भेदकारी तत्वमे सत्ता प्रायोजित तत्वो अछि। जे मैथिल हेबाक खोल पहिरि अपना भांज मे लागल अछि। एहने स्थिति ताहू काल रहैक। से 1953 मे किरण जीक प्रसंग प्रहार सँ बुझल जा सकैछ :-

''नहि रहैत छौ काजक धंधा /नहि रक्षा केर भार / तञ् ने तों कयल फिरैत छें / सबहक घर घरुआड़ / खूब विलक्षण रीति-नीति छें रखले / वर्षा-रौद-कुहेस-झटकमे /अड़ोपित जानकें / जे, चरबैत अछि महिस गायकें / पोछै अछि गोबर गोंत ओकर /से मूह तकिते रहैत अछि / आ तों पीबि लै छहुन दूध सगर / कुकुरोकें जीति लेले तों निश्चय / अविवेकी पापी, छुतहड़ चोरक प्रतीक ? मान नहि अपनाकें बुधियार ! / कर्मठ मानव केर भौंहक / एक विलासहिसँ / भय जेतौ अवसान तोहार।[17]

सन 1947 ई. जखन मैथिलीकें मान्यता नहि रहने कांग्रेस पृथक मिथिला राज्य मांग अस्वीकार कय देलक ते अनायास बहुतो विद्वान नेपथ्यसँ मैथिली आंदोलनक पटल पर अवतरित देखना जाइत छथि। मुदा कालांतरमे नमहर अवधि धरि सक्रियताक फेर कोनो प्रमाण नहि भेटैत अछि। साहित्य अकादमीमे मैथिलीकें मान्यता भेटलाक बाद ओ वर्ग-लोक-नीतिक पक्षमे देखना जाइत छथि, जेकरा समय भाषाक लेल विखंडनकारी सिद्ध आ घोषित कय चुकल अछि।

किरण जीक अनवरत संघर्ष भागलपुर, देवघर, मुंगेर, कटिहार, पूर्णिया, बेतिया आदि सबठाम मैथिलीक प्रचार प्रसार हेतु ओहिना देखना जाइत अछि। राज्य पुनर्गठन एक्ट 1955 केर बाद भले भाषा आधार नहि रहलैक मुदा किरण जी जनैत रहथि मिथिला राज्यक लेल जाहि एकजुट जनाधारक खगता छै से मात्र भाषाइ एकता सँ आबि सकैत अछि। भाषाकें छोड़ि चलनिहार केओ एखनहुँ धरि लाख प्रयासक बादो संभव नहि कय सकलाह अछि आ तैं मिथिला विरोधी शक्ति मैथिली भाषाकें विघटित करबा मे एखनो लागले अछि। किरण जीक 1953 मे तत्कालीन सांसदक संग मिलि राज्यक प्रस्ताव बनेबाक प्रमाण मूल लेख लिखबा काल भले नहि रहल हो मुदा आब उपलब्ध अछि। किरण जी आह्वान करैत लिखने छथि :-

बितल विदेश केर दासता अमानिशा,
स्वतंत्रता-उषा-प्रकाश सँ विभाषिता दशोदिशा
कमल जेकाँ कलिंग-बंग ओ असम फुला रहल,
देखि कय जेकर प्रभा बिहारो लजा रहल
सुन सयान धीर वीर आंध्र केर अट्टहास,
भय स्वतंत्र कय रहल, कोना अपन मने विकास
कर्णाटको करोट फेरि ठाढ़ भेल सावधान,
दबल पिचौल केरलो प्रबुद्ध भय पबैछ मान
घुमड़ि रहल महाराष्ट्र गुर्जरो गुम्हड़ि रहल,
ताराक तीक्ष्ण तेज मे पंजाबओ सम्हरि रहल

पुनः मैथिल समाज के मिथिला राज्यक प्रति आह्वान करैत आगाँ लिखैत छथि :-

''तोहरो थिकौक देश तहूँ स्वतंत्र भेल छैं,
सोच ने टूगर जकाँ तों किए दबल छैं ?
जकर मायक रहै न मान बाप केर घाम मे,
तकर कदापि हो न मान घर मे कि गाम मे,
मातृभूमि तीरभुक्ति हिन्द केर वक्ष पर,
पाबि जाय समान मान सैह एक लक्ष्य कर,
उठैत जो बढ़ैत जो आब नहि विलम्ब कर,
मातृभूमि मुक्ति हेतु जंग साज साज रे''[18]

उपसंहार : कागत पर ढेउरल मोशि सँ आगाँ वास्तविक जीवन चरित्रमे मातृभाषा-भूमिक स्नेह, रुढ़ि विरोधी आ क्रांतिक गीत गबैत मिथिलाक बीसम सदीक विरले व्यक्तित्वक बीच अग्रिम पांतीमे छथि किरण जी। मिथिलाक हेतु भाषाधार प्रांतक अग्रणी स्वप्नद्रष्टा आ मुखर स्वर। जिनका हेतु आजादीक अर्थ भारतक संघीय व्यवस्थामे साम्यवादी मिथिला राज्य रहन्हि। मिथिलाक अस्मिताक समग्र चिंतक, मैथिलीक अनन्य प्रचारक आ साम्यवादी जातिहीन समाजक मुखर समर्थक। मिथिला संदर्भमे हुनक चिंता 'स्वराज की थिक' नामक आलेखमे सेहो स्पष्टता संग व्यक्त भेल अछि।

खंडवला वंशक चोट आ हिंदीक छद्म राष्ट्रवादक आघातसँ ध्वस्तप्राय मैथिलीसँ पुनः लोक समाजकें जोड़बाक

लेल विद्यापति गोष्ठीक माध्यमे भाषाइ अस्मितेक पुनर्जागरणक अभियान चलौलन्हि । गामे-गाम घुमि बंग-कलिंग आदिये सन भाषाइ राष्ट्रवादक भाव संचार करबाक भगीरथ प्रयास केलन्हि । अही सँ आएल जागरुकता आ दबाबक परिणाम कहि सकैत छी जे हिंदी अपन हड़प नीति सँ विद्यापतिकेँ आ तदनुरुप मैथिलीक भाषाइ इतिहासक चोरीमे असफल रहल आ साहित्य अकादमीमे मैथिलीक आयब संभव भेल ।

भाषाधार मिथिला राज्य आंदोलनमे जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण सँ उपर उठि जनएकताक प्रयोजन रहैक आ ताहि हेतुक सूत्र छल मातृभाषा मैथिली । किरण जी लोकभाषा मैथिलीक कट्टर समर्थक रहथि ।[19] जाहि सँ सर्व समाज अपना केँ जोड़ि क देखि सकै । ओ स्वरुपक जे मैथिलीकेँ मिथिलाक सीमा सँ बहुत आगाँक भूभागमे जनकंठ धरि पहुँचा देने रहै ।

आजुक तूर जे बुझय मुदा विद्यापतिक देसिल बयना गीत दलित समाजक लेल श्रेष्ठतम क्रांति रहय । महाकवि विद्यापति अशिक्षित आ महिला वर्गक बीचो सामने रुपसँ लोकप्रिय हेबक कारणे जाति वर्ग वर्ण सँ उपर सामाजिक सद्भावनाक संगहि मिथिला-मैथिलीक हित चीन्हबा योग्य 'मैथिल आँखिक' प्रतीक रहथि । भाषा संस्कृतिक विस्तारक आ मातृभूमि हेतु जंग लड़क प्रेरणा रहथि । गोसाउनिक गीत शक्तिपूजक पंचदेवोपासक मिथिलाक समाजक लेल गोसाउनि आध्यात्मिक धार्मिक आस्थाक प्राण तत्व छथि । यैह त्रिभावक संग किरण जी एकटा संकल्पित कर्मयोगी बुझना जाइत छथि ।

किरण दृष्टि मैथिलीकेँ शुद्ध पांच कोशमे बंधक रखबाक बदले ओकर विस्तारक आकांक्षी रहथि जे एक समय असम आ उड़ीसा धरि पसरल छल ।[20] राष्ट्रकवि दिनकरक मतमे मिथिला सँ सुदूर ब्रजबुलि उद्भवक कारक छल[21] आ डॉ. सम्पति आर्यानीक मतमे मगही जकर बोली रहैक ।[22]

एक जमीन्दारक महत्वाकांक्षाक बलि वेदी पर मैथिली नहि चढ़ाओल जा सकितथि । लिपिक उत्सर्ग नहि क' सकैत । आन भाषासँ पहिने मातृभाषा सेवी आ विद्वानक आदर होइत । भाषाप्रेमक प्रतीक बंगाल आ बांग्लादेश नहि मिथिला होइत । 'मैथिल महासभा' के माध्यमे अपनहि समाजिक एकताकेँ नष्ट नहि कैल जाइत । मैथिल शब्द जाति सूचक नहि समष्टि सूचक होइत, सब मैथिल समांग होइत ।

वस्तुत: ई किरणजीक बहुआयामी विराट व्यक्तित्व छल- जे जाहि रुपमे देखबाक प्रयास केलन्हि, पौलाह । मुदा किरण जीक अत्माकेँ चिन्ह लेल मात्र साहित्यकार आ इतिहासकार नहि अपितु भाषा-भूमि लेल प्रतिबद्ध आंदोलनी हृदयो चाही । किरणजी वर्तमानो लेल ओतबहि प्रासंगिक छथि आ संगहि छथि समाज आ इतिहासक धरोहरि । स्मारिकाक आलेखक अपन सीमा छैक । किरणजी सन व्यक्तित्व पर एकटा व्यवस्थित शोधक एखनो खगता आ से संस्थान पर दायित्व शेष छैके । एहि महामानवक चित्रण-मूल्याकंन केना करय से आब मिथिला समाजक विवेक थीक ।

संदर्भ-

1. Ancient and Medieval India, Poonam Dalal Dahiya
2. Ramayan & Mahabharat
3. Sardar Patel The Supreme Architect in Unification of India, Justice S- N- Agarwal
4. History of Modern India, Bipin Chandra
5. Maithil Chhatra Samiti
6. किरण समग्र, पृ.- 233-237
7. की गाउ ?, कतेक दिनक बाद,
8. मिथिलामोद, उ० 19, शाके 1346/सन 1938
9. बृहदारण्यक उपनिषद, 1.3.28
10. नवीन गीत संग्रह, संपादन रमानाथ झा,
11. की भारतमे लोकतंत्रक जन्म भऽ सकल ?, डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण'
12. मिथिला तत्व विमर्श, म.म. परमेश्वर झा, पृ.-191, 1974
13. Indian National Congress Session, History, Drishti IAS
14. Indian Independence Act, 1947, Legislation.gov.uk
15. जय जन्मभूमि, 73, कतेक दिनक बाद, 1951
16. मिथिला मोद, उद्गार 34, शाके 1347/सन 1939
18. बिलाड़ि, कतेक दिनक बाद, डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण', 1953
18. उद्बोधन, 65, कतेक दिनक बाद, डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण', 1960
19. साहित्यिक भाषा ओ लोकभाषा, किरण समग्र, 159-157
20. मैथिली साहित्यक इतिहास, श्रीजयकांत मिश्र, 185-194
21. रामधारी सिंह दिनकर, वेणुवन पृष्ठ कवि और कविता, पृष्ठ 16-19, 1952
22. डॉ. सम्पति आर्यान, सन 1965

नई दिल्ली

मो.- 9911562859

समीक्षा

किरणजीक काव्य 'पराशर'

(वचनबद्धता/प्रतिबद्धता)

(मूल लेखक- डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अंग्रेजीमे आलेखक मैथिलीमे अनुवाद)

अनुवादक- **डा० विद्यानन्द ठाकुर**

''कृति (पराशर)मे कविक कल्पना श्रृष्टिक ताजगी, चिन्तनक (विचार-शक्ति) स्फूर्ति, एवं समाजक अल्प सुविधा प्राप्त वर्गक हेतु गहन व्याकुलता (चिन्ता) प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होइछ।'' -पुरस्कार समितिक कथन

काञ्चीनाथ झा 'किरण' (1906-1989) लोकप्रिय (प्रसिद्ध) 'किरणजी' नाम सँ जानल, कवि, उपन्यासकार, लघुकथाकार, नाटककार एवं उच्चकोटिक (ख्यातिलब्ध) आलोचक छलाह, यद्यपि हुनक श्रेष्ठ कृति सब हुनक जीवनक अन्तिम चरणमे प्रकाशित भेलन्हि। हुनक आरम्भिक महत्वपूर्ण कृति सब अछि 'चन्द्रग्रहण' (1932) एवं 'विजेता विद्यापति' (नाटक, 1972) हुनक 'कथा किरण' (लघुकथा संग्रह) एवं 'पराशर' (दीर्घ कथात्मक कविता/कथा आख्यान) 1988 मे एवं दू गोट कविता संग्रह 'किरण कवितावली' आओर 'कतेक दिनक बाद' 1989 मे प्रकाशित भेलन्हि। 1990 मे हुनक नौ गोट निबन्धक संग्रह 'किरण निबन्धावली' नाम सँ प्रकाशित भेल छलन्हि। परञ्च 'पराशर'केँ एकर प्रकाशनक पश्चात् आलोचक लोकनि एवं सामान्य पाठक लोकनि समान रूपेँ हुनक सर्वोत्कृष्ट रचना मानलन्हि अछि किएक तँ ई पर्याप्त रूपेँ कविक सामाजिक वचनबद्धता एवं एकर रूप एवं अभिव्यक्ति केँ प्रतिविम्बित करैत अछि।

एक मुनिक चरित्र पर आधारित 'पराशर' एकटा दीर्घ कथात्मक कविता थिक, महाभारतक अनुसारे जे कि व्यासक पिता आ पुराण सबहक प्रणेता एवं एक महान वंश परम्पराक संस्थापक छलाह। किरणजीक प्रस्तुत कृति पराशरक आश्रम सँ प्रारम्भ होइत अछि। ओहिठाम हुनका मानवताक सर्वप्रथम ज्ञानक अनुभूति भेलन्हि, जखन पूजाक हेतु फूल तोड़ि रहल छलाह ओ अछूत बच्चा सबहक द्वारा एकटा अत्यन्त खतरनाक साँप सँ बचाओल जाइत छथि आ सेहो बिना कोनो प्रतिबदलाक अभिलाषाक बिना बल्कि कष्टमे ककरो मदति करबाक स्वत: भावना सँ। समयक प्रवाहक संग एक दिन ओ जखन ग्रामीण इलाकामे भ्रमण कऽ रहल छलाह। एकटा गांगो (सत्यवती) नामक सुन्दर युवती सँ भेंट होइत छन्हि जे कि जीवछा मल्लाहक बेटी छल। ओ ओहि युवतीक प्रति ततेक आसक्त भऽ गेलाह जे ओकरा सँ प्रबल लैंगिक सम्बन्ध बनेबाक इच्छा जागृत भऽ गेलन्हि, अपन शारीरिक लालसा हेतु नहि अपितु एकटा एहेन पुत्रक जे ब्रह्मत्व गुणसँ परिपूर्ण हो। उचित एवं गहन विचारोपरान्त एवं ओहि युवतीक सहमति सँ जे हिनक दुनूक मिलन सँ उत्पन्न पुत्रकेँ ई स्वीकार करताह। अपन इच्छाक पूर्ति करैत छथि। एतबे नहि ओ उदारतापूर्वक स्थानीय रीति-रिवाजक संग सार्वजनिक रूपेँ ओकरा सँ विवाह करैत छथि। व्यास जखन किशोरावस्था मे प्रवेश करैत छथि तँ पराशर हुनका शिक्षा-दीक्षा एवं धार्मिक संस्कारक हेतु अपना लग लऽ जाइत छथिन्ह। एहि तरहेँ कवि एकटा प्रसिद्ध प्रासंगिक घटना क्रमक उल्लेख करैत छथि जाहि मे उच्च एवं निम्न जातिक बीच वैवाहिक सम्बन्धक औचित्य, सामाजिक एकीकरण एवं समानताक हेतु जकर कि पूर्ण अभाव रहल अछि हमर सबहक जाति-ग्रस्त सामाजिक व्यवस्था मे।

सामाजिक परिवर्तन हेतु किछु खास विश्वास, योजना एवं विचारधाराक संग किरणजी पूर्णरूपेँ समर्पित छलाह। ओ सोचैत छलाह जे परम्परा, रीति-रिवाज एवं धर्म मुख्य बाधक थिक सामाजिक परिवर्तनमे, मात्र जाहि आधार पर एकता एवं एकरूपता उच्च एवं निम्न जातिक बीच स्थापित कएल जा सकैत अछि आओर भारतीय समाज शोषण एवं उत्पीड़न सँ मुक्त भऽ सकैत अछि। किरणजीक सतत् अपन कृति सबमे गरीब एवं उत्पीड़ित वर्गक पक्षधर रहलाह अछि एवं समाजक उच्चवर्गक कुकृतिकेँ तीव्ररूपेँ आलोचना केलन्हि अछि। स्पष्टत: हुनक सम्पूर्ण लेखन एहि उद्देश्यक पूर्ति हेतु प्रतिबद्ध रहल अछि। संदेह नहि, ई संकेत करैत अछि किरणजीक रचनात्मक एवं स्वस्थ आ संगहि उन्नतिशील एवं आदर्शवादी दृष्टिकोण जे कि हुनका द्वारा कल्पित एहेन समाजक रचना करत जे मानवताक लेल लाभप्रद होयत।

हुनक 'पराशर' अपवाद नहि अछि हुनक सामाजिक प्रतिबद्धताक हेतु । बल्कि, एहिमे ओ अपन भावना एवं विचार सबकेँ बेशी स्पष्ट एवं सजीव रूपेँ व्यक्त करैत छथि विभिन्न विषयपर जेना कि जनजातीय समाज, उत्पीड़ित, अछूत एवं सामाजिक आ आर्थिक दृष्टिएँ कमजोर वर्गक मानवीय गुणक श्रेष्ठताक । किरणजीक एहि कृतिमे प्रेषणक मुख्य एवं सबसँ महत्वपूर्ण बिन्दु अछि हुनक निम्न एवं उच्च जातिक वैवाहिक व्यवस्थाक अपरिहार्यताक अवधारणा । हुनका अनुसारेँ एकमात्र इएहटा सर्वरोगनाशक औषधि अछि समाजमे समानता एवं एकरूपता के मजबूत बनएबामे आ स्थपित करबामे जे कि आंतरिक रूपेँ विभाजित अछि विभिन्न खण्डमे अनादिकाल सँ वंश परम्परा, जाति-सम्बन्धी शुद्धता, जाति वैयक्तिकता एवं रंगभेदक नाम पर । क्रान्तिकारी एवं रचनात्मक विचारधाराक उद्देश्यक पूर्ति हेतु जकरा यथार्थवादी आ संगहि आदर्शवादी कहल जा सकैत अछि, ओ पराशर, एकटा ब्राह्मण एवं शान्तनु, एकटा क्षत्रिय राजाक पौराणिक कथा वृतान्तक चयन करैत छथि, ओ लोकनि एकटा निम्न जातिक मल्लाहक बेटी सत्यवतीसँ विवाहक बन्धनमे बन्हाइत छथि, आ ई कथा एहि तरहेँ प्रतिविम्बित एवं समर्थन करैत अछि कविक दृष्टिकोण एवं विचार केँ जे आधारित अछि अनुरूपता एवं समानताक सिद्धान्त पर ।

'पराशर' केँ, हमर मन्तव्यें वास्तविक अर्थमे पाश्चात्य एवं भारतीय दुनू साहित्यिक मानकक अनुसारेँ, महाकाव्य नहि कहल जा सकैछ किएक तँ एहिमे रमणीयता/भव्यताक रीति-रिवाज आ उत्कृष्टताक शानदार गुणक अभाव अछि । महाकाव्य केँ श्रेष्ठ बौद्धिक शक्तिक परिणाम कहल जा सकैत अछि, जे कार्य करैत अछि कोनो युगक विद्वता आ साहित्यिक संस्कृतिक दिशापर जे पहिनहि सँ निरूपित कएल अछि । परञ्च 'पराशर'मे किरणजी प्रयाश केलन्हि अछि अपन एकटा नव दिशाक सृजन करबाक जे कि खण्डित करैत अछि पारंपरिक रूपेँ निरूपित सब दिशाकेँ । एहिमे सन्देह नहि जे ओ अपन विषय-वस्तुकेँ पौराणिक युग सँ लेलन्हि अछि, परञ्च राष्ट्रक इतिहास आ अभिलाषाक मूर्त्त रूप लेल नहि, अपितु हिन्दू समाजक वर्तमान समस्या सबहक व्याख्याक प्रयोग करबाक हेतु जे कि जाति एवं पंथक नामपर संघर्ष आ टुटबाक कगारक दिशामे अग्रसर होयबाक क्रममे अछि तथा मानवीय समानता एवं मित्रताक वृहद् आधार पर समाजमे एकरूपता स्थापित करबाक समाधान करैत अछि । एहि तरहेँ ई स्पष्ट अछि जे 'पराशर' एकटा आधुनिक कवित्व कलाक सृजनात्मक कृति अछि जे कि जाति-ग्रस्त हिन्दू समाजक यथार्थताक विलक्षण वर्णन करैत अछि एवं अन्तर्जातीय-विवाह प्रथाक आदर्श समाधान स्थापित करबाक प्रस्ताव प्रस्तुत करैत अछि । एहि तरहेँ कवि एहि कृतिकेँ आदर्शवाद एवं सामाजिक यथार्थवादक मिलन सँ अत्यन्त कलात्मक ढंगेँ परिवर्तित करैत छथि एकटा अत्याधुनिक आदर्शवादक रूपमे समाजक कल्याण हेतु अपन प्रतिबद्धताक उद्देश्य सँ ।

व्यापक रूपेँ कविताकेँ वर्गीकृत कएल गेल अछि दू तरहेँ- वैयक्तिक आ वस्तुनिष्ठ (विषयाश्रित-विषयपर आश्रित वा यथार्थ पर आश्रित) । 'पराशर' स्वाभाविक रूपेँ दोसर वर्गक अन्तर्गत अबैत अछि । विषयाश्रित प्रकारक कवितामे यद्यपि कविक व्यक्तित्व हुनक कृतिक आधारशिला होइछ, पूर्णरूपेण निष्पक्ष वा अनुपस्थित नहि रहि सकैछ, अप्रत्यक्षरूपेँ स्वतः प्रदर्शित होइत अछि, कवि यथासाध्य अपन विषय वस्तु आ पात्रक संचालन विषयाश्रित भावे करैत छथि आ यथासंभव अपनाकेँ, दूर, स्वतंत्र एवं अलग रखबाक प्रयास करैत छथि । परञ्च 'पराशर'मे कवि किञ्चितो प्रयास नहि केलन्हि अछि अपनाकेँ वस्तुनिष्ठ बनेबामे, अपितु अपन स्वभाव आ' स्वाभाविकश्रेष्ठ बौद्धिक शक्तिक पक्षपातक कारणेँ ओ (कवि) सर्वत्र अपन एहितरहक अनेको वैयक्तिक विचार केँ अभिव्यक्ति करैत छथि जे कि पूर्णरूपेण हुनक व्यक्तिगत विचार एवं दृष्टिकोण कहल जा सकैत अछि आ ओ सीधा-सीधी प्रतिबिम्बित करैत अछि हुनक व्यक्तित्वकेँ । सुमनजीक अनुसारेँ, जेना कि प्रस्तावनामे कहल गेल अछि हुनका द्वारा, पराशर, एहि कृतिमे जेना चित्रित/वर्णित कएल गेल अछि, स्पष्टरूपेँ साफ-साफ प्रतीत होइत अछि जे लेखक स्वयं प्रवक्ता छथिआ ओहि माध्यमे प्रयाश करैत छथि विचार एवं दृष्टिकोण केँ अभिव्यक्तिक करबामे जे कि द्योतक अछि हुनक व्यक्तित्वक आ जे सम्बन्ध स्थापित करैत अछि वर्तमान यथार्थता सबकेँ ने कि सम्बन्धित अछि प्राचीन समय सँ जाहि समयमे वास्तविक महान पराशर स्वयं भेल छलाह ।

'पराशर'क कथानक सहज एवं स्पष्ट अछि आओर चरित्र-चित्रण, खास कऽ केँ पराशरक, विश्वसनीय अछि समकालीन समाजक आवश्यकताक स्वीकार्य हेबामे, जे आनन्दक अपेक्षाकृत वेशी निर्देशित करैत अछि । कवि वर्णन केलन्हि अछि पराशरक खुलेआम विवाह सत्यवतीसँ- ऐतिहासिक परम्पराक विपरीत-ई प्रदर्शित करबाक हेतु जे

महान नायक प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी छथि आधुनिक संदर्भमे आओर जाति विहीन समाजक पुनर्गठन, समाकलन एवं एकताक हेतु अपन संदेश कें सब लग पहुँचेबाक प्रयास करैत छथि । कवि सामान्य कथात्मक विधिक सर्वत्र प्रयोग केलन्हि अछि अपन पात्र सबहक चित्रण करबा हेतु संगहि कथानकक प्रगति हेतु एकदम स्वाभाविकरूपें एवं एहिमे उपयुक्त वार्तालाप कें मिश्रित करैत आ जे उत्पन्न करैत अछि अन्तरंग व्यक्तिगत भावक आ नाटकीय ढंगसँ प्रभावशाली शैलीक ।

मैथिली साहित्यमे किरणजी सुपरिचित छथि गामक प्राकृतिक सुन्दरता एवं ग्रामवासी, खेत एवं जंगल आ ओहिमे बास करैत प्राणी सबहक हेतु हुनक स्नेह आ एकरा प्रदर्शित कएल गेल अछि प्रचुर मात्रामे विभिन्न प्रसंगक वर्णनक क्रममे । कृतिक तेसर भाग जकर शीर्षक अछि 'वनक बाट' जाहिमे कवि वर्णन केलन्हि अछि सम्पूर्ण स्थानीय यथार्थताक संग प्राकृतिक सुन्दरताक जे कि विशेषता अछि वृक्ष, चिड़ै-चुनमुनी, पशु, कीट-पतंग एवं विभिन्न तरहक जनजातीय वर्गसब जे परम अप्राकृतिक ढंगे एक संग रहैत अछि एवं अन्यान्य बहुत वस्तुक संग जकर सहस्तित्व छैक- अद्‌भुत एवं जीवन्त-जखन कि वर्णन करैत छथि नायकक विचरण एवं भ्रमण जंगलक मार्गसँ । एहि तरहक वर्णन सब अत्यन्त सुन्दर अछि दृश्य एवं ध्वनिक सजीव चित्रण करबामे आ एही मे अन्तर्निहित अछि कविक महानता आ सूक्ष्म अवलोकन एवं उच्चकोटिक सृजनात्मकता हेतु ।

किरणजीक एहि स्मारकीय / चिरस्थायी कृतिमे, खास कऽ कें मुख्यरूप सँ चारिम आ पाँचम खण्डमे जकर शीर्षक अछि क्रमशः 'पराशरक नव अनुभूति' आ 'जीवछक जीवन', प्रतिबिम्बित करैत अछि एके रंगक पसन्द, दृष्टि वा कल्पना आ' मस्तिष्कक अन्तर्मूर्त दिशाक प्रदर्शन आ वर्णन करैत अछि गामक जीवन शैलीक आओर एकर वातावरणक जाहि मे निवास करैत अछि निम्नजातिक समुदाय । सत्यवतीक अप्रतिम सुन्दरता सँ मोहित भऽ पराशर पहुँचैत छथि ओहि गाम जतए अधिकांशतः वास करैत अछि मल्लाह लोकनि आ ओतए ओ गामक साधारण जीवनक यथार्थता सँ, ओकर सबहक सामाजिक आ धार्मिक रीति-रिवाज सँ आ संगहि ओकर सबहक सांस्कृतिक कार्यकलाप सँ जकरा ओ सोचैत छथि भव्य- व्यक्तिगत रूपें सुपरिचित होइत छथि । कवि ग्रामीण जीवनक यथार्थता सबकें चित्रित केलन्हि अछि वृहद् स्वरूपमे सूक्ष्म एवं अत्यन्त रुचिकर विवरणक ढंगें आ ई बना दैत अछि 'पराशर' कें खास आ अद्वितीय, मैथिली साहित्यक इतिहासमे, विशेष रूपसँ कथात्मक कविताक क्षेत्र मे ।

किरणजीक कविताक सारभूत तत्व अछि, समीक्षाक हेतु ई कृति सहित, जाहि लेल आ दूर-दूर तक प्रशंसित छथि, हुनक सरल (प्राकृतिक) कथन शैली । बोल-चालक भाषामे वास्तविक रूपें मिथिलाक गाम सबमे सामान्य लोक सबहक द्वारा प्रयुक्त शब्द, लोकोक्ति आ अलंकारक अधिपति छथि किरण जी । ई सब हिनक आकृति आ विषयवस्तु के अत्यन्त द्योतक एवं उत्कृष्ट, चरित्र-चित्रण वास्तविक, वर्णन स्वाभाविक आओर विचार आ चिंतनकें विश्वसनीय ढंगसँ व्यक्त करैत अछि, बिना कोनो अहित पहुँचेने साहित्यिक उत्कृष्टता आ सुगम्यता कें ।

'पराशर' पूर्णतया लिखल गेल अछि मुक्त छन्दक विभिन्न रूपमे, परञ्च अनेको ठाम ओ अनुशरण केलन्हि अछि संघटक चरण आ पंक्ति सब पुनरावृत्तिक ढाँचा पर खासकऽ कें कृतिक चारिम खण्डमे (पृ.-23) । वास्तविक रूपें यत्र-तत्र पारम्परिक पुनरावृत्तिक ढाँचामे तुकान्त आ लय वा तालक अभाव नहि अछि, परञ्च एकरा सबहक व्यवहार कएल गेल अछि स्वतंत्र एवं अपारम्परिक रूपें, बदलैत क्रममे, परम्पराक अनुशरण नहि करैत, परन्तु एकरा तोड़बाक हेतु, एकरा स्वाभाविक बनेबा हेतु एहिमे प्रयोगात्मक नयापनक स्पर्श दऽ कें ।

वास्तव मे मैथिली साहित्यमे एहेन कोनो कृति उल्लेखित करबा योग्य नहि जे स्वरूप, विषयवस्तु, आशयपूर्ण प्रेरणाक हेतु दूर-दूर तक एकर समान होअए । स्पष्टतः ई कविक एकटा महत्वपूर्ण मौलिक रचना अछि जाहि माध्यमे ओ प्रमाणित केलन्हि अछि अपन अद्‌भुत रचनात्मक क्षमता कें एवं मैथिली कथात्मक कविताक प्रगतिमे एकटा नव क्षितिज प्रस्तुत केलन्हि अछि ।

अनुवादक
एसोसिएट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
अंग्रेजी विभाग
रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी

मधुकणक काव्य कौशल

–डॉ. अतुलेश्वर झा

'मधुकण' सत्रह शीर्षकमे बाँटल एहन काव्य अछि जाहिमे कवि अपन काव्य कलाक माधुर्यसँ मधु बटैत छथि। एहि काव्य-संग्रहक कवि छथि वीर रसक प्रख्यात कवि पं. राघवाचार्य शास्त्री ।

एहि संग्रहक नाम थिक 'मधुकण', मधुक अर्थ सामान्यत: पुष्प रस होइछ जे मधुमाँछीसँ प्राप्त होइत अछि, ओना वसन्त ओ चैत मासकेँ सेहो मधुमास कहल जाइत अछि।

ऋग्वेदमे एकटा सुक्त अछि–

''मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव:
माध्वीर्न: सन्तोषधी: ।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रज: ।
मधुद्योरस्तु न: पिता ।

अर्थात् यज्ञमे लागल यजमानकेँ वायुदेव मधु प्रदान करथि, तरंगित जल प्रवाहित नदी मधु बाँटय, संसारक विभिन्न औषधि हमरा सभक लेल मधुमय होअय आदि तरहक अर्थ अछि ।

कहबाक तात्पर्य जे ऋग्वेदक उक्त सुक्ति लोक जीवन लेल प्रकृतिसँ स्तुति करैत अछि जाहिसँ आनन्दमय स्थितिक प्राप्त होइ ।

हमर विवेच्य काव्यमे कवि वैह मधुमय जीवनक आकांक्षा करैत 'मधुकण' अर्थात् सुख आ आनन्दक क्षणक कामनासँ समक्ष अबैत छथि जाहिमे हिनक काव्य कौशल अर्थात् काव्य दक्षता पाठककेँ सहजहि अपन माधुर्यमे बहा लऽ जाइत अछि ।

महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन' एहि काव्यक प्रसंग लिखैत छथि– ''प्रस्तुत 'मधुकण'मे हिनक लेखनी ओजसँ माधुर्य्य दिस अग्रसर भेल अछि । करवालधारी मधुघट लय उपस्थित भेल अछि । हिनक एहू स्वरूपक सुखद परिचयसँ सहृदय प्रमुदित होयताह । भौतिक मधुमे तात्विक मधु भरबाक अभिनिवेश वास्तवमे श्लाघनीय अछि ।''

वस्तुत: वीर रसक निष्णात लेखनीसँ यदि मधुरतम शब्दक लय फूटय सेहो पूर्ण रसपाक संग तऽ स्वत: ओकर काव्य-कौशलकेँ सराह' पड़त । 'मधुकण'क शब्दमे प्रवाह जाहि रूपेँ प्रवाहित होइत अछि ओ अपूर्व अछि ।

संग्रहक पहिल कविता अछि 'विनय' जाहिमे कवि 'मैथिली अर्थात् जानकीसँ विनय करैत छथि । जाहिमे कवि मानैत छथि जे प्रत्येक मानवक आत्मामे दिव्य ज्योति अछि किन्तु विभिन्न स्वार्थक घेरामे घेरायल मानवक मनस्थितिकेँ अन्हार घेर लैत छैक कवि ओहि आत्म-दीपसँ अपन मानसकेँ ज्योतिर्मय करऽ चाहैत छथि । स्वयंसँ स्वयं प्रकाश प्राप्तिक चिन्तन योग विधिएँ संभव छैक आ ई बिना साधनाकेँ असंभव अछि ई कवि एहने उर्जा कामना चाहैत छथि जाहि लेल कहैत छथि–

''रग रग मे गति प्रमुदित करू हे
कटु मधुरस माहुर त्यागि सकी
ओ अमी मधुर मधु दय चलु हे
अति निडर बनी हम निरालसी
निरसलकेँ बसबी बल दिअ हे ।''

जखन स्वयंकेँ विकासक इच्छा निर्वलकेँ बढ़ेबाक लेल हो तऽ ओ जीवन लोक हित हेतु मधुमय भऽ आलोकित भऽ उठैत अछि एहि इच्छाक कविक काव्यक माधुर्य सहजहिं अमृत भऽ प्रकट होयब स्वभाविक अछि ।

आ, एहि लेल कवि नव विज्ञान युक्त युगानुकूल सूनऽ आ गाबऽ चाहैत छथि जे अभिनव अछि ।

अपन 'मधुर ज्योति'मे कहैत छथि जे लोकहित आनन्दे आनन्द थिक । भक्त लेल आनन्दे विष्णु, ब्रह्मा ओ शिव छथि । एहि ठाम कवि मधुकेँ ज्ञान रूपमे मानैत छथि, जेकरा ओ आत्म-प्रकाश अर्थात् 'अन्तर दीपक ज्योति मधुर' कहलन्हि अछि आ स्वयं-प्रभाकेँ विकसित कऽ संसारकेँ प्रकाशित अर्थात् मधुमय करऽ चाहैत छथि ।

कवि बहुत सूक्ष्मतासँ सांख्य-दर्शनक दृष्टिकेँ अपन कवितामे सन्निहित करैत छथि । सांख्य-दर्शन कहैत अछि जे सतोगुण बाहुल्यता प्रकाशमय, तेजोमय होइत अछि जखन

मनुष्यमे क्रूरता, दोसर पर क्रोध, द्वेष आदि होइत अछि तखन तमोगुण युक्त होइत छी आ कवि कहैत छथि–

''मधुलय जीवन यौवन चँचल
सवतरि सँ हारल हिम अञ्चल
आयल छी मधुपति शाला लग''

हलाहल पीबि रहल छी हम । ''सांख्य दर्शन पुरुषकेँ आत्मा ओ प्रकृतिकेँ माया कहैत अछि । कवि कहैत छथि मनुष्य अमृतमय संसारमे रहैत मायासँ युक्त भऽ विषपान करैत अछि अर्थात् सत्कार्यसँ भटकि जाइत अछि । हमर विवेच्य कवि ओहि भटकनकेँ प्रेरित कऽ सत्यमार्ग पर आनि जग–जीवनकेँ आलोकित करबाक हेतु अपन काव्यसँ प्रेरणा जगबैत छथि जे अद्भुत अछि । आ कहैत छथि–

पुरुष पुरातन देल मधुर मधु
एकसरि माया पान करै
आकर्षण कय माया नचबय
सबके बस कय सबके सतबय ।

एहि मैथिली काव्यमे सांख्य–दर्शनक तत्व ज्ञानकेँ जाहि कुशलतासँ व्याख्या सहजे भेल अछि ओ अद्भुत अछि, अद्वितीय अछि ।

डॉ. श्री सूर्यकांत ठाकुर हिनक काव्यक प्रसंग कहैत छथि– 'गीता'क अनुसार एहि ज्योतिक पौनिहार वैह छथि जे' विगतेच्छाभयक्रोध:' छथि । काञ्चन कामिनीक कलेवरसँ अपन कल्पना हटाय, मानसिक मलिनताकेँ स्वभावसँ भगाय पारस्परिक द्वेष–धारणासँ इन्द्रिय समूहकेँ समेटि जे साधक अपन अनन्त साधना अमिट उत्साह अथक परिश्रम अतुलित दृढ़ता अपरिमेय पौरुष अनिन्द्य चेतना अकाट्य ध्येय लय कय कार्य–संयुति एवं योग युक्त रहै छथि तनिक ई अवस्था प्राप्त होइत छैन्ह ओ वैह कहियो सकै छथि जे–

''जे पीबि मनुज बनि जाथि देव
छुटि जाथि दु:ख सँ बिना खेव
भव वाधासँ हो मुक्त पुन:
से सरस मञ्जु मधु पिआ दिअ
रखने छी अम्बा पिआ दिअ ।''

कवि राघवाचार्य कहै छथि जे जीवन वस्तुत: वैह सही अर्थमे जीवन थिक जाहि जीवनमे दोसरक लेल माधुर्यसँ ओतप्रोत रहय । जाहि जीवनमे से नहि छैक ओकर जीवन निरर्थक अछि, ई जे सृष्टि अछि ओ मुक्त हस्तसँ जीवनक आनन्दयुक्त मधु लुटा रहल अछि, आवश्यक अछि जे पिपासु ओहि मधुकेँ पीबथि । एहि लेल जे मानवक हेतु बोधक आवश्यकता छै ओहि तत्वकेँ कवि अपन काव्यसँ प्रेरित करैत अपन काव्यकेँ बढ़बैत छथि ।

कवि कहै छथि ओहि मधु लेल आन ठाम ताकब आवश्यक नहि छैक कारण

''मधु कण कणमे
क्षण क्षण आप्यायित मन मन मे
तन तन मे धन बन बन मे
मधु वर्षा होइछ जन–जनमे ।''

हमरा जनैत कवि जीवनक आनन्दरूपी मधुक कल्पना स्वयं अपन जीवनमे करैत कहैत छथि जे प्रत्येक मानव मधुयुक्त छथि । आवश्यकता अछि जे स्वयं एहि स्थितिमे आबथि जाहि सँ हुनका अपन भीतरक मधुकणसँ साक्षात्कार होनि, जाहिसँ ओ अपन स्वयं आत्म–आनन्दकेँ बोधकय संसारकेँ मधु सिक्त करथि । कारण जे जँ कोनो व्यक्ति अपन कार्य क्षमताकेँ बोध नहि कऽ सकत तँ ओ दोसरा लेल की कार्य कऽ सकत ? किन्तु मनुष्य मायाक घेरामे पड़ि मनुष्य स्व आत्म साक्षात्कारसँ वंचित भऽ स्वार्थी भऽ जाइत छथि तखन हुनक हृदय दोसरक लेल कुत्सित भऽ जाइत अछि । कारण जीवनमे स्वार्थ तत्व जखन जगैत अछि तँ ओकर जीवन–जगतक लेल संकट उत्पन्न कऽ दैत अछि, एहने स्थिति पर दृष्टिपात करैत कवि कष्टक अनुभव करैत कहैत छथि–

''कय उत्पात रहलि जगती तल
त्रस्त जीव जन्तु अछि हीतल
तरुण तरणि सभ तप्त प्रकृति उर
उगिलय वाष्प कुहेस धरै
आकर्षण कय माया नचबय
सब के सब कय सबके सतवय ।''

मुख्य रूपसँ कवि शोषण रहित मानव समाजक स्थापनाक इच्छा करैत छथि, ओ एहने समाज चाहैत छथि जाहिमे निष्कलुष व्यक्ति सभक बास हो, सभ सभक लेल

आनन्दक क्षणक ओरिआओन करय । ओ अपन 'रिक्त कलश' कवितामे ओ कहैत छथि जे कट्टर पंथसँ दूर रही । जे कोनो पंथ हो ओहिमे पादरी, लामा, खलीफा, पारसी, सिन्धी, अकाली आदि मे जे महत्वक बात हो ओ अपनेबाक चाही संग-संग हमर ऋषि-महर्षिक जे जीवन पद्धति छलन्हि ओकरा वैज्ञानिक दृष्टिएँ स्वीकारैत अपनाबी । देखल जाय कवि एहि युगीन सोचकेँ स्वीकारैत अंध-भक्तिके विरोध करैत छथि, आ कोनो पंथक कट्टरताक विरोध करैत कहैत छथि-

''एकता कय चली सबमे एक वाक्य पाठकेँ ली ।
एक संग बैसी बिचारी विश्वहित उरकेँ बना ली ।।''

कारण कवि वर्तमान समयक अपन रचनामे धार्मिक कट्टरपंथक विरोध कयलन्हि अछि आ धर्म सभ-भावकेँ आह्वान कय विश्व कल्याणक गप्प सेहो करैत छथि जे महत्वपूर्ण अछि । से ओ काल मधुकणक रचना काल छल आइ तऽ ओ आओर बेसी प्रासंगिक भऽ गेल अछि । हम देशहितक ध्यान राखि सम्पूर्ण मानव कल्याणक हेतु सोची आ ओहि अनुसार कार्यक पथ पर अग्रसर होइ ।

'मधुकण'क प्रकाशन 1361 सालमे भेल आ एखन अछि 1429 साल अर्थात् 68 वर्ष बाद क्रिस्ताब्द वर्ष 2021 ई.क थिक ताहि अनुसार 1953 ई.मे एकर प्रकाशन भेल अछि उक्त सूचना महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन' स्वदेशमे विज्ञप्ति देल अछि जे प्रकाशनसँ पूर्वे भेल छल आ एहि पोथीमे संग्रहीत अछि । मैथिली कवि संस्कृत शास्त्रक प्रकाण्ड विद्वान महारानी श्री 3 रमेश्वर लता महाविद्यालयक प्रिन्सिपल पं. त्रिलोकनाथ मिश्र 2.8.49 ई.मे लिखने छथि जे हुनका 'मधुकण' देखबाक अवसर भेटलनि, एहि पोथी पर लिखल हुनक उद्गार सेहो एहि पोथीमे संलग्न अछि । तात्पर्य जे ओ तखने पोथी देखने छलाह जखन ई पाण्डुलिपिक स्वरूपमे छल हैत ।

कहबाक तात्पर्य जे स्वतंत्रता प्राप्तिक बादे हमर विवेच्य कवि अपन दार्शनिक भावक मधुर काव्य लिखि अपन जन-जनमे भाषाक आत्मीयताक संगे माधुर्य लऽ समक्ष अबैत छथि ।

ओ कहैत छथि-

''ले पीबि कने मधु तरल तरुण
प्रासनसँ दानव देव बनय
मानव मानस सर सुख उपजय
निर्भर विचरय कर लय कृपाण
पसरय सब तरि बाण बज्र वरुण
ले पीबि कने मधु तरल-तरुण...!''

कवि के कहबाक तात्पर्य छनि जे जेहने अहाँ ग्रहण करब वैह ग्रहण कयल मनस्थिति अहाँकेँ ओहने कार्य दिश प्रेरित करत तेँ ओ युवा जनसँ मधु, जाहिसँ अहाँ लेल मधु रूपी सत् कार्य भऽ सकत, पान करबाक लेल कहैत छथि ।

एहि तरहेँ कवि एहि 'मधुकण' काव्य संकलनक प्रत्येक शब्दसँ जनमानसकेँ सत कार्य करबा हेतु जाहि दर्शन भावकेँ अपन सहज गीति-लहरिसँ प्रेरित करैत छथि ओ अनुपम आ अपूर्व अछि ।

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क एहि काव्यक विषयमे कहब छनि जे दार्शनिक भावक काव्य रहने 'मधुकण' दुरुह ओ अस्पष्ट अछि । किन्तु हमरा बुझने दर्शनशास्त्रक ज्ञाता लेल तँ उक्त काव्य सहजे बोध्य हैत किन्तु समान्यो पाठककेँ सहज शब्द संयोजन प्रति रुचिक संग आलोकमय दिशा दिश उक्त काव्य निश्चित रूपसँ प्रेरित करत, शिक्षित करत से महत्वपूर्ण अछि ।

कवि स्वयं एहि काव्यमे अद्वैत-वेदान्तक किछु अंशक स्थापनाक बात कहैत छथि जाहिमे ओ देखबैत छथि जे आत्मा ब्रह्मरूप थिक अर्थात् ज्ञान प्रकाश थिक । संसारक लेल मधुक संज्ञान कय लोक-कल्याणक प्रयोग कयलनि अछि तेँ ओ अपन काव्यमे बेर-बेर ओहि ज्ञान प्रकाशकेँ मधु रूपमे संसारकेँ प्रदान करबाक हेतु अपन काव्यसँ आत्मा-रूपी ब्रह्मक साक्षात्कार करबैत छथि जे अपूर्व अछि ।

मैथिली विभाग
हरिप्रसाद जनता कॉलेज, निर्मली,
मधुबनी

आकांक्षाक पूर्ति कहबैछ सुख
आकांक्षाक क्षति कहबैछ दु:ख
आकांक्षाक निवृत्ति कहबैछ अध्यात्म
आकांक्षा रहित अवस्थामे प्रसन्नता थिक आनन्द

रामलोचन ठाकुरक बेताल कथा

–शिवशंकर श्रीनिवास

'बेताल कथा' रामलोचन ठाकुरक व्यंग रचना थिक, जकरा ओ 'हास्य-व्यंग' विधाक रूपमे लिखलनि अछि ।

रामलोचन ठाकुरक अन्य नाम अछि– अग्रदूत, कुमारेश काश्यप ओ मुजतबा अली । उक्त नाम सभ ओ अपन पोथी 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' (कविता, 2003) मे परिचय रूपमे देने छथि ।

'बेताल कथा' कुमारेश काश्यप नामसँ लिखने छथि किंतु किएक ? एहि प्रसंग हुनक कोनो मनतव्य प्राप्त नहि अछि । एहि पोथीक प्रकाशन 'विदेह पब्लिकेशन्स कलकत्तासँ 1981 ई.मे भेल अछि ।

व्यंग साहित्यक एक विधा थिक । जकर अर्थ होइत कटाक्ष करब । जे शब्दक व्यंजना शक्तिसँ प्राप्त होइत अछि ।

हास्यक अर्थ उपहास होइत अछि । जे कतौ-ने-कतौ व्यंगेक बोधक अछि । ओना हास्य हँसबाक लेल मनोरंजन लेल सेहो प्रयुक्त होइत अछि ।

मिथिलामे सम्बन्धक अनुसार हास्यक परिपाटी रहल अछि, जाहिमे उपहास कम, बेसी सम्बन्ध बोधक मधुरता रहैत अछि । एहन हास्यमे मनोरंजनक उद्देश्य रहैत अछि ।

मैथिली साहित्यमे प्रो० हरिमोहन झाक विभिन्न विधामे लिखल हास्य-व्यंग भेटैए । हिनक साहित्यमे हमरा सभ दिन ओहि विधाक शिल्पमे हास्य बोड़ल भेटल, मुख्य व्यंग अछि जाहि माध्यमे ओ (हरिमोहन झा) समाजमे सुधारक आकांक्षी रहलाह आ लोकप्रिय भेलाह ।

मिथिलामे ककरो पर व्यंग करबाक हेतु मान चढ़ाक' बजबाक सेहो स्वभाव रहल अछि । जेना कहि रहल छी ककरो विषयमे आ ओकर अर्थ खुजि रहलए ककरो पर । हमरा जनैत एहि पोथीक रचनामे कुमारेश काश्यप अर्थात् रामलोचन ठाकुर एहि स्वभावक अनुसार कथाक रचना करैत अपन रचनाक उद्देश्यक पूर्ति कयलनि अछि । आ, ई बात हिनका हरिमोहन झासँ फूट करैत छनि ।

एहि पोथीक नाम अछि– 'बेताल कथा' ।

संस्कृत साहित्यमे बेतालभट्ट द्वारा लिखित 'बेतालपञ्चविंशतिका' कथा-संग्रह प्राप्त होइत अछि । एहि पोथीक पचीसो कथामे विक्रमादित्यक न्यायक प्रति हुनक दृढ़ता देखाओल गेल अछि । हिन्दी साहित्यमे सेहो अनेक अपना-अपना ढंगक बेताल कथा विभिन्न नामसँ अछि ।

रामलोचन ठाकुरक 'बेताल कथा' पोथीमे पाँचटा बेताल कथा, एकटा 'तोता-मैना सम्वाद-अथ कथा चमचा पुरान प्रसंग ओ एकटा लालबुझकर-विद्यापतिक बर्खी' कुल सातटा कथा अछि ।

''तोता-मैना संवाद-अथ कथा चमचा पुराण प्रसंग'' उक्त संग्रहक पहिल कथा थिक । एहिमे रचनाकार अपन भाषाक चिन्ता करैत छथि, हिनक कहब अछि जे जाबत मैथिली कार्यालयक भाषा पढ़ौनीक भाषा नहि हैत ताबत विभिन्न संस्थामे मात्र स्वीकृति भेलासँ मैथिलीक उचित विकास संभव नहि अछि । आ, ई काज तखने हैत जखन जनता जागत किन्तु से कोना हैत ? एहि भूमिक नेता एहि भूमिक रहितो दिल्ली दरबारक पूजामे रहैत अछि आ समाजक लोक बनि गेल अछि दरबारी जकरा ओ चमचा कहलनि अछि ।

वर्त्तमान स्थिति (रचनाकाल आ एखनो जे ओहिना विद्यमान अछि) केँ देखा कथाकार अपन कथाक इति करैत छथि । उक्त बात निश्चित रूपेँ समाज ओ एकर राजनीतिक पृष्ठिभूमि पर व्यंग अछि ।

अपन भाषाक प्रति एतेक आस्था रखनिहार रामलोचन ठाकुर एहि कथाक नाममे सुगा बदला तोता लिखलनि । ओना सुग्गा आनो भाषामे प्रयुक्त अछि किंतु मैथिलीमे 'सुगा' शब्द सैह प्रयोगमे रहल, हँ इम्हर आबि क' विभिन्न प्रभावे 'तोता' सेहो कहल जाइत अछि । किन्तु रामलोचन जी 'सुगा' नहि लिखि 'तोता' लिखलनि, ई नीक नहि लगैत अछि । भ' सकैए हिन्दी भाषामे 'तोता-मैना'क कथा जे गद्य-ओ पद्यमे प्रसिद्ध अछि से हिनका सेहो नाम देबामे प्रभावित कयने होइन ।

'विद्यापति वर्खी' मे लेखक वर्त्तमान समयमे शिक्षा जगतमे होइत शोध-कार्यादि पर व्यंग कयलनि, जे बहुत मार्मिक अछि । विद्यापतिक पदावलीमे जे मूल बात अछि, जाहि कारणेँ ओ जन-जनक कवि छथि ओहि सभसँ फूट हुनका युग-चेताक रूपमे नहि अन्य विभिन्न रूपमे हुनक छविके आधार मानि शोध प्रस्तुत करैत पी-एच.डी. प्रदान कयल जा रहल अछि । लेखक अपन रचनाक बल पर नहि अन्य कारणेँ महान घोषित कयल जा रहलाहे एहि सभ पर हिनक व्यंग निश्चित रूपसँ सचेतक अछि ।

एहिठाम एकटा बात हम आरो कही जे व्यंग रचना

जहिना आम पाठकक लेल बहुत रुचिप्रद ओ प्रेरक होइत अछि ओहिना विसंगतिकारी लेल असह्य ओ त्याज्य । प्रो० हरिमोहन झा पर सेहो परम्परावादी लोकनि विभिन्न तरहेँ अपन क्रोध प्रगट कयने छथि ।

रामलोचन ठाकुरक रचना व्यंग रूपमे एतेक तीक्ष्णता संग आयल किन्तु हिनका व्यंगकार रूपमे नहि चीन्हल गेल से आश्चर्य, जखन कि हिनक रचनामे समयक अद्‌भुत पकड़ अछि आ व्यंगक सटीक चमत्कार ।

उक्त दूनू कथाक बाद हिनक शुरुह होइत अछि- बेताल कथा । पहिल कथा अछि कुर्सीक महात्म्य ।

हिनक बेताल कथा पारम्परिक बेताल कथासँ फूट अछि । एहि कथामे विक्रमादित्य छथि, बेताल छथि किन्तु दूनूक चरित्र पूर्णत: आजुक समयक अनुसार नव परिधान ओ नव चिन्तनमे अछि । 'कुर्सीक महात्म्य'मे विक्रम अपन कुर्सीक सुरक्षा चाहैत छथि । एहि कथामे रचनाकार वर्त्तमान समयमे जे सत्तासीन नेताक चरित्र अछि ओ विक्रमादित्यमे आरोपित कयलनि अछि । एहन विक्रमादित्य अपन परमप्रिय सलाहकार बेतालसँ मंत्रणा करैत छथि जे हुनक सिंहासन कोना बाँचल रहत । आ बेताल हुनका युक्ति बुझा रहलाहे ।

सत्तासीन व्यक्ति स्वभाविक रूपसँ सामन्ती मनस्थितिक होइत छथि । एहन लोक समाजमे पिछड़ल लोकक उत्थानसँ डेराइत छथि । उक्त कथामे दुसाधक बेटाक न्याय-प्रक्रिया ओ समाजक ओहि दिश जाइत रूखिसँ विक्रम डेराइत छथि । आ, ओहिसँ चिन्तित भ' अपन सिंहासनक सुरक्षाक उपाय बेतालसँ पुछैत छथि ।

उक्त कथा कहैत अछि जे वर्त्तमान समय एहन भ' गेल अछि जे राजनेता सत्ता पबैक लेल सम्पूर्ण देशक लोकमे महान बनबाक नाटक करैत अपन सुख-भोगमे लिप्त रहैत अछि आ सदिखन अपन कुर्सीक सुरक्षा हेतु अपन चमचा द्वारा अपन महिमाक गान करबैत रहैत अछि ।

उक्त कथा अतीतसँ वर्त्तमान अबैत अछि आ कहैत अछि जे एकटा समय आओत जे ई कुर्सी दिल्ली (भारतक राजधानी)मे रहत आ एहि पर बैसनिहार प्रधानमंत्री कहाओत ।

एहि तरहे लोकतंत्र शासनमे व्यक्ति-पूजाक खेल पर भयानक व्यंग अछि जे पाठकके ँ समयसँ साक्षात्कार करेबामे समर्थ होइत सचेत करैत अछि ।

कथा अदि 'बिप्लब' । विप्लबक अर्थ होइत अछि- क्रान्ति, विद्रोह ।

राजसत्ता कखनो अपन सामाजिक विद्रोह नहि चाहैत अछि । ओ एकरा दबेबाक लेल समाज के बीच एहन गुपचुप काण्ड करैत अछि जाहिसँ समाजक ध्यान ओहि दिश बँटि जाइत छैक आ राजसत्ता स्वयं काण्ड क' के ओहि घटित काण्डकेँ निन्दा करैत समाजक सहानुभूति लैत अपना प्रति होइत विद्रोहकेँ धाराकेँ बदलि दैत अछि । एहि बातकेँ बेताल विक्रमादित्यसँ वनराज सिंहक कथा कहैत छथि जे कोना सिंहक 'प्राइवेट सेक्रेटरी चमचा प्रधान श्रीमान शृंगाल शर्मा मन्त्रणासँ बकरीक अपहरण क' ओकरा मारि खायल गेल पुन: हरिणक अपहरण क' मारल गेल आ स्वयं शेर सिंह एहि पर दुख प्रगट करैत, भाषण दैत जानवर सभक सहानुभूति पौलनि ।

राजसत्ताक एहि भयंकर खेलमे आधार करैत उक्त कथा सत्ता पर व्यंग तँ करिते अहि समाजके सेहो सतर्क करैत अछि, जे ध्यान योग्य अछि ।

रामलोचन ठाकुर जाहि रूपेँ जन-मानसिकता सँ अपन व्यंग्यमे राज्यसत्ताक चरित्र पर चोट करैत छथि ओ अत्यन्त महत्वक अछि । हिनक खूबीअछि जे ओ बहुत सहजे प्राचीन युगक पात्रकेँ वर्तमान समयक राजनेताक चरित्रमे आरोपित क' अपन व्यंग्यात्मक विद्रोहक स्वर स्पष्ट करैत छथि जे अत्यन्त महत्वपूर्ण ओ तथ्य परक अछि ।

हिनक रचनाक आर खूबी अछि जे ई अपन व्यंगमे ने कालावधिक नाम लैत छथि आ नेताक किन्तु हिनक कथा कालक ओ खास राजनेताकेँ सेहो इंगित करैत अछि ।

भारतीय प्रजातंत्रक इतिहासमे इमरजेंसी (आपातकाल) 25 जून 1975 सँ 21 मार्च 1977 तक 21 मासक अवधिक बीच छल । एहि बीच भारतीय नागरिकक स्वतंत्रता पर लगाम गेल छलैक । विद्रोही नेता, पत्रकार ओ जनपक्षक लोकके जेल भ' गेल छलनि । सत्ताक विरोधमे बाजबकेँ दण्डनीय अपराध बूझल जाइत छल । देश द्रोह बुझल जाइत छल । ई बात वर्तमान समयमे सेहो कतेक प्रासंगिक अछि से सहजहिं बूझल जा सकैत अछि ।

एहन समय होयबाक कारणमे जाहि रूपेँ 'ब्रह्माक शाप'मे इन्द्रक तानाशाही, ऋषि-मुनिकेँ कारागार ओ अन्यबात देखाओल गेल ओ अद्‌भुत रूपेँ देशमे भेल 'आपातकाल' केँ मोन पाड़ि दैत अछि ।

ओ आपातकाले स्थिति आर स्पष्ट होइत अछि जखन ब्रह्मा लग इन्द्र अपन पिता आ पितामहक सेवाक उल्लेख करैत छथि आ ब्रह्मा हुनका आगू जन्म नारी होयबाक श्राप दैत छथि ।

उक्त कथामे आपातकालक जन-दुर्दशा के जाहि रूपेँ बेताल विक्रमादित्यकेँ कथा सुना रहलाए ओ इन्द्रक

प्रशासनमे चलैत अछि किन्तु इन्द्रकेँ नारीक श्राप जाहि कुशलतासँ ओकरा भेटैत छैक ओ सद्य: आपातकालक स्थितिक भ' जाइत छैक । कोनो व्यंगमे अपन व्यञ्जना शक्तिक ई विशेषता थिक जकरा कहबी संग कहि सकैत छी जे– 'घाओ कतौ आ पह कतौ' । आ से रामलोचनजीक रचनामे बहुत सहजता संग 'घाओ' आ 'पह' दूनू चिन्हार होइत अछि ।

एहि रूपेँ अद्‌भुत रूपेँ आपातकालक विषय स्थितिपर टिप्पणी करैत उक्त कथा जनचेतनाकेँ झकझोड़िक' जगेबाक काज करैत अछि जे हुनक व्यंगकेँ सार्थक ऊँचाइ प्रदान करैत अछि ।

कोना लोक नायकके खलनायक, सदगुणीके दुर्गणी लोक कहि अपन अनुसार समयकेँ देखिक ' करैए तकर उत्तम उदाहरण अछि हिनक व्यंग 'उत्तर महाभारत' ।

जाहिमे बेताल पाण्डवकेँ अन्यायी, कृष्णकेँ कुटिचाली सम्बोधन क' कथा कहलनि अछि ।

ओना राजनीतिमे सभ किछुकेँ अपना हितमे सिद्ध करबाक बातके सफल राजनीति कहल जाइत अछि, हमरा जनैत प्रकारान्तर सँ विक्रमकेँ बेताल सैह कहैत छथि ।

'अमरावतीक उपकथा' अद्‌भुत कथा अछि । एहि देशमे आपातकालक बाद छठम आम चुनाव भेल । जाहिमे जनतापार्टी जीतल । कहल गेलै जे भारतीय जनता केँ आब असली स्वतंत्रता भेटलैक किंतु की भेल ? तकरे व्यंग कथा अछि उक्त कथा । उक्त कथा कहैत अछि जे पुन: जनता ठकल गेल । चुनाव सँ पहिने नेता लोकनि बहुतो आश्वासन देने छलथिन किन्तु सभ बिसरि जाइ गेलाह । बेतालक शब्दमे– ''कारण तखन ई लोकनि कुर्सी विहीन छलाह । कुर्सी भेटिते बिसरि गेनाइ स्वाभाविक । आब कैसी तेरी रंगा ! दोसर बात जे इहो लोकनि त' कूनू ने–कूनू रूपमे पुरने दलसँ सम्बद्धे छलाह । रक्त सम्पर्के ओही वंशक छथि ! आ तेसरबात जे बिलाड़ि जँ माछक रखबार हो त परिणामक कल्पना' सहजहि कएल जा सकैए ।'' एतावता ईहो लोकनि जनताकेँ भ्रमित करैत अपन स्वर्गक भोगमे लागि गेलाह । कथा स्पष्ट रूपसँ कहैत अछि जे एहि देशक जनता जावत स्वयं नहि जागत तावत ओकरा कल्याण संभव नहि छैक । एहि बातकेँ कहबाक लेल कथा जाहि तरहेँ व्यंग्यात्मक अपन बात कहैत भारतीय राजनीतिक दुर्दशाकेँ समक्ष करैत अछि, ओकर प्रस्तुतिक विलक्षणता बहुत प्रभावी अछि ।

कथामे नेताक वेश–भूषा ओ ओकर प्रवृतिकेँ समक्ष रखबामे रचनाकार अत्यन्त सफल भेलाहे ततबे नहि ओ जनताक सहिष्णु स्वभावकेँ सेहो आलोचना कयलनि अछि। हिनक कहब अछि जे जनताकेँ अपन सहबाक सीमाकेँ सेहो बूझक चाही । अन्याय ओ शोषणक विरोधमे ठाढ़ होयबाक चाही । ओतबे नहि कथा अपन प्रसंगसँ स्पष्ट कहैत अछि जे तनता स्वयं अपन शोषणकेँ रोकि सकैत अछि, अपन स्वतंत्रताक द्वारि खोलि सकैत अछि ।

एहि ठाम एकटाबात हमरा कहब आवश्यक बुझाइए ओ ई जे मैथिली साहित्यमे व्यंग परक रचनामे कतेको रचनाकारक रचना छनि जाहिमे प्रो० हरिमोहन झा, अमर जी, छत्रानन्द आदि लोकनि प्रमुख छथि किन्तु ई लोकनि कोनो खास विधामे व्यंगक समावेश कयलनि अछि । हँ, एहिमे हरिमोहन झाक 'खट्‌टर काकाक तरंग' केँ छोड़ि क' । 'खट्‌टर ककाक तरंग' विभिन्न विषय पर लिखल संवादात्मक हास्य (मनोरंजन हेतु हास्य उत्पन्न करबाक हेतु)– व्यंग रचना थिक जे कोनो खास विधाक अन्तर्गत नहि रहितो अत्यन्त मार्मिक अछि । एहि ठाम हम इहो कहि सकै छी जे हरिमोहन झा उक्त रचना व्यंग के स्वतंत्र विधाक रूप देलनि अछि ।

किन्तु रामलोचन ठाकुर 'बेताल कथा' मुख्य रूपसँ राजनीति पर अपन रचनाकेँ केन्द्रित क' हास्यकेँ उपहासेक रूपमे व्यंगमे समाहित करैत अपन रचनाकेँ व्यंग–विधामे कायम कयलनि अछि तेँ हम पहिनहुँ कहलहुँ अछि जे ई हरिमोहन झाक रचनासँ फूट अपन रचनाकेँ स्वरूप प्रदान कयलनि ।

हिनक पोथीक नाम थिक– 'बेताल कथा' । हम सेहो हिनक रचनाक व्याख्या करैत कएक ठाम कथाक शब्दक प्रयोग कयलहुँ अछि किन्तु हिनक रचना कथा नहि थिक । ओ सभ थिक व्यंग्यात्मक गद्य, जकरा व्यंग' रचना कहल जायत । तकर कारण कथा अपन विधामे जाहि रूपेँ अपन घटनाक समापन संग कथ्यकेँ देखार करैत अछि से हिनक रचनामे नहि अछि । कथामे जँ कतौ मूल घटनासँ फराक लगैत विजय देखाइत अछि तँ ओ अन्तत: मूले घटनाक स्पष्ट करैत ओहि संग समाहित भ' जाइत अछि । किन्तु रामलोचन ठाकुरक उक्त रचनामे घटैत घटना ने कथा जकाँ क्रमश: सम्यक रूपेँ चलैत अछि ने कथ्यतक जाइत अछि, अस्तु हिनक रचना प्रारंभेसँ अपन कथ्य कहैत पुन: चलैत आगू बढ़ैत अछि जे हिनक रचनाकेँ कथा नहि बन' दैत अछि, कतहु संवाद, कतहु कोनो घटनाक वर्णन, कतहु कोनो सूचनात्मक वृत्तान्त हिनक रचनाक मात्र व्यंग रूपमे आगू बढ़बैत अछि । आ व्यंगक खास विधाकेँ जनपक्षधरताक दृष्टिसँ आगू बढ़बैत अछि जे हिनका महत्वपूर्ण व्यंगकारक रूपमे महत्वपूर्ण बनबैत अछि ।

लोहना, मधुबनी

'बाल-विनोद' : साहित्य बेजोड़

–डॉ. अजीत मिश्र

बालसाहित्यक रचना अत्यन्त प्राचीन कालसँ होइत आबि रहल अछि। नारायण पण्डितक 'पञ्चतन्त्र'मे पशु–पक्षीक माध्यमे नेना–भूटकाकेँ शिक्षित करबाक प्रयास कएल गेल अछि। नानी–दादीक मुँहेँ खिस्सा सुनि बाल–बच्चा नैतिक शिक्षा प्राप्त करैत रहल अछि। इएह बाल–बच्चा प्रकृतिक एहन मोहक उपहार बनि सर्वसमक्ष होइछ जे वर्तमान आ भविष्यक समन्वयक बनि समाजकेँ नव दिशा, नव गति प्रदान करैछ। ओहुना बाल–बच्चामे ईश्वरक वास मानैत छी हम सभ आ वैज्ञानिक विश्लेषणक माध्यमे एही बालपनकेँ मानवीय सभ्यता–संस्कृति ओ मानवीय रूप–गुणकेर संवाहक मानल जाइछ।

एहन जे नेना–भुटका, जकरापर निर्भर करैछ सामाजिक गति–मति, तकरा एक आदर्श सामाजिक बनएबाक दायित्व हमरा सभपर अबैछ। जहिना एक माटिक मुरुतकेँ रूप धरएबामे कुम्भकार सजग–सतर्क रहैत छथि, जहिना एक पाथरकेँ एक रूप धारएबामे मूर्तिकार तन्मय होइत छथि, ठीक तहिना एक बुतरुकेँ एक आदर्श नागरिक बनाएब हमरासभक कर्त्तव्य बनैत अछि। एहि बाल–बुतरुकेँ एक आदर्श रूप धरएबामे समाजकेर प्रत्येक व्यक्तिक दायित्व रहैत अछि आ एहने कार्य अपन रचनाक माध्यमे सेहो एक सजग–सतर्क रचनाकार करैत अएलाह अछि। रचनाकार अपन रचनाक माध्यमे बाल मन–मस्तिष्ककेँ सुसंस्कृत बनएबाक कार्य करैत छथि, एक विवेकशील प्राणी बनएबाक कार्य करैत छथि आ देखबैत छथि बालमनकेँ एक सचेष्ट सामाजिकक दायित्व।

अदौ कालसँ साहित्यकार लोकनि अपन कर्त्तव्यकेँ चीन्हि बाल साहित्यक निर्माण करैत आएल छथि। मैथिली साहित्यक प्रणेता लोकनि सेहो एहि दिशामे सचेष्ट रहलाह अछि। नीति सम्बन्धी काव्य–रचना कए बाल साहित्यकेँ पुष्ट करैत अएलाह अछि। सीताराम झा, जनार्दन झा 'जनसीदन', धनुषधारी लालदास अछि जतए नीति शिक्षाक माध्यमे नेनाकेँ शिक्षित करबाक प्रयास कएल तँ मुक्तक काव्यमध्य 'कंटक'क 'तरेगन' शीर्षक कविता परम्परागत शिक्षाप्रधान कविताक नीरसताकेँ हटाओल। एहि प्रसंग दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन इतिहासमे लिखने छथि–

''एहि परम्परामे श्री गोविन्द झा 'पाकल आम' एवं श्री किरण 'परात' कविता लिखल। बाल सहित्यक क्षेत्रमे प्रो. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अवदान सेहो बड़ महत्वपूर्ण अछि।''

उपरोक्त उद्धरणसँ स्पष्ट होइछ जे बाल साहित्यक निर्माणमे डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क योगदान अति महत्वपूर्ण अछि। किरणजी एक दिस जतए अपन साहित्यक माध्यमे समाजकेँ नव दिशादैत दृष्टिगोचर होइत छथि तँ दोसर दिस मिथिलाक बाटपर उतरि मैथिलीकेँ अपन यथोचित सम्मान दिअएबाक हेतु अमर सेनानीक नेतृत्व करैत समक्ष अबैत छथि। साहित्यकेँ सुदृढ़ करबाक दुइ माध्यम–साहित्य निर्माण आ साहित्यक प्रति जनजागरणक अगुआ बनि समक्ष होएब–किरणजी सन दोसर नहि।

किरणजी समयानुकूल, विषयानुकूल, परिस्थिति अनुकूल साहित्य रचैत रहलाह आ समाजकेँ जगबैत रहलाह। हिनका एतबा अवसर कतए जे स्थिर भए साहित्यकेँ पोथीक रूप देथु। धान्यवादक पात्र उजान–धर्मपुर स्थित 'किरण मैथिली–साहित्य–शोध–संस्थान', जे हुनक छिड़िआएल–हराएल साहित्य सभकेँ समेटि पोथीक रूप धरा रहल छथि आ आइ तेँ हमर हाथमे 'बाल–विनोद' आलोकित भए रहल अछि। जहिआ एहि पोथीक रचना सभक निर्माण भेल तहिआ तँ संचार माध्यमक अकाल छल, तेँ मैथिली कुहरि रहल छलीह, मुदा आइ तँ संचार माध्यम एतबा तीव्र गतिकेँ प्राप्त कए वैश्विक मंच प्राप्त कए चुकल अछि जे माँ मैथिली छगुन्तामे पड़ि गेल छथि– दुहू स्थितिमे उपरोक्त 'बाल–विनोद' हमरा सभक हेतु, माँ मैथिलीक हेतु संजीबनीक कार्य कए रहल अछि।

'बाल–विनोद' केर रचनाक सम्बन्धमे एहि पोथीक 'प्रकाशकीय' मध्य लिखल गेल अछि– ''...ई दू खेपमे लिखल गेल अछि। दू तरहक कागतपर। पहिल प्रति जिस्ता कागजपर छै जाहिमे एक ठाम अंकित छै 13.8.1934 अर्थात् बनारस मे जेठ बालक स्व. कैलास लेल, जनिक जन्म 1937 मे छलैन– अर्थात् छठम वर्षमे। हमर जन्म 1944 मे छी, कतिपय कारण सँ किरण जी गाम आबि गेलाह। डीह बढेलैन। पहिलका भुतिया भेल हेतैन त फेरसँ लिख देलैन। भाव एक रहलैन। बनारसमे नीक उपार्जन छलैन, गाममे लगभग बरोजगारी, मुदा दुनूक स्थितिक किरणजी विचार एवं आस्थामे एक छथि।''

किरणजी मानव नहि महामानव छलाह, स्थितप्रज्ञ छलाह आ छलाह मातृभूमि-मातृभाषाक सफल सेनानी । ओ सदा-सर्वदा अपन मातृभाषाक हित लेल सोचैत छलाह आ तेँ उपरोक्त पोथीक माध्यमे नेनाक मन-मस्तिष्कमे एहन विचार, एहन मन्त्र भरि देबाक प्रयास करैत रहलाह जे भविष्यमे माँ मैथिलीक सिपाही बनि भाषा-समाजकेँ सुदृढ़ आधार प्रदान करत ।

उक्त पोथी तीन खण्डमे विभाजित अछि आ अन्तमे छैक 'उपसंहार'क अन्तर्गत 'बच्चाकेँ निषेधात्मक ज्ञान' ओ 'बाल प्रार्थना' । पहिल खण्ड थिक 'पूर्व खण्ड', जाहिमे अक्षर ज्ञान, मात्र ज्ञान आ संयुक्ताक्षर ज्ञान देल गेल अछि । आइ पचास पार व्यक्तिकेँ स्मरण भए आओत अक्षर ज्ञान केर ओ वैज्ञानिक पद्धति, जखन लय-ताल-छन्द युक्त कवित्तक माध्यमे हँसी-हँसीमे अक्षर ज्ञान करादेल जाइत छैक । स्मरण करू- ''कबिरकान 'क', काञ्चुन 'का' हरिसेँ 'कि', दीर्घे 'की', तारे 'कु', वर्जन 'कू', एकलेँ 'के' दोलेँ 'कै', कलमत 'को', दू कनो कौ मस्ते 'कं', दू बुन्दा दूसासी 'क:' ।

एकरहि आधार बना दू अक्षर-तीन अक्षरक मात्राविहीन ओ मात्रायुक्त शब्दक ज्ञान कराओल गेल अछि विवेच्य पोथीमे एकरासंग भाषा-विज्ञानक अनुसारेँ स्वर-व्यञ्जनक ज्ञान, उच्चारण-स्थल ज्ञान आदि अति रम्यताक संग कराओल गेल अछि । एहि अक्षर ओ भाषा ज्ञान केर क्रममे अपन 'बपौती' शब्दक संग्रह सेहो पठनीय ओ संग्रहणीय अछि जे मैथिली भाषाकेँ गरिमासँ युक्त करैत अछि ।

दोसर खण्ड 'मध्य खण्ड'क अन्तर्गत 'पद्यमय बारहखड़ी' ओ 'बाल कविता' संगृहीत कएल गेल अछि । एतए ध्यातव्य अछि जे किरणजी द्वारा उक्त पोथीक रचना दू बेर कएल गेल छल । एहिसँ एक दिस जतए किरणजीक अपूर्व स्मरण शक्ति ओ तन्मयताक परिचय प्राप्त होइछ ओतहि दोसर दिस दू बेर 'बारह खड़ी'केँ लिपिबद्ध करबासँ बहुतो मैथिलीक खास शब्दक संग्रह भए गेल अछि । द्रष्टव्य थिक 'ख' संग्रह-

''खपटा खुपटी बूड़ि खेलाय । खाट जौड़सँ घोरल जाय ।।
खिखिरक नाङड़ि होइ अछि मोट । खीरासँ खीरी हो छोट ।।''

एहिमे प्रयुक्त खपटा, जौड़, खीरा, खीरी आदि शब्द नवतुरिया हेतु सर्वथा नव शब्द थिक, जाहिसँ ओकरा सभकेँ परिचय कराए अपन सभ्यता-संस्कृतिकेँ बचाओल जाए सकैछ ।

एकर अतिरिक्त एहि खण्डमे 29 गोट बाल कविता संगृहीत कएल गेल अछि जाहिमे सर्वथा निहित अछि कौलिक संस्कार, नैतिक शिक्षा एवं अनुशासनक मूल मन्त्र 'परान' नाम शीर्षक कविताक तँ ऐतिहासिक महत्व अछि, कारण ई मैथिली साहित्यक आदि बाल कविता थिक जाहिमे बच्चाकेँ जीवनक मूलमन्त्र प्रदर्शित करैत लिखल गेल अछि-

''पोथी लय विद्यालय जाउ । नहि तँ बकरी-गाय चराउ ।।
मेहनति करू, होउ बलवान । राखू जन्म भूमि केर मान ।।''

आइ कोरोनाक युगमे साबुन लए हाथ धोबाक आग्रह-अनुरोध बेर-बेर सुनैत छी, मुदा ई तँ मिथिलामे अदौसँ स्वस्थ रहबाक हेतु स्वस्थ विचार छल, तेँ ने किरणजी अपन 'पाहुन अयला' कवितामे लिखलनि-

''पाहुन अयला साबुन लाउ । पटुआ बथुआ साग बनाउ ।।
सारूक सुथनी आरू-दमानि । खाउ दही सङ चीनी सानि ।।''

मिथिलामे खान-पान सभ दिनसँ उत्तम औ स्वास्थ्यक अनुकूल रहल अछि । समयानुकूल भोजनक परिपाटी एक मूलमन्त्रक रूपमे सर्वदा पालित होइत छल आ एकर प्रभाव थिक 'कनैल' शीर्षक कविताक निम्न पाँती-

''बरै धरै अछि बड़का घैला । चैत मासमे खाइ करैला ।।
भैरव भैआ देता बैर । गाय बड़द के गूड़ा-खैर ।।''

एहिना विभिन्न बाल कविता, जेना- राखू फूल, बच्चा-बच्ची हो सकलुच्ची, दिअ खेत मे ढाकी गोवर, आङनमे अछि तुलसी गाछ- अछि जीवनक प्रत्येक दशामे एक ज्ञान-वाक्य बनि दैनन्दिन जीवनकेँ रमणीय बनएबाक मंत्र सिखबैछ ।

उत्तर खण्ड थिक गद्यभाग, जाहिमे खिस्सा पिहानी ओ प्रेरक कथाक अन्तर्गत नेना-भुटकाकेँ एक दिस जतए खिस्सा कहि मन-मस्तिष्कमे एक सफल भाव-विचार भरबाक प्रयास कएल गेल अछि तँ दोसर दिस प्रेरक कथाक अन्तर्गत किछु पौराणिक पात्रक जीवन प्रस्तुत कए बाल मनमे एक आदर्शकेँ प्रतिष्ठित करबाक प्रयास कएल गेल अछि ।

पहिल भागमे सामान्य ज्ञानकेर अन्तर्गत वार्त्तालापक क्रममे स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान देल गेल अछि तँ मौखिक शिक्षाक अन्तर्गत सामान्य ज्ञान, जेना- जीव के थिक, पशु ककरा कहल जाइछ, विभिन्न चिड़ै-कीड़ीक नाम, विभिन्न फल-फूल, अन्न-मखान की थिक- आदि अत्यन्त मनोरंजनक संग प्रस्तुत कएल गेल अछि । एतबे नहि, उद्योगक ज्ञान होअए आ गृह स्वास्थ्य विज्ञान केर मंत्र, उत्तम स्वास्थ्य हेतु उचित

आहार केर चर्चा अत्यन्त मनोहारी रूपेँ लिखल गेल अछि ।

दोसर भागमे गौरी-ध्रुव-अभिमन्युक कथा कहि बालमनमे एक आदर्श चरित्रकेँ प्रतिष्ठापित करबाक सफलतम प्रयोग कएल गेल अछि ।

अन्तमे, 'उपसंहार'क अन्तर्गत एक दिस जतए नैतिक शिक्षादेल गेल अछि तँ पाँच गोट गीतक माध्यमे बालमनमे आदर्श चरित्र आ देशभक्तिक भावना जगएबाक प्रयास कएल गेल अछि । हँ, 'बालपन' किरणजीक अति यथार्थवादी प्रवृत्तिकेँ उजागर करैछ जाहिमे प्रश्न साक्षात् ईश्वरसँ कएल गेल अछि । समाजमे रचल-बसल स्तरीय भेद हुनका मान्य नहि छलनि, हुनका मान्य नहि छलनि एक दिस कोठा-सोफा तँ दोसर दिस अकासतरक बैसकी, हुनका मान्य नहि छलनि ।

''ककरो कुकुर हलुआ खाय । क्यो अपनहु भूखल बौआय ।।
जेठक दुपहरिया मे क्यो जन हाय । बालुक बुर्त कोड़ि अकुलाय ।।''

हुनक उपरोक्त विचारकेँ विभिन्न विचारक भिन्न-भिन्न नाम देलनि, हुनक कर्मक विधान बुझलनि, मुदा जखन छातीपर हाथ राखि विचार रखबाक परिस्थिति बनल तँ सभ केओ एक स्वरमे बाजि उठलाह जे किरणजीक तेज-ओजकेर बिना आजुक मैथिली अपन अस्तित्व नहि बचा सकैत छलीह, किरणजीक प्रज्ज्वलित प्रकाशकेर बिना माँ मैथिली जगजिआर नहि भए सकैत छलीह, किरणजीक साहित्य-समान सेवाक बिना मिथिला-मैथिली अपन चिरवाञ्छित अभिलाषा पूर्ति नहि कए सकैत छलीह, तेँ निर्विवाद रूपेँ आधुनिक मैथिली साहित्याकाश मध्य 'किरण'जी अद्वितीय छथि, 'किरण' जी मुकुटमणि छथि आ छथि 'किरण' जी मिथिला-मैथिली-मैथिलीक 'न भूतो न भविष्यति' ।

महराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय,
सरिसव-पाही, मधुबनी

धरोहर

जय मैथिली

मैथिली साहित्य परिषद् (दरभंगा)क तत्त्वावधान में कवि-कोकिल विद्यापति स्मृति सप्ताहक समारोह

"विद्यापतिक आयु अवसान ।
कातिक धवल त्रयोदसि जान ।।"

महोदय,

कार्तिक धवल त्रयोदशी शुक्र ता० 31 अक्टूबर सँ 6 नवम्बर धरि कविकोकिल विद्यापति-सप्ताह मनाओल जायत । अपन पूर्वजक पूजन जातीय जीवन ओ जागरणक परिचायक थीक ।

तेँ समित्र-वर्ग अवश्य उपस्थित होइ, से साग्रह प्रार्थना ।

साप्ताहिक कार्यक्रम

ता०-	स्थान-	सभापति-	संयोजक-
31 अक्टूबर	1 सरिसव (हाइस्कूल)	पं० श्री दीनबन्धु झा	श्री भवनाथ झा
1 नवम्बर	2 नवटोल (दुर्गामन्दिर)	पं० श्री बदरीनाथ झा	श्री तारानन्द झा
2 नवम्बर	3 चनोर (यू०पी० पाठशाला)	....	श्री मदनानन्द सिंह झा
3 नवम्बर	4 हाटी	पं० श्री मधुसूदन मिश्र	श्री कुञ्जनाथ झा
4 नवम्बर	5 भट्टपुरा (आम्रनिकुञ्ज)	पं० श्री मार्कण्डेय मिश्र	श्री मोतीनाथ झा
5 नवम्बर	6 पाही टोल (विश्वनाथ पुस्तकालय)	....	श्री भवनाथ मिश्र
6 नवम्बर	7 लालगंज (यदुनाथ पुस्तकालय)	पं० श्री सुरेन्द्र झा	श्री अम्बिका नाथ मिश्र

(समय सभ ठाम 5 बजे संध्या रहत ।)

सत्य-शूर

–श्री दामोदर लाल दास

1. टूटल विपति पहाड़ यदपि ई पृथ्वी तल पर ।
अनुखल वरिसथु कष्ट अनल यदयपि ई जलधर ।।
कालहु यदि विकराल गाल धारण कैय आवथु ।
प्रतिपल यद्यपि घोरनाद सँ धरणि केँ पाबथु ।।
2. सत्यशूर नहि हँटथि तदापि किछु निश्चित पथसौं ।
नहि उतारि क्यौ सकथि ताहि उद्देश्यक पथ सौँ ।।
काका नाम थिक भास शब्द धरि से नहि जानथि ।
निज उद्देश्यक पूर्ति हेतु पातालहुँ छानथि ।।
3. झंझट कोनहु तनिक मार्ग दिशि पैर न राखथि
हतोत्साहिता हतोत्साह भै घूरि न झाँखथि ।
मालिन्यहु मुख मोरि तेम्हर नहि डेग उठाबथि ।
विधना बलिकेँ 'सत्यशूर' अभिमान सठाबथि ।
4. पध मे पाबि पयोधि मुदित तकरो अब गाहथि ।
यदि भेटनि नगराज मारि धक्का-पद ढाहथि ।।
शूल फूल सभ बुझथि कथुक मनमे नहि शंका ।
दन दन बढ़ले जाथि करथि रिपु डर अभिचंका ।।
5. खसला तड़दय वैह मे आबि जे वैर ऊडौबनि ।
सैह पड़यला त्रस्त, तमकि जे त्रास देखौलनि ।।
केशहु एकन सत्यशूर के क्यो जम तोड़ल ।
तानि विपुल आयास सभहुँ चेष्टा निज घोड़ल ।।
6. परम असम्भव उसर भूमि वीया ऊँकुरायब ।
परम असम्भव कंट-काठ फल फूल लगायब ।।
परम असम्भव नमक नखत तोड़ब लय आनब ।
परम असम्भव सिन्धु पैसि रतनाबलि धानब ।।
7. परम असम्भव गनव सकल रोमावलिमाथक ।
उक्त सकल थिक खेति "शूर" के वामाहाथके ।।
निज उद्देशक करथि पूर्ति उत्साह अपारा ।
तनिकहि बजइछ आइ विश्व मे बिजय नगाड़ा ।।

मिथिला अंक- 6, पृष्ठ- 250

किरणजीक कलम सँ संकलित 'मध्यकालीन किछु उपेक्षित कवि'मेसँ

किरणजीक तीन गोट कविता

बाबाक पत्र पौत्रक नाम

स्वस्थ-पुष्ट-बलिष्ठ हउ
जनि शुक्ल पक्षकेर चान ।
मधुर इजोड़िया सन अहाँक
चमकओ विद्या ज्ञान ।
कोइली सन स्वरमे सदा सूगा जकाँ पढ़ैत
रहू प्रसन्न निश्चय मन
बगड़ा जकाँ कुदैत,
बाघ जकाँ निर्भय रहू
मेघ जकाँ रस दैत,
कमल जकाँ गमगम करू
बाबा छथि आशिष दैत ।

आनन्द

श्यामल तृणमय भूमि विधौना धन नस्वर आवाश ।
जीवन निर्झर के निर्मल कण वन्य मूल फल ग्रास ।।
अलकमे कोमल कुसुमावलि वल्कल परिधान ।
वन मयूर मृग सखा सनेही मलयानिल मेहमान ।।
झिंगुर के झन-झन मे लहरय वीणा के झनकार ।।
अलिकुल गुज्जन मृदुल भाव मय सुन्दर राग मलार ।।
सम्पति कान्ता हृदय-राज्य अछि प्रेम रत्नकेर धनवान ।
हृदय कमल खिल निरखि जकर दयुति शुभ्र सरल मुसकान ।।

अन्योक्ति

के कहैछ मलयानिल सीतल सुमधुर कोकिल गान ।
नवल सरस ऋतु पति कुसुमारक चन्दन हिमकर चान ।।
कामिनि के सम्पर्कक फल बैस एहन सरस गुण पावथि ।
नहिं तँ कियेक वियोगी जनके एक संग सवहिं सतावथि ?
(हस्तलिखित पत्रिका मैथिली सुधाकर सँ साभार)

सीता

[पूर्वाभास]

प्रथम सर्ग

–श्रीजनार्दन प्रतिहस्त

युवकः

कानि रहल के छी अहँ ?

मिथिला :

जनक जननि मिथिला हम,
वत्स ? राजमाता छी,
सम्प्रति तँ शिथिला छी
घर-घर अछि दीन हीन
सतत काल सन्तति सभ
तनपर नहि वस्त्र जतय
भटकैत अछि पुत्र हमर
'धैर्य कोना रहय तकर
नयनक समक्ष जकर
लुटइत सर्वस्व हो ।'

युवक :

अगणित दुख मातु किन्तु
ज्ञानी जनक पुत्र पाबि
मिथिला किय शिथिला हो
नगर-नगर यज्ञ-याप
गाम-गाम तप विराग
अहरइ जहँ पुण्य-उदय
होइत अछि नाश पाल
ततय कियेक त्रास भाव !
ततय कियेक वास रहित-
आश-भग्न, दुख निमग्र
अन्न-अन्न रटना करि
पृथक्-पृथक् घटना करि
रुदन करय टोली बनि
बोली जकर भेल बन्द
'माथापर हाथ राखि-
बसल सभ केवल अछि ।'

मिथिला :

धीर ! गम्भीर बनि
सुनु तकर कारण की ?
कष्टक निवारण की ?
राजा अछि नीतिमान्
मानल हम ज्ञानबान
ध्यानमग्न रहइत अछि
दिवा निशा ऋषि-तुल्य-
पूर्ण ब्रह्म-ज्ञानी भय
दानी ओ दिगम्बर अछि
योगी महायोगी अछि
'गुणक यदि गणना हो-
सर्व गुण-धारी ओ
दुख सुखसँ ऊपर ओ
मानव अतिमानव अछि ।'
अहह किन्तु तात ! ततय
अवगुण अछि एक पध
रोकि रहल सुखक बाट
घाट-बाट नचबैत अछि
राजा ओ रानी काँ
मिथिला महरानी काँ
मैथिल द्विजवृन्दहुँ काँ
कायस्थ शुभ छन्दहुँ काँ
राजपूत वैश्य आदि-
जे केओ निवासी छथि
मिथिला अधिवासी गण ।
माय ? रोकि नोर अहाँ
कहू राज-दोष की ?
ब्रह्म-तुल्य जनकहुँ केँ
अवगुण ई बात सुनि-
विह्वल अछि मानस हमर
कर्ण पटल हहरैत अछि !

मिथिला :

शान्त भय पुत्र सुनु
राजा अछि पूर्ण यती–
'किन्तु न ई तपक काल
लोक जखन व्याकुल हो–
पानि बिनु अन्न बिनु
एक दू कहल नहि
बीतल आब बारह वर्ष–
कतहुँ नहि हर्ष अछि–
सुखक अपकर्ष अछि
दैव दुर्विपाक ई
दुर्धर्ष सभ अकाल अछि
'गालमे समायल जकर
जाइत अछि पुत्र हमर
पुत्री सुकुमारी सभ
वृद्ध बाल नारी सभ'

कोशी तँ वन्या थिक
कमला निज कन्या अछि
ओहो आब रुसि रहलि
सेवि–सेवि रेती काँ
स्नेह बिनु माथामे
धूलि भरल ओमरहुँ छैक
'गण्डक अखण्ड राज्य–
लयक उन्मादी भेल
टूटल अभिमान ओकर
सूखल बौआइत अछि ।'

युवक :

मातु ? सत्य कहल अहाँ
अकथ सहज भार अहाँ
आब कहू दुखक–
निवारण पुनि कोना हो ?

मिथिला :

वीर ! समयज्ञ बनि
सुनु सभ विज्ञ बनि
ज्ञान–आजु ओझल कय
भयक विज्ञानी अहँ
गाम–गाम नगर–नगर
पल–पलमे भ्रमि–भ्रमि कय
चुनु अहाँ लोक बल
संघ–बल, शस्त्र–बल
हिलमिल कय झुण्ड–झुण्ड
घेरू आबि राजा काँ
हाथ लय अहिंसा बल
राखू स्वीय अभिमत काँ
'राजा स्वयं हलधर हो–
जलधर केर कृपा हयत
आयब हम सीता बनि
सरयूपति लायब हम
राजा राम सफल काम
गंगा काँ मनायब हम
कृषि–बल बढ़ायब हम
मुदित करब राज–काज
शुचित करब जन–समाज
तोड़ि–ताड़ि लोक लाज
धनुष काँ उठायब हम
स्वयम्वरा कहायब पुनि
प्राणनाथ संगहि हम
स्वर्णमयी लंका काँ
धूलिमे मिलायब हम
चूसि–चूसि मांस–रक्त
अबल जनक हड्डीसँ
सबल भेल माली
विज्ञानी जे रावण अछि
नाश कय अधर्म राज्य
तकर किछु वर्षहिमे–
'हर्ष युत राम राज्य
जगत भरि रचायब हम ।'

(ई श्रीप्रतिहस्तजीक प्रसिद्ध मैथिली महाकाव्यक एक अंश–मात्र अछि । हिनका सन प्रतिभाशाली लेखकसँ

कोइल सँ

–श्रीमहावीर झा 'वीर'

छोड़ि छणिक निज कू-कू कोइल, गान । निज गुण-दोषक चरचा सुनु दै कान ।।
करइछ लोक प्रशंसा अहँक बहुत । दोषो कम न कहै अछि, नहिं अजगूत ।।
सत्व और रज-तम सँ विश्व विधान । थिक अनन्त गुण-दोषक प्रकृति निधान ।।
किन्तु हमर किछु निर्णय अहँक प्रसंग । अछि जगभरि में सब सँ आने रंग ।।
गुण दुर्गुण मन मानै सब संसार । और दोष कें गुण कहि, कर व्यवहार ।।
सकल शिष्ट जन मे जे प्रचलित रीति । कहब दोष जँ ओकरा बड़ अनरीति ।।
किन्तु कहू के धनपति-जनक कुमार । पीबि दूध निज माइक कैल विहार ।।
शैशव सकल बिताओल धाइक कोर । पियल दूध छिनि आनक धन-मद-जोर ।।
रूधिर घाम सँ पटबै खेत किसान । फल लै हृदय जुड़ाबथि पुरुष महान ।
लक्ष्मी सह कुल-लक्ष्मी छथि जे भेलि । धाइक शिर तजि शिशु निज, रत से केलि ।।
मढ़थि अहँक शिर से पुनि एहन कलंक । शिशुओ नहिं निज पालै कोकिल रंक ।
करथु अहँक जन निन्दा, सब भरि पोख । किन्तु कहू, निन्दा गुण, की दोष ?
दोष एक औरो अछि, मधुमय गान । होइछ वियोगिनि हेतुक कुलिश समान ।।
किन्तु धनीक क मृदु रव, गरीबक संग । भरइछ हस्त ! हृदय मे कीदृश रंग ?
छी रितुराजक अनुचर, की दुःकर्म ? अनुचरते त सम्पति देश क धर्म ।
सतत लोचन रहइछ लाले लाल । ई लक्षणा अधिकारि कथिक एहि काल ।।
अनुचरता सँ उन्मद भै सब काल । छी दीना विरिहिन के दुःख कराल ।।
से सम्प्रति युगधर्मे, थिक की सोच । के अधिकारी राखथि, दीनक रोच ?
हो ऋतुपतिक निकट मे अहँक प्रभाव । थिक दरवारि क उचिते एहन स्वभाव ।।
दुर्गुण अपन सुनब किछु तजि अभिरोष । रुचे यदपि नहिं ककरहु सुनइत दोष ।।
करै अहँक मृदु रव क, जगत गुण-गान । किन्तु बुझी त थिक से दोष महान ।।
थिक मृदुता अति घातक, पिक एहि काल । देखू, दशा गृहस्थक केहन कराल ।।
कैल स्वत्व मृदुता सँ सब संहार । केवल अनुदिन कहि-कहि, जी सरकार !
कहब गृहस्थ क की जे देशो आज । मेल मृदुतैक प्रसादें सब सँ बाज ।।
स्वयं अहूँ होइत छी एहिसँ नाश । परइत छी पिञ्जर मे लघु आयास ।।
छी भोरे सँ रटइत, 'कू-कू' रंग । होइछ 'बाबू' लोकनि क निद्रा भंग ।।
भेल बहुत बस 'कू-कू', तजु निःसार । सत्य कहल हम की नहिं, करब विचार ।।



लखनजी 'स्थितप्रज्ञ'क दू टा कविता

अहाँ सबहक पाँछा कतए छी ठाढ़, हमर प्रिय !

अहाँ सबहक पाँछा कतय छी ठाढ़ ?
हमर प्रिय ! छाँह मे स्वयं केँ नुकौने,
ओ सभ अहाँ केँ बेकार बूझि,
ठेलि दैत छथि अहाँ केँ दूर,
आ निकलि जाइत छथि,
अहाँ सँ भेल विलग,
धेने धुरिआयल अपन बाट

हम एहि श्रान्त क्षण मे,
अपन सनेस केँ पसारि,
छी प्रतीक्षा कए रहल,
जाधरि बटोही सभ छथि अबैत,
आ बटोरि लैत छथि गोट-गोट उपहार,
खाली भऽ जाइछ हमर पूष्प हार

भोर बीतल-बीतल बेर दूपहर
साँझक शीतल छाहरि मे,
आँखि हमर ओंघाय रहल,
घ'र घुमैत लोक हमरा दिस,
तकैत आ हँसैत जा रहल,
लाज सँ भरल हम अकिंचन,
अपन मुँह आँचर त'र झपने,
छी बैसल ।

हमरा सँ जहन ओ सभ पूछि बैसैत,
ओ के थिक जकर बाट हम छी जोहैत ?
तँ अपन आँखि लाजेँ छी झुका लैत,
कोनो उत्तर हम नञि छी द' पबैत ।

ओह ! कोना सत्ते हम कहि सकितहुँ,
अहीं लेल छी हम प्रतीक्षा करैत ।

ओ अहीँ छी

ओ अहीँ छी, हमर अन्तरात्मा !
जे हमर जीवपन केँ
अपन गहींर गुप्त स्पर्श सँ
छी करैत जागृत ।

ओ अहीँ छी, जे
एहि आँखि पर छी छारने
अपन जादुई आकर्षण
आ हमर हृदयक तार पर
सानन्द बजबै छी अहाँ
सुख-दुःखक विविध स्वर ।

ओ अहीँ छी जे सोना आ चानी
नीलम आ हरित चमकैत रंग सँ
सतत् बुनैत रहैत छी
मायाक ई असीम जाल
माया-जालक विविध त'ह सँ
अपन चरण-कमल केँ कखनहु छी झलकबैत
जकर मृदुल स्पर्श पाबि हम
स्वयं केँ छी दैत विसारि ।
आ छी भ' जाइत निहाल

दिन पर दिन अबैछ
युग पर युग बीतैछ
मुदा ओ सतत् अहीँ छी
जे करैत रहैत छी हमर हृदय केँ
स्पंदित अनेको नाम अनेको भेष मे
अनेको सुख आ दुःखक उन्माद मे ।

कनकपुर (उजान), दरभंगा

नवीन कुमार झाक दू गोट कविता

जीबा लेल

सूर्य अस्ताचल छलाह,
दक्षिण-पश्चिम कोन मे लुकझुक करैत
लाल-लाल किरण,
हमर स्थूलकाय शरीर सँ टकराय
धब्बा जकाँ हमर कुर्सीक पाछाँ मे
एक अस्पष्ट आकृतिक निर्माण कऽ रहल छल,
जकरा कुरेद-कुरेद कय
हम पढ़बाक प्रयत्न कऽ रहल छलहु-
'जीबा लेल झूठ पर झूठ बाजय पड़ल छल,
बीत भरि जमीन हेतु खून-खच्चर लेल तैयार छलहुँ,
छल, प्रपंच सँ टाका कमेलहुँ,
निज स्वार्थ मे नीक-बेजाय सब बिसरि गेलहुँ,
रोजी-रोटी लेल चुगली, चाटुकारिता कयलहुँ,
अपन स्वामी संग धोखा कयलहुँ,
क्षुद्र वासनाक पूर्ति लेल...,
और नहि जानि की की...?'
मोन पड़ैत अछि तऽ घृणा होइत अछि,
जीबा लेल एतेक करब आवश्यक छलैक ?
ई सब संसारक दौर मे बहुत-बहुत आगाँ जयबाक क्रम मे भेल,
आब सोचैत छी-
'मनुष्य भऽ संसार मे नहि जीबि सकलहुँ' !

कैकटस

बाउल भीतिक घर
बना रहल छी विश्वास सँ
कि अहिमे किछु क्षण बितायब सुख सँ
आ एकर छाँहमे फुलायत जीवनक आशा ?

ओ बनि नहि सकल
डाँड़ धरि ठाढ़ भ' भरभरा कऽ खसि पड़ै
फेर शुरु करी, सोची कि अवश्य बनत ?
कि हमर विश्वास साकार होयत... ?

औनल बासन केँ भरि रहल छी
सुखायल कण्ठ सुखायले रहल
गुलाब ठाढ़ि रेत पर रोपि रहल छी
कोंढ़िक प्रतीक्षामे कुम्हलैल जा रहल छी...

जीवनक साँझमे ढहल भीति पर पड़ल
मौलायल विश्वास सिसकि रहल अछि
''एक बौड़ायल पग जीवन केँ बउड़ा दैत
बाउलमे गुलाब नहि, कैक्टस जनमत...''

एसोसिएट प्रोफेसर
अंग्रेजी विभाग
का.सिं.द. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

सत्पात्रक प्रति अपन प्रिय वस्तुक त्याग थिक दान
समष्टिक समक्ष अपना केँ शून्य करब थिक ध्यान
समष्टिमे व्यष्टिकेँ समायब थिक समाधि

कथा

'बुद्धि आओर भाग्य' के पैघ ?

–मगन झा

एक वेर भाग्य आओर बुद्धि मे बहस भऽ गेल । भाग्य गर्व से कहलक हम पैघ छी । बुद्धि कहलक तऽ हम पैघ छी । वहस वढ़िते गेल । अंत मे निर्णय भेल जे वहस से समस्याक निदान नहि होयत ओकरा लेल किछु कऽ के देखौने अछि ।

तखने दुनू गोटेक खेत मे शोर करैत एकटा कृषक दृष्टिगोचर भेलै । बुद्धि भाग्य सँ कहैत अछि कृषक के राजा वना देवहक तऽ हम पराजय स्वीकार भऽ लेवह । भाग्य कहलक ठीक छैक । भाग्य कृषकक समीप पहुँचल तऽ ओकर जौक बाली मोती से भड़ि गेल । कृषक एकटा जौक वाली तोरलक तऽ ओहि मे मोती निकलल ओ अपन माथा हाथ धऽ के वैस गेल । हे भगवान आव हम कि करू ई कंकर लऽ के हम की करू । हमर परिश्रम व्यर्थ चलि गेल आ कानऽ लागल । संयोगवश तखने ओहि प्रान्तक राजा अपन मंत्रीक संग जा रहल छलाह ओ कृषकक कानबाक आवाज सुनलनि आओर कारण वुझवाक प्रयास केलनि ।

कृषक राजा केँ सभ वृतांत सुनेलक । राजा सेहो खेत मे जा के देखल ओहो आश्चर्य मे परि गेलाह । राजा मंत्री संग विचार केलनि कियाक नहि हम अपन बेटीक विवाह एहि भाग्यशाली व्यक्तिक संग करवा दियैक । पुत्री हमर सुखी रहत ।

मंत्री सेहो राजाक विचारक समर्थन करैत वजलाह अपनेक विचार उत्तम अछि । आव राजाक आज्ञा भेल जे फसल खेत मे अछि ओ राज महल जायत । ई सभ देखैत वुद्धि मुस्कराईल त भाग्य कहलक देखैत रही ई आव राजा की करताह । ओम्हर राजा अपन वचनक पालन करैत निश्चित दिन अपन पुत्रीक विवाह ओहि कृषकक संग कैल । कृषक प्रसन्न छल ।

विवाहक उपरान्त जखैन राजकुमारी नव कनिया बनि कृषकक समीप पहुँचलीह तखने कृषकक मन मे विचार आयल कि कोनो ई चुड़िन त नहि छी जे वालकाल मे सुनैत छल जे चुड़िन अपन सुन्दर रूप धारण कऽ के आदमीक खून चुसि लैत छैक आओर ओकरा जान तक ल' लैत छैक । एकरा हाथ अवै से पहिने हम अतय सँ भागि जाय । ओतय सँ कृषक भागि नदीक कछेर मे वैस गेल । तखने राजाक सैनिक ओकरा देखलक आओर पकड़ि राजाक समक्ष प्रस्तुत केलक । ओकरा देखि राजा क्रोधित होयत दण्डक निश्चित केलन्हि ।

आव वुद्धि भाग्य से कहलक देखहक आव ओकरा सजा हेतैक । आव कह' कि कहैत छह ।

निराश होइत भाग्य कहलक आव ओहि आदमी के वचा लेबहक त हम हारि माने लेवह बुद्धि हँसैत बाजल आव हमर कमाल देखही । आव चललियैक ओकरा लग । जखनै बुद्धि कृषकक समीप पहुँचल । आव कृषक राजा से कहलक राजन अहाँ हमर ससुर थिक हमरा एतय कियाक आनल गेल अछि । राजाक वजलाह हमर पुत्रीक तिरस्कार कऽ के हमर घोर अपमान केल अछि । एकरा लेल दण्ड होयत ।

तखने कृषक वाजल राजन जखैन अहाँक पुत्री यानि हमर पत्नी हमरा लग अयलीह तखने नदीक तरफ से बचाओ बचाओ आवाज हमर कान के पड़ल । हम अहि आदमी के बचेबाक उदेश्य से नदीक समीप पहुँच गेलहुँ । ओहि मे हमर किछु दोष अछि त अवश्य दण्ड दिऽ । ई बात सुनि राजा प्रसन्न होयत गला लगवैत कहलनि हमरा वाद एहि प्रान्तक राजा अहीं होयव । तखनहि वुद्धि मुस्कराईत भाग्य के तरफ देखलक । भाग्य हँसि कऽ कहलक हम अपन हार स्वीकार करैत छी अहाँ वास्तव मे हमरा सँ पैघ छी ।

मो. 7667942906

अन्हरजाली

–लखन जी 'स्थितप्रज्ञ'

बूढ़ माए बाप कें असगरे गाममे छोड़ि शिवलोचन चल आएल रहए दिल्ली अपन कैरियर बनेबाक लेल गाममे रहि बी.ए. पास कएने छल। दिल्लीसँ गाम आएल नौकरियाहा के बदलल बोली, हाव–भाव रहन–सहन देखि एकरो सिहन्ता जागि गेल रहै। से दिल्ली आबि गेल आ फाइजर मेडिसिन कम्पनी कारपोरेट सेक्टर मे नौकरी भेट गेलैक। तेज तँ रहबे करए, दू सालमे एकर कार्यक्षमता देखि CMD एकरा सेल्समैनेजरक पद दऽ देलकै। आब तँ चमचमाइत सेवरलेट कारमे चलए आ मुम्बई कलकत्ता, बंगलोर, मद्रास महानगरी के लेल हवाइ उड़ान भरए। पार्कक रोमाण्टिक वातावरण एकरो वासना जगा देने रहए आ एकटा अपनहि कम्पनीमे कार्यरता सेल्सगर्लक संग फ्रेण्डशिप सेहो बढ़ा लेने रहए। गर्लफ्रेण्ड्सक डोकासन पैघ आँखिक आकर्षक नजरिमे गाम सँ दिल्ली अएबाकाल माए बापक अश्रु सिक्त आँखि विसरा गेलैक। हवाईक उड़ानक संग महत्त्वाकांक्षा आकाशकें छुबए लगलैक। बिसरा गेलैक बापक कोदारि पाड़िकें पढ़ेबाक बात। जे बाप आंगुर पकरिकें चलनाइ सिखाओलकैक, जे बाप कान्ह पर बैसा दुनिया देखाओलकैक, तकरा जहन एकर कान्हक सहाराक प्रयोजन पड़लै से नहि निमाहि सकल। दिल्लीक ग्लैमरस चकाचौंधि जिनगी शिवलोचनकें एहि सभ भावनाक प्रति आन्हर बना देने छलै।

कम्पनीक सेल्स प्रोमोसनक क्रममे मुजफ्फरपुर आएल रहए। दिल्लीसँ पटना हवाई यात्रा कएने रहए पटनामे ए.सी. कार हायर कए पथ यात्रा करैत रहए। मुजफ्फरपुरक गोल चक्करक स्थल पर जाममे कार फँसि गेल छलै। किछु सोचि रहल छल आ बाहर सँ आवाज सुनाइ पड़लै– लिअ लिअ, 50 टाकामे झोरा भरि, 100 रुपैयामे बोरा भरि आ 200 टाकामे छिट्ठा भरि मुजफ्फरपुर मशहुर लीची एकदम शाही लीची गुलाबी क्रिसमस रंगमे रंगल। शिवलोचनक ध्यान टुटलै आ कारक सीसा हटाए बाहर देखलक। जखनहि कारक सीसा हटलै कि दू टा किशोर लड़का शिवलोचनक कारकें घेरि लेलकै। साहब एहन लीची नहि भेटत। लऽ लिअए ई टोकरी। मेम साहेबक गुलाबी ठोर एहि रस भरल गुलाबी शाही लीचीकें देखि मुस्कान सँ भरि उठत। लिअ लिअऽ जिद्द कऽ बैसल। विवश भए एक टोकरी लीची शिवलोचन खरीद लेलनि। ड्राइवर यद्यपि विरोध कएने रहनि। जे एहि ठाम हटि मार्केट मे बढ़िया लीची भेटत। मुदा ओहि दूनू बालकक लीची बेचबाक कला शिवलोचनकें आकर्षित कऽ देलक। ओहि बालक द्वयक मैल–फाटल कपड़ा देखि तँ पहिने घृणा भाव मोनमे उठलै रहनि मुदा ओकर सेल्सस्किल देखि मोन मुग्ध रहनि। आ विवश भऽ लीची खरीद लेलनि। मुजफ्फपुर शहरक सभ मेडिसिनक मैनेजरक संग शिवलोचनक मीटिंग रहए। से सोचलक जे ओहिठाम एहि लीचीकें बाँटि देबए।

रात्रि विश्राम शहरक स्टार थ्री होटलमे कएलक। आ भोरे निकलि पड़ल रहए स्टेशन रोडपर मॉर्निंग वाकमे। देखैत अछि जे स्टेशनक गेट पर ओ दूनू बालक जूतामे पालिस करबाक धन्धा कऽ रहल अछि। पहिने तँ विश्वास नहि भेलन्हि। पूछला पर ओ सभ साहेबकें चीन्हि गेलैन। आ झट हुनका पैरसँ शूज निकालि चमकाबए लागल। शू साइन शू साइन अपने पर्सनेलिटीमे साइनिंग लाउ। एहि दुनू बालकक स्वर ट्रेनसँ उतरि ऑफिस जेबाक नौकरियाहा कें आकर्षित करै। आ ओकर शू साइनक बिजनेसमे लोकक भीड़ एकत्रित भऽ जाइ। शिवलोचन दूर हटि ई दृश्य देखैत रहल। मोनमे उपजलैक जे एतेक ट्रेनिंग लेलाक बादहु ओकरामे एहि तरहक सेल्स स्किल कहाँ विकसित भऽ सकलै अछि ?

राति 10 बजे शिवलोचन बाहर शहरक हवा खेबाक लेल ड्राइवरक संग पहुँच गेल रहथि पटना मोड़ पर। पटनासँ अबैत बस जैं कि पटना मोड़ पर रुकै कि शिवलोचनकें ओएह परिचित स्वर सुनाइ पड़लै बस सभक पछोड़ धऽ ओ दूनू बालक सान्ध्यकालिक अखबार बेचि रहल छल– पढ़ू नव समाचार, सनसनी खेज समाचार। देखू मोदीक शान कऽ देलक कमाल। लाखपति भऽ गेल खाक पति। हजरिया पचसैया सभ रद्द। लिअ लिअ इवनिंग टाइम (समाचार) शिवलोचनकें आश्चर्य भऽ गेलै। उत्सुकता

जगलै आखिर ई दूनू बालक किएक एतेक परिश्रम कऽ रहल अछि ? ओ ओहि पटना मोड़ पर रूकल रहल । राति 11 बजे जहन बसक आवाजाही कम भेलै तँ ओहि दूनू बालक केँ बजबओलकैक आ पूछि बैसल– तोहर दूनूक की नाम छह ? उत्तर भेटलै– रामू आ श्यामू । एतेक दिन–राति कमाइ छह, एतेक पैसा लऽ केँ की करबेँ ? रामू जेठ छलै आ श्यामू छोट । रामू किछु जबाव नहि देलकै चुप्प भऽ गेल रहए, श्यामू सेहो चुप्प । ओकर गुम्मी देखि शिवलोचनकेँ पुनः बेशी जिज्ञासा जागल । पूछि बैसल माए बाबूजी छथुन्ह । ई प्रश्न सूनि दुहूक आँखि नोराए गेल रहए । से शिवलोचन अनुभव कएलक । बूझि गेल जे ई दूनू भाइकेँ माए बाप नहि जीबैत छैक । अनाथ अछि । शिवलोचनकेँ ओकरा प्रति सहानुभूति जागि गेल रहए । ओकर बेचबाक कलासँ तँ परिचित भए गेल रहए से पूछि बैसल– की हमरा संगे दिल्ली जेबेँ । रामू कहि उठल हम दिल्ली नहि मूम्बइ जाएब । अखन हमरसभक स्थिति एहेन नहि भेल अछि मूम्बइ जेबाक । अखबारमे सिनेतारिका कलाकारकेँ प्रत्यक्ष देखबाक रामूक मोनमे आकांक्षा बनल छलैक । राति देर भऽ गेलै । रामू श्यामू शिवलोचनसँ छुट्टी लए शहरक सड़क पर निकलि गेल रहए । प्रायः सड़कक कोनो फूटपाथ पर राति बितेबाक लेल । शिवलोचन सेहो होटल वापिस भऽ गेल । मुजफ्फरपुरमे शिवलोचनकेँ एक सप्ताहक वास मे ओ दूनू बालक नियत स्थल पर भेट जाइ । शिवलोचनकेँ घनिष्टता भऽ गेल रहए रामू आ श्यामू सँ । रामू श्यामू सेहो साहेब–साहेब कहि ओकर नजदीकमे आबि जाइ । से रवि दिन रहैक । शिवलोचन कारसँ निकलि पड़ल रहए पटनाक लेल । पटना मोड़ पर रामू आ श्यामू सेहो बस पकड़ैक हेतु उपस्थित रहए । शिवलोचनक नजरि पड़लै । ओ ड्राइवरकेँ संकेत देलकैक कार रोकबाक आ रामू–श्यामूसँ पूछि बैसल– कतए जेबें । उत्तर भेटलै पटना । किएक ? गाम जेबाक अछि भेंट करबाक लेल । शिवलोचन रामू आ श्यामूकेँ कारमे बैसा लेलक । पटना जंक्शन पहुँचि शिवलोचन पूछि बैसल कतए घर छौक ? उत्तर भेटलै दानापुर । शिवलोचनकेँ ओहि दिन पटनामे छुट्टी बितेबाक रहै । खाली समय रहैक । से रामू आ श्यामू केँ घर पहुँचेबाक निर्णय भेलैक । रामू आ श्यामूक रहस्यपूर्ण जिनगीसँ अवगत होएबाक सेहो मोनमे इच्छा जागि गेल रहै । जखनहि कार एरोड्रम पार कए आगू बढ़ल तँ एकटा गेट लऽग रामू शिवलोचनकेँ कार रोकबाक संकेत देलकै । रामू आ श्यामू झटसँ कार सँ उतरि दौड़ि गेल गेटक भीतर । शिवलोचन देखलक गेट पर लिखल छैक 'महावीर कैन्सर आरोग्य संस्थान' । किछु देर ओतए विलमि गेल । मोनमे भेलए भऽ सकैछ रामू आ श्यामूक कोनो सम्बन्धी एहि अस्पतालमे काज करैत होइ । पुनः कैकटा विचार मोनमे उठलै । रामू आ श्यामूक जिनगीकेँ आओर विशेष जनवाक भाव उठलैक आ ओ गेटक भीतर अस्पतालक रिसेप्सन पर पहुँचि गेल । रिसेप्सनिस्ट केँ पूछि बैसल जे दूनू छोट बालक कोमहर गेल अछि । रिसेप्सनिस्ट रामू आ श्यामू सँ पहनेसँ परिचित छल । से ओ एकटा नर्सकेँ संग लगा देलकै । शिवलोचन नर्सक संग चलि पड़ल । नर्स एकटा शीशाक घेरल रूम लऽग रूकि गेलै । शिवलोचन शीशासँ देखैत अछि जे एकटा कन्या एकटा बेड पर छैक । रामू–श्यामू ओकर नजदीकमे बैसि ओहि कन्या सँ गप्प सप्पमे लागल अछि । तीनूक मूँह सँ खुशीक फव्वारा फुटि रहल छैक । तीनूक चेहरा मिलैत जुलैत छैक । शिवलोचनकेँ बूझाएमे आबि गेल रहै जे ओ कन्या रामू आ श्यामूक जेठ बहिन छैक । नर्ससँ पता लगलै जे आइ तीन सालसँ एहि कैन्सर अस्पतालमे ओकर इलाज चलै छैक । समय–समय पर कैमोथिरेपी देवए पड़ै छैक । ओकर सहारा छैक छोट दूनू भाइ रामू–श्यामू काज कऽ अस्पतालक चिकित्सा व्यय वहन करै छैक । प्रत्येक रविकेँ ओ दूनू भाइ अग्रिम सप्ताहक इलाजक खर्चा जमा करबा लेल आएल करै छैक ।

शिवलोचन आश्चर्यचकित भऽ गेल रहए । भीतरमे उठैत भावक आँधीमे ओ अस्पतालसँ निकलि पड़ल । आँखि नोराए गेल रहए । कण्ठ रूद्ध भ' गेल रहए । ड्राइवर केँ इशारा देलकै चलबाक । आँखिक अन्हरजाली उतरि गेल रहैक । डेग बढ़ा देने रहै गाम परतापुर दिस । अशक्त वृद्ध माए बापक सहाराक लाठी बनबाक लेल ।

(अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद् एवम् किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, उजानक तत्वावधानमे आयोजित 'दिवा कथा गोष्ठी' दिनांक 16.6.2017 केँ पाठ कएल गेल कथा ।)

कनकपुर, उजान

गीतक फुलबाड़ी

–भीमनाथ झा

सैंतीसवर्ष कम नहि होइत छैक । 1972मे मित्रवर मधुकरजीक महाकाव्य' 'चैतन्य चंद्रायण' अयलनि, तँ तहिया सभ ओकरा हलसिकेँ लेलक । आवेस सँ पढ़लक, आ कविवरकेँ सराहलक । ई नहि जे ओही महाकाव्यक कारणेँ ई साहित्य संसार मे चिन्हारे भेलाह । ताहि सँ पहिनहुँ सँ सुमधुर गीतकारक रूप मे लोक हिनका जनैत छलन्हि । मैथिलीक महान स्तम्भ किरणजीक सँग सभा समारोह मे रहरहाँ देखल जाइत छलाह तथा आह्लाद पूर्वक सुनल जाइत छलाह । स्वयं किरणजी हिनक मधुर स्वरक, ललित पदक, मैथिलीक प्रति अनुरागक, वरेण्य साहित्यकारक प्रति सम्मान भावक खुलिकऽ प्रशंसा करथि । किरणजी सरिसब पंचकोशी मे विद्यापति पर्वक आन्दोलन चलाय परिसरक अनेक साहित्यकार केँ तैयार कऽ जगजीयार कएलनि । मधुकरजी ताही मे एक छलाह। ईहो अनेक वर्ष धरि किरणजीक टोलीक अंग भेल गामे-गाम घूमि-घूमि जन-जन मे मैथिलीक अलख जगेबाक काज केलनि । ताहि दिन गीतक एक पुस्तिको छपौलनि। चललनि । पुनि 1972 मे जखन महाकाव्य एलनि तँ सुकविक रूपमे मैथिली साहित्यक इतिहास मे अपन स्थान सुरक्षित कराए लेलनि ।

साहित्येतिहास मे तँ हिनक स्थान सुरक्षित भऽ गेलनि मुदा किछु तँ प्रतिकूल परिस्थितिक कारणेँ, किछु जीविकाक हेतु अपन समाज सँ हटि जयवाक कारणेँ सभा समारोह सँ ई कटि गेलाह । पीढ़ी बदलि गेलैक । नवका पीढ़ी जे इतिहास पढ़लक से तँ हिनका जनलक, मुदा अधिसंख्य जे पत्र पत्रिका उनटबइत अछि, अथवा सभा समारोह मे काव्य पाठ सुनैत अछि तकरा लेल ई कने अनुभुआर सन लागि सकैत छथि। मुदा, एहि बीच ई बड़का काज कयलनि । एम.के.एस.कॉलेज, त्रिमुहान चन्दौना मे मैथिलीक यशस्वी प्राध्यापक भऽ गेलाह, से हिनको हेतु सौभाग्य, आ ओहि जनपदक हेतु सेहो सौभाग्य, ओ क्षेत्र मिथिलाक रीढ़ रहितो राजनीतिक मोह जालक कारणेँ मुख्य धारा मे एबा सँ बचैत रहल । मधुकरजी ओतय रहि शत-सहस्र छात्र गण केँ वस्तुस्थिति सँ अबगत कराय मैथिली दिस झुकाय अपन साहित्यक, प्रति ममत्व जगेवाक चेष्टा कयलनि । एम्हर ई भने कने अनुभुआर जे भऽ गेल होथि ओम्हर गुरुवर बनि मैथिली प्रचारक गुरुतर काज केलनि । काव्य साधना तँ बीचो मे चलिते रहलनि, मुदा अवकाश प्राप्त जीवन मे फेर पहिलुका जोश जागि गेलनि अछि आ काव्य प्रकाशनक लगन लागि गेलनि अछि । ओकरे सुफल थीक ई काव्यसंग्रह ।

'अजगुत-अनटोटल- ई नाम थिकनि काव्यसंग्रहक । भऽ सकैछ, किछु गोटय केँ ई नाम अजगुत-अनटोटल लागय । मुदा कवि केँ किएक यैह नाम प्रिय भेलनि ? किछु तँ कारण अवश्य होयत। एहि नामक एक कवितो अछि । भऽ सकैछ कवि केँ ओ सर्वाधिक प्रिय होइन । भऽ सकैछ कवि विनयोक्ति मे ई नाम रखने होथि । मने हम तँ तेहन कवि छी नहि तखन जेहने तेहने अजगुत-अनटोटल जे भेल, से लऽकऽ प्रस्तुत भेल छी । किन्तु, महाकाव्यक रचयिताक एहन बात के मानत ? भऽ सकैछ कवि कें आब अपन समाज मे सभ किछु अजगुत-अनटोटल बुझाइत होइनि, तकरे ई काव्यमय अभिव्यक्ति हो । आबक जे पीढ़ी अछि, नवका पीढ़ी तकरा अपना सँ पहिलुक पीढ़ीक सभ बात अजगुत लगैत छैक, सभ व्यवहार अनटोटल लगैत छैक, इहो भऽ सकैछ जे ई कवि जेनरेशन गैप दिस इंगित करैत होथि ।

''मिथिला-मिहिर मे एहि नामक एक स्तम्भ छल, जाहि मे देश-विदेश मे ताहि समयक घटल विचित्र घटनाक रोचक सूचना छपैत छल । लेखक रहैत छलाह श्री हीरा (अर्थात् हंसराज) भऽ सकैछ मधुकर जी कें संग्रहक नाम रखैत काल ओ स्तम्भ मोन परि आयल होएनि । ई तँ लोको छथि ताही दिनुक । मिहिरक नियमित पाठक । कारण खाहे जे रहल हो, नाम धरि कवि रखलनि अछि टिपिकल । हमरा जौं पूछब तँ हम कनेमने उक्त सभ कारणक योगदान मानब एकर नामकरण मे । इएह एकर समीक्षो थिक । समीक्षक एही सभ विन्दु पर विवेचन विश्लेषण करताह तखनहिँ एकर यथार्थ मूल्याँकन भऽ सकत । हमरा एक दूटा बात खास कऽ ध्यान खिचलक अछि । पहिल तँ लोकोक्तिक पथार । एकटा तँ सम्पूर्ण कविते अछि लोकोक्तिमय ।

आनो कविता सभकें मैथिलीक सुच्चा लोकोक्तिक सौरभ गमगमा दैत अछि । संग्रहक सभटा वाग्धाराक सभटा लोकोक्तिकेँ जँ छाँटि ली तँ एक लघु लोकोक्तिक कोष तैयार भऽ जाएत । दोसर विषय थिक बाल-गीत नेना सबहक हेतु बड़ सरल, ललित, मधुर, आ प्रेरक उपदेशप्रद गीत अछि । से अनेक हमरा तँ बड़, मोहक लागल अछि । ई कहबाक प्रयोजन नहि जे देश-दशा कविक प्रेरणा रहलनि अछि । आ तकर चित्रण मूल उद्देश्य । तहिना कंठक कविकेँ गीतकाव्यक अपन शास्त्र होइत छैन्हि । काव्यक पिंगल प्रकरण सँ एक सीमे धरि परिचालित होइत छथि । जे हिनका पुर्बहुँ सँ जनैत-सुनैत रहलाह अछि से पूरे 37 वर्ष पर एहि अभिनव उपहार सँ अवश्य आह्लादित होयताह । नवयुवक लोकनि गीतक ओहन फुलबाड़ी मे भ्रमण करबाक आनन्द लेताह जाहि मे रंग-बिरंगक फूल-फुलाएल भेटतनि । ओ सभ स्वयं मधुकर बनि परागक रसपान लेल टूटि पड़ताह । आ मधुकरजी कात मे कतहु ठाढ़ भेल मुस्किआइत रहताह । ओहि मुस्की कें हमर अभिनन्दन ।

दरभंगा

रक्षाबन्धन, 5 अगस्त 2009

मधुकरजीक 'बाल-वाटिका'

–शिवशंकर 'श्रीनिवास'

श्री रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर' मैथिलीक ख्यात रचनाकार छथि। सतत् रचना करैत रहब हिनक जीवन धर्म भ' गेल छनि। गीत, कविता, महाकाव्य, नाटक पद्यमय आ गद्यमे सेहो ई रचना कयलनि । जाहि विभिन्न विधामे हिनक कतेको पोथी प्रकाशित-अप्रकाशित छनि ।

मधुकर जीक जिनगी अपन माँटि-पानि मे रमल छनि आ ओहि माँटि-पानिक सौरभ कें ई अपन विभिन्न विधाक स्वरूपमे स्वर दैत छथि।

हम हिनक कतेको पोथी पढ़लहुँ मुदा ई गीतकार रूप मे हमर बेसी आदरणीय रहलाहे। ओना गद्यमे रचित "गाम-गाथा' कइएक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण कृति अछि । एकटा अनियोजित कथाक माध्यमे ई अपन परिसर आ विशेषत: अपन गामक अलौकिक ओ लौकिक व्यक्तित्व ओ घटनाक व्याजें जाहि रूपें वर्णन कएलनि अछि ओ सम्पूर्ण मिथिलाक सांस्कृतिक ओ सामाजिक ताना-बाना ओ मनोदशाक व्याख्या करैत अछि जे अनुपम ओ अनेक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि । हिनक ओहि कृति कें कोनो विधामे राखब कठिन अछि, तखन ओकरा 'गद्य गाथा'क संज्ञा देल जा सकैत अछि। रचनाकार स्वयं एकरा मात्र गाम-गाथा कहलनि अछि। जे से हम ओहि रचनाकें महत्वपूर्ण रूपमे आदर करैत छी ।

सम्प्रति हुनक 'बाल-वाटिका' हमरा आगू अछि । जकरा ओ गीतक संज्ञा देलनि । हिनक ई बच्चा लेल लिखल गीतक संग्रह कोनो एहन गीतक संग्रह नहि थिक जकरा कोनो गीत एक खास भावके केन्द्रमे राखि रचल हो । एक गीत मे अनेक भाव अछि किन्तु विशेषता ई अछि प्रत्येक गीत प्रत्येक पाँतिक अन्तमे मुख्य पाँती सँ संयोगल अछि ।

मिथिला गाम घरमे अनेक एहन रोचक ओ उपदेशक पाँती सभ छिड़ियालय अछि जकर रचनाकार के छलाह ? से आइ कहब कठिन अछि, किन्तु ओ पाँती सभ धिया-पूताकें गयबामे एक दिस जँ आनन्द दैत अछि त' दोसर दिस जीवनक बहुत बात कहैत अछि ।

आइ मिथिलाक गाम-घर बदलि गेल अछि । ओना बदलि त' शहर-नगर आ देश सेहो गेल अछि । आजुक पटना-दिल्ली पहिलुक पाटलिपुत्र हस्तिनापुर नहि थिक। मिथिलामे दरभंगा सहरसा, भागलपुर वा समस्तीपुर पहिने सन नहि अछि तँ मिथिलाक गाम पहिने जकाँ कोना रहत? जकर धीया-पूता दिनादिन परदेश बसि रहलैए। जेहो लोक गाममे रहैए ओकर जी परदेशे टाँगल छै, ओहि भूमिक की हाल हेतै से सहजहि बूझल जा सकैत अछि ।

पहिने कलम-गाछी छल । आम ओगरल जाइ छल । धीया-पूता सँ ल' क' चेतन तक आमक मासमे कलम-गाछी ओगरने रहैत छलाह। ओहिमे आम ओगरैत बहुतो तरहक मनोरंजन छलै। पोखरि एखनो अछि, किन्तु उपेक्षित स्थिति मे लोक माछ पोसैत अछि । आब पोखरि मे केओ संयोगे नहाइत अछि तखन जे जल-क्रीड़ा होइत छल ओ कोना हएत ? धीया-पूता गाम घरमे मनोरंजन लेल करिया-झुमरि खेलाइत छल झिझिर कोना खेलाइत छल । माने गाममे खेती-वारी छलै ओहि कृषि-जीवन मे बच्चा सँ ल' क' चेतन तकक हेतु विभिन्न मनोरंजन छलै आ मनोरंजन मे खेल संग छलै गीतक आखर। ओ गीत आखर सभ जीवनक राग-अनुरागक बात करैत लोक-मनोदशाक वर्णन करैत लोक-वेद कें आनन्दित करैत छल । कृषि-जीवनक क्षरनक बाद ओहि सभ गीतक पाँती लोक-मुख सँ विला रहल ए ।

मधुकरजी ओहि सभ दुर्लभ पाँती सभकें एक-एक कें उठा ओकरा वर्त्तमान स्वरूप दऽ द' गीत सभ रचलनि अछि। हिनक ई कार्य जँ एक दिस ओहि दुर्लभ गीत के संरक्षित करैत अछि तँ दोसर दिस वर्तमान स्थिति कें सेहो स्पष्ट करबामे समर्थ होइत अछि। एहि दृष्टिएँ वाल-वाटिका हिनक गीत संग्रह बहुत महत्वपूर्ण मानल जयबाक चाही।

आइ मिथिलाक जीवन बदलि गेल अछि, लगैत अछि जे भविष्यमे जँ मिथिला मे उत्पादन (Production) कार्य शुरू नहि भेल तँ एहि ठामक लोक जँ एहिना पराइत रहल तँ ई पावन मिथिला एक दिन बूढ़ लोकक वस्तीक देश भ' क' रहि जायत आ तकर वादक कल्पना करब भयावह अछि । अनेक मैथिली साहित्यिक चिन्तन एहि भयावह स्थितिक निवारण हेतु अपन रचना के आगू कयलनि अछि, किन्तु राजनीतिक चिन्तक एहि दिश ध्यानो नहि दैत छथि, हुनका लोकनिकें अपन माँटिक इतिहास तँ बुझल छनि जकर ओ दंभे टा करैत छथि, कारण जकरा इतिहास बुझल रहतै ओकरामे वर्तमानो के बुझबाकें चेष्टा रहतै किन्तु असलमे एहिठाम जे राजनीतिक चिन्तक छथि हुनका अपन माँटिक चिन्ता छनिहें नहि हुनका चिन्ता छनि मात्र अपन आँगा बढ़बाक । जे राजनीति क' रहलाहे हुनक उद्देश्य छनि मात्र कुर्सी पयबाक । एहना स्थितिमे समाज के के जगाओत ? किछु साहित्यकार लोकनि किछु काज क' रहलाहे किन्तु प्रश्न अछि की समाज जागि रहलए ? एखन मात्र प्रश्न भेटैत अछि ।

मधुकरजी क बाल-गीतक दुर्लभ संग्रह तखन आबि रहल ए जखनकि हिनक संरचना गीत गयबाक मनस्थिति मे एहि ठाम बच्चा नहि अछि, किन्तु एहि ठामक जीवनक खोज जखन केओ करऽ लागत त' ओकरा हेतु हिनक ई बाल-गीत बहुत सहायक होयतैक, महत्वपूर्ण लगतैक ।

(बाल वाटिकाक भूमिकासँ संकलित)

दिनांक-13.10.2017 लोहना (मधुबनी)

मधुकरजीक ग्राम गाथा

–डॉ. सतीरमण झा

'ग्राम गाथा' अपनेक समक्ष उपस्थित करैत गौरवान्वित छी । ई उपाख्यान 5 जनवरी 1988 ई. सँ 2015 ई. तक महाकवि डा० रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर' जीक द्वारा भवानीपुर नरूआर गामक सम्बन्धमे जनश्रुति, किम्वदन्ती, ओ विशिष्ट व्यक्तिक मुँहसँ सुनल विभिन्न गाथाक माध्यमे शोधपरक विलक्षण कृति अछि ।

आदरणीय मधुकरजी मूलत: जन्मजात कवि छथि । स्वयं कहने छथि– 'हम जखन तेसर वर्गमे पढ़ैत छलहुँ... 'से गाम हमर' शीर्षक स्वरचित कविता मास्टर साहेब केँ सुनौलहुँ । 'महाकविक तीस–पैतीस काव्यक सृजनकर्त्ताक प्रथम गद्य विधाक ई प्रथम पुष्प अछि ई ग्राम गाथा। महाकविक दृष्टि सम्पन्न रचनाकार केँ किछु परिस्थितिवश गद्य लेखन हेतु जखन विशेष आग्रह कएल गेल तँ स्वत: एक नव विषय–वस्तुकेँ एकत्र कए कथाक माध्यमे साहित्यिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, आध्यात्मिक, लोकाचार, रीति–रिवाज, फल–फूल, पोखरि–झॉंखरि, मेला–ठेला, जड़ी–बूटी, खेती–बारी, वैवाहिक सभाक स्वरूप, पञ्जी–व्यवस्था, स्वतन्त्रता आन्दोलन, सिद्ध पुरुष, निर्धन–धनाढ्य, पाण्डित्य, योग–टोन आदि नरूआर गामक परिसरक पृष्ठिभूमिमे साङ्गोपाङ्ग वर्णन एहि अनुपम साहित्यिक कृतिमे प्रस्तुत कएलन्हि ।

प्रस्तुत ग्राम गाथाक मुख्य पात्र निखिल नामक बंगालीक पत्रकारिताक क्रममे नरूआरक भ्रमण ओ विभिन्न पात्र द्वारा डेग–डेग पर जिज्ञासावश समाजसँ विलुप्त होइत सांस्कृतिक लोकगीत, परम्परागत उपासनाक स्वरूप, सामाजिक रीति–रिवाज आदि जेना–मुसहर जातिक धार्मिक अनुष्ठान, कोदारि प्रतियोगिता, कमलाक भाव गीत, जट्टा जट्टीन, विपटाक विपटैइ, हुड़ाहुड़ी, दंगल, शास्त्रार्थ, प्रारम्भिक नाट्यमञ्चक स्वरूप चित्रणक संग–संग मिथिलाक प्राचीन सूर्य मन्दिर कमलादित्य स्थान, बलिराजगढ़ आ डिहवार बाबा रमल सिंह, माँ भवानी, कुमरि पोखरि, कारजी पोखरि, राजक फुलवारी, विदेश्वरक मेला, कलाकार आदिक रमणीय वर्णन सहजहि सहृदयकेँ चमत्कृत करैत अछि ।

एतवा मानय पड़त जे ग्रामीण समाजक निम्नतम वर्गक, जेना धान कटलाक बाद खेतमे मूसक विहरिके कोरिके धान निकालिके जीविका चलौनहार बाल–बच्चा, मधुमाछी छत्तासँ मधु निकालनिहार वर्ग, सारूख, कन्द–मूल निकालि बाल–बच्चाक प्राण रक्षाक लेल प्रयासरत महिला–वर्ग आदिक मनोदशाके पकड़बाक हिनकामे अपूर्व शक्ति अछि । ई बीच–बीचमे ग्रामाञ्चलीय लोकभाषाक पुट देने छथि, जाहिसँ प्रखर यथार्थताक रंग विशेष प्रगाढ़ भए गेल अछि । जाहिसँ समाजक निर्धनतम वर्गक सामान्य नर–नारीक जीवनक छोटसँ छोट आ पैघ सँ पैघ गप्पकेँ प्रशंसनीय रीतिएँ उजागर करबामे विशेष समर्थ बुझना जाइत छथि । एहि वर्गक आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन–स्तर समुन्नत करबाक हेतु सामाजिक परिवर्त्तनक प्रबल समर्थक दृष्टिगत भेल छथि ।

जनश्रुतिक आधार पर किछु व्यक्तिक नाम ओ समयक अन्तर बहुत भए गेल अछि । यथा प्रेत विवाह पद्धतिकारक प्रसङ्गमे । व आ ब' क प्रयोग उच्चारणजन्य ग्रामाञ्चलीय अछि । कथाक विस्तारक क्रममे कतहु–कतहु आडम्बरपूर्ण सभ प्रकारक विवरण दैत गप्प गढ़ैत जयवामे कखनहु–कखनहु पाठककेँ थकावए अकछावय लगैत छथि । की फेर शब्दजाल समेटवाक प्रयास करैत छथि, जाहिसँ कथाक ललित प्रवाह पाठककेँ उत्सुकता बढ़ा दैत अछि ।

एहि उपाख्यानमे रचनाकारक कवित्व ठाम ठाम कविता, गीत, वार्त्ताक क्रममे व्यक्तित्व के निखार कऽ देने अछि । ई मूलत: सरस साहित्यिक कृति अछि किन्तु विषय वस्तुक संकलन पूर्णत: ऐतिहासिक शोधपरक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक, प्राकृतिक, मनोवैज्ञानिक इतिवृत्तिक समावेशक कारणे शोधार्थी छात्रक संग जिज्ञासु सुधीजनक हेतु विशेष उपयोगी निश्चय होयत ।

प्रस्तुत ग्रन्थक प्रकाशन हेतु संस्थानक कोषमे आर्थिक सहयोग लेल श्री केशव किशोर मिश्र ओ डा० कुमरकान्त पाठक जीक प्रति हार्दिक आभार । संगहि प्रो० ईशनाथ झा, प्रो० केदारनाथ झा, प्रो० सुरेश पासवानक संग प्रिंटवेल प्रेसक 'संजूजी' केँ यथोचित सहयोग लेल धन्यवाद । किमधिकम् । समयाभाव ओ मधुकर जीक स्वास्थ्य, प्रेसक व्यस्तताक कारणे जँ कोनो त्रुटि रहि गेल हो तँ सुधीपाठक क्षमा करथि ।

(ग्राम गाथाक सम्पादकीय 'दू आखर'सँ संकलित)

जानकी नवमी/मैथिली दिवस गंगौली, उजान, दरभंगा
15.5.2015

मधुकरजीक ‘फरफराइत इतिहासक पन्ना पर’

–केदार नाथ झा

किरण स्मृति दिवसक एहि अवसर पर संस्थानक संस्थापक सह अध्यक्ष प्रो. रामचन्द्र मिश्र मधुकर जीक ई पुस्तक ‘**फरफराइत इतिहासक पन्ना पर**’ अपने सभक समक्ष प्रस्तुत करैत हर्ष व्यक्त करी आ की कानी से नै फुरा रहल अछि । हर्ष अई दुआरे जे समय पर प्रकाशित भेल, कष्टक विषय ई जे लेखक उपस्थित होइ के स्थित मे नहि छथि । तैं हुनका लेल एक बेर संबेत रूपसँ प्रार्थना करैत छियनि ओ शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करथि ।

छपेनाई मधुकर जीक लेल कोनो नव बात नहि, छपैत रहला ओ मैट्रिक परीक्षाक पूर्वेसँ आ 63 सँ 64 अबैत-अबैत ‘सुभग श्रृंगार निरखि धरती के पुलकित जन गण प्राण छै’ ‘कदम जोड़ी फूल’ संग ओ स्थापित कवि आ गीतकार के रूप मे सुयश प्राप्त कऽ लेलनि । जेहने स्वर तेहने स्वरूप आ तेहने ललितगर पद्य ।

शिक्षाक बाद पेटक समस्या अबैत छै से हिनको एलनि मुदा ओहि क्रममे ई वैष्णव सम्प्रदाय के स्वीकारि क’ 1972 मे विदेश्वर यज्ञक आयोजन कयलनि आ चैतन्य महाप्रभुक वन्दना करैत जे काव्यक रचना कयलनि से ‘चैतन्य चन्द्रायण’ नामसँ महाकाव्यक रूपमे प्रकाशन भेलनि तहिया ई मात्र 28 सँ 29 वर्षक छलाह आ मैथिलीमे अद्यपर्यंत हमरा जनैत सबसँ युवा कविक महाकाव्य ई छल आ अछि । हम ओहि काव्यक प्रसंग किछु नै कहब ।

2005 मे अवकाश ग्रहणक संग दू-दू बेर कर्क रोग (कैंसर)सँ ग्रसित भेलाह मुदा ‘अजगुत अनटोटल सन कविता संग्रह’क संग प्रस्तुत भेलाह बहुतो रास हिनकर रचना प्रकाशित छनि हिनकर रचनाक प्रसंग विद्वान लोकनि लिखने छथि हमरा एतऽ एतबा कहक अछि जे ग्राम गाथा लिखि ई एकटा नव विधाक जन्म देलनि । आइ हिनकर ई पुस्तक ‘**फरफराइत इतिहासक पन्ना पर**’ प्रकाशित भऽ रहल अछि। कविवर मधुकर जीक रचित प्रसिद्ध नाटक ‘वीर धनञ्जय’ लोकप्रिय अछि । एहि रूपेँ मधुकर जी कविता, नाटक आ गद्य तीनू साहित्यिक विधामे अपन उपस्थित द’ रहल छथि। मुदा एतेधरि हम कहब ई मूलतः छथि कवि आ से आशु कवि जकर प्रतीक छी हिनक रचना ‘कालजयी कवित्रयी’ सन पर्यायबन्ध काव्य । एहि काव्यकेँ वस्तुतः हिनक अद्‌भुत जन्मजात प्रतिभाक द्योतक मानल जा सकैछ कारण जे तीन मूर्धन्य मैथिलीक कवि किरण, मधुप आ सुमन पर शताधिक कविता हुनकर सभक व्यक्तित्व पर लिखब एक वस्तुतः आश्चर्यजनक कार्य थीक ।

मधुकर जीक काव्यमे सरस, सरल, सुमधुर शैलीक परिपालन भेल अछि जे हिनक साहित्यकेँ पाठकक लेल बोधगम्य एवं रूचिकर बनबैत अछि । संगहि मैथिलीक देशज शब्दक चयन एवं तकर तुकबंदीक संग निर्वहन हिनक काव्यक विलक्षण विशेषता प्रदर्शित करैत अछि । वस्तुतः ई कहल जा सकैत अछि जे मधुकर जीक काव्य शब्द चयनक आ तुकबंदीक लेल शब्दकोष मानल जा सकैछ ।

प्रस्तुत पुस्तक ‘**फरफराइत इतिहासक पन्ना पर**’ कविवर मधुकरजीक अमर नवीनकृति थिक जाहिमे जेना मधुकर बागक सुगन्धमय मनोहारी पुष्प सभक परागक सेँचन कए पुष्टकारी मधुकेँ लोकक उपभोग योग्य बनबैछ तहिना कवि श्री रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’ मैथिली साहित्यक मूर्धन्य कवि एवं साहित्यकार लोकनिक व्यक्तित्व एवं कृतित्वकेँ सरल सरस एवं मनोहारी शैलीमे प्रस्तुत कए जनसामान्य पाठकक लेल ग्राह्य बनाओल अछि । उदाहरणस्वरूप एहि पुस्तकमे कवि कोकिल विद्यापतिक काव्यमे सूक्तिपूर्ण लोक शिक्षा, कवीश्वर चन्दा झा, मुंशी रघुनन्दन दास, सुमनजी, यात्रीजी, मधुपजी, किरणजी, आरसी प्रसाद, किसुनजी, मोहनजी, राजकमलजी, आदि सुविख्यात कवि सभक साहित्यिक परिचय देने छथि । एहि सभ कविक व्यक्तित्व एवं कवित्वक चित्रण मधुकरजी आगमन एवं निगमन दुहू तर्क पद्धतिक अनुसरण कए कयलनि अछि। एहि कविसभक कवित्वक विलक्षणताक विभिन्न स्वरूपक वर्णन अत्यन्त प्रभावकारी रूपेँ प्रस्तुत कयने छथि मधुकर जी ।

एहि पोथीक खण्ड ‘ख’ मे संकलित मिथिला, मैथिल, मैथिलीक संक्षिप्त परिचय, मैथिल ब्राह्मणक पंजीप्रबन्ध, मैथिली बालगीत, प्राचीन मिथिलाक महान लोक विभूति एवं महान दार्शनिक वैभव गौरवपूर्ण मिथिलाक इतिहासक दर्शन करबैत अछि ।

संक्षेपमे ई मानल जा सकैछ जे मधुकर जीक ई कृति मैथिली साहित्य प्रेमी, जनसामान्य एवं अध्येता छात्र आ शोधकर्त्ताक लेल उपादेय एक अनुपम कृति थीक ।

एहि पुस्तकमे कोनो भरिगर भूमिका नहि देल गेल अछि । प्रकाशकक रूपमे हम ई भूमिका पाठक, समीक्षक, समालोचक आ इतिहासकार लोकनि लेल छोड़ि रहल छियनि । कोनो भरिगर भूमिका रहलाक बाद पाठकक दृष्टि बनहा जाइत छनि । ई हमर मत अछि । प्रकाशनक आ ओकरा शीघ्र प्रस्तुत करबाक दायित्व एहि लेल छल जे जहिया ई संस्थान प्रकाशन यात्रा प्रारंभ कयलक किरण जी अंतिम छनक नजदीकमे छलाह । मुदा ओ अंत तक किछु सोचैत रहला आ किछु करैक इच्छा रखलनि । वर्षो अस्वस्थ रहला । आइ मधुकर जी कैंसर सन बीमारी सँ 2005 सँ लरि रहला अछि आ ईश्वरसँ हुनकर स्वास्थ्य लाभक प्रार्थना करैत हम ई कहऽ चाहब जे एहि पन्द्रह वर्षक अंतरालमे निरंतर ओ लिखैत रहला अछि, ई प्रेरणाक विषय थीक । चिकित्सा के महत्व नै द' माँ मैथिलीक सेवामे लगातार रहलाह अछि आ संस्थानक प्रगतिक लेल सदिखन चिंतित रहैत छथि । हिनक प्रसंगमे शिवशंकर श्री निवास लिखैत छथि जे 'रास्ता ई अपन बनौलनि' तऽ हम कहब रास्ता बनाके चलनिहार लोक सेहो कम होइत अछि, जाहिमेसँ मधुकर जी छथि । बेसी नहि हुनकर समर्पण माँ मैथिलीक प्रति, संस्थानक प्रति संलग्नता आ जीवनक लेल हुनक संघर्ष केँ अभिनंदन करैत ई पुस्तक आइ माँ मैथिलीक खोईंछमे राखि रहल छियनि ।

पुनः एक बेर समस्त मधुकर स्नेही आ मैथिली प्रेमी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित एहि लेल कऽ रहल छियनि जे धन जन मन सँ ओ लोकनि एहि पुस्तकक प्रकाशनार्थ सहयोग प्रदान कयलनि ।

प्रकाशन मे डा० सुरेश पासवान आ संजूजी प्रिंटवेलक आ हुनकर सहयोगी अरुण जी आदि लोकनिक प्रति जँ आभार व्यक्त नै करब तँ कृतघ्नता होयत । ओ सब बन्दनीय छथि ।

(संकलित 'प्रकाशित पोथीक सम्पादकीय आमुखसँ)

मधुकर जीक 'निबन्ध सागर'

–लखनजी 'स्थितप्रज्ञ'

जहिना वनफूल लोकक दृष्टिसँ फराक वनप्रदेशकेँ अपन सुगंधिसँ सुवासित कए अपन स्तित्वकेँ सिद्ध करैछ, तहिना स्वनामधन्य कविवर डॉ. रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर' बालपनेसँ ऐकान्तिक साहित्य साधनामे लागल अद्यावधि अर्द्धशतकसँ उपरे अपन रचना सँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरैत अपन स्वतंत्र स्थान बनाओल अछि । एहिमे विविध विधामे लिखल हिनक कृति यथा कल्पतरु (गीत संग्रह), नवदल (लघुकाव्य संग्रह), चैतन्य चन्द्रायण (महाकाव्य), अजगुत अनटोटल (मैथिली काव्य संकलन), ग्राम गाथा (ग्रामांचलीय उपाख्यान), वीर धनञ्जय (गद्य-पद्य नाटक), बाल वाटिका (मैथिली बालगीत संग्रह), कालजयी कवित्रयी (पर्यायबन्ध काव्य), फरफराइत इतिहासक पन्ना पर (ऐतिहासिक निबंध) आदि ग्रन्थाकार रूपमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि । एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे मैथिली कविता आ निबंध प्रकाशित आ आकाशवाणीसँ काव्यपाठ आ वार्त्ता प्रसारित सेहो भेल छन्हि ।

हम हिनक जे किछु रचना पढ़ि सकलहुँ अछि ताहि सँ अनुभव कएल जे मधुकर जी कवित्व प्रतिभा सम्पन्न एक जन्मजात कवि छथि । कविता आ गीत हिनक लेखनीसँ निर्वाध नि:सृत होइत अछि आ तैँ साहित्यकार आ पाठकक मध्य ओ एक आशु कविक रूपमे परिगणित भेल छथि । उदाहरणस्वरूप हालहिमे हिनक प्रकाशित 'कालजयी कवित्रयी' उल्लेखनीय अछि, जाहिमे ओ मैथिली साहित्यक अमर मूर्धन्य कवि श्रद्धेय किरण, सुमन आ मधुप जीक व्यक्तित्व पर शताधिक कविता रचि सहज, सरल आ प्रवहमान शैलीमे अपन भाव पुष्पांजलि अर्पित कएल अछि । कोनो कविक व्यक्तित्व पर एतेक रास भावोद्रेक होयब एक आश्चर्यजनक असामान्य तथ्य थिक जे हिनक वैशिष्ठ्यक परिचय दैछ । हिनक दोसर महत्वपूर्ण रचना 'ग्राम गाथा' एक अभूतपूर्व नवप्रयोगक साहित्यिक कृति थिक जे ग्रामाँचलीय जीवनस्वरूपकेँ चलचित्र जकाँ दृश्य प्रदर्शित करबैत अछि आ तैँ सुविज्ञजन आ विद्वानलोकनिसँ अनेको प्रशंसोक्ति हिनका प्राप्त भेल छनि ।

प्रस्तुत पोथी हिनक ई **निबन्ध सागर** मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक वस्तुत: शब्दकोश (Encyclopaedia) मानल जा सकैत अछि । एहिमे मधुकर जी मिथिलाक सामाजिक लोक व्यवहार एवं दैनिक लोकाचार, संस्कार-विधि-व्यवहार आ उत्कृष्ट मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक विविध स्वरूपक वर्णनमे अपन लेखनीकेँ निवेशित कए एकहि ठाम पाठकक लेल सहज सरस आ मनोहारी शैलीमे मैथिली समाजमे प्रचलित लोक व्यवहार आ मान्यता केँ दिग्दर्शन कराओल अछि । कोनो अनजान व्यक्ति जे मैथिल समाजसँ परिचित होमय चाहैत छथि, ओ एहि पोथीकेँ पढ़ि सहजहि एतुका लोक व्यवहार आ संस्कृतिसँ परिचिते नहि सुविज्ञ भऽ सकैत छथि ।

मिथिला अपन सामाजिक, सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक उपलब्धि हेतु विश्वविख्यात रहल अछि । वस्तुत: मिथिलाक शिक्षा, साहित्य, भाषा, कला, धर्म, आचार-विचार, रीति-रिवाज, सामाजिक आ पारिवारिक व्यवस्था, भौगोलिक विलक्षणता आ परम्परागत खान-पान वस्त्राभूषणक प्रयोग आदि विषयमे सर्वोत्कृष्ट स्थान रखैत अछि । कहलो गेल अछि 'धर्मस्य निर्णयो ज्ञेय: मिथिलाया: व्यवहारत:' तकरा वस्तुत: सिद्ध करैत मधुकर जी एहि निबन्ध सागरमे उपर्युक्त मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहारकेँ सांगोपांग वर्णन कएल अछि । जेना कि मधुकर जी स्वयं एहि पोथीक उद्देश्यक प्रसंग उल्लेख कयने छथि– ''सम्प्रति आइ हम जाहि विषयपर ध्यानाकर्षित करबाक प्रयास कए रहल छी से हमरा जनैत सांस्कृतिक पक्षक लोकक लेल विचारणीय अवश्य अछि । एहि अर्थयुगमे लोक-व्यवहार, साहित्य, संगीत, कलाक प्रति जनसामान्यमे आकर्षण दिनानुदिन घटि रहल छन्हि तकरा पुन: लोकमध्य जगाएब आवश्यक अछि ।''

विवेच्य एहि पोथीमे संकलित विषयवस्तु मिथिला संस्कृतिक विस्तृत एवं विविध स्वरूपसँ परिचय करबैत अछि । संकलित विषयवस्तु पर जनसामान्यकेँ कमोवेश ज्ञान तँ रहिते छनि मुदा जाहि गहनता, सम्यकता एवं औचित्यताक संग मधुकर जी संदर्भित विषयक वर्णन एहि पोथीमे कयलनि अछि, से हुनक मिथिलाक संस्कृति एवं लोक व्यवहारक विस्तृत ज्ञान आ शोध पूर्ण अन्वेषणक परिचायक थिक । ई पोथी हुनक व्यक्तित्वमे मानित कवि, गीतकार, निबन्धकारक अतिरिक्त धर्मशास्त्री आ समाजशास्त्री उपाधिसँ सेहो विभूषित करैछ ।

एहि पोथीमे यथानाम तथाकार्य सिद्ध भेल अछि । वस्तुत: अपन नामक सार्थकता सिद्ध करैत ई पोथी **निबन्ध सागर** मिथिलाक लोकजीवनक सामाजिक सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक विविध जीवनधाराक ज्ञान-गंगा- सागरक संगम स्थल बनल अछि जाहिमे डुबकी लगाय पाठक लोकनि, विशेष क' मैथिल जन अपन समृद्धिमय परम्पराक ज्ञान फल पएबाक पूण्य-भागी बनि सकैत छथि । अस्तु ! मधुकर जी समस्त मिथिला मैथिलीकेँ एहि अभूतपूर्व कृतिसँ गौरवान्वित कयलनि अछि तदर्थ धन्यवाद आ आभार । ईश्वरसँ प्रार्थना जे ओ सम्प्रति कर्क रोगक कष्टसँ मुक्त भए पुन: माँ मैथिलीक सेवामे यथाशीघ्र अपन लेखनीकेँ प्रवाहित करबामे सक्षम होथि ।

(संकलित संपादकीय टिप्पणीसँ)

कनकपुर, 'उजान'

जे समाजसेवी जन जगमे, तकर नाम यश गाबऽदे

–हितनाथ झा

मैथिलीमे बालसाहित्य बहुत अधिक संख्यामे नहि, तँ विगत किछु वर्षसँ कम सेहो नहि लिखा रहल अछि । नि:संदेह कोनो भाषाक लेल ई समाचार सुखद अछि, विशेषत: मैथिलीक लेल अत्यधिके, कारण जाहि भाषामे एम.ए, पीएच.डी.डि.लिट्ट. आदि कऽ सकैत छी, भारतक सभसँ उच्चतम परीक्षा यू.पी.एस.सी.मे मैथिली राखि उत्तीर्ण भऽ सकैत छी, किन्तु अपन गाममे, सम्पूर्ण मिथिलामे, बौआ-बुच्चीकेँ प्रारंभिक वर्गमे नहि पढ़ा सकैत छी । जखन नेना स्कूल जाइत अछि, तँ ओकर बस्तामे अपन मातृभाषा मैथिलीक नहि, आन भाषाक पोथी रहैत छैक, ई कतेक दुखद प्रसंग अछि । ओकर निराकरण खंड-खंडमे बंटल राजनीतिक नेता एखन तक नहि ताकि सकलाह अछि । एहि प्रसंग कविवर सीताराम झाक निम्नलिखित पाँती मन पड़ि आयल-

"रटि आर ए टी रैट, रैट मने पढ़ि चूहा ।
चूहा एक पदार्थ थीक, मनमे ई कूहा ।।"

मुदा नेना लोकनिक लेल, भलें वर्गमे नहि हो, अभिभावकक ध्यान तँ अवश्य जाइत छनि, जे ओकर नेना अपन भाषा बाजय, पढ़य, लिखय । खिस्सा-पिहानीक रूपमे एहि दिस आकर्षित करबाक प्रयास तँ सभ दिनसँ होइत आयल अछि, दादा-दादी, नाना-नानी आदि द्वारा ।

आइ कोनो भाषा-भाषी एक क्षेत्रमे नहि रहैत अछि, रोजी-रोटीक खोजमे देश-विदेश ठौर भय गेलैक अछि । एकल परिवारक धारणा समाप्त जकाँ भय गेलैक अछि । ओहि स्थितिमे मातृभाषा बजबा आ सिखबाक लेल पोथीक प्रयोजन अति आवश्यक भय गेलैक अछि आ ओहि दिस मैथिलीक साहित्यकारक ध्यान आकृष्ट भेलनि अछि, से निश्चित रूपसँ प्रशंसनीय आ अनुकरणीय अछि ।

एहि प्रसंग हम एतय एतबे कहय चाहब जे एहि सदीमे बालसाहित्य संग्रहक संख्या करीब-करीब सय पूरय जा रहल अछि, से कथा, कविताक रूपमे बेसी । एही कड़ीमे एक महत्वपूर्ण बाल रचनाकारक नाम अछि रामचन्द्र मिश्र" मधुकर" । मधुकरजीक आन-आन विधाक संग्रह हमरा देखल छल, किन्तु बालगीत/कविता नहि ।

एक बेर हम फेसबुकपर, मैथिली मचान पेजमे पुरान रचनाकारक बालगीत/कविता नित्य पोस्ट करय लागल रही, जे विभिन्न भागसँ एहि प्रयासक प्रसंसा भेल । एही क्रममे एक दिन श्री केदार बाबूक आ मधुकरजीक फोन आयल । मधुकरजी अपन बालगीतक प्रसंग कहलनि, जे हमरहु अछि, से कियैक ने देलियैक अछि ? हम अपन अनभिज्ञता प्रकट केलियनि, जे हमरा नहि पढ़ल अछि । हमर व्हाट्सएप्प नम्बर मंगलनि आ करीब पचीस टा तुरत पठा देलनि । हम पढ़य लगलहुँ, से एक्कहि बैसकीमे । गीत सभ तँ आकर्षित करबे कयलक, एक गीतक शब्द विन्यास, बेर-बेर देखबा आ पढ़बाक लेल विवश कयलक आ सोचय लगलहुँ, नेना लोकनिकेँ एहन शब्द कतय भेटतैक, देखल जाय ओ शब्द सभ-

"लाबा भर-भर, तीसी चन-चन,
फोड़न फन-फन, तरुआ छन-छन ।
मुरही मुर-मुर, फुटहा कुर-कुर,
दही सुर-सुर, हुक्का गुर-गुर ।
छारा छन-छन, काड़ा झन-झन,
बगड़ा चूं-चूं, मुसबा कूँ-कूँ ।
पड़बा घुटकै, कोइली कुहकै,
मैना केँ-केँ, सूगा टें-टें ।।

एहिना एही गीतमे भेटत कौआक कुचरब, कोइलीक कुहकब, बाघक हुमरब, ढेकीक ढकढक, उखरिक धमधम, जाँतक घरर-घररक संग अन्तमे कहैत छथि-

"भरल अपार शब्दकेर सागर मधुकर कते कहब हम अर-दर ।"

से एहि पोथीक कोनो गीत उठाउ, अपने गीत गाउ वा नेनालोकनिसँ गबबाउ, सभमे रस भेटत, देशज शब्द भेटत, गाम-घरक आनन्द भेटत, पर्यावरणक सुगंध अभरत,

खेल-खेलमे ज्ञानक गप्प रहत, पशु-पक्षीक प्रकार सहित ओकर बोलीक नामकरण भेटत, बच्चा-बुचियाक फर्कपर कटाक्ष पढ़ब, बौआक तेल मालिश करैत कालक गीत-नादक आनन्द आयत, निनियाँ-मलार संग बौआकेँ खुअयबाक, चलयबाक, कीट-पतंगसँ बचयबाक आदि जतेक विविध प्रकारक उपयोग अभिभावक करैत छथि, कोनो ने कोनो रूपेँ पढ़बा वा सुनबामे आबिये जायत ।

आ से किताब पढ़लाक बाद लगैत अछि, ई दुनूक लेल लिखल गेल अछि, नेनोक लेल, नेनाक मम्मी पप्पाक लेल सेहो । जेना पूर्वमे कहलहूँ, एकल परिवार, विस्तृत क्षेत्रक आधारक कारणे, गाम-घरसँ सम्बन्ध छुटलाक कारणे, दुनूक लेल उपयोगी ।

उपर्युक्त कथनक किछु दृष्टान्त एहि पोथीसँ देबय चाहब, जे हिनक ई पोथी कियैक मैथिली बालगीतक महत्वपूर्ण कृतिमे एकरा राखल जैत-

"ठीक समयपर सूति रहब ते, प्रात रहत मन खन-खन ।
दौड़ब फुलवारीक घासपर, सरपट झटपट दन-दन ।।"

डानि-योगिन समाजक कोढ़ रूपमे जानल जाइत छल, नेना लोकनिकेँ ओकर नाम लय डेरायल जाइत छल, देखल जाय हिनकर बूझयबाक तरीका-

"फूसि हकौआँ, फूसि भकौआें, फूसिये भूत परेत,
फूसि डैन योगिन केर जादू, किछु बिगाड़ि नहि लेत ।"

बौआकेँ उपदेशात्मक किछु पाँती देखल जाय-

"गौले गीत ने कथमपि गाबी, धन बल केर नहि राखी दाबी ।।
"बनि के बीज भूमि अंकराउ, तरुवर बनि के फरू फूलाउ,
पर उपकार मन्त्र सिखि आउ, अटल अचल पर्वत बनि जाउ,
निर्झर बनि के बहिते जाउ, सरिता बनि के सिन्धु समाउ
सूर्य सँ समरसता सिखि आउ, अग्नि सँ तेज पलटाउ ।"
तुच्छ केर नहि करू उपेक्षा, ग्रहण करू लघुता केर शिक्षा,
जगमे जीवन कठिन परीक्षा, समय ने ककरो करय प्रतीक्षा,
काल गमायब तँ पछतायब, कतबो कानब करब किलोले..."
"कीर्ति करी तँ बाढ़य नाम, विद्या ज्ञानक कोनो ने दाम
पाप करी नामो बदनाम, दुष्कर्मीक विधाता बाम
गलती कय नहि लड़ी अड़ी ।।''

बच्चा-बुच्चीक विभेद समाजक अभिशाप अछि । ई बात कविक मनमे रहल हेतनि जे नेनेसँ यदि एहि असमानताक जानकारी हो, विरोध हो तँ आगाँक समाज अन्तर करबासँ बंचत, किछु पाँती एहि विषयपर सेहो देखल जाय-

नारी दुखी सृष्टि ओरे सँ, आँचर भिजल सदा नोरे सँ
अबहेला माएक कोरे सँ, सासुर बास तिलक तोड़े सँ
बेटा केँ मानय कुल तारण, बेटी आनक दुनियाँ गै ।
बेटी केर नहि हृदय दुखाउ, प्रेम सँ पोसि पढ़ाउ लिखाउ,
बेटा बेटी समता लाउ मानव बनि आदर्श देखाउ,
नारी पूज्या बेटी देवी, मधुकर रतन घरे घर सजाउ ।"

छिहत्तरि बालगीतक जखन ई संग्रह देखैत छी तँ लगैत अछि, मधुकरजीक एहि संग्रहक चयन एवं संपादन सुनियोजित ढंगसँ नहि भेल अछि । जेना-जेना लिखलनि, ओहिना क्रम लगैत अछि । जतेक लिखलनि, सभटाक समावेश अछि । छपाड़ आ वर्तनीमे कही, किछु व्यतिक्रम तँ अछिये । जँ क्रम सँ करीब 50-51 टा गीत रहैत, तँ निश्चित रुपसँ एहिसँ बेसी प्रभावोत्पादक होइत, किन्तु जँ एकरा एहि दृष्टिकोणसँ देखी जे मधुकरजी बहुत दिनसँ बीमारीक चपेटमे रहथि, कष्टमे रहथि, मुदा अपन कष्टसँ बेसी हुनका मैथिलीक अभाव खटकैत छलनि आ खटाखट सभ विधामे अभावपूर्ति करबामे अपनाकेँ झोंकि देने रहथि आ से अन्त-अन्त धरि । मधुकरजीक "बाल-वाटिका" एहि कड़ीक एक अनुपम उपहारक रूपमे स्वीकार तँ हमरा लोकनि कयलहुँ किन्तु रिटर्न गिफ्ट देबाक लेल कहाँ कनेको ध्यानमे आयल ?

हजारीबाग
मो०- 9430743070

जन्मान्तर सँ अर्जित गुण थिक संस्कार
वर्त्तमान जन्म मे उपार्जित गुण थिक अनुभव

कविजी-मधुकर जी

-डॉ. विद्यानन्द ठाकुर

कवि जी माने मधुकर जी । अपन परोपट्टामे मधुकर जी (रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर') कवियेजी नाम सँ जानल जाइत छलाह । पढ़ल-लिखल लोकसँ मूर्ख धरि हुनका कविजी सँ सम्बोधन करैत छलखिन्ह । 'कविजीक दोकान' (लोहना रोड) केँ के नहि जनैत छल ? प्रोफेसर हेबासँ पहिने बेरोजगारीक अवस्थामे जीवन-यापनक हेतु शुरू केने रहथि एकटा दोकान । परन्तु मधुकरजी मूलतः छलाह जन्मजात कवि । अंग्रेजीमे कहल गेल अछि 'A poet is born, not made.' मधुकर जी born poet छलाह । यद्यपि साहित्यक कोनो विधा (genre) हिनकासँ अछूत नहि अछि परन्तु from the very core of his heart he was a poet. मात्र तीस सालक अवस्थामे हिनक महाकाव्य 'श्री चैतन्य चन्द्रायण' प्रकाशित भेल । आश्चर्यक बात जे एखन तक एहि महाकाव्य पर साहित्य अकादेमी, दिल्ली वा मैथिली अकादमी, पटना हिनका पुरस्कृत नहि केलकन्हि अछि । 'कालजयी कवित्रयी (किरणजी, सुमनजी एवं मधुपजी) हिनक अनुपम कृति अछि । 'वीर धनंजय' वीर रसमे हिनक poetic play थिक । हिनक दर्जनों पुस्तक गद्य-पद्यमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि परन्तु हिनक गद्यो मे पद्य अछि ।

कविजीक जतेक कृति छन्हि तकर समीक्षा एकटा लेख (article)मे लिखब सम्भव नहि अछि । अनेको पुस्तक लिखल जा सकैछ । अंग्रेजी साहित्यमे कविक सम्बन्धमे जे किछु पढ़लहुँ से सबटा गुण (characteristics) हमरा मधुकरजीमे दृष्टिगोचर होइत अछि । Wordsworth क उक्ति छन्हि : Poetry is the spoontaneous overflow of powerful feelings.....यथार्थमे हिनक जे कोनो कविता पढ़लहुँ अछि- महाकाव्य 'श्रीचैतन्य चन्द्रायण' सँ लऽ केँ नेना-भुटका हेतु लिखल गेल 'बाल-वाटिका' धरिमे हिनक मोनक भावना स्वगत प्रस्फुटित भेल अछि । कतहु ई नहि बुझाइछ जे कोनो शब्द वा वाक्य हिनका गढ़ऽ पड़लन्हि अछि । चैतन्य महाप्रभुक सम्पूर्ण जीवन केँ धाराप्रवाह अपन कवित्व शक्ति सँ अद्‌भुत शैली में व्यक्त केने छथि । हिनक poetic diction पर तँ लगैछ जेना कोनो दैवी शक्तिक प्रभाव हो ।

Matthew Arnold क कथन छन्हि : Poetry is at the bottom, the criticism of life. मधुकरों जीक कविता में यत्र-तत्र जीवनक विभिन्न पहलूक सटीक एवं सारगर्भित चित्रण भेटैत अछि । Alexander Pope अपन 'Ode on Solitude'मे कहलन्हि अछि जे वएह मनुक्ख सुखी आ संतुष्ट अछि जे अपन सीमित संसाधन (means)क अनुरूप रहैत अछि :

Happy the man whose wish and care
A few paternal acres bound,
Content to breathe his native air
In his own ground.
Whose herds with milk, whose fields with bread,
Whose flocks supply him with attire,
Whose trees in summer yield him shade,
In winter fire...... etc.

एहने विचार मधुकरोजी केँ छन्हि अपन कविता 'हमरा नुआँ मे झल-मल बसात'मे :

हमरा ने चाही रेशमी पटोर, लहँगा चुनरी सिकिया कोर
बाँगक खेत लगायब जोर, टकुरी चरखा काटब डोर....
अन्न विदेशी केर नहि चाह, बाँस बरेली केर नहि डाह
अपना खेत जँ उपजय साग, मरुआ भतुआ बर निक लाग
एक साँझ रोटी एक साँझ भात ।...
छोट-छोट घर हो चौघारा, दुधगरि गाय बरद दुइ हारा
कोठा लय नहि लागल हीक, चिक्कन चुनमुन टटघर नीक
बरखा चुबय ने रौद बसात ।...

बेटीक प्रति मधुकर जी कतेक संवेदनशील छथि से हुनक कविता 'हमरा नहि मारू' मे करुण रस मे चित्रण कएल गेल अछि । हृदय विदीर्ण (Heart-rending) करएवाला भाव अछि । भ्रूण-हत्या (foeticide) पर एहि कविता मे कठोर आघात कएल गेल अछि :

हमरा एना ने मारू बाबू, मारि पीटि बेवस कय माय
हमरा पेटे मे गलबै लय, कल्ला दाबि के पिया दवाय
बूझि के बेटी खर्चा केर घर, एतहि किए ने पिंड छोड़ाबी

तिलक दहेज देला केर बादो, सब दिन राखल लेबक दाबी...
किन्तु यौ बाबू हम बेटी छी, आगू चलि केँ माय बनब
हमरे उदर मे सृष्टि चक्र अछि, बेटी बेटा दुनू जनब....
इत्यादि ।

एहने चित्रण Sujata Bhatt क 'Voice of the Unwanted girl' मे भेटैछ :

Mother, I am the one
you sent away
when the doctor told you
I would be
a girl- In the end they had to
give me an injection to kill me.
Before I died I heard....

Sujata Bhatt जकाँ, बल्कि वेशी नीक जकाँ भ्रूण हत्याक प्रति अपन मोनक व्यथा केँ प्रखर शब्द मे व्यक्त केने छथि । बेटा-बेटीक समानताक पक्षधर छथि कविजी :

बेटा-बेटी फर्क बुझब नहि, एक दिशाह भऽ पक्ष लड़ब नहि
पुत्री के अवसर देबा मे, आब कोताही कोनो करब नहि

समाजमे बेटा केँ नीक एवं बेटीकेँ हीन भावनासँ देखब एहि मान्यता पर मधुकर जीक तीक्ष्ण कटाक्ष छन्हि :

कतय सँ आयल मानव केर मन दानवता केर बीयाऽ
दुर-दुर छीया-छीयाऽ ।....
बेटा केँ डाक्टर बनबा लय सम्पत्ति बेचि विदेश पठाओल,
कतबो कहलौ कनलौ तैयो बेटी केँ कनियो ने पढ़ाओल
बेटी आनक घर चल जाइछ, व्यर्थ पढ़ैब लिखाएब धीयाऽ ।
दुर-दुर छीया-छीयाऽ ।

जहिना अंग्रेजी कवि William Wordsworth केँ प्रकृति सँ प्रेम छलन्हि तहिना अनेको कविता मे मधुकरो जीक प्रकृति-प्रेम परिलक्षित होइत अछि । Wordsworth तँ Nature केँ living being जकाँ treat करैत छलाह । प्रकृतिक विभिन्न रूप मनुक्ख के कोनो ने कोनो प्रेरणा दैत अछि । मधुकरो जीक कवितामे ई सब भाव प्रदर्शित भेल अछि । मधुकर जी अंग्रेजी साहित्य कतेक पढ़ने छलाह से हमरा नहि बूझल अछि, परन्तु अंग्रेजीक Romantic poets - Wordsworth, Shelley, Keats क Nature एवं Birds poems जेना To The Skylark (Wordsworth) To A Skylork (Shelley), Ode to a Nightingale (Keats) क भाव मधुकरजीक अनेको कविता में दृष्टिगोचर होइछ । किछु उदाहरण सब प्रस्तुत अछि-

'The Education of Nature' मे Wordsworth क मान्यता छन्हि जे हुनक Lucy (imaginary beloved) प्रकृतिक गोद मे रहि (in the lap of Nature) सर्वगुण सम्पन्न भए जेतीह । ओ कहैत छथि-

Three years she grew in sun and shower;
Then Nature said, 'A lovelier flower
On earth was never sown :
This child I to myself will take;
She shall be mine, and I will make
A lady of my own.
The girl, in rock and plain,
In earth and heaven, in glade and bower,
Shall feel an overseeing power
To kindle or restrain.

आगाँ Wordsworth लिखैत छथि-

She shall be sportive as the fawn
That wild with glee across the lawn
Or up the mountain springs;
And her's shall be the breathing balm,
And her's the silence and the calm
Of mute insensate things.
The floating clouds their state shall lend
To her; for her the willow bend;
Nor shall she fail to see
E'en in the motions of the storm.
Grace that shall mould the maiden's form
By silent sympathy.
The stars of midnight shall be dear
To her; and she shall lean her ear
In many a sacret place
Where rivulets dance their wayward round,
And beauty born of murmuring sound
shall pass into her face.

एहि तरहक अनेको कविता सब अछि Wordsworth क जाहिमे देखैत छी जे प्रकृति हमरा सबकेँ सर्वगुण सम्पन्न बनेबामे सतत प्रयत्नशील रहैत अछि । आवश्यकता छैक जे हमसब अपनाकेँ प्रकृति सँ कतेक जोड़ि केँ रखने छी । मधुकरोजीक अनेको कविता सबमे एहि तरहक प्रकृति-प्रेम एवं प्रकृतिसँ शिक्षा ग्रहण करबाक प्रेरणा भेटैत अछि-

'यौ बौआ करु अनुकरण' मे मधुकर जे कहैत छथि-

अन मन सुमन सनक सौरभ हो, कोइली सन मधु बोल ।
चन्ना सन हिय मे शीतलता, चिड़ै सँ मेल ओ जोल ।....
नदी केँ देखू सभक मैल के लय के दूर बहाबय
आगि केँ देखू सभक गन्दगी झट बेहिचक जराबय
पवन सन जीवक जीवन प्रवाहित रहियौ अनुखन ।
यौ बौआ करु अनुकरण ।....
सुगम बनू समतल धरणी सन, अगम बनू सागर सन ।
पर्वत सन बनु सुदृढ़ समुन्नत, बनू असीम गगन सन ।
मधु ग्राही मधुमाँछी बनिकेँ, रस पराग मधुकर सन ।
यौ बौआ करु अनुकरण ।

मधुकर जी 'गंगा नहाउ बौआ यमुना नहाउ'मे लिखैत छथि-

उरन चिड़ैया पाँखि लगाउ, उरि के दूर मेघ मे लाउ,
वर्षा रानीकेँ गोहराउ, अमृत के फुहार झहराउ ।

आगाँ पुन: लिखैत छथि-

पृथ्वीक सहनशीलता लाउ, चन्द्र ज्योति शीतलता पाउ,
प्रकृतिक आँचर जाए समाउ, लीयऽ जीवनी जीव लुटाउ,
ममता गाए माए बनि जाउ, लघुता दूर्बादल दर्शाउ ।
दय सम्मान मान के पाउ, मधुकर मनमोहन बनि जाउ ।....

एकटा आओर कविताक झलक देखाबी-

सीखू कौआ सँ सतर्कता, बनू सियार सनक बुधियार ।
पातर निन्न कुकुर सँ सीखू, फूल आ पवन योग सुगंध ।
मुक्त उरब पक्षी सँ सीखू, चुट्टी सँ संचयन प्रबंध ।
पंकज बनि सरवर केर शोभा, जल सँ प्यास आ ताप हरण ।
सीखू भूमि सँ सहनशीलता, हवा सँ प्राणदान जीवन ।
तरुवर सँ सर्वस्व दान गुण, मेघ सँ सीखू जल केर दान ।
कोइली सँ मीठ बाजब सीखू, ज्योति लुटाएब बनि केँ चान ।

एहि तरहेँ देखैत छी मधुकर अनायासे Wordsworth क विचार सँ पूर्णरूपेण सहमत छथि ।

Romantic poets (छायावादी कवि लोकनि) सबकेँ escapist (पलायनवादी) कहल जाइत छन्हि । यथार्थता (reality) सँ पलायन । ओलोकनि idealism (आदर्शवाद) मे बेशी आनन्दित होइत छलाह । जीवनक कटु सत्य (bitter truth of life) सँ पड़ाइत छलाह । Keats केँ बुझाइत छलन्हि जे Nightingale क दुनियाँ मनुक्खक दुनियाँसँ भिन्न छैक । Nightingale उन्मुक्त वातावरण मे स्वच्छन्द विचरण करैत अछि । ओकर दुनियाँमे कोनो तरहक कष्ट नहि छैक-

'Tis not through every of thy happy lot,
But being too happy in thy happiness,-
That thou, light-winged Dryad of the frees,
In some melodious plot
Of beechen green, and shadows numberless,
Singest of summer in full throated ease.

Keats केँ विश्वास छन्हि जे सब तरहक कष्ट मात्र मनुक्खेक जीवनमे छैक-

The weariness, the fever, and the fret
Here, where men sit and hear each other groan;
Where palsy shakes a few, sad, last grey hairs,
Where youth grows pale, and specture-thin, and dies;
Where but to think is to be full of sarrow

मधुकरोजी किछु कालक हेतु मेनाक बच्चा सिहुलियाक संसारमे अर्थात् ideal world मे विचरण करए चल जाइत छथि-

अजब-गजब तोरो छौ दुनियाँ, फुदुकि कुहुकि मारहिं छड़पनियाँ
लोल तोहर सुन्दर ललमुनियाँ, बाजब छौ अनमन हरमुनियाँ
गीतो गबै छेँ मोहनियाँ गैऽ, गाबि झटपट सुना ।
मेना के बच्चा सिहुलिया गैऽ दूगो जामुन गिरा ।

Shelley सेहो अपन कविता 'To A Skylork' मे Skylork केँ एहि तरहेँ सम्बोधित करैत छथि-

Hail to thee, blithe spirit !
Bird thou never wert,
That from heaven, or near it
Pourest thy full heart
In profuse strains of unpremeditated art.

मधुकरो जी कहैत छथि–

अहल भोर तोँ नित्य जगै छेँ, चुन-चुन कय सभके जगबै छेँ
कुदकि-कुदकि धरती केँ चूमै छेँ फड़-फड़ उड़ि आकाश घुमै छेँ
तोरा लय नहि छौ कतौ गेऽ, जैब अएबो मनाऽ ।...

Wordsworth सेहो अपन 'To A Skylork' मे Skylork केँ एहि तरहेँ सम्बोधित करैत छथि–

Ethereal minstrel ! pilgrim of the sky !
Dost thou despise the earth where cares abound ?

Shelley केँ सेहो बुझाइत छन्हि कष्ट मात्र मनुक्खेक जीवनमे छैक Skylork क जीवन मे नहि–

We look beore and after,
And pine for what is not :
Our sincerest laughter
With some pain is frought,
Our sweetest songs are those that tell of saddest thought.

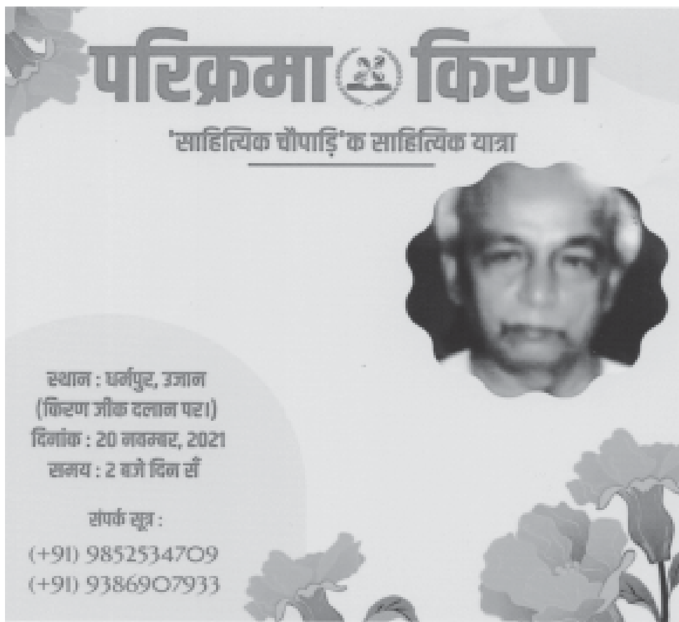
मधुकरजी किछु कालक हेतु जरूर चिड़ै-चुनमुनीक दुनियाँमे भ्रमण करैत छथि, परन्तु ओ जीवनक कटु सत्य सँ कखनहुँ विमुख नहि होइत छथि–

चल गैऽ मुनियाँ उड़ब अकाशो भेटत पवित्र पवन परकाशो
निकटे चन्द्र तरेगण भासो, ओतहि देवगण केर छन्हि बासो
घुमब स्वतंत्र बिना भय गैऽ, हम दुनू जनाऽ ।...

मधुकर जी अपने वास्तविको जीवन में सतत संघर्षशील रहलाह । ओ realist बेशी, idealist कम छलाह । जीवनक यथार्थता केँ बहुत निकट सँ अनुभव केलन्हि । हुनका सम्बन्ध मे एहि छोटछीन लेख मे सबटा बात नहि लिखल जा सकैछ । हुनक जीवन आ कृति शोधक विषय थिक । आह ! मधुकरजी आब नहि रहलाह । जीवनक अन्तिम क्षण तक मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध करैत आ अपन जीवनसँ संघर्ष करैत ब्रह्मलीन भऽ गेलाह ।

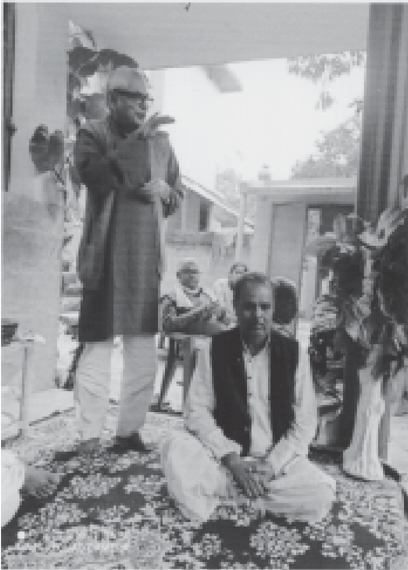
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी
आवास– सर्वसीमा (मधुबनी)

श्रद्धास्पदक प्रति उबारबाक अटूट विश्वास थिक श्रद्धा
श्रद्धास्पदक गुण स्वभावक अनुगमन करब थिक भक्ति
श्रद्धास्पदक प्रति प्रिय वस्तु समंत्र अर्पित करब थिक पूजा
श्रद्धास्पदक गुण स्वभावक बेर बेर चिन्तन करब थिक कीर्त्तन
श्रद्धास्पदक स्वभाव प्रभावक परस्पर चर्चा थिक सत्संग
श्रद्धास्पदक प्रति विनम्र भावेँ अहंताक त्याग थिक समर्पण


परिक्रमा किरण
'साहित्यिक चौपाड़ि'क साहित्यिक यात्रा
स्थान : धर्मपुर, उजान
(किरण जीक दलान पर।)
दिनांक : 20 नवम्बर, 2021
समय : 2 बजे दिन सँ
संपर्क सूत्र :
(+91) 9852534709
(+91) 9386907933







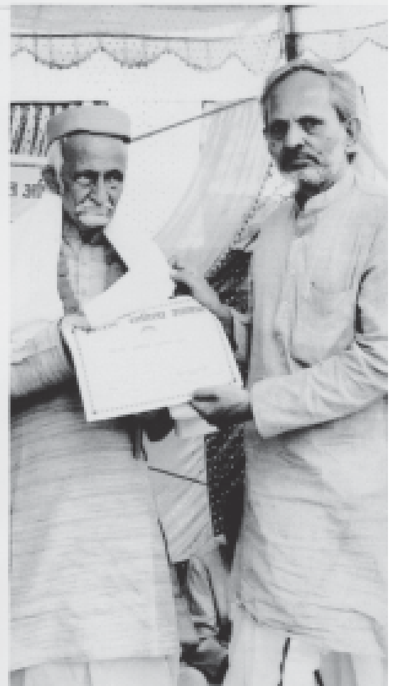




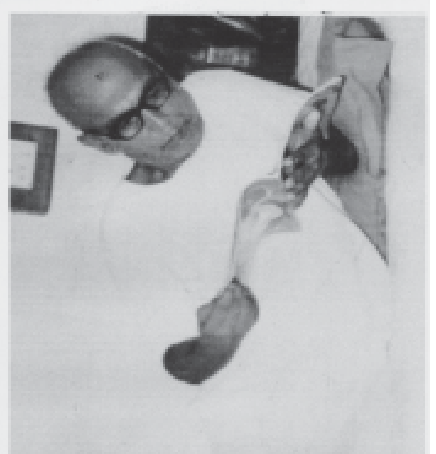





आचार्य
रमानाथ झा
जयन्ती
समारोह












किरण-मैथिली-साहित्य-शोध संस्थान

संरक्षक सह आजीवन सदस्यक सूची

1. श्री शोभनाथ झा– उजान– 9661407631
2. श्री आशीष कुमार झा– कनकपुर– 9931689487
3. अनामिका काश्यप– धर्मपुर– 9939441739
4. श्री मणिकान्त आजाद– लालपुर– 9431336268
5. श्री राजीव कुमार झा– धर्मपुर– 09311036210
6. श्री प्रभाकर चौधरी पूर्व विद्यायक– 9431629776
7. श्रीमती मंजू चौधरी– (लगमा)– 9431629776
8. श्री संगीत कुमार चौधरी– (लगमा)– 9431629776
9. श्रीमती पूजा चौधरी– (लगमा)– 9431629776
10. श्री नीतीश प्रभाकर– (लगमा)– 9431629776
11. श्री वसंत कुमार झा– प्रधानाचार्य– 9470363232
12. श्रीमती सुधा झा– धर्मपुर– 9939441739
13. श्री नारायण झा– उजान– 09650600507
14. डा. महेन्द्र कुमार ठाकुर (B.H.U)– 09450547155
15. डा. कीर्ति नाथ झा, पाण्डीचेरी– 09443655640
16. श्री प्रभास कुमार झा– धर्मपुर– 07535065315
17. डा. संध्या झा– कटिहार– 9463305317
18. श्री रघुनाथ झा– अवाम– 9430638542
19. डा. पंकज कुमार झा– सिंगरौली– 09425331812
20. श्री रमानाथ झा– महरैल– 9199417023
21. श्री लक्ष्मी पासवान– सर्वसीमा– 8676859856
22. श्री वटोही पासवान– सर्वसीमा– 9431826496
23. श्री हरनाथ ठाकुर– सर्वसीमा 9430045737
24. डा. कुँवर कान्त पाठक नरूआर– 9431632974
25. श्री सिद्धि नाथ झा– उजान– 9931450590
26. श्री जगदीश झा– कनकपुर– 8578844852
27. प्रो. (डा.) विनोदानन्द झा –उजान– 7739864038
28. श्री लखन जी चौधरी– कनकपुर– 9162594806
29. श्री सूर्य नारायण यादव– बहुअरवा– 9771680991
30. प्रो. राम चन्द्र मिश्र मधुकर–नरुआर– 8084854834
31. डा. रामजी ठाकुर– धर्मपुर– 9934919280
32. डा. फूल कुमार मिश्र– रतौल– 9122656915
33. श्री श्यामानन्द पाठक– नरुआर– 9939997461
34. प्रो. नारायण झा– लोहना प०– 8969797523
35. प्रो. भैरवेश्वर झा– लालगंज– 8757408896
36. डा. विद्यानाथ झा– 8969003957
37. श्री सुरेश ठाकुर– धर्मपुर– 8809061562
38. प्रो. भीमनाथ झा– मधेपुर– 9973409895
39. डा. नागेन्द्र नारायण झा– 9431636505
40. श्री मोती पासवान– सर्वसीमा– 9199623452
41. प्रो. विद्यानन्द ठाकुर– सर्वसीमा– 9430836014
42. श्री केशव किशोर मिश्र– नरुआर– 9431826209
43. श्री सुजीत कुमार मिश्र– नरुआर– 9934224963
44. श्री केदारनाथ झा– धर्मपुर– 9162672855
45. श्री महावीर यादव– बहुअरवा– 9771623621
46. डा. सतीरमण झा– उजान– 8084970151
47. डा. शिवशंकर श्री निवास–लोहना प०– 9470883301
48. श्रीमती रूबी कुमारी झा– दिल्ली– 09311036210
49. प्रो. जीवेन्द्र मिश्र– बेहट– 9570804592
50. श्री शंभु नाथ झा– पाली– 7281967872
51. श्री गिरधर चौधरी– सर्वसीमा– 9430630543
52. श्री राजा नाथ झा– उजान 7549327268
53. श्री जगदानन्द झा– नरुआर– 09312017245
54. श्री विद्यानन्द झा– नरुआर– 9430998362
55. डा. जगदीश मिश्र– नबटोल 9430295583
56. प्रदीप कुमार झा– सचिव 9831363844
57. प्रो. अमर नाथ झा– कनकपुर 9930630470
58. डा. ललितकर झा– सरिसब 8051000447
59. श्री देवचन्द्र मिश्र– लोहना रोड 7631388524
60. श्री उदय कुमार झा– 9199906028, 7633043485
61. श्री प्रेमनाथ झा– सरिसब 9955612798
62. श्री दीनानाथा झा– गंगौली टोल 9661310149
63. श्री लूटन कामत– पौट घाट 9931205712
64. प्रो. प्रवोध झा– रुपौली 9934977773
65. (कर्नल) मायानाथ झा– भराम 9430296386
66. अंजन कुमार ठाकुर– धर्मपुर 7597918293
67. डा. मिहिर कुमार ठाकुर– धर्मपुर 9934205590
68. प्रो. ईशनाथ झा– नरुआर 8709510817

69. प्रो.(डा.)विजय कुमार मिश्र- लक्ष्मीपुर 9973600459
70. श्री कौशल किशोर मिश्र- लक्ष्मीपुर 9934207294
71. श्री अमर नाथ झा-महरैल- 7352654120, 9661789308
72. प्रो. गीतानाथ झा- महरैल 9798419442
73. श्री सुदीप कुमार झा- धर्मपुर 9939441739
74. श्रीमती साधना झा- धर्मपुर 9939441739
75. श्रीमती ममता झा- धर्मपुर 9955455820
76. प्रो. सुरेश पासवान- नरुआर 8051997405
77. डा. अमृत नाथ झा (नरूआर)- 9934250138
78. श्री नागेन्द्र राय (नरूआर) 09621412660
79. श्री अरुण कमार झा कनकपुर- 09718859994
80. श्री केसरी नाथ झा धर्मपुर- 7260881209
81. श्री रामावतार झा कनकपुर- 9973341993
82. श्रीमती मेनू कुमारी नरूआर- 9955927084
83. श्री प्रवीण कुमार मिश्र लक्ष्मीपुर- 9570186050
84. श्री विनोद कुमार झा- उजान 9931450711
85. श्री धीरज झा- बहेड़ा-
86. डा०के०सी० राय- धर्मपुर- 9934207970
87. श्री अवनिन्द्र कुमार झा- धर्मपुर
88. श्री मणिन्द्र कुमार झा- धर्मपुर
89. श्रीमती सुरंजना घोष- हजारीवाग
90. श्री मुकेश कुमार मिश्र- लोहना रोड
91. प्रो० उदयचन्द्र झा- रुपौली, मधेपुर- 7549777330
92. श्री विनोद कुमार झा- उजान- 9934420137
93. श्री सचिन्द्र नाथ झा- मेहथ- 9934681501
94. डा. बचेश्वर झा- निर्मली- 9122409495
95. श्री जीव नाथ मिश्र- लालगंज- 9931456438
96. डा. श्री शंकर झा- मदुरा- 9576932259
97. श्री धीरेन्द्र कुमार झा-रजौर फटकी- 9312221551
98. श्री कीर्तिनन्दन सिंह- पचही- 9934802676
99. कमल नारायण मंडल- धर्मपुर- 7739632070
100. कालीनाथ ठाकुर- सर्वसीमा- 7250239093
101. जीतेन्द्र कुमार झा- नरुआर- 9931689367
102. डा. गजेन्द्र नारायण झा- हैठीबाली- 9431826390
103. ध्रुव कुमार- पी०जी० मनोविज्ञान- 9473370857
104. डा. अमरेन्द्र प्रकाश चौबे- 7033501967
105. श्री चन्द्रनाथ झा- धर्मपुर- 9430061897
106. श्री कुमुद नाथ झा- धर्मपुर- 8084269477
107. चन्द्रनाथ झा उर्फ जीशू बाबू-गंगौली-9801477398
108. जयचन्द्र मिश्र- नरुआर- 8873153721
109. दयानन्द मिश्र- गंगौली- 8521762134
110. प्रो० उग्रनारायण चौधरी- कोइलख- 9708018446
111. हरेकान्त झा- नरुआर- 9431859144
112. श्री देव यादव- सर्वसीमा- 7808067725
113. प्रो. विरेन्द्र झा- नरुआर- 9934639425
114. श्री अमलेश कुमार कर्ण- उजान- 9570766361
115. डा. प्रो. केदारनाथ झा- झंझारपुर- 9430935134
116. डा. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' लौफा- 9831037532
117. डा. नारायण झा- सी०एम० कालेज- 9431421457
118. श्री काशीनाथ झा 'किरण' मेहथ- 9931295574
119. डा. किशोर नाथ झा- बिट्ठो- 9431473683
120. प्रो. अशर्फी कामत- लोहना- 9934981166
121. डा. वेदनाथ झा- नाहर- 9006813865
122. डा. इन्द्रनाथ झा- नरुआर- 9835048753
123. दिगम्वर कामत- पैटघाट- 9934251858
124. महेश झा- रुपौली- 7631519151
125. श्री चन्द्रमोहन झा- उजान- 7631755682
126. श्री सूर्यनारायण झा- उजान- 9931416178
127. श्री विनीत ठाकुर- सर्वसीमा- 9835243709
128. भक्तिगोपाल झा- गंगौली (उजान)- 8521119452
129. श्री अरुण कुमार मिश्र- लोहना- 9939043534
130. श्री अनिल ठाकुर- गोधनपुर- 9430085157
131. श्री वीरेन्द्रनारायण झा- समिया- 9835295040
132. श्री विशेषानन्द मिश्र- नरुआर- 9471821299
133. श्री गंगानाथ झा- धनेरामपुर- 9973577073
134. डा० हीरानाथ झा इसहपुर- 9631616751
135. श्री श्रीकान्त मंडल धर्मपुर- 9462862021
136. श्री निर्मल चन्द्रझा ब्रहमोतरा- 9835459176
137. श्री हरिनाथ झा- 8407890040

138. श्री राजेश मिश्र- लोहना रोड-
139. श्रीमती मोहिनी झा- सरिसव 6200351424
140. श्रीरामसेवक राय- नरुआर 9431624909
141. डा० कुलधारी सिंह- मधुबनी डियौढ़ी- 9431220065
142. श्री शंकर मिश्र गंगौली मुखिया-
गंगौली कनकपुर- 9934900280
143. श्री नरायण झा रहुआ- 8051417051
144. डा० छत्रनाथ झा (प्र.स्वराज) 9835249426
145. श्रीकलानाथझा- सरिसव-पाही- 7765823547, 9199924917
146. श्री राम बहादुर चौधरी-
मुखिया सरिसब (प.) 7549305351
147. डा. खुशी लाल झा- पोखरिभिन्डा (झंझारपुर) 9472815055
148. मो० अहसान- 9570411450
149. डा. फूलकान्त मिश्र- 9934208429
150. श्री कमला नन्द झा- उजान 9570467618
151. पं. गोविन्द झा- लोहना (पं.) 9661531052
152. डा. जगन्नाथ झा- नरुआर 9534926623
153. श्री प्रमोद कुमार झा- महरैल- 9469521778
154. डा. महेन्द्र नारायण राम- खुटौना- 9162205484
155. डा. मिथिलेश कुमार झा-
गंगौली (I.I.T. गौहाटी)- 08472845371
156. डा० अतुलेश्वर झा लोहना प०- 7250155587
157. श्री अशोक कुमार साह- मुखिया लोहना दक्षिण-
158. लक्ष्मण कुमार झा- धर्मपुर
159. श्री राघव चौधरी- नरुआर 8674904786
160. राम कुमार मंडल
(हार्डवेयर विक्रेता, कचहरी चौक)- उजान
161. प्रो. सत्यनारायण झा- कछमी
162. श्री कुमार सौरभ- धर्मपुर
163. डा. जयानन्द मिश्र- ननौर 6206560977
164. श्री ओमप्रकाश (माधव जी), 9737744600
साईं इलेक्ट्रीक एवं इलेक्ट्रोनिक्स, धर्मपुर
165. डॉ. नवीन कुमार झा- दड़िमा- 6202763984
166. डॉ. अरुण कुमार साफी- उजान 9934622370
167. कुमार देमू ठाकुर- धर्मपुर 8340563861
168. श्रीमती कल्याणी झा- कनकपुर
169. धनञ्जय मिश्र- नरुआर

<u>सामान्य सदस्य</u>

1. श्री फणिकान्त लाल- लालपुर
2. गुलाब चौधरी- कनकपुर
3. श्री हीरानन्द मिश्र उर्फ बौआ- उजान
4. श्री जीवनाथ झा- उजान
5. श्री रामविलास चौधरी उर्फ मोहन चौधरी- धर्मपुर
6. श्री कृष्ण लाल- सोनपुर
7. रमण कुमार मंडल- धर्मपुर

मोन पड़ै छथि (स्मृति तर्पण)

1. सुदिष्ट मिश्र, दरभंगा
2. रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर', नरुआर
3. सच्चिदानन्द मिश्र, नरुआर
4. श्रीमती आशा किरण झा, धर्मपुर
5. जीवनाथ मिश्र (लालगंज)
6. राजानाथ झा (उजान)
7. चन्द्रमोहन झा (उजान)

अंतमे

1. संरक्षक सदस्य सँ अनुरोध जे पता-मो. न० या नोमनीक परिवर्तनक सूचना कार्यालय के दयदेल करथि तथा प्रत्येक पूर्वनिर्धारित कार्यक्रममे सम्मिलित भए आयोजन केँ सफल बनाबी ।

2. कोनो प्रकारक समस्याक निदान वार्ता सँ नै भेला पर दरभंगाक न्यायालय क्षेत्राधिकार मे आओत ।

नेफ्ट/चेक निर्गत करी किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, धर्मपुर, उजान क नामेँ, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक उजान (दरभंगा) केर शाखामे सोझे जमा क' सकैत छी ।

मूल खाता- 1004471010000540
IFSC- CBIN 0 (zero) R 10001

प्रकाशन कोष- (प्रकाशन कोषक संपोषक)

एक अंश-5000/-

1.	श्री केशव किशोर मिश्र- नरुआर-	30000/-	9431826209
2.	श्री वसंत कुमार झा- धर्मपुर-	20000/-	8870406687
3.	डा. कुँवर कान्त पाठक- नरुआर-	15000/-	9431632974
4.	श्री प्रभाष कुमार झा- संप्रति आगरा धर्मपुर-	5000/-	07535065315
5.	प्रो. डा. संध्या झा- कटिहार-	5000/-	9446305317
6.	श्री जगदानन्द झा नरूआर-	5000/-	
7.	प्रो. रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर'-नरुआर-	15000/-	8084854834
8.	श्रीमती प्रमिला मिश्र- नरुआर	5000/-	8084854834
9.	प्रो. राजेश्वर मिश्र- लक्ष्मीपुर-	5000/-	9939155040
10.	श्रीमती रूबी कुमारी झा- धर्मपुर-	5000/-	08448515985
11.	श्री राजीव कुमार झा- धर्मपुर-	5000/-	09911562859
12.	श्रीमती गीतांजली कोहली- धर्मपुर-	5000/-	9939441739
13.	श्री धनंजय मिश्र- नरुआर-	5000/-	9310477415
14.	स्व. सच्चिदानन्द मिश्र- नरुआर-	5000/-	9930890264
15.	श्री कृपानन्द मिश्र- नरुआर-	5000/-	8084854834
16.	डा. योगेन्द्र पाठक वियोगी- लौफा-	5000/-	9831037532
17.	श्रीमती सुधा झा- धर्मपुर-	35000/-	9939441739
18.	डा. विनोदानन्द झा- दरभंगा-	5000/-	

प्रकाशन लेल विशेष प्रोत्साहन राशिक दातागण

1. श्री सचिन्द्र नाथ झा उर्फ फूलबाबू (मेहथ)
2. श्री काशीनाथ झा 'किरण' (मेहथ)
3. डा० बचेश्वर झा (निर्मली)
4. डा० श्री शंकर झा 'मदुरा'।
5. श्री शंकर कुमार मिश्र- मुखिया गंगौली कनकपुर
6. हरिनाथ झा, नरुआर
7. कुमार सौरभ, धर्मपुर
8. सूर्य नारायण यादव, बैहरबा
9. डॉ. सदन मिश्र, पाही
10. डॉ. सुनीता झा, सरिसव
11. श्री राघव चौधरी, नरुआर
12. श्रीमती मोहिनी देवी, सरिसव
13. डॉ. रामजी ठाकुर, धर्मपुर
14. डॉ. किशोर नाथ झा, बिट्ठो
15. डॉ. अजित मिश्र, पाही
16. प्रो. भैरवेश्वर झा, लालगंज
17. डॉ. जयानन्द मिश्र, ननौर
18. डॉ. इन्द्रनाथ झा, सर्वसीमा
19. डॉ. विद्यानन्द ठाकुर, सर्वसीमा
20. श्री सुदीष्ट मिश्र, मिश्रटोला, दरभंगा, 8002677042
21. प्रो. अशर्फी कामति, लोहना
22. श्री लखन जी चौधरी, कनकपुर
23. श्री नागेन्द्र राय, नरुआर
24. श्री राजेश्वर मिश्र, लक्ष्मीपुर
25. श्री कौशल किशोर मिश्र, लक्ष्मीपुर
26. गुप्तदान (सरिसब परिसरसँ)

श्री शोभनाथ झा उजान संस्थानक सकारात्मक गतिविधि देखैत 21501/- रूपया बिना कोनो शर्त केँ विशेष दान देलैन। श्री झा पहिल संरक्षक सदस्य बनल छलाह। हिनक एहि उदारताक लेल कोटिशः धन्यवाद (सचिव)

किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, धर्मपुर, उजान, लोहना रोड, दरभंगा
वर्तमान कार्यकारणी

पदाधिकारी–

1.	अध्यक्ष (कार्यभार)	श्री हीरानन्द मिश्र	9939802764
3.	सचिव–	श्री केदारनाथ झा	9162672855
4.	कोषाध्यक्ष–	श्री श्रीकान्त मंडल	9462862021
5.	संयुक्त सचिव– (आन्तरिक)	श्री लखनजी चौधरी स्थितप्रज्ञ	9162594806
6.	संयुक्त सचिव– (बाह्य)	श्री सुरेश पासवान	8051997405
7.	कार्यालय सचिव–	श्री राजेश मिश्र	9934445975

सदस्य कार्यकारिणी–

1.	डा० सतीरमण झा–	8084970151
2.	डा० शिवशंकर 'श्रीनिवास–	8521970976
3.	प्रो० अशर्फी कामत–	9934981166
4.	प्रो० विद्यानन्द ठाकुर–	9472665933
5.	श्री अमलेश कुमार कर्ण–	9199082824
6.	श्री अरुण कुमार झा–	7250040137
7.	श्री कमल नारायण मंडल–	7739632070
8.	श्री फणिकान्त लाल–	9931040806
9.	प्रो० श्री ईशनाथ झा–	8709510817

स्थायी आमंत्रित सदस्य

1.	श्री केशव कशोर मिश्र–	9431826209
2.	डा० कुमर कान्त पाठक–	9431632974
3.	श्री दयानन्द मिश्र	8521762134
4.	श्री भागीरथ लाल दास–	9934961855
5.	श्री सुरेश ठाकुर–	8809061562
6.	डा० विद्यानन्द झा–	9430836014
7.	डा० खुशीलाल झा–	9472815055

नोट :-

1. **सुरक्षित जमा राशि पूर्ववत् 405000/- अछि ।**
2. **वार्षिक कार्यक्रम यथावत् रहत ।**
3. **वार्षिक अधिवेशन एवं नव कार्यकारिणी गठन जून 2021 मे होयत जकर सूचना यथासमय सदस्य लोकनिकेँ देल जायत ।**
4. **वर्ष 2020 सँ संस्थान द्वारा किरण मैथिली सेवी सम्मान पुरस्कार प्रारम्भ कयल गेल अछि ।**
5. **विषम परिस्थिति रहबाक कारणेँ अंकेक्षण प्रतिवेदन संलग्न नहि कयल जा सकल ।**

सचिव

‘किरण’ मैथिली-साहित्य-शोध-संस्थान

उजान (धर्मपुर)क प्रकाशन

1. कतेक दिनक बाद (कविता संग्रह)	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
2. किरण निबंधावली	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
3. संस्मरण ओ संवेदना	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण
4. चन्द्रग्रहण (द्वि.सं. 2011)	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण
5. विजेता विद्यापति (द्वि.सं. 2009)	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण
6. अभिमाननी (उपन्यास) 2013	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण
7. मैथिल यादव महासभाक योगदान	–	डा. कैलासनाथ झा
8. ग्राम गाथा (उपन्यास)	–	प्रो. रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’
9. वीर धनंजय (नाटक)	–	प्रो. रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’
10. बाल-बाटिका (बाल साहित्य)	–	प्रो. रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’
11. शोधपरक स्मारिका (उद्यान किरण)	–	2013 सँ प्रतिवर्ष अद्यावधि
12. कालजयी कवित्रयी	–	प्रो. रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’
13. किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या	–	डा. रामजी ठाकुर
14. उद्यानस्य कुसुमेकम्	–	डा. रामजी ठाकुर
15. मैथिली उपन्यास साहित्यक विकाशात्मक अध्ययन	–	डा. कुँवर कान्त पाठक
16. किरण समग्र (खण्ड-2)(बाल विनोद)	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
17. किरण समग्र खण्ड-3 (कथा किरण)	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
18. किरण समग्र खण्ड-4 (सरमंजरी)	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
19. Post-Depression American Drama	-	प्रो. विजय मिश्र
20. A Slice of Life	-	प्रो. विजय मिश्र
21. किरण समग्र खण्ड-5 (कविता) (कतेक दिनक बाद साहित्य)	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
23. किरण समग्र खण्ड-6 पराशर सहित महाकाव्य	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
24. किरण समग्र (नाटक) खण्ड-7	–	डा. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’
25. निबंध सागर	–	प्रो. रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’
26. फरफराइत इतिहासक पन्ना पर	–	प्रो. रामचन्द्र मिश्र ‘मधुकर’
27. वीरसावरकरचरितम् (महाकाव्यम्)	–	आचार्य रामजी ठाकुर

किरण-साहित्य-सूची

1932 चन्द्रग्रहण- मैथिली साहित्य समिति, वाराणसी । (2 सं.)

1938 वीर प्रसून-मैथिली प्रचारक संघ, काशी ।

1955 जय जन्मभूमि-किरण साहित्य कुटीर, दरभंगा । (2 सं.)

1372 विजेता विद्यापति-किरण साहित्य संस्थान, दरभंगा ।

1986 किरण कवितावली-केसरीनाथ झा, धर्मपुर ।

1988 कथा-किरण-भाखा प्रकाशन, पटना ।

1988 पराशर-चिनगी प्रकाशन, दरभंगा ।

1989 कतेक दिनक बाद-किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, धर्मपुर।

1990 किरण निबंधावली भाग 1- मैथिली शोध संस्थान, धर्मपुर (उजान), लोहना रोड, दरभंगा ।

2005 वर्ण रत्नाकरक काव्य शास्त्रीय अध्ययन-किरण साहित्य शोध संस्थान

2007 किरण समग्र निबंध खंड-1 किरण साहित्य शोध संस्थान मैथिली अकादमी पटना

2013 अभिमाननी (किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान वार्षिक स्मारिका में)

2019 किरण समग्र खंड-2 बाल विनोद

2019 किरण समग्र खंड-3 कथा किरण परिवर्धित संस्करण

2020 किरण समग्र खंड-4 रसमंजरी प्रकाशधिन प्रकाशधिन

2020 किरण कविता समग्र खंड-5 (कतेक दिनक बाद सहित)

2020 किरण समग्र महाकाव्य खंड-6 परासरसहित

2021 किरण समग्र खंड-7 (नाटक एवं एकांकी)

2022 किरण निबंध संग्रह (प्रेसमे)



Kiran Maithili Sahitya Shodh Sansthan

Village - Dharmpur (Ujan) , P.O- Lohna Road , Dist.-Darbhanga (Bihar)

Income & Expenditure Account for the year ending on 31St March 2019

Expenditure	Amount (Rs.)	Income	Amount (Rs.)
To Kiran Smriti Diwas Expenses	12,500.00	By New Menbership Fees	30,000.00
" Maithili Diwas	1,000.00	" Member's Contribution	25,000.00
" Ramanath Jha Jayanti	5,000.00	" Bank Interest	28,276.10
" kiran Jayanti	6,982.00	" Donation	15,505.00
" Bank Charges	129.00	" Sale Of Books	22,920.00
" Indepence Day Expenses	1,000.00	" Advertisement	40,000.00
" Republic Day Expenses	1,100.00		
" Stationery	1,709.00		
" Publication & Library Books	1,30,000.00		
" Misc Expenses	1,730.00		
" Exess of Income Over Exp.	551.10		
	1,61,701.10		**1,61,701.10**

In terms of our report of even date

Place : Darbhanga
Date : 15-03-2022

For Pathak Vijay & Company
Chartered Accountants



(Vijay Kumar)
Prop.
M.No. 060024
F.R.N - 010253C

Kiran Maithili Sahitya Shodh Sansthan

Village - Dharmpur (Ujan) , P.O- Lohna Road , Dist.-Darbhanga (Bihar)

Income & Expenditure Account for the year ending on 31St March 2020

Expenditure	Amount (Rs.)	Income	Amount (Rs.)
To Kiran Smriti Diwas Expenses	15,000.00	By New Memberhip Fees	10,000.00
" Maithili Diwas	1,751.00	" Member's Contribution	19,744.00
" Ramanath Jha Jayanti	5,000.00	" Bank Interest	21,044.00
" kiran Jayanti	12,482.00	" Donation	50,000.00
" Bank Charges	788.50	" Sale Of Books	27,451.00
" Indepence Day Expenses	1,250.00	" Advertisement	60,000.00
" Republic Day Expenses	1,750.00	" Sale Of Scrap	328.00
" Meeting & Seminar	22,577.00		
" Publication & Library Books	1,40,000.00		
" Travelling Expenses	5,000.00	" Exess of Exp. Over Income	17,031.50
	2,05,598.50		**2,05,598.50**

In terms of our report of even date

Place : Darbhanga
Date : 15-03-2022

For Pathak Vijay & Company
Chartered Accountants

(Vijay Kumar)
Prop.
M.No. 060024
F.R.N - 010253C



Kiran Maithili Sahitya Shodh Sansthan

Village - Dharmpur (Ujan) , P.O- Lohna Road , Dist.-Darbhanga (Bihar)

Income & Expenditure Account for the year ending on 31St March 2021

Expenditure	Amount (Rs.)	Income	Amount (Rs.)
To Kiran Smriti Diwas Expenses	2,150.00	By Member's Contribution	11,500.00
" Maithili Diwas	100.00	" Bank Interest	29,051.00
" Ramanath Jha Jayanti	120.00	" Donation	60,000.00
" kiran Jayanti	8,440.00	" Sale Of Books	10,520.00
" Bank Charges	872.26		
" Indepence Day Expenses	1,800.00		
" Republic Day Expenses	1,900.00		
" Meeting & Seminar	18,601.00		
" Publication & Library Books	20,912.00		
" Labour Charges	500.00		
" Exess of Income Over Exp.	55,675.74		
-	**1,11,071.00**		**1,11,071.00**

In terms of our report of even date

Place : Darbhanga
Date : 15-03-2022

For Pathak Vijay & Company
Chartered Accountants
(Vijay Kumar)
Prop.
M.No. 060024
F.R.N - 010253C

Pathak Vijay & Company ★ Darbhanga ★ Chartered Accountants

'किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान', धर्मपुर, उजानक कृतज्ञ परिवार दिशसँ हार्दिक श्रद्धाञ्जलि-
हे महामानव, मैथिलीक ध्वजवाहक, उग्रनारायण मिश्र 'कनक', श्याम दरिहरे किरण साहित्य सम्मान सँ
सम्मानित रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर' एवं राम लोचन ठाकुर, समीक्षक मोहन भारद्वाज।











College Code - 21020

INTER SCIENCE COLLEGE

'Kiran-Gram' Canary-Korrah Road, Jabra, Hazaribagh

Permanently Affiliated +2 Unit of J.A.C. Ranchi

THE ONLY COLLEGE HAVING SPECIFICATION FOR SCIENCE



श्री वसन्त कुमार झा
किरण मेमोरियल, एडुकेशनल
एण्ड वेलफेयर सोसाइटीक
सचिव एवं प्रधानाचार्य
इंटर साईंस कॉलेज, हजारीबाग

